जीवनलीला

भारतकी नद-नदियां, तालाब-सरोवर, प्रपात, समुद्र आदिकी सनातन

जीवनलीला

काकासाहब कालेलकर

अनुवादक

रवीन्द्र केळेकर

विश्वस्य मातर सर्वा
सर्वाश् चैव महाफला ।
अित्येता सरितो राजन् !
समाख्याता यथास्मृति ।।
— भीष्मपर्व, ९–३७

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

साहित्य अकादमी, दिल्लीकी ओरसे सूचित गुजराती आवृत्ति परसे

पहली आवृत्ति ५०००, सन् १९५८

तीन रुपये

फरवरी, १९५८

जीवनलीला

१

मैंने कही पर लिखा ही है कि मेरे भारत-यात्राके वर्णन केवल साहित्य-विलास नही हैं, बल्कि भारत-भक्तिका और पूजाका अेक प्रकार है। भगवानके गुण गाना जिस तरह नवधा भक्तिका अेक प्रकार है, अुसी तरह भारतकी भूमि, अुसके पहाड और पर्वतश्रेणिया, नदिया और सरोवर, गाव और शहर, अुनमें बसे हुअे लोग और अुनका पुरुषार्थ, अुनके आश्रयमें रहनेवाले ग्राम्य पशु-पक्षी और अुनके साथ असहयोग करके आजादीका आनद लेनेवाले वन्य पशु-पक्षी — आदि सबका वर्णन करके अुनका परिचय बढाना भारत-भक्तिका अेक अत्यत आनददायी प्रकार है। यह भक्ति अेकातमें भी की जा सकती है और लोकातमें भी। जब कभी नवयुवकोकी कोअी घुमक्कड टोली मुझसे मिलने आती है और कहती है कि 'आपकी यात्राकी पुस्तकें पढकर हम भारतकी यात्रा करनेके लिअे निकल पडे हैं' तब मुझे बडा आनन्द होता है, और मैं अुनकी ओर अैसी कृतज्ञ-वृद्धिसे देखता हू, मानो वे मुझ पर अुपकार करनेके लिअे ही निकले हो।

मेरे अिन यात्रा-वर्णनोमें से अैसे सब वर्णन, जिनमें मैंने भारतकी नदियोको भक्ति कुसुमोकी अजलि अर्पित की है, अेकत्र करके 'लोकमाता'* के नामसे गुजराती तथा मराठीमें जनताके सामने बहुत पहले मैंने रख दिये है। महाभारतकारने हमारी नदियोको 'विश्वस्य मातर' कहा है। अिन स्तन्यदायिनी माताओका वर्णन करते हुअे हमारे पूर्वज कभी नहीं थके। और मेरा अनुभव है कि अिन्ही

* हिन्दीमें अिनमें मे सिर्फ सात नदियोके वर्णन 'सप्त-सरिता' के नामसे दिल्लीके सस्ता-साहित्य-मडलकी ओरसे प्रकाशित किये गये थे।

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र

पा 8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

रिश्तेदार

नदियोके नये प्रकारके स्तोत्र यदि लोगोके सामने रखे जायें तो अुनका आजके लोग भी प्रेमपूर्वक स्वागत करते है।

अब स्वराज्य सरकारकी ओरसे हालमे स्थापित हुअी 'साहित्य अकादमी' (भारत-भारती-परिषद्) ने सूचना की कि 'लोकमाता' में दूसरे और कुछ प्रवास-वर्णन मिलाकर अेक पुस्तक मै तैयार करू, 'साहित्य अकादमी' हिन्दुस्तानकी प्रमुख भाषाओमे अुसका अनुवाद करवाकर प्रकाशित करेगी।

अिस अनुग्रहको स्वीकार करते समय मैने सोचा कि अुसमें किसी भी स्थानके यात्रा-वर्णन जोडनेके बदले नदी, प्रपात और सरोवरोके साथ मेल खा सके अैसे सागर, सागर-सगम और सागर-तटकी विविध लीलाका ही वर्णन यदि दू, तो पचमहाभूतोमे से अेक अत्यन्त आह्लादक तत्त्वकी लीलाका वर्णन अेक स्थान पर आ जायेगा और अिस नअी पुस्तकमे अेक प्रकारकी अेकरूपता भी रहेगी। यह विचार मित्रोको और 'साहित्य अकादमी' के गुजराती सलाहकारो तथा सचालकोको पसन्द आया। अत 'लोकमाता' 'जीवनलीला' के रूपमे पाठकोकी सेवा करनेके लिअे निकल पडी।

'लोकमाता' मे केवल नदियोके ही वर्णन होनेसे अुसके मुख-पृष्ठ पर महाभारतका 'विश्वस्य मातर' वाला श्लोक ठीक मालूम होता था। अब अुसने व्यापक 'जीवनलीला' का रूप धारण किया है, अत अिस श्लोकका अुपयोग करनेमे अव्याप्तिका दोष आ जाता है। फिर भी परपराकी रक्षाके लिअे यह श्लोक अिस पुस्तकमे भी भक्तिभावसे रहने दिया है।

'जीवनलीला' की गुजराती आवृत्तिने लोकसेवाकी यात्रा शुरु की और तुरन्त अुसके हिन्दी अनुवादका सवाल खडा हुआ। नवजीवन प्रकाशन मदिरने अपनी नीतिके अनुसार हिन्दी आवृत्ति प्रकाशित करनेका भार स्वय अुठाया और मेरी सूचनाके अनुसार अनुवादका काम वर्षोमे मेरे पास रहे हुअे श्री रवीन्द्र केळेकरको सौंपा। अुन्होने बडी योग्यता और प्रेमके साथ यह अनुवाद समय पर कर दिया। सारा अनुवाद मैं देख चुका हू और मुझे अुससे सतोष है।

गुजराती आवृत्तिके लिअे जो टिप्पणिया अध्यापक श्री नगीनदास पारेखने तैयार की थी, अुन्हीका अुपयोग अिस आवृत्तिके लिअे किया गया है। हमारे देशमे जहा सदर्भ-ग्रथोकी कमी है और अच्छे पुस्तकालय भी बहुत कम जगह पर पाये जाते है, विद्यार्थियोके लिअे ही नही, किन्तु सामान्य सस्कार-रसिक पाठकोके लिअे भी टिप्पणिया लाभदायक होती है।

अनुवाद और टिप्पणिया देखकर मेरे अन्तेवासी श्री नरेश मत्रीने अपने ही अुत्साहसे 'जीवनलीला' की सूची बनाकर दी। आजकलके जमानेमे सूचीकी आवश्यकता अनुक्रमणिकासे कम नही मानी जाती। पाठक तो सूची बनानेवालेको धन्यवाद दे ही देगे, क्योकि अनुक्रमणिका और सूची ग्रथकी दो आखे मानी जाती है।

मेरी अिस किताबके लिअे अिस तरह टिप्पणिया, और सूची देनेका अुत्साह दिखाकर नवजीवन प्रकाशन मदिरने विद्यानुरागी पाठकोके धन्यवाद अवश्य ही हासिल किये है।

जब तक मेरी यात्रा चलती है और भक्तियुक्त स्मृति काम देती है, मेरी किताबोका कलेवर बढनेवाला ही है। गुजराती 'जीवनलीला' के प्रकट होनेके बाद जीवनलीलामे सलग्न दसेक मौलिक हिन्दी लेख और तैयार हो गये, जिनको अिस हिन्दी आवृत्तिमे स्थान देकर मेरी 'जीवन'-भक्तिको मैने अद्यतन (up-to-date) बनाया है। अैसे नये लेखोको अनुक्रमणिकामे तारकाकित किया गया है। अब अिस विषयमे ज्यादा लिखनेका अुत्साह नही है, किन्तु भारतके नद-नदी, तालाब-सरोवर, प्रपात और समुद्र-तट, वार्षिक जल-प्रलय और मरुभूमिके मृगजल आदिका विविध वर्णन नये जमानेके नयी प्रतिभावाले अुदीयमान लेखकोकी कलमसे निकले हुअे लेखोमे पढनेकी अिच्छा या लालसा है। प० बनारसीदासजीने हिन्दी लेखकोका ध्यान अिस क्षेत्रकी ओर कबका आकर्षित किया है।

२६-१-'५८
स्वातत्र्यका गणतत्र-दिन

काका कालेलकर

२

वस्तुत पचमहाभूतोके सयोगसे ही जीवन अस्तित्वमें आता है। फिर भी हमारे लोगोने केवल पानीको ही जीवन कहा, जिसमे बडा रहस्य छिपा हुआ है। पृथ्वीके आसपास चाहे अुतना वायुमडल घिरा हुआ हो, और अिस 'वातके आवरण'के विना हम भले अेक क्षण भी जी न सके, फिर भी पृथ्वीका महत्त्व है अुसको घेरकर रहनेवाले अुदावरण (पानीका आवरण) के ही कारण। अुदकमे जो ताजगी है, जो जीवन-तत्त्व है, वह न तो अग्निकी ज्वालामें है, न पवन या आधी-तूफानमे है। पानी जहा बहता है वहा शीतलता प्रदान करता है, रेगिस्तानको भी वह अुपवन बनाता है, और प्राणिमात्र अनेक प्रकारके जीवन-प्रयोग कर सके अैसी सुविधाये प्रदान करता है। जलका स्वभाव चचल है, तरल है, अूर्मिल हे। और अिससे भी विशेष, वत्सल है।

प्रकृतिके निरीक्षणका आनद अनुभव करते हुअे पहाड, खेत, बादल और अुनके अुत्सवरूप सूर्योदय तथा सूर्यास्तके रग-चमत्कार मैंने देखे हैं। हरेककी खूबी अलग, हरेककी चमत्कृति अनोखी होती है, फिर भी पानीके प्रवाह या विस्तारमे से जो जीवन-लीला प्रकट होती है अुसके असरके समान दूसरा कोअी प्राकृतिक अनुभव नही है। पहाड चाहे जितना अुत्तुग या गगनभेदी हो, जब तक अुसके विशाल वक्षको चीरकर कोअी बडा या छोटा झरना नही कूदता, तब तक अुसकी भव्यता कोरी, सूनी और अलोनी ही मालूम होती है।

सस्कृतमे 'डलयो सावर्ण्यम्' न्यायसे जलको जड भी कहते होगे। किन्तु सच पूछा जाय तो जलको जड कहनेवालेकी बुद्धि ही जड होनी चाहिये। जडताका यदि कही अभाव है तो वह जलमे ही है।

पहाडको देखते ही अुसके शिखर तक चढनेका दिल होगा और सभव हुआ तो शिखर तक पैर चलेगे भी। पानीकी भी यही बात है। मनुष्य जब तक नदीका अुद्‌गम और मुख नही ढूढता, तब तक अुसे सतोष नही होता। पानीको देखते ही अुसके समीप जानेका दिल होता ही है। वह यदि पेय हो तो प्यास न होते हुअे भी अुसको

चखनेका मन होता है। स्नानसे बाह्य शरीर और पानसे शरीरके अदरका भाग पावन किये बगैर मनुष्यको तृप्ति ही नही होती। अन्य सहूलियत न हो तो वह पानीका आचमन करेगा, अथवा कमसे कम पानीकी दो बूदे आखोकी पलको पर जरूर लगायेगा।

हिमालयके ठडे प्रदेशमे जहा कपडे अुतारना भी मुश्किल है वहा हमारे धर्मनिष्ठ लोग पचस्नानी करते है। पानीमे अुगलिया डुबोकर अुनसे माथेको छूने पर अेक स्नान पूरा हुआ। दो आखोको छूने पर दूसरे दो स्नान हो गये। फिर वही पानीकी बूदे दो कर्णमूलोको लगानेसे पचस्नानी पूरी होती है। पानीके स्पर्शके विना मनुष्यको अैसा नही लगता कि वह पवित्र हो गया है।

मनुष्य जब मर जाता है, तब अुसके शरीरको जिस पृथ्वीसे वह आया अुसीके अुदरमें दफना देनेकी प्रथा सभी जगह है। किन्तु हम लोगोने अिसमे सशोधन किया। शरीरको सडने देनेके बजाय अुसका अग्नि-सस्कार करना हम अधिक श्रेयस्कर मानते है। अग्निको हम पावक कहते है। पावक यानी पवित्र करनेवाला। कोअी वस्तु चाहे जितनी गदी हो, सडी हुअी हो या अपवित्र हो, अग्नि-सस्कार होने पर वह पावन हो जाती है। अिसीलिअे हम अुपले, लकडिया, चदन, धूप और कपूर जैसे ज्वालाग्राही पदार्थ अेकत्र करके शरीरका अग्नि-सस्कार करते है।

यहा तक तो सब ठीक है, किन्तु जीवननि० सस्कृतिको अितनेसे सतोष नही हुआ। अग्नि-सस्कारके अतमे जो अस्थिया और भस्म बच जाते है, अुन अवशेषोका जब हम पवित्र जलाशयोमे विसर्जन करते है, तभी हमे परम सतोष होता है।

महात्माजीकी अस्थियो और चिताभस्मको हमने सारे देशमे जहा भी पवित्र जलाशय है वहा पहुचा दिया। हिमालयके अुस पार कैलाशके मार्गमें फैले हुअे मानस-सरोवरमे भी कुछ अवशेष छोड दिये गये। प्रयाग जैसे यज्ञस्थानमे विसर्जित करनेके बाद कुछ अवशेष समुद्र-किनारे भी ले गये, और खास तौर पर ध्यानमे रखनेकी बात तो यह है कि जिस अफ्रीका खडमें गाधीजीने सत्याग्रह जैसे दैवी बलकी खोज की और

अपना जीवन-कार्य शुरू किया, अुस अफ्रीकामें नील नदीके अुद्गमके प्रवाहमें भी अिन अस्थियोंका विसर्जन किया और अिस प्रकार पानीकी सर्वोपरि पवित्रताको स्वीकार किया।

अैसे पानीके पवित्र दर्शनका आनद जिनमे छलकता हो, अैसे ही वर्णन अिस सग्रहमें लिये गये है।

सग्रह करते समय मेरी 'स्मरण-यात्रा' में से अेक छोटासा अध्याय सिर अूचा करके पूछने लगा, "क्या आप मुझे अिसमें नही लेंगे?" अनवधानके लिअे अुससे माफी मागकर मैंने कहा, "जरूर, जरूर, तेरा भी जीवनलीलामें स्थान होगा।" मानसिक सृष्टि, कल्पना-सृष्टि और मायावी सृष्टि भी अतमें पार्थिव सृष्टिके साथ सृष्टि तो है ही। अत मनुष्यकी आखोंको और मृगोंकी आखोंको जो जलके समान मालूम होता है और जिसका प्रवाह अिन दोनोंको अपनी ओर खीचता है, वह भले प्राणवायु तथा अुद्जन-वायुके सयोगसे बना हुआ न हो, फिर भी जीवनलीलामें अुसका स्थान होना ही चाहिये — यों सोचकर छुटपनमें यात्रा करते समय देखा हुआ 'तेरदालका मृगजल' नामक वर्णन भी अिसमें ले लिया गया है।

सहाराके रेगिस्तानके आसपास दोपहरके समय यदि गया होता, तो अुस विराट् रेगिस्तानका और वहाके मृगजलका वर्णन अिसमें जरूर शामिल करता। किन्तु पश्चिम अफ्रीकासे अुत्तरकी ओर जाते हुअे समय और जान बचानेके लिअे सहाराका पूरा रेगिस्तान मैंने पार किया रातके अधेरेमें, और वह भी हवाअी जहाजकी मददसे। पश्चिम अफ्रीकाकी मध्ययुगीन नगरी 'कानो' से चलकर मध्यरात्रिके बाद ट्रिपोली पहुचा तब तक सारे समय टकटकी लगाकर मैंने सहाराको देखा। किन्तु अुस रात अधेरेमें अधेरेसे भिन्न कुछ दिखाअी नही दिया। सहाराका रेगिस्तान पार करने पर भी वहाका मृगजल नही देखा जा सका। जब हवाअी जहाजसे अुतरा, तब अितना ही कह सका

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाजनम् नभ ।

हमारे सस्कृत कवियोंके नदी-वर्णन और स्तोत्रो पर मैं मुग्ध हू। अिन स्तोत्रोंमें सबसे अधिक तो भक्ति ही नजर आती है। अुनका

शब्द-लालित्य असाधारण होता है। भाषा-प्रवाह मानो नदीके प्रवाहके साथ होड करता है। कही कही अेकाध शब्दमे या समासमे सुदर वर्णन भी आ जाता है। किन्तु कुल मिलाकर ये स्तोत्र वर्णन नही होते, बल्कि केवल माहात्म्य ही होते है।

आज हमें यथार्थ वर्णनोकी और शब्दचित्रोकी भूख है। अुनके साथ थोडा माहात्म्य और चाहे अुतना काव्य आ जाय तो वह अिष्ट ही होगा। किन्तु वर्णन पढते समय नदी या सरोवरके प्रत्यक्ष दर्शनका थोडा-बहुत सतोष तो मिलना ही चाहिये। वरना जैन पुराणोमे दिये गये नगरियोके वर्णन जैसी बात होगी। ये वर्णन कहीसे अुठाकर किसी भी शहरके साथ जोड दे तो कुछ बिगडेगा नही। अक्सर लेखक वर्णनकी दो-चार पक्तिया लिखकर अीमानदारीके साथ कहते है कि अमुक कहानीमे अमुक नगरीका जो वर्णन आता है अुसीको अुठाकर यहा रख दे। अैसे वर्णन न तो यथार्थ चित्रण माने जा सकते है, न माहात्म्य ही माने जा सकते है।

अेक पुराने हिन्दी कविने अेक पहाडी किलेका वर्णन किया है। अुसमे अश्वशालाके साथ गजशालाका भी वर्णन है। भोले कविको सदेह नही हुआ कि महाराष्ट्रके पहाड पर हाथी जायेंगे किस तरह! दूसरे अेक स्थान पर बगीचेके वर्णनमे ठडे मुल्कके और गरम मुल्कके, समुद्र-तटके और पहाड परके सब फल और फूलोके पेड-पौधोको अेकत्र कर दिया गया है! और अिसमे खूबी यह कि अिन तमाम फूलोके अेकसाथ खिलनेमे और फलोके अेकसाथ पकनेमे महीनो या अृतुओकी कोअी कठिनाअी नही खडी हुअी!

सौभाग्यसे अैसे साहित्य-प्रकार अब बद हो गये है। फिर भी आजके लेखक प्रत्यक्ष परिचयके अभावमे केवल सामान्य वर्णन लिखते है 'आकाशमें तारे चमक रहे थे', 'बगीचेमे तरह तरहके फूल खिले थे', 'जगलमे वृक्ष-लताओकी घनी बस्ती थी।' अैसे सामान्य वर्णन लिखकर ही वे सतोष मानते है। लेखक आकाशको और वहाके तारोको पहचानता न हो, अुनके नाम न जानता हो, कौनसे फूल किस अृतुमें खिलते है यह न जानता हो, किन जगलोमे किस तरहके

पेड अुगते है और किस तरहके नही अुगते आदि जानकारी अुसे न हो, तो फिर वह क्या करे? शब्द-वैभवको फैलाकर अनुभव-दारिद्र्य छिपानेका वह चाहे जितना प्रयत्न करे, फिर भी दारिद्र्य प्रकट हुअे विना नही रहता।

हमारे देशमे अब यात्राके साधन काफी बढ गये है और दिनो-दिन बढते जा रहे है। फोटोग्राफीकी कलाकी अितनी वृद्धि हुअी है कि अब वह ललित-कलाकी कोटिको पहुचनेका प्रयत्न कर रही हे। देश-विदेशकी भाषाओके यात्रा-वर्णन पढकर हमारी कल्पना अुद्दीपित हो सकती है, तो अब हम भारतीय भाषाओमे पाया जानेवाला केवल यात्रा-वर्णनका दारिद्र्य दूर क्यो न करे?

हमारे प्रिय-पूज्य देशको हम साहित्य द्वारा और दूसरे अनेक प्रकारोसे सजायेगे और नयी पीढीको भारत-भक्तिकी दीक्षा देगे।

देशका मतलब केवल जमीन, पानी और अुसके अूपरका आकाश ही नही है, वल्कि देशमे वसे हुअे मनुष्य भी है। यह जिस तरह हमे जानना चाहिये, अुसी तरह हमारी देशभक्तिमे केवल मानव-प्रेम ही नही वल्कि पशु-पक्षी जैसे हमारे स्वजनोका प्रेम भी शामिल होना चाहिये।

नदी, पहाड, पर्वतश्रेणी और अुसके अुत्तुग शिखरोसे तथा अिन सबके अूपर चमकनेवाले तारोसे परिचय बढाकर हमे भारत-भक्तिमे अपने पूर्वजोके साथ होड चलानी चाहिये। हमारे पूर्वजोकी साधनाके कारण गगाके समान नदिया, हिमालयके समान पहाड, जगह जगह फैले हुअे हमारे धर्मक्षेत्र, पीपल या वडके समान महावृक्ष, तुलसीके समान पौधे, गायके जैसे जानवर, गरुड या मोरके जैसे पक्षी, गोपीचदन या गेरूके जैसे मिट्टीके प्रकार—सव जिस देशमे भक्ति और आदरके विषय वन गये है, अुस देशमे सस्कारोकी और भावनाओकी समृद्धिको बढाना हमारे जमानेका कर्तव्य है।

दादाभाअी नौरोजी पुण्यतिथि, — **काका कालेलकर**
बम्बअी, १–६–'५६

सरिता-संस्कृति

जो भूमि केवल वर्षाके पानीसे ही सीची जाती है और जहा वर्षाके आधार पर ही खेती हुआ करती है, अुस भूमिको 'देव-मातृक' कहते हैं। अिसके विपरीत, जो भूमि अिस प्रकार वर्षा पर आधार नही रखती, बल्कि नदीके पानीसे सीची जाती है और निश्चित फसल देती है, अुसे 'नदी-मातृक' कहते हैं। भारतवर्षमें जिन लोगोने भूमिके अिस प्रकार दो हिस्से किये, अुन्होने नदीको कितना महत्त्व दिया था, यह हम आसानीसे समझ सकते हैं। पजाबका नाम ही अुन्होने सप्तसिधु रखा। गगा-यमुनाके बीचके प्रदेशोको अतर्वेदी (दोआब) नाम दिया। सारे भारतवर्षके 'हिन्दुस्तान' और 'दक्खन' जैसे दो हिस्से करनेवाले विन्ध्याचल या सतपुडेका नाम लेनेके बदले हमारे लोग सकल्प बोलते समय 'गोदावर्या दक्षिणे तीरे' या 'रेवाया अुत्तरे तीरे' अैसे नदीके द्वारा देशके भाग करते हैं। कुछ विद्वान ब्राह्मण-कुलोने तो अपनी जातिका नाम ही अेक नदीके नाम पर रखा है — सारस्वत। गगाके तट पर रहनेवाले पुरोहित और पडे अपने-आपको गगापुत्र कहनेमें गर्व अनुभव करते हैं। राजाको राज्यपद देते समय प्रजा जब चार समुद्रोका और सात नदियोका जल लाकर अुससे राजाका अभिषेक करती, तभी मानती थी कि अब राजा राज्य करनेके लिअे अधिकारी हो गया। भगवानकी नित्यकी पूजा करते समय भी भारतवासी भारतकी सभी नदियोको अपने छोटेसे कलशमें आकर बैठनेकी प्रार्थना अवश्य करेगा

> गगे! च यमुने! चैव गोदावरि! सरस्वति!।
> नर्मदे! सिंधु! कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु ॥

भारतवासी जब तीर्थयात्राके लिअे जाता है, तब भी अधिकतर वह नदीके ही दर्शन करनेके लिअे जाता है। तीर्थका मतलब है नदीका पैछल या घाट। नदीको देखते ही अुसे अिस बातका होश नही रहता कि जिस नदीमें स्नान करके वह पवित्र होता है अुसे अभिषेककी क्या आवश्यकता है? गगाका ही पानी लेकर गगाको अभिषेक किये बिना अुसकी भक्तिको सतोष नही मिलता। सीताजी जब रामचद्रजीके साथ

वनवासके लिअे निकल पडी, तब वे हर नदीको पार करते समय मनौती मनाती जाती थी कि वनवाससे सही-सलामत वापस लौटने पर हम तुम्हारा अभिषेक करेंगे। मनुष्य जब मर जाता है, तब भी अुसे वैतरणी नदीको पार करना पडता है। थोडेमें, जीवन और मृत्यु दोनोंमें आर्योंका जीवन नदीके साथ जुडा हुआ है।

अुनकी मुख्य नदी तो है गंगा। वह केवल पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि स्वर्गमें भी बहती है और पातालमें भी बहती है। अिसीलिअे वे गंगाको त्रिपथगा कहते हैं।

पाप धोकर जीवनमें आमूलाग्र परिवर्तन करना हो, तब भी मनुष्य नदीमें जाता है और कमर तक पानीमें खडा रहकर संकल्प करता है, तभी अुसको विश्वास होता है कि अब अुसका संकल्प पूरा होनेवाला है। वेदकालके ऋषियोंसे लेकर व्यास, वाल्मीकि, शुक, कालिदास, भवभूति, क्षेमेंद्र, जगन्नाथ तक किसी भी संस्कृत कविको ले लीजिये, नदीको देखते ही अुसकी प्रतिभा पूरे वेगसे बहने लगती है। हमारी किसी भी भाषाकी कवितायें देख लीजिये, अुनमें नदीके स्तोत्र अवश्य मिलेंगे। और हिन्दुस्तानकी भोली जनताके लोकगीतोंमें भी आपको नदीके वर्णन कम नहीं मिलेंगे।

गाय, बैल और घोडे जैसे अुपयोगी पशुओंकी जातियां तय करते समय भी हमारे लोगोंको नदीका ही स्मरण होता है। अच्छे अच्छे घोडे सिंधुके तट पर पाले जाते थे, अिसलिअे घोडोंका नाम ही सैंधव पड गया। महाराष्ट्रके प्रख्यात टट्टू भीमा नदीके किनारे पाले जाते थे, अतः वे भीमथडीके टट्टू कहलाये। महाराष्ट्रकी अच्छा दूध देनेवाली और सुंदर गायोंको अंग्रेज आज भी 'कृष्णावेली ब्रीड' कहते हैं।

जिस प्रकार ग्राम्य पशुओंकी जातिके नाम नदी परसे रखे गये हैं, अुसी प्रकार कअी नदियोंके नाम पशु-पक्षियों परसे रखे गये हैं। जैसे गो-दा, गो-मती, साबर-मती, हाथ-मती, बाघ-मती, सारस्वती, चर्मण्वती आदि।

महादेवकी पूजाके लिअे प्रतीकके रूपमें जो गोल चिकने पत्थर (बाण) अुपयोगमें लाये जाते हैं, वे नर्मदाके ही होने चाहियें। नर्मदाका

माहात्म्य अितना अधिक है कि वहाके जितने ककर अुतन सव शकर होते है। और वैष्णवोके शालिग्राम गडकी नदीसे आते है।

तमसा नदी विश्वामित्रकी वहन मानी जाती है, तो कालिन्दी यमुना प्रत्यक्ष कालभगवान यमराजकी वहन है।

प्रत्येक नदीका अर्थ हे सस्कृतिका प्रवाह। प्रत्येककी खबी अलग है। मगर भारतीय सस्कृति विविधतामे से अेकताको अुत्पन्न करती है। अत सभी नदियोको हमने सागर-पत्नी कहा है। समुद्रके अनेक नामोमें अुसका सरित्पति नाम वडे महत्त्वका है। समुद्रका जल अिसी कारण पवित्र माना जाता है कि सव नदिया अपना अपना पवित्र जल सागरको अर्पण करती है। 'सागरे सर्वं तीर्थानि'।

जहा दो नदियोका सगम होता है, अुस स्थानको प्रयाग कहकर हम पूजते है। यह पूजा हम केवल अिसीलिअे करते है कि सस्कृतियोका जव मिश्रण या सगम होता है तव अुसे भी हम शुभ-सगम समझना सीखें। स्त्री-पुरुषके वीच जव विवाह होता है तव वह भिन्न-गोत्री ही होना चाहिये, अैसा आग्रह रखकर हमने यही सूचित किया है कि अेक ही अपरिवर्तनशील सस्कृतिमे सडते रहना श्रेयस्कर नही है। भिन्न भिन्न सस्कृतियोके बीच मेलजोल पैदा करनेकी कला हमे आनी ही चाहिये। 'लकाकी कन्या घोघा (सौराष्ट्र) के लडकेके साथ विवाह करती है', तभी अुन दोनोमे जीवनके सव प्रश्नोके प्रति अुदार दृष्टिसे देखनेकी शक्ति आती है। भारतीय सस्कृति पहलेसे ही सगम-सस्कृति रही है। हमारे राजपुत्र दूर दूरकी कन्याओसे विवाह करते थे। केकय देशकी कैकेयी, गाधारकी गाधारी, कामरूपकी चित्रागदा, ठेट दक्षिणकी मीनाक्षी मीनलदेवी, विलकुल विदेशसे आयी हुअी अुर्वशी और महाश्वेता — अिस तरह कअी मिसाले वताअी जा सकती है। आज भी राजा-महाराजा यथासभव दूर दूरकी कन्याओसे विवाह करते हैं। हमने नदियोसे ही यह सगम-सस्कृति सीखी है।

अपनी अपनी नदीके प्रति हम सच्चे रहकर चलेंगे, तो अतत समुद्रमे पहुच जायेगे। वहा कोअी भेदभाव नही रह सकता। सव कुछ अेकाकार, सर्वाकार और निराकार हो जाता है। 'सा काष्ठा सा परा गति'।

भारत का सबसे बडा समाचार पत्र समूह

2010

पा 8, निर्दलीय 1

जयपुर

हजारी लाल नागर

उम्र 38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

रिश्तेदार

देराण्या जेठाण्या मिल गोरसंट गृहिये

वनवासके लिअे निकल पडी, तब वे हर नदीको पार करते समय मनौती मनाती जाती थीं कि वनवाससे सही-सलामत वापस लौटने पर हम तुम्हारा अभिषेक करेंगे। मनुष्य जब मर जाता है, तब भी अुसे वैतरणी नदीको पार करना पडता है। थोडेमें, जीवन और मृत्यु दोनोंमें आर्योंका जीवन नदीके साथ जुडा हुआ है।

अुनकी मुख्य नदी तो है गगा। वह केवल पृथ्वी पर ही नहीं, बल्कि स्वर्गमें भी बहती है और पातालमें भी बहती है। अिसीलिअे वे गगाको त्रिपथगा कहते हैं।

पाप धोकर जीवनमें आमूलाग्र परिवर्तन करना हो, तब भी मनुष्य नदीमें जाता है और कमर तक पानीमें खडा रहकर सकल्प करता है, तभी अुसको विश्वास होता है कि अब अुसका सकल्प पूरा होनेवाला है। वेदकालके ऋषियोंसे लेकर व्यास, वाल्मीकि, शुक, कालिदास, भवभूति, क्षेमेंद्र, जगन्नाथ तक किसी भी सस्कृत कविको ले लीजिये, नदीको देखते ही अुसकी प्रतिभा पूरे वेगसे बहने लगती है। हमारी किसी भी भाषाकी कविताअें देख लीजिये, अुनमें नदीके स्तोत्र अवश्य मिलेंगे। और हिन्दुस्तानकी भोली जनताके लोकगीतोंमें भी आपको नदीके वर्णन कम नहीं मिलेंगे।

गाय, बैल और घोडे जैसे अुपयोगी पशुओंकी जातियां तय करते समय भी हमारे लोगोंको नदीका ही स्मरण होता है। अच्छे अच्छे घोडे सिंधुके तट पर पाले जाते थे, अिसलिअे घोडोंका नाम ही सैधव पड गया। महाराष्ट्रके प्रख्यात टट्टू भीमा नदीके किनारे पाले जाते थे, अत वे भीमथडीके टट्टू कहलाये। महाराष्ट्रकी अच्छा दूध देनेवाली और सुदर गायोंको अग्रेज आज भी 'कृष्णावेली ब्रीड' कहते हैं।

जिस प्रकार ग्राम्य पशुओंकी जातिके नाम नदी परसे रखे गये हैं, अुसी प्रकार कअी नदियोंके नाम पशु-पक्षियों परसे रखे गये हैं। जैसे गो-दा, गो-मती, साबर-मती, हाथ-मती, वाघ-मती, सारस्वती, चर्मण्वती आदि।

महादेवकी पूजाके लिअे प्रतीकके रूपमें जो गोल चिकने पत्थर (बाण) अुपयोगमें लाये जाते हैं, वे नर्मदाके ही होने चाहियें। नर्मदाका

माहात्म्य अितना अधिक है कि वहांके [illegible]
होते हैं। और वैष्णवोंके शालिग्राम गडकी नदीमें [illegible]

तमसा नदी विश्वामित्रकी बहन मानी जाती है [illegible]
यमुना प्रत्यक्ष कालभगवान यमराजकी बहन है।

प्रत्येक नदीका अर्थ है सस्कृतिका [illegible]
अलग है। मगर भारतीय सस्कृति [illegible]
है। अत सभी नदियोंको हमने सागर-पत्नी [illegible]
समका सरित्पति नाम बड महत्त्वका है। [illegible]
पवित्र माना जाता है कि सब नदियां [illegible]
अर्पण करती हैं। 'सागरे सर्व तीर्थानि'।

जहां दो नदियोंका सगम होता है [illegible]
हम पूजते हैं। यह पूजा हम केवल [illegible]
जब मिश्रण या सगम होता है तब [illegible]
सीखें। स्त्री-पुरुषके बीच जब विवाह होता है [illegible]
होना चाहिये, अैसा आग्रह रखकर [illegible]
ही अपरिवर्तनशील सस्कृतिमें [illegible]
भिन्न सस्कृतियोंके बीच मलजोल पैदा [illegible]
चाहिये। 'लडका कन्या घाना (? [illegible]
करती है', तभी अुन दोनोंमें जीवन [illegible]
रखनेकी शक्ति आती है। भारतीय सस्कृति [illegible]
रहा है। हमारे राजपुत्र [illegible]
केकय देशकी कैकेयी, गाधारकी गाधारी [illegible]
दक्षिणकी मीनाक्षी मातलकी बिलकुल [illegible]
और महाश्वेता — अिस तरह [illegible]
आज भी राजा-महाराजा यथासभव [illegible]
करते हैं। हमने नदियोंसे ही यह [illegible]

अपनी अपनी नदीके प्रति हम [illegible]
पहुंच जायेंगे। वहां कोअी भेदभाव नहीं रह [illegible]
अेकाकार और निराकार हो जाता है। '[illegible]

माहात्म्य अितना अधिक है कि वहाके जितने ककर अुतन सब गकर होते है। और वैष्णवोके शालिग्राम गडकी नदीमे आते है।

तमसा नदी विश्वामित्रकी वहन मानी जाती है, तो कालिन्दी यमुना प्रत्यक्ष कालभगवान यमराजकी वहन ह।

प्रत्येक नदीका अर्थ है सस्कृतिका प्रवाह। प्रत्येककी खवी अलग है। मगर भारतीय मस्कृति विविधतामे से अेकताको अुत्पन्न करती है। अत सभी नदियोको हमने सागर-पत्नी कहा है। समुद्रके अनेक नामोमें अुसका सरित्पति नाम वडे महत्त्वका है। समुद्रका जल अिमी कारण पवित्र माना जाता है कि मव नदिया अपना अपना पवित्र जल सागरको अर्पण करती है। 'सागरे सर्व तीर्थानि'।

जहा दो नदियोका मगम होता है, अुस स्थानको प्रयाग कहकर हम पूजते है। यह पूजा हम केवल अिसीलिअे करते है कि सस्कृतियोका जव मिश्रण या मगम होता है तव अुसे भी हम शुभ-सगम समझना मीखे। स्त्री-पुरुषके वीच जव विवाह होता हे तव वह भिन्न-गोत्री ही होना चाहिये, अैसा आग्रह रखकर हमने यही सूचित किया है कि अेक ही अपरिवर्तनशील मस्कृतिमें सडते रहना श्रेयस्कर नही है। भिन्न भिन्न सस्कृतियोके वीच मेलजोल पैदा करनेकी कला हमे आनी ही चाहिये। 'लकाकी कन्या घोघा (मौराष्ट्र) के लडकेके माथ विवाह करती है', तभी अुन दोनोमे जीवनके सव प्रश्नोके प्रति अुदार दृष्टिसे देखनेकी शक्ति आती है। भारतीय मस्कृति पहलेमे ही सगम-मस्कृति रही है। हमारे राजपुत्र दूर दूरकी कन्याओमे विवाह करते थे। केकय देशकी कैकेयी, गाधारकी गाधारी, कामरूपकी चित्रागदा, ठेट दक्षिणकी मीनाक्षी मीनलदेवी, विलकुल विदेशसे आयी हुअी अुर्वशी और महाश्वेता — अिस तरह कअी मिसाले वताअी जा सकती है। आज भी राजा-महाराजा यथासभव दूर दूरकी कन्याओसे विवाह करते है। हमने नदियोसे ही यह मगम-सस्कृति सीखी है।

अपनी अपनी नदीके प्रति हम सच्चे रहकर चलेगे, तो अतत समुद्रमे पहुच जायेगे। वहा कोअी भेदभाव नही रह सकता। सव कुछ अेकाकार, सर्वाकार और निराकार हो जाता है। 'सा काष्ठा सा परा गति'।

नदी-मुखेनैव समुद्रम् आविशेत्

सुबह या शामके समय नदीके किनारे जाकर आरामसे बैठने पर मनमें तरह तरहके विचार आते है। बालूका शुभ्र विशाल पट हमेशा वहीका वही होता है, फिर भी वहाका हरअेक कण पवन या पानीसे स्थानभ्रष्ट होता हे। अितनी सारी बालू कहासे आती ह और कहा जाती है? बालूके पट पर चलनेसे अुसमे पावोके स्पष्ट या अस्पष्ट निशान बनते हैं। किन्तु घडी दो घडी हवा बहने पर अुनका 'नामोनिशान' भी नही रहता। दो किनारोकी मर्यादामें रहकर नदी बहती है, वह कभी रुकती नही। पानी आता है और जाता हे, आता है और जाता है। छुटपनमे मनमें विचार आता था कि 'मध्यरात्रिके समय यह पानी सो जाता होगा और सुबह सबसे पहले जागकर फिरसे बहने लगता होगा। सूरज, चाद और अनगिनत तारे जिस प्रकार विश्राति लेनेके लिअे पश्चिमकी ओर अुतरते है, अुसी प्रकार यह पानी भी रातको सो जाता होगा। विश्रातिकी हरेकको आवश्यकता रहती है।' बादमे देखा, नही, नदीके पानीको विश्रातिकी आवश्यकता नही है। वह तो निरन्तर बहता ही रहता है।

नदीको देखते ही मनमें विचार आता है—यह आती कहासे है और जाती कहा तक है? यह विचार या यह प्रश्न सनातन है। नदीका आदि और अत होना ही चाहिये। नदीको जितनी बार देखते है, अुतनी ही बार यह सवाल मनमे अुठता हे। और यह सवाल ज्यो ज्यो पुराना होता जाता है, त्यो त्यो अधिक गभीर, अधिक काव्यमय और अधिक गूढ बनता जाता है। अतमे मनसे रहा नही जाता, पैर रुक नही पाते। मन अेकाग्र होकर प्रेरणा देता है और पैर चलने लगते हे। आदि और अत ढूढना—यह सनातन खोज हमे शायद नदीसे ही मिली होगी। अिसीलिअे हम जीवन-प्रवाहको भी नदीकी अुपमा देते आये है। अुपनिषद्कार और अन्य भारतीय कवि, मैथ्यू आर्नोल्ड जैसे युरोपियन कवि और रोमा रोला जैसे अुपन्यासकार जीवनको नदीकी ही अुपमा

[illegible] है। अिस ससारका प्रथम यात्री है नदी। [illegible] नदीके अुद्गम, नदीके सगम और [illegible] स्थान माना है।

जीवनके प्रतीकके समान नदी कहास [illegible] है? शून्यमें से आती है और अनतमें समा [illegible] है। [illegible] सूक्ष्म किन्तु प्रबल, और अनतक माना है [illegible] और अनत दोनो अेकसे गट है दोना [illegible] है। [illegible] शून्यम स अनत—यह सनातन लीला है। [illegible] समा जानेक लिअे जिस प्रकार परब्रह्म [illegible] प्रकार कारुण्यसे प्रेरित होकर अनत [illegible] सामने खडा रहता है। जैसे जैसे हमारा [illegible] वैसे वैसे शून्यका विकास होता जाता है [illegible] सहन न होनसे वह मर्यादाका अुल्लघन [illegible] बन जाता है—बिंदुका सिंधु बन जाता है।

मानव-जीवनकी भी यही दशा है। [illegible] जातिसे राष्ट्र, राष्ट्रसे मानव्य और मानव्य [illegible]— हृदयका भावनाओका विकास होता जाता है। [illegible] प्रथम स्वजनोका हृदय समझ लेते है और [illegible] कर लेते है। गावसे प्रान्त, प्रान्तसे [illegible] 'स्व'का विकास करते करते 'सर्व'में [illegible] है

नदीका और जीवनका क्रम समान [illegible] है, [illegible] [illegible]ती है और अपनी कूल मर्यादाका [illegible] करती है। और अतमें नामरूपको [illegible] है। [illegible] होने पर भी वह [illegible] [illegible]ती है। यह है नदीका क्रम। जीवनका [illegible] यही क्रम है।

क्या अिस परसे हम जीवनदायी [illegible]

१९२२

देते है। अिस ससारका प्रथम यात्री है नदी। अिसीलिअे पुराने यात्री लोगोने नदीके अुद्‌गम, नदीके सगम और नदीके मुखको अत्यत पवित्र स्थान माना है।

जीवनके प्रतीकके समान नदी कहासे आती है और कहा तक जाती है? शून्यमें से आती है और अनतमें समा जाती है। शून्य यानी अत्यल्प, सूक्ष्म किन्तु प्रवल, और अनतके मानी है विशाल और शात। शून्य और अनत, दोनो अेकसे गूढ है, दोनो अमर है। दोनो अेक ही है। शून्यमें से अनत — यह सनातन लीला है। कौशल्या या देवकीके प्रेममे समा जानेके लिअे जिस प्रकार परब्रह्मने वालरूप धारण किया, अुसी प्रकार कारुण्यसे प्रेरित होकर अनत स्वय शून्यरूप धारण करके हमारे सामने खडा रहता है। जैसे जैसे हमारी आकलन-शक्ति वढती है, वैसे वैसे शून्यका विकास होता जाता है और अपना ही विकास-वेग सहन न होनसे वह मर्यादाका अुल्लघन करके या अुसे तोडकर अनत वन जाता है — विदुका सिधु वन जाता है।

मानव-जीवनकी भी यही दशा है। व्यक्तिसे कुटुव, कुटुवसे जाति, जातिसे राष्ट्र, राष्ट्रसे मानव्य और मानव्यसे भूमा विश्व — अिस प्रकार हृदयकी भावनाओका विकास होता जाता है। स्व-भाषाके द्वारा हम प्रथम स्वजनोंका हृदय समझ लेते है और अतमे सारे विश्वका आकलन कर लेते है। गावसे प्रान्त, प्रान्तसे देश और देशसे विश्व, अिस प्रकार हम 'स्व' का विकास करते करते 'सर्व' में समा जाते है।

नदीका और जीवनका क्रम समान ही है। नदी स्वधर्म-निष्ठ रहती है और अपनी कूल-मर्यादाकी रक्षा करती है, अिसीलिअे प्रगति करती है। और अतमे नामरूपको त्यागकर समुद्रमे अस्त हो जाती है। अस्त होने पर भी वह स्थगित या नष्ट नही होती, चलती ही रहती है। यह है नदीका क्रम। जीवनका और जीवन्मुक्तिका भी यही क्रम है।

क्या अिस परसे हम जीवनदायी शिक्षाके क्रमके वारेमे वोध लेगे?
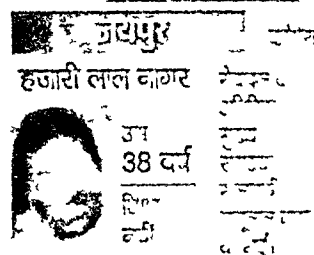
१९२२

8, निर्दलीय 1

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

अुपस्थान*

भिन्न भिन्न अवसरो पर भारतवर्षकी जिन नदियोके दर्शन मैंने किये, अुनमे से कुछ नदियोका यहा स्मरण किया गया है। यहा मेरा अुद्देश भूगोलमे दी जानेवाली जानकारीका सग्रह करनेका नही है, न नदियोका हमारे व्यापार-वाणिज्य पर होनेवाला असर बतानेका यहा प्रयत्न है। यह तो केवल हमारे देशकी लोकमाताओका भक्तिपूर्वक किया हुआ नये प्रकारका अुपस्थान है।

हमारे पूर्वजोकी नदी-भक्ति लोक-विश्रुत है। आज भी वह क्षीण नही हुअी है। यात्रियोकी छोटी-बडी नदिया तीर्थस्थानोकी ओर बहकर यही सिद्ध करती है कि वह प्राचीन भक्ति आज भी जैसीकी वैसी जाग्रत है।

भक्त-हृदय भक्तिके अिन अुद्गारोका श्रवण करके सतुष्ट हो। युवकोमे लोकमाताओके दर्शन करनेकी और विविध ढगसे अुनका स्तन्यपान करके सस्कृति-पुष्ट होनेकी लगन जाग्रत हो।

*   *   *

हिन्दुस्तानके सभी सुन्दर स्थलोका वर्णन करना मानव-शक्तिके बाहरकी बात है। खुद भगवान व्यास जब भारतकी नदियोके नाम सुनाने बैठे, तब अुनको भी कहना पडा कि जितनी नदिया याद आयी अुन्हीका यहा नाम-सकीर्तन किया गया है। बाकीकी असख्य नदिया रह गयी है।

मेरी देखी हुअी नदियोमें से बन सके अुतनी नदियोका स्मरण और वर्णन करके पावन होनेका मेरा सकल्प था। आज जब अिस भक्ति-कुसुमाजलिको देखता हू, तो मनमें विषाद पैदा होता है कि कृतज्ञता व्यक्त हो सके अुतनी नदियोका भी अुपस्थान मै कर नही सका हू। जिनका वर्णन नही कर सका, अुन्ही नदियोकी सख्या अधिक है। जिस प्रातमे मै करीब पाव सदी तक रहा, अुस गुजरातकी नदियोका वर्णन भी मैने नही किया है। नर्मदा और साबरमतीके बारेमें तो अभी अभी कुछ लिख सका हू। ताप्ती या तपतीके बारेमें कुछन ही लिखा। अुसका परिताप मनमे है ही। अिस नदीका अुद्गम-स्थान मध्यप्रातमें बैतुलके पास है। बरहानपुर और भुसावल

* मूल गुजराती पुस्तक 'लोकमाता' की प्रस्तावनासे।

होकर वह आगे बढती है। अुसकी मदद लेकर अेक वार मै सूरतसे हजीरा तक हो आया हू। ताप्तीसे भगवान सूर्यनारायणके प्रेमके बारेमें पूछा जा सकता है और अग्रेजोने व्यापारके बहाने सूरतमें कोठी किस प्रकार डाली और बाजीरावने यहीं महाराष्ट्रका स्वातत्र्य अग्रेजोको कब सौप दिया, अिसके बारेमे भी पूछा जा सकता है।

गोधरा जाते समय जो छोटी-सी मही नदी मैने देखी थी, वही खभातसे कावी बदरगाह तक महापक कीचडका विस्तार किस तरह फैला सकती है, यह देखनेका सौभाग्य भी मुझे प्राप्त हुआ है। पूर्वकी महानदी और पश्चिमकी मही नदी, दोनोका कार्य विशेष प्रकारका हे। सूर्या, दमणगगा, कोलक, अबिका, विश्वामित्री, कीम आदि अनेक पश्चिम-वाहिनी नदियोका मीठा आतिथ्य मैने कभी न कभी चखा है। अुन्हे यदि अजलि अर्पण न करू तो मै कृतघ्न माना जाअूगा। और जिस आजीके किनारे महात्माजीने छुटपनकी शरारते की थी, वह तो खास तौर पर मेरी अजलिकी अधिकारिणी है। वढवाणकी भोगावोके बारेमे मैने शायद कही लिखा होगा। किन्तु वह भोगावोकी अपेक्षा राणकदेवीके स्मरणके तौर पर ही होगा।

गुजरातके बाहर नजर घुमाकर दूसरी नदियोका स्मरण करता हू, तब प्रथम याद आता हे सबसे बडा ब्रह्मपुत्र। अुसका अुद्गम-स्थान तो हिमालयके अुस पार मानस-सरोवरके प्रदेशमें है। हिमालयके अुत्तरकी ओर बहते हुअे पानीकी अेक अेक बूद अिकट्ठी करके वह हिमालयकी भारी दीवार पार करता हे और पहाडो तथा जगलोके अज्ञात प्रदेशोमे बहता हुआ आसामकी ओर अुन्हे छोड देता है। बादमे सदिया, डिब्रुगढ, तेजपुर, गौहाटी, धुब्री आदि स्थानोको पावन करता हुआ वह बगालमें अुतरता हे। और अुमे गगासे मिलना है, अिसी कारण वह कुछ दूरी तक यमुना नाम धारण करते हुअे आगे पद्मा बनता है। 'अितिहासके अुषाकाल'से लेकर जापानियोके अभी अभीके आक्रमण तकका सारा अितिहास ब्रह्मपुत्रको विदित हे। किन्तु अिस ताजे अितिहासके कअी प्रकरण तो मणिपुरकी अिम्फाल नदी ही बता सकती है। फिर भी अिस नदीको पूछने पर वह कहेगी कि मुझसे

पूछनेके वदले यह सव आपकी अैरावतीकी सखी छिंदवीनसे ही पूछ लीजिये। और मणिपुरकी ओरसे भागकर आये हुअे लोगोका कुछ अितिहास तो सुर्मा-घाटीकी वराक नदीसे ही पूछना होगा।

मैंने नदिया तो कअी देखी हैं। किन्तु जिसकी गूढ-गामिता और चिंता-रहित लापरवाही पर मैं सवसे अधिक मुग्ध हुआ हू, वह है कालीम्पोग तरफकी तीस्ता नदी। कैसा तो अुसका अुन्माद! और कैसा अुसका आत्म-गौरवका भान!

अुत्कलमे मैं अनेक वार हो आया हू। वहाकी महानदी, काटजुडी और काकपेया तो है ही। किन्तु वरी-कटकमे वापस लौटते समय खर-स्रोताके किनारे देखा हुआ सूर्योदय और अन्य अवसर पर सुना हुआ अृपिकुल्या नदीका अितिहास तथा अुसके किनारेका सौदर्य मैं भला कैसे भूल सकता हू? जौगढका अशोकका प्रख्यात शिलालेख देखने गया था, तव मैंने अृपिकुल्याके दर्शन किये थे, और यदि मैं भलता न होअू तो धवलीका हाथीवाला शिलालेख देखने गया था, तव अेक नदीकी दो नदिया वनती हुअी मैंने देखी थी। दो नदियोका सगम देखना अेक वात है। दो नदिया अिकट्ठी होकर अपनी जलराशि वढाती है और सभूय-समुत्थानके सिद्धातके अनुसार वडा व्यापार करती हैं। यह तो शक्ति वढानेका प्रयास है। किन्तु अेक ही नदी दूरसे आकर जव देखती हे कि दोनो ओरके प्रदेशको मेरे जलकी अुतनी ही आवश्यकता है, तव भला वह किसका पक्षपात करे? अपना जल वाटकर जव दो प्रवाहोमें वह वहने लगती है, तव दो वच्चोकी माताके जैसी मालूम होती है। अुसको विशेष भक्तिपूर्वक प्रणाम किये विना रहा नही जा सकता।

क्या आपने काली नदीके सफेद होनेकी वात कभी सुनी हे? छुटपनमें कारवारमें मैंने अेक काली नदी देखी थी। वह समुद्रसे मिलती है तव तक काली ही काली रहती है। किन्तु गोवाकी ओर अेक काली नदी है, जो सागरसे मिलनेकी आतुरताके कारण पहाडकी चोटी परसे नीचे अिस तरह कूदती है कि अुसका दूधके समान काव्यमय सफेद प्रपात वन जाता है। अुसका नाम ही दूधसागर पड गया है। अिस दूधसागरका दृश्य अैसा है, मानो किसी लडकीने नहानेके वाद सुखानेके

लिअ अपने वाल फैलाये हो। शरावतीके [illegible] तीन वार किया है, तो दूधसागरके गभीर [illegible] दस वार करना चाहिये था।

हिमालय जाते समय देखी हुअी रामगगा [illegible] पारसे आनेवाली सरयू घाघराका वर्णन [illegible] लका (सीलोन) मे देखी हुअी सीतावाका [illegible] वारेमे भी मैंने कहा लिखा है? मध्यप्रातमें [illegible] मैंने लिखा और वेत्रवतीका छोड दिया, [illegible] अुज्जयिनी जाते समय देखी हुअी शिप्रा [illegible] कालिदास ही मुझे शाप देगे। मुरादावादमें [illegible] करते ही द्वारकाकी गोमतीका स्मरण हो [illegible] सिधकी सिधुके साथ मध्यभारतकी नन्हीं-सी [illegible]

काठियावाडमे चोरवाडके पास समुद्रमे [illegible] रुक जानेवाला मेगल नदी मैंने देखा [illegible] अेक नदी अड्यार मद्रासके पास मैंने देखी है, [illegible] नहा। अड्यार नदी समुद्रकी ओर हृदय-[illegible] आती है और समुद्र चिढकर अुसके सामने [illegible] कर देता है। खडिताका यह दृश्य [illegible] वरसो तक मेरे मन पर रहा है।

अिससे तो केरलके 'वैक वॉटर' [illegible] समानान्तर, किनारे किनारे अेक लवी [illegible] समुद्रसे कह रही हो कि तुम्हारे खारे पानीको [illegible] भूमि तक पहुचने नही दूगी।

अिसका अेक छोटा सा नमूना हमें [illegible] है। जुहूके नारियलवाले प्रदेशके पश्चिममें [illegible] कभी कभी पानी फैला हुआ दीख [illegible] है। [illegible] हमेशाकी हो जाये और पानी यदि [illegible] मील तक फैल जाये, तो ववअीके लोगोको [illegible] कुछ खयाल हो सकेगा। किन्तु केरलके [illegible] प्रत्यक्ष देखे विना ध्यानमें नही आयेगा।

लिअे अपने बाल फैलाये हो। शरावतीके जोगके प्रपातका वर्णन मैंने तीन बार किया है, तो दूधसागरके गभीर ललित काव्यका मनन मुझे दस बार करना चाहिये था।

हिमालय जाते समय देखी हुअी रामगगाका और हिमालयके अुस पारसे आनेवाली सरयू घाघराका वर्णन तो रह ही गया है। किन्तु लका (सीलोन) मे देखी हुअी सीतावाका और अन्य दो तीन गगाओके बारेमे भी मैंने कहा लिखा है? मध्यप्रातमे देखी हुअी धसानके बारेमे मैंने लिखा और वेत्रवतीको छोड दिया, यह भला कैसे चल सकता है? अुज्जयिनी जाते समय देखी हुअी शिप्रा नदीको स्मरणाजलि न दू, तो कालिदास ही मुझे शाप देगे। मुरादाबादमे देखी हुअी गोमतीका स्मरण करते ही द्वारकाकी गोमतीका स्मरण हो आता है और अिसी न्यायसे सिधकी सिधुके साथ मध्यभारतकी नन्ही-सी सिधुकी भी याद हो आती है।

काठियावाडमे चोरवाडके पास समुद्रसे मिलने जाते जाते बीचमे ही रुक जानेवाली मेगल नदी मैंने देखी नही है। किन्तु अिसी प्रकारकी अेक नदी अड्यार मद्रासके पास मैंने देखी है, जिसकी समुद्रसे बनती नही। अड्यार नदी समुद्रकी ओर हृदय-समृद्धिका खाद या गाद लेकर आती है और समुद्र चिढकर अुसके सामने बालूका अेक बाध खडा कर देता है। खडिताका यह दृश्य अितना करुण है कि अुसका असर बरसो तक मेरे मन पर रहा है।

अिससे तो केरलके 'बैक वॉटर' अच्छे है। वहा समुद्रके समानान्तर, किनारे किनारे अेक लबी नदी फैली हुअी है, मानो समुद्रसे कह रही हो कि तुम्हारे खारे पानीके तूफान मै भारतकी भूमि तक पहुचने नही दूगी।

अिसका अेक छोटा-सा नमूना हमे जुहूकी ओर देखनेको मिलता है। जुहूके नारियलवाले प्रदेशके पश्चिममे समुद्र है, और पूर्वकी ओर कभी कभी पानी फैला हुआ दीख पडता है। यही स्थिति यदि हमेशाकी हो जाये और पानी यदि अुत्तर-दक्षिणकी ओर सौ पचास मील तक फैल जाये, तो बबअीके लोगोको केरलके 'बैक वॉटर्स' का कुछ खयाल हो सकेगा। किन्तु केरलके अुस हिस्सेका सृष्टि-सौन्दर्य प्रत्यक्ष देखे बिना ध्यानमे नही आयेगा।

पा 8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

36 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

रिश्तेदार

सिंधके कमल-सुदर मचर सरोवरके वारेमें मैंने थोडा-सा लिखा है। किन्तु अुत्कलमें देखे हुअे चिल्का सरोवरके वारेमे लिखना अभी वाकी है। लॉर्ड कर्जनने अेक वार कहा था कि "हिन्दुस्तानमें श्रेष्ठ सौदर्य-धाम यदि कोअी हो तो वह चिल्का सरोवर ही है।" स्वीडन और नार्वेकी समुद्र-शाखाके चित्र जव जव मै देखता हू, तव तव मुझे अेक वार देखे हुअे चिल्का सरोवरका स्मरण हुअे विना नही रहता। अुत्कलके अेक कविने अिस सरोवर पर अेक सुन्दर सुदीर्घ काव्य लिखा है।

* * *

नदियो और सरोवरोंके वारेमे लिखनेके वाद जीवन-तर्पण पूरा करनेके लिये मुझे हिन्दुस्तान, ब्रह्मदेश और सीलोनके किनारे किये हुअे विशिष्ट समुद्र-दर्शनोका वर्णन भी लिख डालना चाहिये। कराची, कच्छ और काठियावाडसे लेकर वम्वअी, दाभोळ, कारवार या गोकर्ण तकका समुद्र-तट, अुसके वाद कालिकटसे लेकर रामेश्वरम् और कन्याकुमारी तकका दक्षिणका किनारा, वहासे अूपर पाडिचेरी, मद्रास, मछलीपट्टम्, विजगापट्टम् आदि सूर्योदयका पूर्व किनारा और अतमे गोपालपुर, चादीपुर, कोणार्क और पुरी-जगन्नाथसे लेकर ठेठ हीरावदर तकका दक्षिणाभिमुख समुद्र-तट जव याद आता है, तव कमसे कम पचास-पचहत्तर दृश्य अेक ही साथ नजरके सामने विश्वरूप दर्शनकी तरह अद्भुत ज्वार-भाटा चलाते हैं। सीलोन और रगूनके दृश्य तो अपना व्यक्तित्व रखते ही हैं। दिलमे यह सारा आनद जितना भरा हुआ है कि वाणीके द्वारा अुसे अेकसाथ यदि वहा द, तो समुद्रसे निकलकर अनेक दिशाओमे वहनेवाली अेक नयी अलौकिक सरस्वती पैदा हो जायगी। कुछ नही तो दिलको हलका करनेके लिअे ही अिन सव सस्मरणोको गति देनी होगी।

हिन्दुस्तानके पहाड और जगल, रेगिस्तान और मैदान, शहर और गाव, सव प्रतीक्षा कर रहे है। गावोका पुरस्कार करनेके हेतु मै शहरोकी कितनी ही निन्दा क्यो न करु और काम पूरा होनेके पहले ही शहरोसे भागनेकी अिच्छा भी क्यो न करु, फिर भी शहरोका व्यक्तित्व मै पहचान सकता हू। अुनके प्रति भी मै प्रेम-भक्तिका भाव रखता हू। क्या भारतके सव शहर मेरे देशवासियोके पुरुषार्थके प्रतीक नही

है? क्या शहरोमें सस्कारिताकी पन्थिया हमारे [illegible] नी है? क्या हरेक शहरने अपना वायुमन्डल, [illegible] अखड रूपसे नही चलाया है? शहर यदि गावोके [illegible] मिलकर अुनके पोषक वन जायें तो अुन्हें भी [illegible] आशीर्वाद मिले विना नही रहेंगे।

मेरी दृष्टिसे तो हिन्दुस्तानमें देखे हुअे [illegible] भक्तिके विषय है। फिर वह चाहे हरिद्वार [illegible] स्मशान हो, दिल्लीके आसपासके अनेक [illegible] महायुद्धके वाद अभी आसाममें देखे हुअे [illegible] रूप दो तीन चमकीले स्मशान हो। स्मशान [illegible] देखते ही मनुष्योके तथा राष्ट्रोके, [illegible] जन्म मरणके वारेमें गहरे विचार मनमें [illegible]

जिसमें खुद मुझे जाना है [illegible] सव स्मशानोका वर्णन करनेकी अिच्छा [illegible] हो तो जिस प्रकार युद्धमे 'काम आये हुअे [illegible] समय अज्ञात सैनिकोको अेक सामान्य [illegible] है, अुसी प्रकार हरिश्चन्द्र विक्रम, [illegible] यात्रियाने जिस स्मशानका अपना निवास [illegible] सामान्य स्मशान' को अेक अजलि [illegible]

क्या यह सब मै कर सकूगा? [illegible] अैसी वात नही है कि सिर्फ ईश्वर ही [illegible] जिसके मनमें सकल्प अुठते हैं, उस [illegible] भी मननकी आवश्यकता नहा है कि [illegible] धारण करता है। अवतार धारण करना [illegible] अदम्य सकल्प ही सच्चा विधाता है। [illegible] सृष्टि अुत्पन्न होगी ही। फिर वह [illegible] साहित्यकी शब्द-सृष्टि हो, या केवल [illegible]

जिस सृष्टिके द्वारा जीवन-देवता [illegible] प्रकट करता ही रहता है।

है? क्या शहरोंमें सस्कारिताकी पेढ़िया हमारे लोगोंने स्थापित नही की है? क्या हरेक शहरने अपना वायुमडल, अपनी टेक, अपना पुरुषार्थ अखड रूपसे नही चलाया है? शहर यदि गावोंके भक्षक या शोषक मिटकर अुनके पोषक वन जाये, तो अुन्हें भी हरेक समाज-हितचितकके आशीर्वाद मिले विना नही रहेंगे।

मेरी दृष्टिसे तो हिन्दुस्तानमें देखे हुअे अनेकानेक स्मशान भी मेरी भक्तिके विषय हैं। फिर वह चाहे हरिश्चद्र द्वारा रक्षित काशीका स्मशान हो, दिल्लीके आसपासके अनेक राजधानियोंके स्मशान हो, या महायुद्धके वाद अभी आसाममें देखे हुअे मृतक हवाअी जहाजोंके अवशेष-रूप दो तीन चमकीले स्मशान हो। स्मशान तो स्मशान ही है। अुन्हें देखते ही मनुष्योंके तथा राजवशोंके, साम्राज्योंके और सस्कृतियोंके जन्म-मरणके वारेमें गहरे विचार मनमें अुठे विना नही रह सकते।

जिसमें खुद मुझे जाना है, अुस अेक स्मशानको छोडकर वाकीके सव स्मशानोका वर्णन करनेकी अिच्छा हो आती है। यह यदि सभव न हो तो जिस प्रकार युद्धमें 'काम आये हुअे' अज्ञात वीरोंको और श्राद्धके समय अज्ञात सवधियोंको अेक सामान्य पिंड या अजलि अर्पण की जाती है, अुसी प्रकार हरिश्चन्द्र, विक्रम, भर्तृहरि ओर महादेवके अुपासक असख्य योगियोने जिस स्मशानको अपना निवास वनाया, अुस प्रातिनिधिक 'सर्व-सामान्य स्मशान' को अेक अजलि अर्पण करनेकी अिच्छा तो है ही।

क्या यह सव मैं कर सकूगा? मुझे अिसकी चिता नही है। अैसी वात नही है कि सिर्फ अीश्वर ही अवतार धारण करता है। जिस जिसके मनमें सकल्प अुठते हैं, अुस अुसको अवतार लेने ही पडते हैं। यह भी माननेकी आवश्यकता नही है कि अेक ही जीवात्मा अनेक अवतार धारण करता है। अवतार धारण करना पडता है अदम्य सकल्पको। अदम्य सकल्प ही सच्चा विधाता है। सकल्प पैदा हुआ कि अुसमें से सृष्टि अुत्पन्न होगी ही। फिर वह भले ब्रह्मदेवकी पार्थिव सृष्टि हो, साहित्यकी शब्द-सृष्टि हो, या केवल कल्पनाकी चित्र-सृष्टि हो।

जिस सृष्टिके द्वारा जीवन-देवता अपना अनत-विध अुल्लास प्रकट करता ही रहता है।

पा 8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

रिश्तेदार

अनुक्रमणिका

जीवनलीला

१

सखी मार्कण्डी

क्या हरअेक नदी माता ही होती है? नही। मार्कण्डी तो मेरी छुटपनकी सखी है। वह अितनी छोटी है कि मै अुसे अपनी बडी बहन भी नही कह सकता।

बेलगुदीके हमारे खेतमे गूलरके पेडके नीचे दुपहरकी छायामे जाकर बैठू तो मार्कण्डीका मद पवन मुझे जरूर बुलायेगा। मार्कण्डीके किनारे मै कअी बार बैठा हू, और पवनकी लहरोंसे डोलती हुअी घासकी पत्तियोको मैने घटो तक निहारा है। मार्कण्डीके किनारे असाधारण अद्भुत कुछ भी नही है। न कोअी खास किस्मके फूल है, न तरह तरहके रगोकी तितलिया है। सुन्दर पत्थर भी वहा नही है। अपने कलकूजनसे चित्तको बेचैन कर डाले अैसे छोटे-बडे प्रपात भला वहा कहासे हो? वहा है केवल स्निग्ध शाति।

गडरिये बताते है कि मार्कण्डी वैजनाथके पहाडसे आती है। अुसका अुद्गम खोजनेकी अिच्छा मुझे कभी नही हुअी। हमारे तालुकेका नकशा हाथमे आ जाय तो भी अुसमे मार्कण्डीकी रेखा मै नही खोजूगा। क्योकि वैसा करनेसे वह सखी मिटकर नदी बन जायगी! मुझे तो अुसके पानीमे अपने पाव छोडकर बैठना ही पसद है। पानीमें पाव डाला कि फौरन अुसकी कलकल कलकल आवाज शुरू हो जाती है। छुटपनमे हम दोनो कितनी ही बाते किया करते थे। अेक-दूसरेका सहवास ही हमारे आनदके लिअे काफी हो जाता था। मार्कण्डी क्या बता रही है यह जाननेकी परवाह न मुझे थी, न मै जो कुछ बोलता हू अुसका अर्थ समझनेके लिअे वह रुकती थी। हम अेक-दूसरेसे बोल रहे है, अितना ही हम दोनोके लिअे काफी था। भाअी-बहन जब बरसो बाद मिलते है, तब अेक-दूसरेसे हजारो सवाल पूछा करते है। किन्तु अिन सवालोके पीछे जिज्ञासा नही होती। वह तो प्रेम व्यक्त करनेका केवल

अेक तरीका होता है। प्रश्न क्या पूछा और अुत्तर क्या मिला, अिस ओर ध्यान दे सके अितना स्वस्थ चित्त भला प्रेम-मिलनके समय कैसे हो?

मार्कण्डीके किनारे किनारे मैं गाता हुआ घूमता और मार्कण्डी अुन गीतोंको सुनती जाती। सोलहवें वर्षकी आयुमें शिव-भक्तिके बल पर जिन्होंने यमराजको पीछे ढकेल दिया अुन मार्कण्डेय ऋषिका अुपाख्यान गाते समय मुझे कितना आनंद मालूम होता था!

मृकंडु ऋषिके कोअी संतान न थी। अुन्होंने तपश्चर्या की और महादेवजीको प्रसन्न किया। महादेवजीने वरदानमें विकल्प रखा।

साधू सुंदर शाहणा सुत तया सोळाच वर्षे मिती
जो का मूढ कुरूप तो शतवरी वर्षे असे स्व-स्थिती
या दोहींत जसा मनांत रुचला तो घ्या तुतें दीधला

(अेक लडका साधुचरित, खूबसूरत और सयाना होगा। किन्तु अुसकी आयु सिर्फ सोलह सालकी होगी। दूसरा मूढ और बदसूरत होगा। अुसकी आयु सौ सालकी होगी। मगर वह अुम्रभर जैसाका वैसा ही रहेगा। अिन दोनोंमें से जो तुम्हें पसंद हो, सो मैं दूंगा।)

अब अिन दोनोंमें से कौनसा पसंद करे? ऋषिने धर्मपत्नीसे पूछा। दोनोंने सोचा, बालक भले सोलह वर्ष ही जिये किन्तु वह सद्‌गुणी हो। वही कुलका अुद्धार करेगा। दोनोंने यही वर मांग लिया। मार्कण्डेय अुम्रमें ज्यों ज्यों खिलता गया त्यों त्यों मा-बापके वदन म्लान होते चले। आखिर सोलह वर्ष पूरे हुअे।

युवक मार्कण्डेय पूजामें बैठा है। यमराज अपने पाडे पर बैठकर आये। किन्तु शिवलिंगको भेंटे हुअे युवा साधुको छूनेकी हिम्मत अुन्हें कैसे हो? हां, ना करते करते अुन्होंने आखिर पाश फेंका। अुधर लिंगसे त्रिशूलधारी शिवजी प्रकट हुअे। और अपनी धृष्टताके लिअे यमराजको भला-बुरा बहुत कुछ सुनना पडा। मृत्युंजय महादेवजीके दर्शन करनेके बाद मार्कण्डेयको मृत्युका डर कैसे हो सकता है? अुसकी आयुधारा अब तक बह रही है।

आगे जाकर जब मैं कॉलेजमें पढने लगा तब अिम्तहानके बाद हमारी भाअी-दूज होती। फसल काटनेके दिन होते। दो दो दिन खेतमें ही बिताने पडते। तब मार्कण्डी मुझे शकरकद भी खिलाती और अमृत जैसा पानी भी पिलाती। जब यह देखनेके लिअे मैं जाता कि रातको ठडके मारे वह काप तो नही रही है, तब अपने आंगनेमें वह मुझे मृगनक्षत्र दिखाती।

आज भी जब मैं अपने गाव जाता हू, मार्कण्डीसे बिना मिले नही रहता। किन्तु अब वह पहलेकी भाति मुझसे लाड नही करती। जरा-सा स्मित करके मौन ही धारण करती है। अुसके सुकुमार वदन पर पहलेके जैसा लावण्य नही है। किन्तु अब अुसके स्नेहकी गभीरता बढ गयी है।

अगस्त, १९२८

२

कृष्णाके संस्मरण

१

ग्यारसका दिन था। गाडीमें बैठकर हम माहुली चले। महाराष्ट्रकी राजधानी सातारासे माहुली कुछ दूरी पर है। रास्तेमें दाहिनी तरफ श्री शाहु महाराजके वफादार कुत्तेकी समाधि आती है। रास्ते पर हमारी ही तरह बहुतसे लोग माहुलीकी तरफ गाडिया दौडाते थे। आखिर हम नदीके किनारे पहुचे। वहा अिस पारसे अुस पार तक लोहेकी अेक जजीर अूची तनी हुअी थी। अुसमें रस्सीसे अेक नाव लटकाअी गअी थी, जो मेरी बाल-आखोंको बडी ही भव्य मालूम होती थी।

किनारेके छोटे-बडे ककर कितने चिकने, काले काले और ठडे ठडे थे! हाथमें अेकको लेता तो दूसरे पर नजर पडती। वह पहलेसे अच्छा

मालूम होता। अितनेमे तीसरे भीगे हुअे ककर पर कत्थअी रगकी लकीरे दीख पडती और असे अुठानेका दिल हो जाता। अुस दिन कृष्णाका मुझे प्रथम दर्शन हुआ। कृष्णामैयाने भी मुझे पहली ही बार पहचाना। मै अुसे पहचान लू अितना वडा तो मै था ही नही। वच्चा माको पहचाने अुसके पहले ही मा अुसे अपना बना लेती है। हम वच्चे नगे होकर खूब नहाये, कूदे, पानी अुछाला, नाव पर चढकर पानीमे छलागे मारी। कडाकेकी भूख लगे अितना कृष्णामे जलविहार किया।

जैसा नदीका यह मेरा पहला ही दर्शन था, वैसा ही नहानेके वाद नमकीन मूगफलीके नाश्तेका स्वाद भी मेरे लिअे पहला ही था। यात्राके अवसर पर मोरपखोकी टोपी पहननेवाले 'वासुदेव' भीख मागने आये थे। मजीरेके साथ अुनका मधुर भजन भी अुस दिन पहली ही बार सुना। कृष्णामैयाके मदिरमे थोडा-सा आराम करनेके वाद हम घर लौटे।

सह्यादिके कान्तारसे, महाबलेश्वरके पाससे निकलकर सातारा तक दौडनेमे कृष्णाको बहुत देर नही लगती। किन्तु अितनेमे ही वेण्या कृष्णासे मिलने आती है। अिनके यहाके सगमके कारण ही माहुलीको माहात्म्य प्राप्त हुआ है। दो वालिकाअे अेक-दूसरेके कधे पर हाथ रखकर मानो खेलने निकली हो, अैसा यह दृश्य मेरे हृदय पर पिछले पैंतीस सालसे अकित रहा है।

कृष्णाका कुटुम्ब काफी वडा है। कअी छोटी-वडी नदिया अुससे आ मिलती है। गोदावरीके साथ साथ कृष्णाको भी हम 'महाराष्ट्र-माता' कह सकते है। जिस समय आजकी मराठी भाषा वोली नही जाती थी, अुस समयका सारा महाराष्ट्र कृष्णाके ही घेरेके अदर आता था।

२

'नरसोवाची वाडी' जाते समय नाव पर गाडी चढाकर हमने कृष्णाको पार किया, तब अुसका दूसरी बार दर्शन हुआ। यहा पर अेक ओर अूचा कगार और दूसरी ओर दूर तक फैला हुआ कृष्णाका कछार, और अुसमे अुगे हुअे वैगन, खरबूजे, ककडी और तरबूजके

अमृत-खत! कृष्णाके किनारेके ये वैगन [illegible] लिये, वह स्वर्गमे भी अुनकी अिच्छा [illegible]। [illegible] लगातार वैगन खाने पर भी जी नहीं भरता, [illegible] तो कैसे हो?

३

सागलीके पास, कृष्णाके तट पर मैंने [illegible] महाराष्ट्र'का राजवैभव देखा। [illegible] और चमकीले बर्तनोमे भर भर कर पानी [illegible] ललनायें, पानीमे छलाग मारकर [illegible] हौंसला रखनेवाले अखाडवाज, [illegible] अपने आगमनकी सूचना देनेवाले [illegible] अेकश्रुति आवाज निकालकर रसपानका [illegible] यह था मेरा कृष्णामैयाका तीसरा दर्शन।

मुझे तैरना अच्छी तरह नहीं आता था। [illegible] गागर पानीमे औंधी डालकर अुनके सहारे [illegible] बार यहा नदीमे अुतर पडा। किन्तु [illegible] कि अेक पैर निकालता तो दूसरा और भी [illegible] कीचड भी कैसा? मानो काला [illegible]! [illegible] जगम न रहकर अुल्टे पेडकी तरह यहा स्थावर [illegible] दिनकी घबराहट भी मैं अब तक नहीं भूला [illegible]।

४

चिचली स्टेशन पर पीनेके लिये [illegible] मिलता था। हमारे अेक परिचित सज्जन वहा [illegible] बडे प्रेमसे अेकाध लोटा पानी मगवाकर देते थे। [illegible] हो या न हो पिताजी हम सबको भक्तिपूर्वक पानी [illegible] महाराष्ट्रकी आराध्य देवी है। अुसकी [illegible] हम पावन हो जाते हैं। जिसके पेटमें [illegible] हुआ है, वह अपना महाराष्ट्रीयपन कभी [illegible]

अमृत-खेत! कृष्णाके किनारेके ये बैंगन जिसने अेकाध बार खा लिये, वह स्वर्गमे भी अुनकी अिच्छा करेगा। दो-दो महीने तक लगातार बैंगन खाने पर भी जी नहीं भरता, फिर भला अरुचि तो कैसे हो?

३

सागलीके पास, कृष्णाके तट पर मैंने पहली ही बार 'रियासती महाराष्ट्र'का राजवैभव देखा। वे आलीशान और विशाल घाट, सुदर और चमकीले बर्तनोंमे भर भर कर पानी ले जाती हुआी महाराष्ट्रकी ललनायें, पानीमे छलाग मारकर किनारे परके लोगोको भिगानेका हौसला रखनेवाले अखाडेबाज, क्षुद्र घटिकाओंकी तालबद्ध आवाजसे अपने आगमनकी सूचना देनेवाले पहाड जैसे हाथी, और कर्र्र् की अेकश्रुति आवाज निकालकर रसपानका न्योता देनेवाले अीखके कोल्हू— यह था मेरा कृष्णामैयाका तीसरा दर्शन।

मुझे तैरना अच्छी तरह नही आता था। फिर भी अेक बडी गागर पानीमे औधी डालकर अुसके सहारे बह जानेके लिअे मै अेक बार यहा नदीमे अुतर पडा। किन्तु अेक जगह कीचडमे अैसा फसा कि अेक पैर निकालता तो दूसरा और भी अदर धस जाता। और कीचड भी कैसा? मानो काला काला मक्खन! मुझे लगा कि अब जगम न रहकर अुलटे पेडकी तरह यही स्थावर हो जाअूगा! अुस दिनकी घबराहट भी मै अब तक नही भूला हू।

४

चिचली स्टेशन पर पीनेके लिअे हमे हमेशा कृष्णाका पानी मिलता था। हमारे अेक परिचित सज्जन वहा स्टेशनमास्टर थे। वे हमे बडे प्रेमसे अेकाध लोटा पानी मगवाकर देते थे। हम चाहे प्यासे हो या न हो पिताजी हम सबको भक्तिपूर्वक पानी पीनेको कहते। कृष्णा महाराष्ट्रकी आराध्य देवी है। अुसकी अेक बूद भी पेटमे जानेसे हम पावन हो जाते हैं। जिसके पेटमे कृष्णाकी अेक बूद भी पहुच चुकी है, वह अपना महाराष्ट्रीयपन कभी भूल नही सकता। श्रीसमर्थ

रामदास और शिवाजी महाराज, शाहु और बाजीराव, घोरपडे और पटवर्धन, नाना फडनवीस और रामशास्त्री प्रभृणे — थोडेमें कहे तो महाराष्ट्रका साधुत्व और वीरत्व, महाराष्ट्रकी न्यायनिष्ठा और राजनीतिज्ञता, धर्म और सदाचार, देशसेवा और विद्यासेवा, स्वतत्रता और अुदारता, सब कुछ कृष्णाके वत्सल कुटुम्बमे परवरिश पाकर फला-फूला है। देहू और आळदीके जल कृष्णामे ही मिलते हैं। पढरपुरकी चद्रभागा भी भीमा नाम धारण करके कृष्णाको ही मिलती है। 'गगाका स्नान और तुगाका पान' अिस कहावतमे जिसके गौरवका स्वीकार किया गया है, वह तुगभद्रा कर्णाटकके प्राचीन वैभवकी याद करती हुअी कृष्णामे ही लीन होती है। सच कहे तो महाराष्ट्र, कर्णाटक और तेलगण (आध्र), अिन तीनो प्रदेशोका अैक्य साधनेके लिअे ही कृष्णा नदी बहती है। अिन तीनो प्रान्तोने कृष्णाका दूध पिया है। कृष्णामे पक्षपाती प्रातीयता नही है।

५

कॉलेजके दिन थे। बडी बडी आशाये लेकर बडे भाअीसे मिलने मैं पूनासे घर गया। किन्तु मेरे पहुचनेसे पहले ही वे अिहलोक छोड चुके थे। मेरी किस्मतमे कृष्णाके पवित्र जलमें अुनकी अस्थियोका समर्पण करना ही बदा था। बेलगावसे मैं कूडची गया। सध्याका समय था। रेलके पुलके नीचे कृष्णाकी पूजा की। बडे भाअीकी अस्थिया कृष्णाके अुदरमे अर्पण की। नहाया और पलथी मारकर जीवन-मरण पर सोचने लगा।

कृष्णाके पानीमें कितने ही महाराष्ट्रके वीरो और महाराष्ट्रके शत्रुओका खून मिला होगा! वर्षाकालकी मस्तीमे कृष्णाने कितने ही किसान और अुनके मवेशियोको जलसमाधि दी होगी! पर कृष्णाको अिससे क्या? मदोन्मत्त हाथी अुसके जलमे विहार करे और विरक्त साधु अुसके किनारे तपश्चर्या करे, कृष्णाके लिअे दोनो समान हैं। मेरे भाअीकी अस्थियो और ककर बनी हुअी पहाडकी अस्थियोंके बीच कृष्णाके मनमे क्या फर्क है? माहुलीमें अपने कधे पर मुझे

खडा करके पानीमे कूदनेके लिअे वढावा देनेवाले वडे भाओीकी अस्थिया मुझे अपने हाथो अुसी कृष्णाके जलमे समर्पण करनी पडी ! जीवनकी लीला कैसी अगम्य है !

६

कृष्णाके अुदरमे मेरा दूसरा अेक भाओी भी सोया हुआ है ! ब्रह्मचारी अनतवुआ मरढेकर हृदयकी भावनासे मेरे सगे छोटे भाओी थे, और देशसेवाके व्रतमे मेरे वडे भाओी थे। स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा और गोसेवा यह त्रिविध कार्य करते करते अुन्होने शरीर छोडा था। मेरे साथ अुन्होने गगोत्री और अमरनाथकी यात्रा की थी। किन्तु कृष्णाके किनारे आकर ही वे अमर हुअे। भक्तिकी धुनमे वे सुध-बुध भूल जाते और कओी जगह ठोकर खाते। अिस बातका मुझे हिमालयकी यात्रामे कओी वार अनुभव हुआ था। मै वार वार अुनको कोसता। किन्तु वे परवाह नही करते। वे तो श्रीसमर्थकी प्रासादिक बाणीकी सात्त्विक मस्तीमे ही रहते। कृष्णाको भी अुन्हे कोसनेकी सूझी होगी। देव-मदिरकी प्रदक्षिणा करते करते वे अूपरसे अेक दहमे गिर पडे और देवलोक सिधारे। जब वाओीके पथरीले पट परसे बहती गगाका स्मरण करता हू, कृष्णामे हर वर्षाकालमे शिरस्नान करते देव-मदिरके शिखरोका दर्शन करता हू, तब कृष्णाके पास मेरा भी यह अेक भाओी हमेशाके लिअे पहुच गया है अिस बातका स्मरण हुअे विना नही रहता, साथ ही साथ अनतवुवाकी तपोनिष्ठ किन्तु प्रेम-सुकुमार मूर्तिका दर्शन हुअे बिना भी नही रहता।

७

सन् १९२१ का वह साल ! भारतवर्षने अेक ही सालके भीतर स्वराज्य सिद्ध करनेका बीडा अुठा लिया है। हिन्दू-मुसलमान अेक हो गये हैं। तैंतीस करोड देवताओके समान भारतवासी करोडोकी सख्यामे ही सोचने लगे हैं। स्वराज्यऋषि लोकमान्य तिलकका स्मरण कायम करनेके लिअे 'तिलक स्वराज्य फड' मे अेक करोड रुपये अिकट्ठे करने हैं। राष्ट्रसभाके छत्रके नीचे काम करनेवाले सदस्योकी सख्या भी अेक

8, निर्दलीय 1
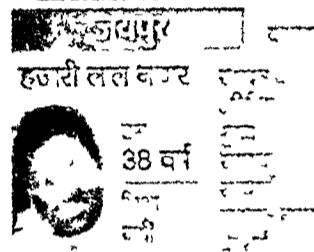
करोड बनानी है। और पट-वर्धन श्रीकृष्णके सुदर्शनके समान चरखे भी अिस धर्मभूमिमे अुतनी ही सख्यामे चलवा देने है। भारतपुत्र अिस कामके लिअे बेजवाडेमे अिकट्ठे हुअे है। श्री अब्बास साहब, पुणताबेकर, गिदवाणी और मै, अेक साथ बेजवाडा पहुच गये है। अैसे मगल अवसर पर श्री कृष्णाम्बिका का विराट दर्शन करनेका सौभाग्य मिला। वाअीमे जिस कृष्णाके किनारे बैठकर सध्यावदन किया था और न्याय-निष्ठ रामशास्त्री तथा राजकाजपटु नाना फडनवीसकी बाते की थी, अुसी नन्ही कृष्णाको यहा अितनी बडी होते देखकर प्रथम तो विश्वास ही न हुआ। कहा माहुलीकी वह छोटी-सी जजीर और कहा युरोप-अमरीकाको जोडनेवाले केबलके जैसा यहाका वह रस्सा! हजारो-लाखो लोग यहा नहाने आये है। स्थूलकाय आध्र भाअियोमे आज भारतवर्षके तमाम भाअी घुलमिल गये है। 'राष्ट्रीय' हिन्दीका वाक्प्रवाह जहा-तहा सुनाअी देता है। कृष्णामे जिस प्रकार वेण्या, वारणा, कोयना, भीमा, तुगभद्रा आकर मिलती है, अुसी प्रकार गाव गावके लोग ठटके ठट बेजवाडेमे अुभरते है। अैसे अवसर पर सबके साथ रोज कृष्णामे स्नान करनेका लुत्फ मिलता। जिस कृष्णाने जन्मकालका दूध दिया अुसी कृष्णाने स्वराज्यकाक्षी भारतराष्ट्रका गौरवशाली दर्शन कराया। जय कृष्णा! तेरी जय हो! भारतवर्ष अेक हो! स्वतत्र हो!!

जुलाअी, १९२९

३

मुळा मुठाका सगम

नदिया तो हमारी बहुत देखी हुयी होती है। [illegible] सगम आसानीसे देखनेको नही मिलता। सगम [illegible] जब दो नदिया मिलती है तब टक्कर [illegible] छा कर दूसरीमे मिल जाती है। सभी देशोमे [illegible] हुआ दिखाअी देता है। किन्तु जिस प्रकार [illegible] शोभता, अुसी प्रकार अपवादके बिना नियम भी [illegible] बार तो नियमकी अपेक्षा अपवाद ही [illegible] अमरीकाकी मिसिसिपी मिसारी [illegible] समासस धारण करके ससारकी सबसे लम्बी नदी [illegible] है। सीता हरणसे लेकर विजयनगरके [illegible] याद करती तुगभद्रा भी तुगा और भद्राके [illegible] बचपन प्राप्त कर सकी है। पूनाका [illegible] भी मुळा और मुठाके सगममे बनी है।

सिहगढकी पश्चिम ओरकी घाटीमे मुठा [illegible] तककी मुडी टकरिया अुसका रक्षण करती है। [illegible] खडकवासलामे मुठाका अेक सुदीर्घ सरोवर बनाया है। [illegible] तो कोअी पेड है, न मदिर। दिनमें बादल [illegible] चिताजनक प्रतिबिंब अिस सरोवरमें डालते है। [illegible] रामे दो जबरदस्त महसूल लिये जाते है, [illegible] बस्ती जी भरके पानी पीती है। मुठाके [illegible] जा रही है। बसत ऋतुमें जहा देखें वहा [illegible] कर लोगोको रसपानकी याद दिलाते है। लकडी [illegible] किन्तु पत्थरके बने हुअे पुलके नीचेसे नदी [illegible] पुलके नामसे परिचित किन्तु पत्थरके पक्के [illegible]

३

मुळा-मुठाका सगम

नदिया तो हमारी वहुत देखी हुअी होती है। पर दो नदियोका सगम आमानीमे देखनेको नही मिलता। सगमका काव्य ही अलग है।

जव दो नदिया मिलती हे तव अक्सर अुनमे से अेक अपना नाम छोडकर दूसरीमे मिल जाती है। सभी देगोमे अिस नियमका पालन होता हुआ दिखाअी देता है। किन्तु जिस प्रकार कलकके विना चद्र नही शोभता, अुनी प्रकार अपवादके विना नियम भी नही चलते। और कअी वार तो नियमकी अपेक्षा अपवाद ही ज्यादा ध्यान खीचते है। अुत्तर अमरीकाकी मिनिमिपी-मिसोरी अपना लवा-चौडा मप्ताक्षरी नाम द्वद्व समाससे धारण करके ससारकी सवसे लवी नदीके तौर पर मगहूर हुअी हे। सीता-हरणमे लेकर विजयनगरके स्वातत्र्य-हरण तकके अितिहासको याद करती तुगभद्रा भी तुगा और भद्राके मिलनसे अपना नाम और वडप्पन प्राप्त कर सकी है। पूनाको अपनी गोदमे खेलाती मुळामुठा भी मुळा और मुठाके सगममे वनी हे।

सिंहगढकी पश्चिम ओरकी घाटीसे मुठा आती है। खडक-वासला तककी मुडी टेकरिया अुसका रक्षण करती है। खडक-वासलाके वाधने तन्वगी मुठाका अेक मुदीर्घ सरोवर वनाया हे। अिस सरोवरके किनारे न तो कोअी पेड है, न मदिर। दिनमे वादल और रातके समय तारे अपने चिंताजनक प्रतिविव अिस सरोवरमे डालते है। यहीकी मुठासे नहरके रूपमे दो जवरदस्त महसूल लिये जाते है, जिनसे पूना और खडकीकी वस्ती जी भरके पानी पीती है। मुठाके किनारे गन्नेकी खेती वढती जा रही है। वसत ऋतुमे जहा देखे वहा औखके कोल्हू वाग पुकार पुकार कर लोगोको रसपानकी याद दिलाते है। लकडी-पुलके नामसे परिचित किन्तु पत्थरके वने हुअे पुलके नीचेमे नदी आगे जाती है और दगडी-पुलके नामसे परिचित किन्तु पत्थरके पक्के वाधको पार करती है।

8, निर्दलीय
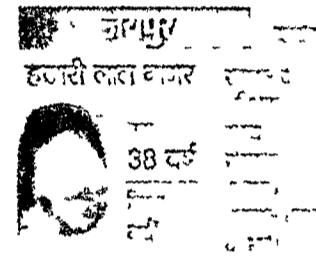
तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

अिसके बाद ही मुठाका अुसकी बहन मुळासे सगम होता है। लकडी-पुलसे ओंकारेश्वर तक चाहे जितने शव जलते हों, लेकिन सगमके समय अुसका विषाद मुठाके चेहरे पर दिखाअी नही देता।

अितना शात सगम शायद ही और कही होगा। अिसी सगम पर कॅप्टन मॅलेट पेशवाअीकी अतघडीकी राह देखता हुआ पडाव डालकर बैठा था। आज तो संस्कृत भाषाका सशोधन युरोपियन पडितोंके हाथसे वापिस छीन लेनेके लिअे मथनेवाले आर्य पडित भाडारकरजीका सगमाश्रम ही यहा विराजमान है। संस्कृत विद्याके पुनरुद्धारके लिअे संस्थापित पाठशालाका रूपान्तर करके पुराने और नयेका सगम करनेवाला डेक्कन कॉलेज भी अिस सगमके पास ही विराजमान है। यहा गोरे लोगोंने नौका-विहारके लिअे नदी पर बाध बाधकर पानी रोका है, और मच्छरोंके विशाल कुलको भी यहा आश्रय दिया है। नजदीककी टेकरी पर गुजरातके अेक लक्ष्मीपुत्रकी अुत्तुग-शिरस्क किन्तु नम्र-नामधेय 'पर्णकुटी' है। मानवकी स्वतत्रताका हरण करनेवाला यरवडाका कैदखाना और प्राणहरपटु लश्करी बारुदखाना भी अिस सगमसे अधिक दूरी पर नहीं है। न मालूम कितनी विचित्र वस्तुओंका सगम मुळामुठाके किनारे पर होता होगा, होनेवाला होगा! बाधके पासके बड-गार्डनमें लक्षाधीश और भिक्षाधीशोंका सगम हर शामको होता है, यह भी अिसीकी अेक मिसाल है।

आखिरी बाध परसे हाश् करके छटकती मुळामुठा यहासे आगे कहा तक जाती है, यह भला कौन बता सकेगा? अिस बातकी जानकारी किसके पास होगी?

महाराष्ट्रकी नदियोंमें तीन नदियोंसे मेरी विशेष आत्मीयता है। मार्कण्डी मेरी छुटपनकी सखी, मेरे खेतिहर जीवनकी साक्षी, और मेरी बहन आक्काकी प्रतिनिधि है। कृष्णाके किनारे तो मेरा जन्म ही हुआ। महाबलेश्वरसे लेकर बेजवाडा और मछलीपट्टम तकका अुसका विस्तार अनेक ढगसे मेरे जीवनके साथ बुना हुआ है। और तीसरी है मुळा-मुठा। बचपनमें हम सब भाअी शिक्षाके लिअे पूनामें रहे थे, अुस समयमें मुळा और मुठाका सगम मेरे बाल्यकालका साक्षी रहा है।

कॉलिजके दिनोमे हमने जिन क्रातिकारी विचारोका मेवन किया था अुन्हे भी मुळामुठा जानती है। किन्तु अिन सब सम्मरणोंसे बढ जाते है महात्मा गाधीके साथ व्यतीत किये हुअे अुसके किनारे परके वे दिन! लेडी ठाकरसीकी पर्णकुटी, दिनशा मेहताका निसर्गोपचार भवन और सिहगढका निवास, सब अेक ही साथ याद आते है।

और आखिर आखिरके दिनोमे अग्रेज सरकारने गाधीजीको जहा गिरफ्तार करके रखा था वह आगाखा महल भी मुळामुठाके किनारे पर ही है। और यही गाधीजीके दो जीवन-साथियोने स्वराज्यके यज्ञमें अपनी अतिम आहुति दी थी। कस्तूरबा और महादेवभाअीने जिसके किनारे शरीर छोडा वह मुळामुठा भारतवासियोंके लिअे, खास करके हम आश्रमवासियोंके लिअे तो तीर्थस्थान है।

और जब आजकी मुळामुठाके बारेमे सोचता हू तब सिहगढके दामनमे खडक-वासला सरोवरके किनारे जिस राष्ट्र-रक्षा-विद्यालयकी स्थापना हुअी है अुसका स्मरण हुअे बिना नही रहता। अिस सस्थाका नाम युद्ध-महाविद्यालय रखनेके बदले राष्ट्रीय रक्षा-विद्यालय रखा गया, यह बात भी ध्यान खीचे बिना नही रहती। जिस सरोवरके किनारे अिस विद्यालयकी स्थापना हुअी है अुसका नाम भी महाराष्ट्रके अितिहासके अनुरूप ही होना चाहिये। अैसे सरोवरको किसी अग्रेजका नाम न देकर नरवीर तानाजी मालुसरेका नाम देना चाहिये। अपनी जान देकर जब तानाजीने छत्रपति शिवाजीके लिअे कोडाणा गढ जीत दिया तब शिवाजीने कहा 'गड आला पण सिंह गेला — गढ तो जीत लिया किन्तु मैने अपना शेर खो दिया।' और अुस दिनसे अिस गढका नाम सिंहगढ पडा।

अिस सरोवरको हम या तो तानाजी सरोवर कहे या सिंह सरोवर।

१९२६–२७
सशोधित, १९५६

४

सागर-सरिताका संगम

छुटपनमे भोज और कालिदासकी कहानिया पढनेको मिलती थी। भोज राजा पूछते है, "यह नदी अितनी क्यो रोती है?" नदीका पानी पत्थरोको पार करते हुअे आवाज करता होगा। राजाको सूझा, कविके सामने अेक कल्पना फेक दे, अिसलिअे अुसने अूपरका सवाल पूछा। लोककथाओका कालिदास लोकमानसको जचे अैसा ही जवाब देगा न? अुसने कहा, "रोनेका कारण क्यो पूछते है, महाराज? यह बाला पीहरसे ससुराल जा रही है। फिर रोयेगी नही तो क्या करेगी?" अुस समय मेरे मनमे आया, "ससुराल जाना अगर पसन्द नही है तो भला जाती क्यो है?" किसीने जवाब दिया, "लडकीका जीवन ससुराल जानेके लिअे ही है।"

नदी जब अपने पति सागरसे मिलती है तब अुसका सारा स्वरूप बदल जाता है। वहा अुसके प्रवाहको नदी कहना भी मुश्किल हो जाता है। साताराके पास माहुलीके नजदीक कृष्णा और वेण्याका सगम देखा था। पूनामे मुळा और मुठाका। किन्तु सरिता-सागरका सगम तो पहले पहल देखा कारवारमे — अुत्तरकी ओरके सरोके (कॅश्युरीनाके) वनके सिरे पर। हम दो भाअी समुद्र-तटकी बालू पर खेलते खेलते, घूमते-घामते दूर तक चले गये थे। हमेशासे काफी दूर गये और यकायक अेक सुन्दर नदीको समुद्रसे मिलते देखा। दो नदियोके सगमकी अपेक्षा नदी-समुद्रका सगम अधिक काव्यमय होता है। दो नदियोका सगम गूढ-शात होता है। किन्तु जब सागर और सरिता अेक-दूसरेसे मिलते है तब दोनोमे स्पष्ट अुन्माद दिखाअी देता है। अिस अुन्मादका नशा हमे भी अचूक चढता है। नदीका पानी शात आग्रहसे समुद्रकी ओर बहता जाता है, जब कि अपनी मर्यादाको कभी न छोडनेके लिअे विख्यात समुद्रका पानी चद्रमाकी अुत्तेजनाके अनुसार कभी नदीके लिअे रास्ता बना देता है, कभी सामने हो जाता है। नदी और सागरका

जव अेक-दूसरेके खिलाफ सत्याग्रह चलता है, तव कओी तरहके दृश्य देखनेको मिलते है। समुद्रकी लहरे जव तिरछी कतराती आती है तव पानीका अेक फुहारा अेक छोरसे दूसरे छोर तक दौडता जाता है। कही कही पानी गोल गोल चक्कर काटकर भवर वनाता है। जव सागरका जोश वढने लगता है तव नदीका पानी पीछे हटता जाता है। अैसे अवसर पर दोनो ओरके किनारो परका अुसका थपेडा वडा तेज होता है। नदीकी गतिकी विपरीत दशाको देखकर अुससे फायदा अुठानेवाली स्वार्थी नावे पुरजोशमे अदर घुसती है। अुन्हे मालूम है कि भाग्यके अिस ज्वारके साथ जितना अदर जा सकेंगे अुतना ही पल्ले पडनेवाला है। फिर जव भाटा शुरू होता है ओर सागरकी लहरे विरोधकी जगह वाहु खोलकर नदीके पानीका स्वागत करती है, तव मतलवी नावोको अपनी त्रिकोनी पगडी वदलते देर नही लगती। पवन चाहे किसी भी दिशामे चलता रहे, जव तक वह प्रत्यक्ष सामने नही होता तव तक अुसमे से कुछ न कुछ मतलव साधनेकी चालाकी अिन वैश्यवृत्तिवाली नावोमे होती ही हे। अुनकी पगडीकी यानी पालकी वनावट भी अैसी ही होती है।

हम जिस समय गये थे अुस समय नावे अिसी प्रकार नदीके अदर घुस रही थी। किन्तु समुद्रके अिन पतगोको निहारनेमें हमे कोअी दिलचस्पी नही थी। हम तो सगमके साथ सूर्यास्त कैसा फवता है यह देखनेमे मशगूल थे। सुनहरा रग सव जगह सुन्दर ही होता है। किन्तु हरे रगके साथकी अुसकी वादशाही शोभा कुछ और ही होती है। अूचे अूचे पेडो पर सध्याके सुवर्ण किरण जव आरोहण करते है तव मनमे सदेह अुठता है कि यह मानवी सृष्टि है, या परियोकी दुनिया है? समुद्र अैसी तो भव्य सुन्दरता दिखाने लगा मानो सुवर्ण रसका सरोवर अुमड रहा हो। यह शोभा देखकर हम अघा गये या सच कहे तो जैसे जैसे यह शोभा देखते गये वैसे वैसे हमारा दिल अधिकाधिक वेचैन होता गया। सौंदर्यपानसे हम व्याकुल होते जा रहे थे।

सूर्यास्तके वाद ये रग सौम्य हुअे। हम भी होशमे आये और वापस लौटनेकी वात सोचने लगे। किन्तु पानी अितना आगे वढ गया था कि

४

सागर-सरिताका संगम

छुटपनमे भोज और कालिदासकी कहानिया पढनेको मिलती थी। भोज राजा पूछते हैं, "यह नदी अितनी क्यों रोती है?" नदीका पानी पत्थरोंको पार करते हुअे आवाज करता होगा। राजाको सूझा, कविके सामने अेक कल्पना फेंक दे, अिसलिअे अुसने अूपरका सवाल पूछा। लोककथाओंका कालिदास लोकमानसको जचे अैसा ही जवाब देगा न? अुसने कहा, "रोनेका कारण क्यों पूछते हैं, महाराज? यह बाला पीहरसे ससुराल जा रही है। फिर रोयेगी नही तो क्या करेगी?" अुस समय मेरे मनमे आया, "ससुराल जाना अगर पसन्द नही है तो भला जाती क्यो है?" किसीने जवाब दिया, "लडकीका जीवन ससुराल जानेके लिअे ही है।"

नदी जब अपने पति सागरसे मिलती है तब अुसका सारा स्वरूप बदल जाता है। वहा अुसके प्रवाहको नदी कहना भी मुश्किल हो जाता है। सातारा के पास माहुलीके नजदीक कृष्णा और वेण्याका सगम देखा था। पूनामे मुळा और मुठाका। किन्तु सरिता-सागरका सगम तो पहले पहल देखा कारवारमे—अुत्तरकी ओरके सरोंके (कॅज्युरीनाके) वनके सिरे पर। हम दो भाअी समुद्र-तटकी बालू पर खेलते खेलते, घूमते-घामते दूर तक चले गये थे। हमेशासे काफी दूर गये और यकायक अेक सुन्दर नदीको समुद्रसे मिलते देखा। दो नदियोंके सगमकी अपेक्षा नदी-समुद्रका सगम अधिक काव्यमय होता है। दो नदियोंका सगम गूढ-शात होता है। किन्तु जब सागर और सरिता अेक-दूसरेसे मिलते हैं तब दोनोमे स्पष्ट अुन्माद दिखाअी देता हैं। अिस अुन्मादका नशा हमे भी अचूक चढता हैं। नदीका पानी शात भावसे समुद्रकी ओर बहता जाता है, जब कि अपनी मर्यादाको कभी न छोडनेके लिअे विख्यात समुद्रका पानी चद्रमाकी अुत्तेजनाके अनुसार कभी नदीके लिअे रास्ता बना देता है, कभी सामने हो जाता है। नदी और सागरका

जब अेक-दूसरेके खिलाफ सत्याग्रह चलता हे, तव कअी तरहके दृश्य देखनेको मिलते हे। समुद्रकी लहरे जव तिरछी कतराती आती हैं तव पानीका अेक फुहारा अेक छोरसे दूसरे छोर तक दौडता जाता है। कही कही पानी गोल गोल चक्कर काटकर भवर वनाता है। जव सागरका जोग वढने लगता है तव नदीका पानी पीछे हटता जाता है। अैसे अवसर पर दोनो ओरके किनारो परका अुसका थपेडा वडा तेज होता है। नदीकी गतिकी विपरीत दशाको देखकर अुससे फायदा अुठानेवाली स्वार्थी नावे पुरजोशमे अदर घुसती हे। अुन्हे मालूम है कि भाग्यके अिस ज्वारके साथ जितना अदर जा सकेंगे अुतना ही पल्ले पडनेवाला है। फिर जव भाटा शुरू होता हे और मागरकी लहरे विरोधकी जगह वाहु खोलकर नदीके पानीका स्वागत करती हे, तव मतलवी नावोको अपनी त्रिकोनी पगडी वदलते देर नही लगती। पवन चाहे किमी भी दिशामे चलता रहे, पव तक वह प्रत्यक्ष सामने नही होता तव तक अुसमे से कुछ न कुछ मतलव साधनेकी चालाकी अिन वैश्यवृत्तिवाली नावोमे होती ही हे। अुनकी पगडीकी यानी पालकी वनावट भी अैसी ही होती है।

हम जिम समय गये थे अुस समय नावे अिसी प्रकार नदीके अदर घुस रही थी। किन्तु समुद्रके अिन पतगोको निहारनेमे हमे कोअी दिलचस्पी नही थी। हम तो सगमके साथ सूर्यास्त कैमा फवता है यह देखनेमे मशगूल थे। सुनहरा रग सव जगह सुन्दर ही होता है। किन्तु हरे रगके साथकी अुसकी वादशाही शोभा कुछ और ही होती है। अूचे अूचे पेडो पर सध्याके सुवर्ण किरण जव आरोहण करते हैं तव मनमे सदेह अुठता है कि यह मानवी सृष्टि है, या परियोकी दुनिया है? समुद्र अैसी तो भव्य सुन्दरता दिखाने लगा मानो सुवर्ण रसका सरोवर अुमड रहा हो। यह शोभा देखकर हम अवा गये या सच कहे तो जैसे जैसे यह शोभा देखते गये वैसे वैसे हमारा दिल अधिकाधिक वेचैन होता गया। सौदर्यपानसे हम व्याकुल होते जा रहे थे।

सूर्यास्तके वाद ये रग सौम्य हुअे। हम भी होशमे आये और वापस लौटनेकी वात सोचने लगे। किन्तु पानी अितना आगे वढ गया था कि

वापस लौटना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप हम नदीके किनारे किनारे अुल्टे चले। यहा पर भी नदीका पानी दोनो ओरसे फूलता जा रहा था — जैसे भैसेकी पीठ परकी पखाल भरते समय फूलती जाती है। जैसे जैसे हम अुल्टे चलते गये वैसे वैसे पानीसे शाति वढती गयी। अधेरा भी वढता जा रहा था। अिस पारसे अुस पार तक आने जानेवाली अेक नन्ही-सी नाव अेक कोनमें पडी थी। और देहातके चद मजदूर लगोटीकी डोरीसे पीछेकी ओर लकडीका अेक चक्र खोसकर अुसमें अपने 'कोयते' लटकाये जा रहे थे। ('कोयता' हसियेके जैसा अेक औजार होता है, जो नारियल छीलनेमें काम आता है या सामान्य तौरसे जिसका कुल्हाडीकी तरह अुपयोग किया जाता है।) अिन लोगोकी पोशाक वस अेक लगोटी और अेक जाकिट होती है। नदीको पार करते समय जाकिट निकालकर सिर पर ले लिया कि वस। प्रकृतिके वालक! जमीन और पानी अुनके लिअे अेक ही है।

घर जानेकी जल्दी सिर्फ हमे ही नही थी। अैसा मालूम होता था कि अिन देहाती लोगोको भी जल्दी थी। और नदीके किनारे दौडते छोटे छोटे केकडोको भी हमारी ही तरह जल्दी थी। रात पडी और हम जल्दीसे घर लौटे। किन्तु मनमें विचार तो आया कि किसी दिन अिस नदीके किनारे किनारे काफी अूपर तक जाना चाहिये।

प्याज या कॅवेज (पत्तागोभी) हाथमे आने पर फौरन अुनकी सब पत्तिया खोलकर देखनेकी जैसे अिच्छा होती है, वैसे ही नदीको देखने पर अुसके अुद्गमकी ओर चलनेकी अिच्छा मनुष्यको होती ही है। अुद्गमकी खोज सनातन खोज है। गगोत्री, जमनोत्री और महावलेश्वर या त्र्यवककी खोज अिसी तरह हुअी है।

वचपनकी यह अिच्छा कुछ ही वर्ष पहले वर आअी। श्री शकरराव गुलवाडीजी मुझे अेक सेवाकेंद्र दिखानेके लिअे नदीकी अुलटी दिशामें दूर तक ले गये। अिस प्रतीप-यात्राके समय ही कवि वोरकरकी कविता सुनी थी, अिस वातका भी आनददायी स्मरण है।

१९३४

५

गंगामैया

१

गगा कुछ भी न करती, सिर्फ [illegible] ता भी आर्यजातिकी माताके तौर पर [illegible] पितामह भीष्मकी टेक, भीष्मकी [illegible] [illegible] चुका है। हम गगाको आर्यसस्कृतिके [illegible] माताके रूपमें पहचानते है।

२

नदीका यदि कोअी अपना [illegible] नदीके किनारे पर रहनेसे [illegible] जब जाता रहा है तब नदीमाता ही [illegible] नदीका किनारा यानी सूढ और [illegible] घूमने जायें तो प्रकृतिके मातृवात्सल्यका [illegible] है। नदी वडी हो और अुसका प्रवाह [illegible] किनारे पर रहनेवालोकी [illegible] है। सचमुच नदी जनसमाजकी माता है। [illegible] शहरकी गली गलीमें घूमते समय [illegible] तो हमें कितना आनद होता है! [illegible] और कहा नदीका यह प्रसन्न दर्शन! [illegible] मालूम हो जाता है। नदी ओीश्वर नहीं है, [illegible] करनेवाली देवता है। यदि गुरुका वदन [illegible] नदीको भी वदन करना अुचित है।

यह तो हुअी सामान्य नदीकी बात। [illegible] नदियों माता है। आर्योके वडे वडे [illegible] स्थापित हुअे है। कुरु-पाचाल देशके [illegible]

५

गंगामैया

१

गगा कुछ भी न करती, सिर्फ देवव्रत भीष्मको ही जन्म देती, तो भी आर्यजातिकी माताके तौर पर वह आज प्रख्यात होती। पितामह भीष्मकी टेक, भीष्मकी नि स्पृहता, भीष्मका ब्रह्मचर्य और भीष्मका तत्त्वज्ञान हमेशाके लिअे आर्यजातिका आदरपात्र ध्येय बन चुका है। हम गगाको आर्यसस्कृतिके अैसे आधारस्तभ महापुरुषकी माताके रूपमे पहचानते हैं।

२

नदीको यदि कोअी अुपमा शोभा देती है, तो वह माताकी ही। नदीके किनारे पर रहनेसे अकालका डर तो रहता ही नही। मेघराजा जब धोखा देते है तब नदीमाता ही हमारी फसल पकाती है। नदीका किनारा यानी शुद्ध और शीतल हवा। नदीके किनारे किनारे घूमने जाये तो प्रकृतिके मातृवात्सल्यके अखड प्रवाहका दर्शन होता है। नदी बडी हो और अुसका प्रवाह धीरगभीर हो, तब तो अुसके किनारे पर रहनेवालोकी शानशौकत अुस नदी पर ही निर्भर करती है। सचमुच नदी जनसमाजकी माता है। नदी-किनारे बसे हुअे शहरकी गली गलीमे घूमते समय अेकाध कोनेसे नदीका दर्शन हो जाय, तो हमे कितना आनद होता है! कहा शहरका वह गदा वायुमडल और कहा नदीका यह प्रसन्न दर्शन! दोनोके बीचका अतर फौरन मालूम हो जाता है। नदी अीश्वर नही है, बल्कि अीश्वरका स्मरण करानेवाली देवता है। यदि गुरुको वदन करना आवश्यक है तो नदीको भी वदन करना अुचित है।

यह तो हुअी सामान्य नदीकी बात। किन्तु गगामैया तो आर्यजातिकी माता है। आर्योके बडे बडे साम्राज्य अिसी नदीके तट पर स्थापित हुअे है। कुरु-पाचाल देशका अगवगादि देशोके साथ गगाने

वापस लौटना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप हम नदीके किनारे किनारे अुलटे चले। यहा पर भी नदीका पानी दोनो ओरमे फूलता जा रहा था — जैसे भैंसेकी पीठ परकी पखाल भरते समय फूलती जाती है। जैसे जैसे हम अुलटे चलते गये वैसे वैसे पानीमे शाति वढती गयी। अंधेरा भी वढता जा रहा था। अिस पारसे अुस पार तक आने जानेवाली अेक नन्हीं-सी नाव अेक कोनमे पडी थी। और देहातके चद मजदूर लगोटीकी डोरीमे पीछेकी ओर लकडीका अेक चक्र खोसकर अुसमें अपने 'कोयते' लटकाये जा रहे थे। ('कोयता' हसियेके जैसा अेक औजार होता है, जो नारियल छीलनेमे काम आता है या सामान्य तौरसे जिसका कुल्हाडीकी तरह अुपयोग किया जाता है।) अिन लोगोकी पोशाक वस अेक लगोटी और अेक जाकिट होती है। नदीको पार करते समय जाकिट निकालकर सिर पर ले लिया कि वस। प्रकृतिके वालक! जमीन और पानी अुनके लिअे अेक ही हैं।

घर जानेकी जल्दी सिर्फ हमे ही नही थी। अैसा मालूम होता था कि अिन देहाती लोगोको भी जल्दी थी। और नदीके किनारे दौडते छोटे छोटे केकडोको भी हमारी ही तरह जल्दी थी। रात पडी और हम जल्दीसे घर लौटे। किन्तु मनमे विचार तो आया कि किसी दिन अिस नदीके किनारे किनारे काफी अूपर तक जाना चाहिये।

प्याज या कॅवेज (पत्तागोभी) हाथमे आने पर फौरन अुसकी सव पत्तिया खोलकर देखनेकी जैसे अिच्छा होती है, वैसे ही नदीको देखने पर अुसके अुद्गमकी ओर चलनेकी अिच्छा मनुष्यको होती ही है। अुद्गमकी खोज सनातन खोज है। गगोत्री, जमनोत्री और महावलेश्वर या त्र्यवककी खोज अिसी तरह हुअी है।

वचपनकी यह अिच्छा कुछ ही वर्ष पहले वर आअी। श्री शकरराव गुलवाडीजी मुझे अेक सेवाकेद्र दिखानेके लिअे नदीकी अुलटी दिशामें दूर तक ले गये। अिस प्रतीप-यात्राके समय ही कवि वोरकरकी कविता सुनी थी, अिस वातका भी आनददायी स्मरण है।

१९३४

५
गंगामैया

१

गगा कुछ भी न करती, सिर्फ देवव्रत भीष्मको ही जन्म देती, तो भी आर्यजातिकी माताके तौर पर वह आज प्रख्यात होती। पितामह भीष्मकी टेक, भीष्मकी नि स्पृहता, भीष्मका ब्रह्मचर्य और भीष्मका तत्त्वज्ञान हमेशाके लिअे आर्यजातिका आदरपात्र ध्येय बन चुका है। हम गगाको आर्यसस्कृतिके अैसे आधारस्तभ महापुरुषकी माताके रूपमे पहचानते है।

२

नदीको यदि कोअी अुपमा शोभा देती है, तो वह माताकी ही। नदीके किनारे पर रहनेसे अकालका डर तो रहता ही नही। मेघराजा जब धोखा देते है तब नदीमाता ही हमारी फसल पकाती है। नदीका किनारा यानी शुद्ध और शीतल हवा। नदीके किनारे किनारे घूमने जाये तो प्रकृतिके मातृवात्सल्यके अखड प्रवाहका दर्शन होता है। नदी बडी हो और अुसका प्रवाह धीरगभीर हो, तब तो अुसके किनारे पर रहनेवालोकी शानशौकत अुस नदी पर ही निर्भर करती है। सचमुच नदी जनसमाजकी माता है। नदी-किनारे बसे हुअे शहरकी गली गलीमे घूमते समय अेकाध कोनेसे नदीका दर्शन हो जाय, तो हमे कितना आनद होता है! कहा शहरका वह गदा वायुमडल और कहा नदीका यह प्रसन्न दर्शन! दोनोंके बीचका अतर फौरन मालूम हो जाता है। नदी अीश्वर नही है, बल्कि अीश्वरका स्मरण करानेवाली देवता है। यदि गुरुको वदन करना आवश्यक है तो नदीको भी वदन करना अुचित है।

यह तो हुअी सामान्य नदीकी बात। किन्तु गगामैया तो आर्य-जातिकी माता है। आर्योंके बडे बडे साम्राज्य अिसी नदीके तट पर स्थापित हुअे है। कुरु-पाचाल देशका अगवगादि देशोके साथ गगाने

जी–२

2010

पा 8, निर्दलीय 1

एक और नाम

ही सयोग किया है। आज भी हिन्दुस्तानकी आबादी गगाके तट पर सबमें अधिक है।

जब हम गगाका दर्शन करते है तब हमारे ध्यानमे फसलसे लहलहाते सिर्फ खेत ही नही आते, न सिर्फ मालसे लदे जहाज ही आते है, किन्तु वाल्मीकिका काव्य, बुद्ध-महावीरके विहार, अशोक, समुद्रगुप्त या हर्ष जैसे सम्राटोके पराक्रम और तुलसीदास या कबीर जैसे सतजनोंके भजन — अिन सबका अेक साथ स्मरण हो आता है। गगाका दर्शन तो शैत्य-पावनत्वका हार्दिक तथा प्रत्यक्ष दर्शन है।

किन्तु गगाके दर्शनका अेक ही प्रकार नही है। गगोत्रीके पासके हिमाच्छादित प्रदेशोमे अिसका खिलाडी कन्यारूप, अुत्तरकाशीकी ओर चीड-देवदारके काव्यमय प्रदेशमे मुग्धारूप, देवप्रयागके पहाडी और सकरे प्रदेशमे चमकीली अलकनदाके साथ अुसकी अठखेलिया, लक्ष्मण-झूलेकी विकराल दष्ट्रामे से छूटनेके बाद हरद्वारके पास अुसका अनेक धाराओमे स्वच्छद विहार, कानपुरसे सटकर जाता हुआ अुसका अितिहास-प्रसिद्ध प्रवाह, प्रयागके विशाल पट पर हुआ अुसका कालिन्दीके साथका त्रिवेणी सगम — हरेककी शोभा कुछ निराली ही है। अेक दृश्य देखने पर दूसरेकी कल्पना नही हो सकती। हरेकका सौदर्य अलग, हरेकका भाव अलग, हरेकका वातावरण अलग, हरेकका माहात्म्य अलग।

प्रयागमें गगा अलग ही स्वरूप धारण कर लेती है। गगोत्रीसे लेकर प्रयाग तककी गगा वर्धमान होते हुअे भी अेकरूप मानी जा सकती है। किन्तु प्रयागके सगम अुसमें यमुना आकर मिलती है। यमुनाका तो पहलेसे ही दोहरा पाट है। वह खेलती है, कूदती है, किन्तु क्रीडा-सक्त नही मालूम होती। गगा शकुतला जैसी तपस्वी कन्या दीखती है। काली यमुना द्रौपदी जैसी मानिनी राजकन्या मालूम होती है। शर्मिष्ठा और देवयानीकी कथा जब हम सुनते है, तब भी प्रयागके पास गगा और यमुनाके बडी कठिनाअीके साथ मिलते हुअे शुक्ल-कृष्ण प्रवाहोका स्मरण हो आता है। हिन्दुस्तानमे अनगिनत नदिया है, अिसलिअे नामोका भी कोअी पार नही है। अिन सभी

सगमोमे हमारे पुरखोने गगा-यमुनाका यह सगम सबमे अधिक पसन्द किया है, और अिसीलिअे अुसका 'प्रयागराज' जैसा गौरवपूर्ण नाम रखा है। हिन्दुस्तानमे मुसलमानोके आनेके बाद जिस प्रकार हिन्दुस्तानके अितिहासका रूप बदला, अुसी प्रकार दिल्ली-आगरा और मथुरा-वृदावनके मर्मस्पर्शी अितिहासको लेकर आते हुअे यमुनाके प्रवाहके कारण गगाका स्वरूप भी प्रयागके बाद बिलकुल बदल गया है।

प्रयागके बाद गगा कुलवधूकी तरह गभीर और सौभाग्यवती दौडती है। अिसके बाद अुसमे बडी बडी नदिया मिलती जाती है। यमुनाका जल मथुरा-वृदावनसे श्रीकृष्णके सस्मरण अर्पण करता है, जब कि अयोध्या होकर आनेवाली सरयू आदर्श राजा रामचद्रके प्रतापी किन्तु करुण जीवनकी स्मृतिया लाती है। दक्षिणकी ओरसे आनेवाली चबल नदी रतिदेवके यज्ञयागकी बाते करती है, जब कि महान कोला-हल करता हुआ शोणभद्र गजग्राहके दारुण द्वद्व-युद्धकी झाकी कराता है। अिस प्रकार हृष्ट-पुष्ट बनी हुअी गगा पाटलीपुत्रके पास मगध साम्राज्य जैसी विस्तीर्ण हो जाती है। फिर भी गडकी अपना अमूल्य कर-भार लाते हुअे हिचकिचाती नही। जनक और अशोककी, बुद्ध और महावीरकी प्राचीन भूमिसे निकलकर आगे बढते समय गगा मानो सोचमे पड जाती है कि अब कहा जाना चाहिये। जब अितनी प्रचड वारिराशि अपने अमोघ वेगसे पूर्वकी ओर बह रही हो, तब अुसे दक्षिणकी ओर मोडना क्या कोअी आसान बात है? फिर भी वह अुस ओर मुड गअी है सही। दो सम्राट या दो जगद्गुरु जैसे अेका-अेक अेक-दूसरेसे नही मिलते, वैसा ही गगा और ब्रह्मपुत्राका हाल है। ब्रह्मपुत्रा हिमालयके अुस पारका सारा पानी लेकर आसाममे होती हुअी पश्चिमकी ओर आती है और गगा अिस ओरसे पूर्वकी ओर बढती है। अुनकी आमने-सामने भेट कैसे हो? कौन किसके सामने पहले झुके? कौन किसे पहले रास्ता दे? अतमे दोनोने तय किया कि दोनोको दाक्षिण्य धारणकर सरित्पतिके दर्शनके लिअे जाना चाहिये और भक्ति-नम्र होकर, जाते जाते जहा सभव हो, रास्तेमे अेक-दूसरेसे मिल लेना चाहिये।
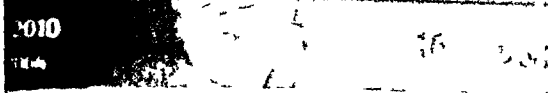
अिस प्रकार गोआलदोके पास जब गगा और ब्रह्मपुत्राका विशाल जल आकर मिलता है तब मनमे सदेह पैदा होता है कि सागर और क्या होता होगा? विजय प्राप्त करनेके बाद कसी हुअी खडी सेना भी जिस प्रकार अव्यवस्थित हो जाती है और विजयी वीर मनमे आये वैसे जहा तहा घूमते है, अुसी प्रकारका हाल अिसके बाद अिन दो महान नदियोका होता है। अनेक मुखो द्वारा वे सागरमे जाकर मिलती है। हरेक प्रवाहका नाम अलग अलग है और कुछ प्रवाहोके तो अेकसे भी अधिक नाम है। गगा और ब्रह्मपुत्रा अेक होकर पद्माका नाम धारण करती है। यही आगे जाकर मेघनाके नामसे पुकारी जाती है।

यह अनेकमुखी गगा कहा जाती है? सुदरवनमे बेतके झुड अुगाने? या सगरपुत्रोकी वासनाको तृप्त कर अुनका अुद्धार करने? आज जाकर आप देखेगे तो यहा पुराने काव्यका कुछ भी शेष नही होगा। जहा देखो वहा सनकी बोरिया बनानेवाली मिले और अैसे ही दूसरे बेहूदे विश्री कल-कारखाने दीख पडेगे। जहासे हिन्दुस्तानी कारीगरीकी असस्य वस्तुअे हिन्दुस्तानी जहाजोसे लका या जावा द्वीप तक जाती थी, अुसी रास्तेसे अब विलायती और जापानी आगबोटे (स्टीमरे) विदेशी कारखानोमे बना हुआ भद्दा माल हिन्दुस्तानके बाजारोमे भर डालनेके लिअे आती हुअी दिखाअी देती है। गगामैया पहले ही की तरह हमे अनेक प्रकारकी समृद्धि प्रदान करती जाती है। किन्तु हमारे निर्बल हाथ अुसको अुठा नही सकते!

गगामैया! यह दृश्य देखना तेरी किस्मतमे कब तक बदा है?

फरवरी, १९२६

६

यमुनारानी

हिमालय तो भव्यताका भडार है। जहा तहा भव्यताको विखेर कर भव्यताकी भव्यताको कम करते रहना ही मानो हिमालयका व्यवसाय है। फिर भी अैसे हिमालयमे अेक अैसा स्थान है, जिसकी अूर्जस्विता हिमालयवासियोका भी ध्यान खीचती है। यह है यमराजकी वहनका अुद्गम-स्थान।

अूचाअीसे वर्फ पिघलकर अेक वडा प्रपात गिरता है। अिर्दगिर्द गगनचुवी नही, वल्कि गगनभेदी पुराने वृक्ष आडे गिरकर गल जाते है। अुत्तुग पहाड यमदूतोकी तरह रक्षण करनेके लिअे खडे है। कभी पानी जमकर वर्फ वन जाता है, और कभी वर्फ पिघलकर अुसका वर्फके जितना ठडा पानी वन जाता है। अैसे स्थानमे जमीनके अन्दरसे अेक अद्भुत ढगसे अुवलता हुआ पानी अुछलता रहता है। जमीनके भीतरसे अैसी आवाज निकलती है मानो किसी वाष्पयत्रसे क्रोधायमान भाप निकल रही हो। और अुन झरनोंमे सिरसे भी अूची अुडती वूदे अितनी सरदीमे भी मनुष्यको झुलसा देती है। अैसे लोक-चमत्कारी स्थानमे असित ऋषिने यमुनाका मूल स्थान खोज निकाला। अिस स्थानमे शुद्ध जलसे स्नान करना असभव-सा है। ठडे पानीमे नहाये तो हमेशाके लिअे ठडे पड जायेगे और गरम पानीमे नहाये तो वहीके वही आलूकी तरह अुवल कर मर जायगे। अिसीलिअे वहा मिश्र जलके कुड तैयार किये गये है। अेक झरनेके अूपर अेक गुफा है। अुसमे लकडीके पटिये डालकर सो सकते है। हा, रातभर करवट वदलते रहना चाहिये, क्योकि अूपरकी ठड और नीचेकी गरमी, दोनो अेकसी असह्य होती है।

दोनो वहनोमे गगासे यमुना वडी हे, प्रौढ है, गभीर है, कृष्ण-भगिनी द्रौपदीके समान कृष्णवर्णा और मानिनी है। गगा तो मानो वेचारी मुग्ध शकुतला ही ठहरी, पर देवाधिदेवने अुसका स्वीकार किया अिमलिअे यमुनाने अपना वडप्पन छोडकर गगाको ही अपनी

सरदारी सौंप दी। ये दोनो वहने अेक-दूसरेसे मिलनेके लिअे वडी आतुर दिखाअी देती है। हिमालयमें तो अेक जगह दोनों करीव करीव आ जाती है। किन्तु अीर्ष्यालु दडाल पर्वतके वीचमे विघ्नसतोषीकी तरह आडे आनेसे अुनका मिलन वहा नही हो पाता। अेक काव्य-हृदयी ऋषि वहा यमुनाके किनारे रहकर हमेशा गगास्नानके लिअे जाया करता था। किन्तु भोजनके लिअे वापिस यमुनाके ही घर आ जाता था। जव वह वूढा हुआ — ऋषि भी अतमे वूढे होते है — तव अुसके थकेमादे पावो पर तरस खाकर गगाने अपना प्रतिनिधिरूप अेक छोटासा झरना यमुनाके तीर पर ऋषिके आश्रममें भेज दिया। आज भी वह छोटासा सफेद प्रवाह अुस ऋषिका स्मरण कराता हुआ वह रहा है।

देहरादूनके पास भी हमे आशा होती है कि ये दोनो नदिया अेक-दूसरेसे मिलेगी। किन्तु नही, अपने शैत्य-पावनत्वसे अतर्वेदीके समूचे प्रदेशको पुनीत करनेका कर्तव्य पूरा करनेके पहले अुन्हें अेक-दूसरेसे मिलकर फुरसतकी वाते करनेकी सूझती ही कैसे? गगा तो अुत्तरकाशी, टेहरी, श्रीनगर, हरिद्वार, कन्नौज, व्रह्मावर्त, कानपुर आदि पुराण-प्रसिद्ध और अितिहास-प्रसिद्ध स्थानोंको अपना दूध पिलाती हुअी दौडती है, जव कि यमुना कुरुक्षेत्र और पानीपतके हत्यारे भूमि-भागको देखती हुअी भारतवर्षकी राजधानीके पास आ पहुचती है। यमुनाके पानीमे साम्राज्यकी शक्ति होनी चाहिये। अुसके स्मरण-सग्रहालयमे पाडवोंसे लेकर मुगल-साम्राज्य तकका और गदरके जमानेसे लेकर स्वामी श्रद्धानदजीकी हत्या तकका सारा अितिहास भरा पडा है। दिल्लीसे आगरे तक अैसा मालूम होता है, मानो वावरके खानदानके लोग ही हमारे साथ वाते करना चाहते हो। दोनों नगरोंके किले साम्राज्यकी रक्षाके लिअे नही, वल्कि यमुनाकी शोभा निहारनेके लिअे ही मानो वनाये गये है। मुगल-साम्राज्यके नगारे तो कवके वद हो गये, किन्तु मथुरा-वृन्दावनकी वासुरी अव भी वज रही है।

मथुरा-वृदावनकी शोभा कुछ अपूर्व ही है। यह प्रदेश जितना रमणीय है अुतना ही समृद्ध है। हरियानेकी गौअे अपने मीठे, सरस, सकस

दूधके लिअे हिन्दुस्तान भरमे मशहूर है। यशोदामैयाने या गोपराजा नदने खुद यह स्थान पसद किया था, अिस वातको तो मानो यहाकी भूमि भूल ही नही सकती। मथुरा-वृन्दावन तो है बालकृष्णकी क्रीडा-भूमि, वीरकृष्णकी विक्रमभूमि। द्वारकावासको यदि छोड दें तो श्रीकृष्णके जीवनके साथ अधिकसे अधिक सहयोग कालिंदीने ही किया है। जिस यमुनाने कालियामर्दन देखा अुसी यमुनाने कसका शिरच्छेद भी देखा। जिस यमुनाने हस्तिनापुरके दरवारमे श्रीकृष्णकी सचिव-वाणी सुनी, अुसी यमुनाने रण-कुशल श्रीकृष्णकी योगमूर्ति कुरुक्षेत्र पर विचरती निहारी। जिस यमुनाने वृन्दावनकी प्रणय-वासुरीके साथ अपना कलरव मिलाया, अुसी यमुनाने कुरुक्षेत्र पर रोमहर्षण गीतावाणीको प्रतिध्वनित किया। यमराजकी वहनका भाअीपन तो श्रीकृष्णको ही शोभा दे सकता है।

जिसने भारतवर्षके कुलका कअी वार सहार देखा है, अुस यमुनाके लिअे पारिजातके फूलके समान ताजवीवीका अवसान कितना मर्मभेदी हुआ होगा? फिर भी अुसने प्रेमसम्राट् शाहजहाके जमे हुअे आसुओंको प्रतिविवित करना स्वीकार कर लिया है।

भारतीय कालसे मशहूर वैदिक नदी चर्मण्वतीसे करभार लेकर यमुना ज्यो ही आगे वढती है, त्यो ही मध्ययुगीन अितिहासकी झाकी करानेवाली नन्ही-सी सिन्धु नदी अुसमे आ मिलती है।

अव यमुना अधीर हो अुठी है। कअी दिन हुअे, वहन गगाका दर्शन नही हुआ है। कहने जैसी वाते पेटमे समाती नही है। पूछनेके लिअे असख्य सवाल भी अिकट्ठे हो गये है। कानपुर और कालपी वहुत दूर नही है। यहा गगाकी खवर पाते ही खुशीसे वहाकी मिश्रीसे मुह मीठा वनाकर यमुना अैसी दौडी कि प्रयागराजमे गगाके गलेसे लिपट गअी। क्या दोनोका अुन्माद! मिलने पर भी मानो अुनको यकीन नही होता कि वे मिली है। भारतवर्षके सवके सव साधु-सत अिस प्रेमसगमको देखनेके लिअे अिकट्ठे हुअे है। पर अिन वहनोको अिसकी सुधवुध नही है। आगनमे अक्षयवट खडा है। अुनकी भी अिन्हे परवाह नही है। वूढा अकवर छावनी डाले पडा है, अुसे कौन

पूछता है? और अशोकका शिलास्तभ लाकर वहा खडा करे तो भी क्या ये वहने अुसकी ओर नजर अुठाकर देखेगी?

प्रेमका यह संगम-प्रवाह अखड बहता रहता है, और अुसके साथ कवि-सम्राट् कालिदासकी सरस्वती भी अखड बह रही है!

क्वचित् प्रभा-लेपिभिर्अिन्द्रनीलैर् मुक्तामयी यष्टिरिवानुविद्धा।
अन्यत्र माला सित-पकजानाम् अिन्दीवरैर् अुत्खचितान्तरेव॥
क्वचित् खगाना प्रिय-मानसाना कादव-ससर्गवतीव पक्ति।
अन्यत्र कालागरु-दत्तपत्रा भक्तिर् भुवश्चन्दन-कल्पितेव॥
क्वचित् प्रभा चाद्रमसी तमोभिश्छायाविलीनै शबलीकृतेव।
अन्यत्र शुभ्रा शरद्अभ्रलेखा-रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनभ प्रदेशा॥
क्वचित् च कृष्णोरग-भूषणेव भस्माग-रागा तनुर् अीश्वरस्य।
पश्यानवद्यागि! विभाति गगा भिन्नप्रवाहा यमुनातरगै॥

[हे निर्दोष अगवाली सीते! देखो अिस गगाके प्रवाहमे यमुनाकी तरगे घसकर प्रवाहको खडित कर रही है। यह कैसा दृश्य है! कही मालूम होता है, मानो मोतियोकी मालामे पिरोये हुअे अिन्द्रनील मणि मोतियोकी प्रभाको कुछ धुधला कर रहे। कही अैसा दीखता है, मानो सफेद कमलके हारमे नील कमल गूथ दिये हो। कही मानो मानसरोवर जाते हुअे श्वेत हसोके साथ काले कादव अुड रहे हो। कही मानो श्वेत चदनसे लीपी हुअी जमीन पर कृष्णागरुकी पत्र-रचना की गयी हो। कही मानो चद्रकी प्रभाके साथ छायामे सोये हुअे अधकारकी क्रीडा चल रही हो। कही शरदऋतुके शुभ्र मेघोके पीछेसे अिधर अुधर आसमान दीख रहा हो। और कही अैसा मालूम होता है, मानो महादेवजीके भस्मभूषित शरीर पर कृष्ण सर्पोके आभूषण धारण करा दिये हो।]

कैसा सुदर दृश्य! अूपर पुष्पक विमानमे मेघ-श्याम रामचद्र और धवल-शीला जानकी चौदह सालके वियोगके पश्चात् अयोध्यामे पहुचनेके लिअे अधीर हो अुठे है, और नीचे अिदीवर-श्यामा कालिदी और सुधा-जला जाह्नवी अेक-दूसरेका परिरभ छोडे विना सागरमें नामरूपको छोडकर विलीन होनेके लिअे दौड रही है।

जिस पावन दृश्यको देखकर स्वर्गमें सुमनोंकी पुष्पवृष्टि हुअी होगी और भूतल पर कवियोंकी प्रतिभा-सृष्टिके फुहारे अुडे होंगे।

सितंबर, १९२९

७

मूल त्रिवेणी

ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों मिलकर जिस तरह दत्तात्रेयजी बनते हैं, अुसी तरह अलकनंदा, मंदाकिनी और भागीरथी मिलकर गंगामैया बनती हैं। ये तीनों गंगाकी बहनें नहीं हैं, बल्कि गंगाके अंग हैं। भागीरथी भले गंगोत्रीसे आती हो, तो भी मंदाकिनीका केदारनाथ और अलकनंदाका बदरीनारायण भी गंगाके ही अुद्गम हैं।

ब्रह्मकपालसे होकर जो अलकनंदा बहती है और वहां अेक बार श्राद्ध करनेमें जो अशेष पूर्वजोंको अेकसाथ हमेशाके लिअे मुक्ति दे देती है, अुस अलकनंदाका अुद्गम-स्थान क्या गंगोत्रीसे कम पवित्र है? ब्रह्मकपाल पर अेक बार श्राद्ध करनेके बाद फिर कभी श्राद्ध किया ही नहीं जा सकता। यदि मोहवश करें तो पितरोंकी अधोगति होती है। कितना जाग्रत स्थान है वह!

बदरीनारायणके गरम कुंडोंका पानी लेकर अलकनंदा आती है, जब कि मंदाकिनी गौरीकुंडके अुष्ण जलसे थोड़ी देर कवोष्ण होती है। केदारनाथका मंदिर बनावटकी दृष्टिसे अन्य सब मंदिरोंसे अलग प्रकारका है। अंदरका शिवलिंग भी स्वयंभू, बिना आकृतिका है। वह अितना अच्छा है कि मनुष्य अुस पर झुककर अुससे हृदयस्पर्श कर सकता है। मंदिरोंकी जितनी विशेषता है अुतनी ही मंदाकिनीकी भी विशेषता है। यहांके पत्थर अलग प्रकारके हैं, यहांका बहाव अलग प्रकारका है, और यहां नहानेका आनंद भी अलग प्रकारका है।

गंगोत्री तो गंगोत्री ही है। अिन तीनों प्रवाहोंमें भागीरथीका प्रवाह अधिक वन्य और मुग्ध मालूम होता है। यह नहीं है कि गंगामें सिर्फ यही तीन प्रवाह हैं। नीलगंगा है, ब्रह्मगंगा है, कअी

2010

पा 8, निर्दलीय 1

गगाये हैं। हिमालयसे निकलनेवाले सभी प्रवाह गगा ही तो है! जिन जिनका पानी हरिद्वारके पास हरिके चरणोका स्पर्श करता है वे सब प्रवाह गगा ही है। वाल्मीकिने भी जब गगाको आकाशसे हिमालयके शिखररूपी महादेवजीकी जटाओ पर गिरते और वहासे अनेक धाराओमे निकलते देखा तब अुनकी आर्ष दृष्टिने सात अलग अलग प्रवाह गिनाये थे।

तस्या विसृज्यमानाया सप्त स्रोतासि जज्ञिरे।
ह्लादिनी, पावनी चैव, नलिनी च तथैव च।।
सुचक्षुश्चैव, सीता च, सिन्धुश्चैव, महानदी।
सप्तमी चान्वगात् तासा भगीरथ-रथ तदा।।

१९३४

८

जीवनतीर्थ हरिद्वार

त्रिपथगा गगाके तीन अवतार हैं। गगोत्री या गोमुखसे लेकर हरिद्वार तककी गगा अुसका प्रथम अवतार है। हरिद्वारसे लेकर प्रयागराज तकका गगा अुसका दूसरा अवतार है। प्रथम अवतारमे वह पहाडके बन्धनसे — शिवजीकी जटाओसे — मुक्त होनेके लिअे प्रयत्न करती है। दूसरे अवतारमे वह अपनी बहन यमुनासे मिलनेके लिअे आतुर है। प्रयागराजसे गगा यमुनासे मिलकर अपने बडे प्रवाहके साथ सरित्पति सागरमे विलीन होनेकी चाह रखती है। यह है अुसका तीसरा अवतार। गगोत्री, हरिद्वार, प्रयाग और गगासागर, गगापुत्र आर्योके लिअे चार बडेसे बडे तीर्थस्थान है। जितना अूपर चढे अुतना तीर्थका माहात्म्य अधिक, अैसा माना जाता है। अेक प्रकारसे यह सही भी है। किन्तु मेरी दृष्टिमे तो भारत-जातिके लिअे अत्यत आकर्षक स्थान हरिद्वार ही है। हरिद्वारमे भी पाच तीर्थ प्रसिद्ध है। पुराणकारोने हरेकके माहात्म्यका वर्णन श्रद्धा और रससे किया है। किन्तु यह महत्त्व कुछ भी न जानते

हुओ भी मनुष्य कह सकता है कि 'हरिकी पैडी' मे ही गगाका माहात्म्य कहे तो माहात्म्य और काव्य कहे तो काव्य अधिक दिखाओ देता है।

यो तो हरेक नदीकी लवाओीमे काव्यमय भूमिभाग होते ही है। मेरा कहनेका यह आशय नही है कि गगाके किनारे हरिद्वारसे अधिक सुदर स्थान हो ही नही सकते। हरिकी पैडीके आसपास वनारसकी शोभाका सौवा हिस्सा भी आपको नही मिलेगा। फिर भी यहा पर प्रकृति और मनुष्यने अेक-दूसरेके वैरी न होते हुअे गगाकी शोभा वढानेका काम सहयोगसे किया है। गगाका वह सादा ओर स्वच्छ प्रवाह, मदिरके पासका वह दौडता घाट, घाटके नीचेका वह छोटासा टेढामेढा ह्रद, अिस तरफ हजारो लोग आसानीसे बैठ सके अैसा नदीके पट जैसा घाट, अुस तरफ छोटे नेटके जेसा टुकडा और दोनो वाजुओको साधनेवाला पुराना पुल, सभी काव्यमय है। किनारे परके मदिरो और धर्मशालाओके सादे शिखर गगाकी तरफ चिपका हुआ हमारा ध्यान अपनी तरफ नही खीचते। फिर भी वे गगाकी शोभामे वृद्धि ही करते है। वनारसके वाजारमे वैठनेवाले आलसी बैल अलग है और शातिसे जुगाली करनेवाले यहाके बैल अलग है। यहा गगामे कही पर भी कीचडका नामोनिशान आपको नही मिलेगा। अनतकालसे अेक-दूसरेके साथ टकरा टकरा कर गोल वने हुअे सफेद पत्थर ही सर्वत्र देख लीजिये।

हरिकी पैडीमें सवसे आकर्षक वस्तुकी ओर हमारा ध्यान हो नही जाता। हम अुसका महज अमर ही अनुभव करते है। वह है यहाकी हवा। हिमालयके दूर दूरके हिमाच्छादित शिखरो परसे जो पवन दक्षिणकी ओर वहते है, वे सवसे पहले यहाकी ही मनुष्यवस्तीको स्पर्श करते है। अितना पावन पवन अन्यत्र कहा मिले? हरिकी पैडीके पास पुल पर खडे रहिये, आपके फेफडोमे और दिलमे केवल आह्लाद ही भर जायगा। अुन्मादक नही वल्कि प्राणदायी, फिर भी प्रशम-कारी।

जितनी वार मै यहा आया हू, अुतनी वार वही शाति, वही आह्लाद, वही स्फूर्ति मैने अनुभव की है। चद लोग वम्वअीकी चौपाटीके
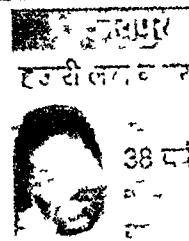
साथ अिन घाटका मुकाबला करते है। आत्यंतिक विरोधका सादृश्य अिन दोनोंके बीच जरूर है। यहा यात्री लोग मछलियोंको आहार देते है, जब कि वहा मछुअे आहारके लिअे मछलियोंको पकडने जाते है।

हरिकी पैडी देखनी हो तो शामको सूर्यास्तके बाद जाना चाहिये। चादनी है या नही, यह सोचनेकी आवश्यकता नही है। चादनी होगी तो अेक प्रकारकी शोभा मिलेगी, नही होगी तो दूसरे प्रकारकी मिलेगी। अिन दोनोमे जो पसदगी करने बैठेगा वह कला-प्रेमी नही है। सध्याकाशमें अेकके बाद अेक सितारे प्रकट होते है, और नीचेमे अेकके बाद अेक जलते दीये अुनका जवाब देते है। अिस दृश्यकी गूढ शाति मन पर कुछ अद्भुत असर करती है। अितनेमे मदिरसे टीग टाऽग, टीग टाऽग करते घटे आरतीके लिअे न्यौता देते है। अिस घटनादका मानो अत ही नही है। टीग टाऽग, टीग टाऽग चलता ही रहता है। और भक्तजन तरह तरहकी आरतिया गाते ही रहते है। पुरुष गाते है, स्त्रिया गाती है, ब्रह्मचारी गाते है और सन्यासी भी गाते है, स्थानिक लोग गाते है और प्रात-प्रातके यात्री भी गाते है। कोअी किसीकी परवाह नही करता। कोअी किसीसे नही अकुलाता। हरेक अपने अपने भक्तिभावमे तल्लीन। सनातनी स्तोत्र गाते है, आर्य-समाजी अुपदेश देते है। सिख लोग ग्रथसाहबके अेकाध 'महोल्ले' मे से आसा-दि-वार जोरसे गाते है। गोरक्षा-प्रचारक आपको यहा बतायेंगे कि ससारमे सफेद रग अिसलिअे है कि गायका दूध सफेद है। गायके पेटमें तैंतीस कोटि देवता है, सिर्फ वहा पेटभर घास नही है। चद नास्तिक अिस भीडका फायदा अुठाकर प्रमाणके साथ यह सिद्ध कर देते है कि अीश्वर नही है। और अुदार हिन्दूधर्म यह सब सद्भावपूर्वक चलने देता है। गगामैयाके वातावरणमे किसीका भी तिरस्कार नही है। सभीका सत्कार है। लाल गेरुवा पहनकर मुक्त होनेका दावा करनेवाले मुक्तिफौजके मिशनरी भी यहा आकर यदि हिन्दूधर्मके विरुद्ध प्रचार करे तो भी हमारे यात्री अुनकी बात शातिसे सुनेगे और कहेंगे कि भगवानने जैसी बुद्धि दी है वैसा बेचारे बोलते है, अुनका क्या अपराध है?

हिन्दू समाजमे अनेक दोष है और अिन दोषोके कारण हिन्दू समाजने काफी सहा भी है। किन्तु अुदारता, सहिष्णुता और सद्भाव आदि हिन्दू समाजकी विशेषताये हरगिज दोषरूप नही है। यह कहनेवाले कि अुदारताके कारण हिन्दू समाजने बहुत कुछ सहा है, हिन्दू धर्मकी जड ही काट डालते है।

अब भी वह घटा बज रहा है और आलसी लोगोको यह कहकर कि आरतीका समय अभी बीता नही है, जीवनका कल्याण करनेके लिअे मनाता है।

और वे बालाये खाखरेके पत्तोके बडे बडे दोनोमें फूलोके बीच घीके दीये रखकर अुन्हे प्रवाहमे छोड देती है, मानो अपने भाग्यकी परीक्षा करती हो। और ये दोने तुरन्त नावकी तरह डोलते डोलते — अिस तरह डोलते हुअे मानो अपने भीतरकी ज्योतिका महत्त्व जानते हो, जीवन-यात्रा शुरू कर देते है।

चली! वह जीवन-यात्रा चली! अेकके बाद अेक, अेकके बाद अेक, ये दीये अपनेको और अपने भाग्यको जीवन-प्रवाहमे छोड देते है। जो बात मनुष्य-जीवनमे व्यक्तिकी होती है वही यहा दीयोकी होती है। कोअी अभागे यात्राके आरभमे ही पवनके वश हो जाते है और चारो ओर विषाद फैलाते है। कुछ काफी आशाये दिखाकर निराश करते है। कुछ आजन्म मरीजोकी तरह डगमग करते करते दूर तक पहुचते है। कभी कभी दो दोने पास पास आकर अेक-दूसरेसे चिपक जाते है और बादमे यह जोडा-नाव दपतीकी तरह लबी लबी यात्रा करती है। अुनको गोल गोल चक्कर काटते देखकर मनमे जो भाव प्रकट होते है अुन्हे व्यक्त करना कठिन है। कअी तो जीवन-ज्योति बुझनेसे पहले ही दृष्टिमे ओझल हो जाते है। मृत्यु और अदृष्ट दोनो मनुष्य-जीवनके आखिरी अध्याय है। अिनके सामने किसीकी चलती नही, अिसीलिअे मनुष्यको ओीश्वरका स्मरण होता है। मरण न होता तो शायद ओीश्वरका स्मरण भी न होता।

हिंमत हो तो किसी दिन सुबह चार बजे अकेले अकेले अिस घाट पर आकर बैठिये। कुछ अलग ही किस्मके भक्त आपको यहा दिखाओी

2010
पा 8, निर्दलीय 1
रिश्तेदार

देंगे। सुबह तीन बजेसे लेकर सूर्योदय तक विशिष्ट लोग ही यहा आयेंगे। बाजिनोंकी अुषा सूर्यनारायणको जन्म देती है और तुरन्त व्यावहारिक दुनिया जिस घाट पर कब्जा कर लेती है। अुसके पहले ही यहासे निकल जाना अच्छा है। आकाशके सितारे भी खुश होंगे।

मार्च, १९३६

९

दक्षिणगंगा गोदावरी

१

बचपनमे सुबह अुठकर हम भूपाली* गाते थे। अुनमे से ये चार पक्तिया अब भी स्मृतिपट पर अकित है

'अुठोनिया प्रात काळी। वदनी वदा चद्रमौळी।
श्रीबिंदुमाधवाजवळी। स्नान करा गगेचे। स्नान करा गोदेचे।।

*   *   *

कृष्णा वेण्या तुगभद्रा। शरयू कालिदी नर्मदा।
भीमा भामा गोदा। करा स्नान गगेचे।।

गगा और गोदा अेक ही है। दोनोके माहात्म्यमे जरा भी फर्क नही है। फर्क कोओी हो भी तो अितना ही कि कलिकालके पापके कारण गगाका माहात्म्य किसी समय कम हो सकता है, किन्तु गोदावरीका माहात्म्य कभी कम हो ही नही सकता। श्री रामचद्रके अत्यत सुखके दिन अिस गोदावरीके तीर पर ही बीते थे, और जीवनका दारुण आघात भी अुन्हे यही सहना पडा था। गोदावरी तो दक्षिणकी गगा है।

कृष्णा और गोदावरी अिन दो नदियोने दो विक्रमशाली महाप्रजाओका पोषण किया है। यदि हम कहे कि महाराष्ट्रका स्वराज्य

---

* प्रभा[illegible]या।

और आंध्रका साम्राज्य अिन्ही दो नदियोंका ऋणी है, तो अिसमें जरा-सी भी अत्युक्ति नहीं होगी। साम्राज्य बने और टूटे, महाप्रजायें चढी और गिरीं, किन्तु अिस अैतिहासिक भूमिमें ये दो नदियां अखंड बहती ही जा रही हैं। ये नदियां भूतकालके गौरवशाली अितिहासकी जितनी साक्षी हैं अुतनी ही भविष्यकालकी महान आशाओंकी प्रेरक भी हैं। अिनमें भी गोदावरीका माहात्म्य कुछ अनोखा ही है। वह जितनी सलिल-समृद्ध है अुतनी ही अितिहास-समृद्ध भी है। गोपाल-कृष्णके जीवनमें जिस तरह सर्वत्र विविधता ही विविधता भरी हुआी है, अेकसा अुत्कर्ष ही अुत्कर्ष दिखाआी देता है, अुसी तरह गोदावरीके अति दीर्घ प्रवाहके किनारे सृष्टि-सौंदर्यकी विविधता और विपुलता भरी पडी है। ब्रह्मदेवकी अेक कल्पनामें से जिस तरह सृष्टिका विस्तार होता है, वाल्मीकिकी अेक कारुण्यमयी वेदनामें से जिस तरह रामायणी सृष्टिका विस्तार हुआ है, अुसी तरह त्र्यंबकके पहाडके कगारसे टपकती हुआी गोदावरीमें से ही आगे जाकर राजमहेंद्रीकी विशाल वारिराशिका विस्तार हुआ है। सिंधु और ब्रह्मपुत्राको जिस तरह हिमालयका आलिंगन करनेकी सूझी, नर्मदा और ताप्तीको जिस तरह विंध्य-सतपूडाको पिघलानेकी सूझी, अुसी तरह गोदावरी और कृष्णाको दक्षिणके अुन्नत प्रदेशको तर करके अुसे धनधान्यसे समृद्ध करनेकी सूझी है। पक्षपातसे सह्याद्रि पर्वत पश्चिमकी ओर ढल पडा, यह मानो अिन्हें पसन्द नहीं आया। अैसा ही जान पडता है कि अुसे पूर्वकी ओर खीचनेका अखंड प्रयत्न ये दोनों नदियां कर रही हैं। अिन दोनों नदियोंका अुद्गम-स्थान पश्चिमी समुद्रसे ५०–७५ मीलसे अधिक दूर नहीं है, फिर भी दोनों ८००–९०० मीलकी यात्रा करके अपना जलभार या कर-भार पूर्व-समुद्रको ही अर्पण करती हैं। और अिस कर-भारका विस्तार कोअी मामूली नहीं है। अुसके अन्दर सारा महाराष्ट्र देश आ जाता है, हैदराबाद और मैसूरके राज्योंका अन्तर्भाव होता है, और आंध्र देश तो साराका सारा अुसीमें समा जाता है। मिश्र संस्कृतिकी माता नाअिल नदी हमारी गोदावरीके सामने कोअी चीज ही नहीं है।

त्र्यवकके पास प्हाडकी अेक वडी दीवारमे से गोदाका अुद्गम हुआ है। गिरनारकी अूची दीवार परसे भी त्र्यवककी अिस दीवारका पूरा खयाल नही आयेगा। त्र्यवक गावसे जो चढाओी शुरु होती है वह गोदामैयाकी मूर्तिके चरणो तक चलती ही रहती है। अिससे भी अूपर जानेके लिअे वाओी ओर पहाडमे विकट सीढिया वनायी गयी है। अिस रास्ते मनुष्य ब्रह्मगिरि तक पहुच सकता है। किन्तु वह दुनिया ही अलग है। गोदावरीके अुद्गम-स्यानसे जो दृश्य दीख पडता है वही हमारे वातावरणके लिअे विशेष अनुकूल है। महाराष्ट्रके तपस्वियो और राजाओने समान भावसे अिस स्थान पर अपनी भक्ति अुडेल दी है। कृष्णाके किनारे वाओी सातारा और गोदाके किनारे नासिक पैठण महाराष्ट्रकी सच्ची सास्कृतिक राजधानिया है।

२

किन्तु गोदावरीका अितिहास तो सहन-वीर रामचद्र और दु ख-मूर्ति सीतामाताके वृत्तातसे ही शुरू होता है। राजपाट छोडते समय रामको दु ख नही हुआ, किन्तु गोदावरीके किनारे सीता और लक्ष्मणके साथ मनाये हुअे आनदका अत होते ही रामका हृदय अेकदम शतधा विदीर्ण हो गया। वाघ-भेडियोके अभावमे निर्भय वने हुअे हिरण आर्य रामभद्रकी दु खोन्मत्त आखे देखकर दूर भाग गये होगे। सीताकी खोजमे निकले देवर लक्ष्मणकी दहाडे सुनकर वडे वडे हाथी भी भय-कपित हो गये होगे। और पशुपक्षियोके दु खाश्रुओसे गोदावरीके विमल जल भी कषाय हो गये होगे। हिमालयमे जिस तरह पार्वती थी, अुसी तरह जनस्थानमे सीता समस्त विश्वकी अधिष्ठात्री थी। अुसके जाने पर जो कल्पातिक दु ख हुआ वह यदि सार्वभौम हुआ हो, तो अुसमे आश्चर्य ही क्या है?

राम-सीताका सयोग तो फिर हुआ। किन्तु अुनका जनस्थानका वियोग तो हमेशाके लिअे वना रहा। आज भी आप नासिक-पचवटीमे घूमकर देखे, चाहे चौमासेमे जाये या गरमीमे, आपको यही मालूम होगा मानो सारी पचवटी जटायुकी तरह अुदास होकर 'सीता, सीता'

पुकार रही है। महाराष्ट्रके सावु-मतोने यदि अपनी मगल-वाणी यहा फैलाअी न होती, तो जनस्थान मानो भयानक अुजाड प्रदेश हो गया होता। गरमीकी धूपको टालनेके लिअे जिस तरह तृणमृष्टि चारो ओर फैल जाती है, अुसी तरह जीवनकी विपमताको भुला देनेके लिअे साधु-मत सर्वत्र विचरते है, यह कितने वडे सौभाग्यकी वात है! जव जव नासिक-त्र्यवककी ओर जाना होता है, तव तव वनवासके लिअे जिस स्थानको पसन्द करनेवाले राम-लक्ष्मणकी आखोंसे सारा प्रदेश निहारनेका मन होता है। किन्तु हर वार कपित तृणोमे से सीतामाताकी कातर तनु-यष्टि ही आखोके सामने आती है।

रामभक्त श्रीसमर्थ रामदास जव यहा रहते थे तव अुनके हृदयमें कौनसी अुर्मिया अुठती होगी! श्रीसमर्थने गोदावरीके तीर पर गोवरके हनुमानकी स्थापना किस हेतुसे की होगी? क्या यह वतानेके लिअे कि पचवटीमे यदि हनुमान होते तो वे सीताका हरण कभी न होने देते? सीतामाताने कठोर वचनोंमे लक्ष्मण पर प्रहार करके अेक महासकट मोल ले लिया। हनुमानको तो वे अैसी कोअी वात कह नही पाती! किन्तु जनस्थान और किष्किधाके वीच वहुत वडा अतर है, और गोदावरी कोअी तुगभद्रा नही है।

* * *

रामकथाका करुण रस द्वापर युगमे आज तक वहता ही आया है। अुसे कौन घटा सकता है? अिसलिअे हम अत्यज जातिके माने गये पाडेके मुहसे वेदोका पाठ करवानेवाले श्री ज्ञानेश्वर महाराजसे मिलने पैठण चले। गोदावरी जिस तरह दक्षिणकी गगा है, अुसी तरह अुसके किनारे पर वसी हुअी प्रतिष्ठान नगरी दक्षिणकी काशी मानी जाती थी। यहाके दशग्रथी व्राह्मण जो 'व्यवस्था' देते थे, अुसे चारो वर्णोको मान्य करना पडता था। वडे वडे सम्राटोके ताम्रपत्रोसे भी यहाके व्राह्मणोके व्यवस्थापत्र अधिक महत्त्वके माने जाते थे। अैसे स्थान पर शास्त्रधर्मके सामने हृदयधर्मकी विजय दिखानेका काम सिर्फ ज्ञानराज ही कर सकते थे। पैठणमे ज्ञानेश्वरको यज्ञोपवीतका

अधिकार नही मिला। सन्यासी शकराचार्यके अूपर किये गये अत्याचारोकी स्मृतिको कायम रखनेके लिअे जिस तरह वहाके राजाने नाबुद्री ब्राह्मणो पर कअी रिवाज लाद दिये थे, अुसी तरह सन्यासी-पुत्र ज्ञानेश्वरका यदि कोअी शिष्य राजपाटका अधिकारी होता तो वह महाराष्ट्रीय ब्राह्मणोको सजा देता और कहता कि ज्ञानेश्वरको यज्ञोपवीतका अिनकार करनेवाले तुम लोग आगेसे यज्ञोपवीत पहन ही नही सकते।

हाथकी अुगलियोका जिस तरह पखा बनता है, अुसी तरह बडी बडी नदियोमे आकर मिलनेवाली और आत्म-विलोपनका कठिन योग साधनेवाली छोटी नदियोका भी पखा बनता है। सह्याद्रि और अजिठाके पहाडोंमे जो कोना बनता है अुसमे जितना पानी गिरता है अुस सबको खीच खीच कर अपने साथ ले जानेका काम ये नदिया करती है। धारणा और कादवा, प्रवरा और मुळाको यदि छोड दे तो भी मध्यभारतसे दूर दूरका पानी लानेवाली वर्धा और वैनगगाको भला कैसे भूल सकते है? दो मिलकर अेक बनी हुअी नदीका जिसने प्राणहिता नाम रखा, अुसके मनमे कितनी कृतज्ञता, कितना काव्य, कितना आनद भरा होगा! और ठेठ अीशान कोणसे पूर्व-घाटका नीर ले आनेवाली अष्टवक्रा अिद्रावती और अुसकी सखी श्रमणी तपस्विनी शबरीको प्रणाम किये बिना कैसे चल सकता है?

गोदावरीकी सपूर्ण कला तो भद्राचलम्से ही देखी जा सकती है। जिसका पट अेकसे दो मील तक चौडा है अैसी गोदावरी जब अूचे अूचे पहाडोके बीचमे से होकर अपना रास्ता बनाती हुअी सिर्फ दो सौ गजकी खाअीमे से निकलती है तब वह क्या सोचती होगी? अपनी सारी शक्ति और युक्ति काममे ले कर नाजुक समयमे अपनी महाप्रजाको आगे ले चलनेवाले किसी राष्ट्रपुरुषकी तरह और ससारको विस्मयमें डालनेवाली गर्जनाके साथ वह यहासे निकलती है। नदीमें आनेवाले घोडा-पूर और हाथी-पूर जैसे भारी पूरोकी बाते हम सुनते है, किन्तु अेकदम पचास फुट जितना अूचा पूर क्या कभी कल्पनामे भी आ सकता है? पर जो कल्पनामे सभव नही है, वह गोदावरीके प्रवाहमे

सभव है। सकडी खाअीमे से निकलते हुअे पानीके लिअे अपना पृष्ठभाग भी सपाट वनाये रखना असभव-सा हो जाता है। अर्घ्य देते समय जिस प्रकार अजलिकी छोटी नाली-सी वन जाती है, अुमी प्रकार खाअीमे मे निकलनेवाले पानीके पृष्ठभागकी भी अेक भयानक नाली वनती है। किन्तु अद्‌भुत रस तो अिससे भी आगे अधिक है। अिस नालीमे से अपनी नावको ले जानेवाले साहसी नाविक भी वहा मौजूद है। नावके दोनो ओर पानीकी अूची अूची दीवारोको नावके ही वेगसे दौडते हुअे देखकर मनुष्यके दिलमें क्या क्या विचार अुठते होगे?

भद्राचलम्‌से राजमहेन्द्री या धवलेश्वर तक अखड गोदावरी वहती है। अुसके बाद 'त्यागाय सभृतार्थानाम्' का सनातन सिद्धात अुसे याद आया होगा। यहासे गोदावरीने जीवन-वितरण करना शुरु कर दिया है। अेक ओर गौतमी गोदावरी, दूसरी ओर वसिष्ठ गोदावरी, वीचमे कअी द्वीप ओर अतर्वेदी जैसे प्रदेश हैं, और अिन प्रदेशोमे गोदाके सरस जलसे और काली चिकनी मिट्टीसे पैदा होनेवाले सोनेके जैसे शालिधान्य पर परिपुष्ट होकर वेदघोष करनेवाले ब्राह्मण रहते आये है। अैसे समृद्ध देशको स्वतत्र रखनेकी शक्ति जव हमारे लोग खो वैठे, तव डच, अग्रेज और फ्रेच लोग भी गोदावरीके किनारे पडाव डालनेको अिकट्ठे हुअे। आज * भी यानानमे फ्रासका तिरगा झडा फहरा रहा है।

३

मद्राससे राजमहेन्द्री जाते समय वेजवाडेमे सूर्योदय हुआ। वर्षा-ऋतुके दिन थे। फिर पूछना ही क्या था? सर्वत्र विविध छटाओ-वाला हरा रग फैला हुआ था। और हरे रगका अिस तरह जमीन पर पडा रहना मानो असह्य लगनेसे अुसके वडे वडे गुच्छ हाथमे लेकर अूपर अुछालनेवाले ताडके पेड जहा तहा दीख पडते थे। पूर्वकी ओर अेक नहर रेलकी सडकके किनारे किनारे वह रही थी। पर किनारा अूचा होनेके कारण अुसका पानी कभी कभी ही दीख पडता था। सिर्फ तितलियोकी

* सौभाग्यसे आज यह परिस्थिति नही है।
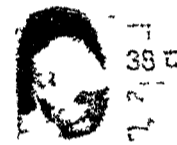
तरह अपने पाल फैलाकर कतारमें खडी हुअी नौकाओ परसे ही अुस नहरका अस्तित्व ध्यानमे आता था। वीच वीचमे पानीके छोटे वडे तालाव मिलते थे। अिन तालानोमें विविधरगी वादलोवाला अनत आकाश नहानेके लिअे अुतरा था, अिसलिअे पानीकी गहराअी अनत गुनी गहरी मालूम होती थी। कही कही चचल कमलोंके वीच निस्तब्ध वगुलोको देखकर प्रभातकी वायुका अभिनदन करनेका दिल हो जाता था। अैसे काव्यप्रवाहमे से होकर हम कोव्वूर स्टेशन तक आ पहुचे। अब गोदावरी मैयाके दर्शन होगे अैसी अुत्सुकता यहीसे पैदा हुअी। पुल परसे गुजरते समय दायी ओर देखे या वायी ओर, अिसी अुधेडवुनमे हम पडे थे। अितनेमे पुल आ ही गया और भगवती गोदावरीका सुविशाल विस्तार दिखाअी पडा।

गगा, सिवु, शोणभद्र, अैरावती जैसे विशाल वारि-प्रवाह मैने जी भरकर देखे है। वेजवाडेमे किये हुअे कृष्णामाताके दर्शनके लिअे मैने हमेशा गर्व अनुभव किया है। किन्तु राजमहेन्द्रीके पासकी गोदावरीकी शोभा कुछ अनोखी ही थी। अिस स्थान पर मैने जितना भव्य काव्यका अनुभव किया है, अुतना शायद ही और कही वहता देखा होगा। पश्चिमकी ओर नजर डाली तो दूर दूर तक पहाडियोका अेक सुन्दर झुड वैठा हुआ नजर आया। आकाशमें वादल घिरे होनेसे कही भी धूप न थी। सावले वादलोके कारण गोदावरीके धूलि-धूसर जलकी कालिमा और भी वढ गअी थी। फिर भवभूतिका स्मरण भला क्यो न हो? अूपरकी और नीचेकी अिस कालिमाके कारण सारे दृश्य पर वैदिक प्रभातकी सौम्य सुन्दरता छाअी हुअी थी। और पहाडियो पर अुतरे हुअे कअी सफेद वादल तो विलकुल ऋषियोके जैसे ही मालूम होते थे। अिस सारे दृश्यका वर्णन शब्दोमें कैसे किया जा सकता है?

अितना सारा पानी कहासे आता होगा? विपत्तियोमें से विजयके साथ पार हुआ देश जैसे वैभवकी नयी नयी छटाये दिखाता जाता है और चारो ओर समृद्धि फैलाता जाता है, वैसे ही गोदावरीका प्रवाह पहाडोंसे निकलकर अपने गौरवके साथ आता हुआ दिखाअी देता था। छोटे वडे जहाज नदीके वच्चो जैसे थे। माताके स्वभावसे परिचित होनेके कारण अुसकी गोदमें चाहे जैसे नाचे तो अुन्हें कौन

रोकनेवाला था? किन्तु वच्चोकी अुपमा तो अिन नावोकी अपेक्षा प्रवाहमे जहा तहा पैदा होनेवाले भवरोको देनी चाहिये। वे कुछ देर दिखाओी देते, वडे तूफानका स्वाग रचते, और अेकाघ क्षणमे हस देते। और टूट पडते। चाहे जहासे आते और चाहे जहा चले जाते या लुप्त हो जाते।

अितने वडे विशाल पटमे यदि द्वीप न हो तो अुतनी कमी ही मानी जायगी। गोदावरीके द्वीप मशहूर है। कुछ तो पुराने धर्मकी तरह स्थिर रूप लेकर वैठे है। किन्तु कअी-अेक तो कविकी प्रतिभाके समान हर समय नया नया स्थान लेते है और नया नया रूप धारण करते है। अिन पर अनासक्त वगुलोंके सिवा और कौन खडा रहने जाय? और जव वगुले चलने लगते है तव वे अपने पैरोके गहरे निशान छोडे वगैर थोडे ही रहते है। अपने धवल चरित्रका अनुसरण करनेवालोको दिशा-सूचन न करा दे तो वे वगुले ही कैसे!

नदीका किनारा यानी मानवी कृतज्ञताका अखड अुत्सव। सफेद सफेद प्रासाद और अूचे अूचे शिखर तो अेक अखड अुपासना है ही। किन्तु अितनेसे ही काव्य सपूर्ण नही होता। अत भक्त लोग हर रोज नदीकी लहरो परसे मदिरके घटनादकी लहरोको अिस पारसे अुस पार तक भेजते रहते है।

सस्कृतिके अुपासक भारतवासी अिसी स्थान पर गगाजलके कलश आधे गोदामे अुडेलते है और फिर गोदाके पानीसे अुन्हे भरकर ले जाते है। कितनी भव्य विधि है! कितना पवित्र भावप्रधान काव्य है! यह भक्तिरव प्रत्येक हृदयमे भरा हुआ है। वह घटनाद और वह भक्तिरव पूर्वस्मृतिने ही सुनाया। दरअसल तो केवल अेजिनकी आवाज ही सुनाओी देती थी। आधुनिक सस्कृतिके अिस प्रतिनिधिके प्रति अपनी घृणाको यदि हम छोड दे तो रेलके पहियोका ताल कुछ कम आकर्षक नही मालूम होता। और पुल पर तो अुसका विजयनाद सक्रामक ही सिद्ध होता है।

पुल पर गाडी काफी देर चलनेके वाद मुझे खयाल आया कि पूर्व दिशाकी ओर तो देखना रह ही गया। हम अुस ओर मुडे। वहा
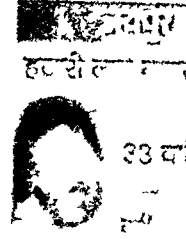
बिलकुल नयी ही शोभा नजर आयी। पश्चिमकी ओर गोदावरी जितनी चौडी थी, अुससे भी विशेष चौडी पूर्वकी ओर थी। अुसे अनेक मार्गों द्वारा सागरसे मिलना था। सरित्पतिसे जब सरिता मिलने जाती है तब अुसे सभ्रम तो होता ही है। किन्तु गोदावरी तो धीरोदात्त माता है। अुसका सभ्रम भी अुदात्त रूपमे ही व्यक्त हो सकता है। अिस ओरके द्वीप अलग ही किस्मके थे। अुनमें वनश्रीकी शोभा पूरी-पूरी खिली हुअी थी। ब्राह्मणोके या किसानोके झोपडे अिस ओरसे दिखाअी नही पडते थे। वहते पानीके हमलेके सामने टक्कर लेनेवाले अिन द्वीपोमे किसीने अूचे प्रासाद बनाये होते तो शायद वे दूरसे ही दीख पडते। प्रकृतिने तो केवल अूचे अूचे पेडोकी विजय-पताकाये खडी कर रखी थी। और बायी ओर राजमहेंद्री और धवलेश्वरकी सुखी बस्ती आनद मना रही थी। अैसे विरल दृश्यसे तृप्त होनेके पहले ही नदीके दाये किनारे पर अुन्मत्तताके साथ बहता हुआ कासकी सफेद कलगियोका स्थावर प्रवाह दूर दूर तक चलता हुआ नजर आया। नदीके पानीमे अुन्माद था, किन्तु अुसकी लहरे नही बनी थी। कलगियोके अिस प्रवाहने पवनके साथ षड्यत्र रचा था, अिसलिअे वह मनमानी लहरे अुछाल सकता था। जहा तक नजर जा सकती थी वहा तक देखा। और नजरकी पहुच यहा कम क्यो हो? किन्तु कलगियोका प्रवाह तो बहता ही जा रहा था। गोदावरीके विशाल प्रवाहके साथ भी होड करते अुसे सकोच नही होता था। और वह सकोच क्यो करता? माता गोदावरीके विशाल पुलिन पर अुसने माताका स्तन्यपान क्या कम किया था?

माता गोदावरी! राम-लक्ष्मण-सीतासे लेकर वृद्ध जटायु तक सबको तूने स्तन्यपान कराया है। तेरे किनारे शूरवीर भी पैदा हुअे है, और तत्त्वचिंतक भी पैदा हुअे है। सत भी पैदा हुअे है और राजनीतिज्ञ भी। देशभक्त भी पैदा हुअे है और अीश-भक्त भी। चारो वर्णोकी तू माता है। मेरे पूर्वजोकी तू अधिष्ठात्री देवता है। नयी नयी आशाये लेकर मै तेरे दर्शनके लिअे आया हू। दर्शनसे तो कृतार्थ हो गया हू। किन्तु मेरी आशाये तृप्त नही हुअी है। जिस प्रकार तेरे किनारे रामचद्रने दुष्ट

रावणके नाशका संकल्प किया था, वैसा ही संकल्प मैं कबसे अपने मनमें लिये हुअे हूं। तेरी कृपा होगी तो हृदयमें से तथा देशमें से रावणका राज्य मिट जायेगा, रामराज्यकी स्थापना होते मैं देखूंगा और फिर तेरे दर्शनके लिअे आअूंगा। और कुछ नहीं तो कासकी कलगीके स्थावर प्रवाहकी तरह मुझे अुन्मत्त बना दे, जिससे बिना संकोचके अेक-ध्यान होकर मैं माताकी सेवामें रत रह सकूं और बाकी सब कुछ भूल जाअूं। तेरे नीरमें अमोघ शक्ति है। तेरे नीरके अेक बिंदुका सेवन भी व्यर्थ नहीं जायेगा।

अक्तूबर, १९३१

१०

वेदोंकी धात्री तुंगभद्रा

जलमग्न पृथ्वीको अपने शूलदंतसे बाहर निकालनेवाले वराह भगवानने जिस पर्वत पर अपनी थकान दूर करनेके लिअे आराम किया, अुस पर्वतका नाम वराह-पर्वत ही हो सकता है। भगवान आराम करते थे तब अुनके दोनों दंतोंसे पानी टपकने लगा और अुसकी धाराअें पैदा हुआीं। बायें दंतकी धारा हुआी तुंगा नदी और दाहिने दंतसे निकली भद्रा नदी। आज अिस अुद्गम-स्थानको कहते हैं गंगामूल और वराह-पर्वतको कहते हैं बाबाबुदान। बाबाबुदान शायद वराह-पर्वत नहीं है, लेकिन अुसका पड़ोसी है। तुंगाके किनारे शंकराचार्यका शृंगेरी मठ है। मैंने तुंगाके दर्शन किये थे तीर्थहळ्ळीमें। (कन्नड भाषामें हळ्ळीके मानी हैं ग्राम।) तीर्थहळ्ळीमें मैं शायद अेक घंटे जितना ही ठहरा था। लेकिन वहांकी नदीके पात्रकी शोभा देखकर खुश हुआ था। तीर्थहळ्ळीका माहात्म्य तो मैं नहीं जानता, लेकिन कन्नड भाषाकी अेक छोटीसी लघुकथामें मैंने तीर्थहळ्ळीका वर्णन पढ़ा था। वही मेरे लिअे तीर्थहळ्ळीका स्मरण कायम करनेके लिअे काफी है। तुंगाके किनारे शिमोगा शहरके पास किसी

समय महात्मा गाधीके साथ मै घूमने गया था। अिस कारण भी यह नदी स्मृतिपट पर अकित है।

भद्राके किनारे वेंकिपुर आता है। यहाकी भाषामे अग्निको वेंकि कहते है। क्या भद्राका पानी वेंकिपुरकी आग बुझानेके लिअे काफी नही था?

तुगा और भद्राका सगम होता है कूडलीके पास। शायद अिसी सगमके महादेवके भक्त थे श्री बसवेश्वर, जो अेक राजाके प्रधान-मत्री होने पर भी लिगायत पथकी स्थापना कर सके। बसवेश्वरके काव्यमय गद्यवचनोके अतमे 'कूडल-सगम देवराया' का जिक्र बार बार आता है। अुसे पढकर 'मीराके प्रभु गिरधर नागर' का स्मरण हुअे बिना नही रहता। कूडलीके पास जो तुगभद्रा बनती है वह आगे जाकर कुर्नूलके पास मेरी माता कृष्णासे मिलती है। अिस बीच कुमुद्वती, वरदा, हरिद्रा और वेदावति जैसी नदिया तुगभद्रासे मिलती है। (वेदावति भी तुग-भद्राके जैसी द्वद्व नदी है। वेद और अवति मिलकर वह बनती है)। अिस प्रदेशमे तुल्यबल द्वद्व सस्कृतिका ही बोलबाला होगा। क्योकि तुगभद्राके किनारे ही हरिहर जैसी पुण्यनगरीकी स्थापना हुअी है। शैव और वैष्णवोका झगडा मिटानेके लिअे किसी अुभय-भक्तने हरि और हर दोनोको मिला कर अेक मूर्ति बना दी। अुसके मदिरके आसपास जो शहर बसा अुसका नाम हरिहर ही पडा।

तुगभद्राका पात्र पथरीला है। जहा देखे गोल-मटोल बडे बडे पत्थर नदीके पात्रमे स्नान करते पाये जाते है। अैसे पत्थर कभी कभी अिस प्रदेशमे टेकरियोके शिखर पर भी अेकके अूपर अेक विराजमान पाये जाते है। अिन्ही पत्थरोके बीच अेक प्रचड विस्तार पर विजयनगर साम्राज्यकी राजधानी थी।

विजयनगरके खडहर देखनेके लिअे जब मै होस्पेटसे विरूपाक्ष गया था तब अिन भीमकाय बट्टोका व चट्टानोका दर्शन किया था। विजयनगरके अप्रतिम कारीगरीके भग्न मदिरोका दर्शन करते करते मेरा हृदय सम्राट् कृष्णरायका श्राद्ध कर रहा था। रातको विरूपाक्षके मदिरमे हम सो गये तब तीन सौ साल जिसकी कीर्ति कायम रही अुस साम्राज्यके

वैभवके ही स्वप्न मैने देखे। दूसरे दिन ब्राह्म मुहूर्तमें अुठकर हम नजदीकके मातग पर्वतके शिखर पर जा पहुचे। वहा हमे अरुणोदयका और वादमें अुतने ही काव्यमय सूर्योदयका दृग्य देखना था। मातग पर्वतकी चोटी परसे तुगभद्राका दर्शन करके हम धीरे धीरे लेकिन कूदते कूदते नीचे अुतरे।

जब रावण सीतामाताको अुठाकर गगनमार्गसे जा रहा था तब सीताके वल्कलका अचल यहाकी चट्टानोको घिस गया था। अुसकी रेखाअें आज भी यहाके पत्थरो पर पाअी जाती है।

अभी अभी चार साल पहले मैंने कुर्नूलके पास तुगभद्राको अपना समस्त जीवन कृष्णाको अर्पण करते देखा, और अुसके पाससे स्वार्पणकी दीक्षा ली।

सुनता हू कि अब अिस तुगभद्रा पर बाध बाधकर अुसके अिकट्ठा किये हुअे पानीसे सारे मुल्कको समृद्धि पहुचायी जायेगी और अुसी पानीसे बिजली पैदा करके अुसकी शक्तिसे अुद्योगोका विकास किया जायेगा। माताकी सेवाकी भी कभी कोअी मर्यादा हो सकती है?

नदीके प्रवाहमे ये हाथीके जैसे बडे बडे पत्थर बादमे आकर पडे है या हाथीके जैसे पत्थरोमे से ही नदीने अपना रास्ता खोज निकाला है, अिसकी खोज कौन कर सकता है? दक्षिणमे वैदिक सस्कृतिके विजयका सूचन करनेवाला विजयनगरका साम्राज्य अिसी नदीके किनारे निर्माण हुआ। ओर अिसी नदीके किनारे वह कच्चे घडेके समान टूट गया। विजयनगरके साम्राज्यकी कीर्ति-पताका त्रिखडमे फहराती थी। चीनका सम्राट्, बगदादका बादशाह और विजयनगरका महाराजाधिराज, तीनोका वैभव सबमे बडा माना जाता था। अुस समय क्या तगभद्रा आजके जैसी ही दिखाअी देती होगी? नही तो कैसी दिखाअी देती होगी? नदी क्या मनुष्यकी कृति है, जिससे अुसके वैभवमे अुत्कर्ष और अपकर्ष हो?

मुळा और मुठा मिलकर जैसे मुळामुठा नदी बनी है, वैसे ही तुगा और भद्राके सगमसे तुगभद्रा बनी है। 'द्वद्व सामासिकस्य च' के न्यायसे अिन दोनो नदियोमे अुच्चनीच भाव तनिक भी नही है। दोनो

समय महात्मा गाधीके साथ मै घूमने गया था। अिस कारण भी यह नदी स्मृतिपट पर अकित है।

भद्राके किनारे वेकिपुर आता है। यहाकी भाषामे अग्निको वेकि कहते है। क्या भद्राका पानी वेकिपुरकी आग बुझानेके लिअे काफी नही था?

तुगा और भद्राका सगम होता है कूडलीके पास। शायद अिसी सगमके महादेवके भक्त थे श्री बसवेश्वर, जो अेक राजाके प्रधान-मत्री होने पर भी लिंगायत पथकी स्थापना कर सके। बसवेश्वरके काव्यमय गद्यवचनोके अतमे 'कूडल-सगम देवराया' का जिक्र बार बार आता हे। अुसे पढकर 'मीराके प्रभु गिरधर नागर' का स्मरण हुअे बिना नही रहता। कूडलीके पास जो तुगभद्रा बनती है वह आगे जाकर कुर्नूलके पास मेरी माता कृष्णासे मिलती है। अिस बीच कुमुद्वती, वरदा, हरिद्रा और वेदावति जैसी नदिया तुगभद्रासे मिलती हैं। (वेदावति भी तुग-भद्राके जैसी द्वद्व नदी है। वेद और अवति मिलकर वह बनती है)। अिस प्रदेशमे तुल्यबल द्वद्व सस्कृतिका ही बोलबाला होगा। क्योकि तुगभद्राके किनारे ही हरिहर जैसी पुण्यनगरीकी स्थापना हुअी है। शैव और वैष्णवोका झगडा मिटानेके लिअे किसी अुभय-भक्तने हरि और हर दोनोको मिला कर अेक मूर्ति बना दी। अुसके मदिरके आसपास जो शहर बसा अुसका नाम हरिहर ही पडा।

तुगभद्राका पात्र पथरीला है। जहा देखे गोल-मटोल बडे बडे पत्थर नदीके पात्रमे स्नान करते पाये जाते है। अैसे पत्थर कभी कभी अिस प्रदेशमे टेकरियोके शिखर पर भी अेकके अूपर अेक विराजमान पाये जाते है। अिन्ही पत्थरोके बीच अेक प्रचड विस्तार पर विजयनगर साम्राज्यकी राजधानी थी।

विजयनगरके खडहर देखनेके लिअे जब मै होस्पेटसे विरूपाक्ष गया था तब अिन भीमकाय बट्टोका या चट्टानोका दर्शन किया था। विजयनगरके अप्रतिम कारीगरीके भग्न मदिरोका दर्शन करते करते मेरा हृदय सम्राट् कृष्णरायका श्राद्ध कर रहा था। रातको विरूपाक्षके मदिरमें हम सो गये तब तीन सौ साल जिसकी कीर्ति कायम रही अुस साम्राज्यके

वैभवके ही स्वप्न मैने देखे। दूसरे दिन ब्राह्म मुहूर्तमे अुठकर हम नजदीकके मातग पर्वतके शिखर पर जा पहुचे। वहा हमे अरुणोदयका और बादमें अुतने ही काव्यमय सूर्योदयका दृश्य देखना था। मातग पर्वतकी चोटी परसे तुगभद्राका दर्शन करके हम धीरे धीरे लेकिन कूदते कूदते नीचे अुतरे।

जब रावण सीतामाताको अुठाकर गगनमार्गसे जा रहा था तब सीताके वल्कलका अचल यहाकी चट्टानोको घिस गया था। अुसकी रेखाअे आज भी यहाके पत्थरो पर पाअी जाती है।

अभी अभी चार साल पहले मैने कुर्नूलके पास तुगभद्राको अपना समस्त जीवन कृष्णाको अर्पण करते देखा, और अुसके पाससे स्वार्पणकी दीक्षा ली।

सुनता हू कि अब अिस तुगभद्रा पर बाध बाधकर अुसके अिकट्ठा किये हुअे पानीसे सारे मुल्कको समृद्धि पहुचायी जायेगी और अुसी पानीसे बिजली पैदा करके अुसकी शक्तिसे अुद्योगोका विकास किया जायेगा। माताकी सेवाकी भी कभी कोअी मर्यादा हो सकती है?

नदीके प्रवाहमे ये हाथीके जैसे बडे बडे पत्थर बादमे आकर पडे है या हाथीके जैसे पत्थरोमे से ही नदीने अपना रास्ता खोज निकाला है, अिसकी खोज कौन कर सकता है? दक्षिणमे वैदिक सस्कृतिके विजयका सूचन करनेवाला विजयनगरका साम्राज्य अिसी नदीके किनारे निर्माण हुआ। और अिसी नदीके किनारे वह कच्चे घडेके समान टूट गया। विजयनगरके साम्राज्यकी कीर्ति-पताका त्रिखडमे फहराती थी। चीनका सम्राट्, बगदादका बादशाह और विजयनगरका महाराजाधिराज, तीनोका वैभव सबसे बडा माना जाता था। अुस समय क्या तुगभद्रा आजके जैसी ही दिखाअी देती होगी? नही तो कैसी दिखाअी देती होगी? नदी क्या मनुष्यकी कृति है, जिससे अुसके वैभवमे अुत्कर्ष और अपकर्ष हो?

मुळा और मुठा मिलकर जैसे मुळामुठा नदी बनी है, वैसे ही तुगा और भद्राके सगमसे तुगभद्रा बनी है। 'द्वद्व सामासिकस्य च' के न्यायसे अिन दोनो नदियोमे अुच्चनीच भाव तनिक भी नही है। दोनो

2010
पा 8, निर्दलीय 1
रिश्तेदार
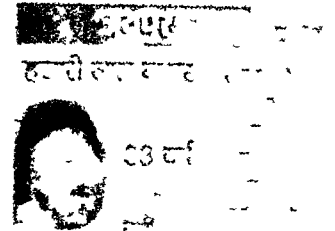
नाम समान भावसे साथ साथ वहते है। अिस नदीके पानीकी मिठास और अुपजाअूपनकी तारीफ प्राचीन कालसे होती आयी है। सभी नदी-भक्तोंने स्वीकार किया है कि गगाका स्नान और तुगाका पान मनुष्यको मोक्षके रास्ते ले जाता है। मोटरकी यात्रा यदि न होती तो तुगभद्राको मैं अनेक स्थानो पर अनेक तरहसे देख लेता। तुगभद्रा अेक महान सस्कृतिकी प्रतिनिधि है। आज भी वेदपाठी लोगोमें तुगभद्राके किनारे वसे हुअे ब्राह्मणोके अुच्चारण आदर्श और प्रमाणभूत माने जाते हैं। वेदोका मूल अध्ययन भले सिंधु और गगाके किनारे हुआ हो, परन्तु अुनका यथार्थ सादर रक्षण तो सायणाचार्यके समयसे तुगभद्राके ही किनारे हुआ है।

१९२६–'२७

११
नेल्लूरकी पिनाकिनी

नेल्लूर यानी धानका गाव। दक्षिण भारतके अितिहासमे नेल्लूरने अपना नाम चिरस्यायी कर दिया है। वेजवाडेसे मद्रास जाते हुअे रास्तेमे नेल्लूर आता है।

भारत सेवक समाजके स्व० हणमतरावने नेल्लूरसे कुछ आगे पल्लीपाडु नामक गावमे अेक आश्रमकी स्थापना की है। अुसे देखनेके लिअे जाते समय सुभग-सलिला पिनाकिनीके दर्शन हुअे। श्रीमती कनकम्माके पवित्र हाथोसे काते हुअे सूतकी धोतीकी भेट स्वीकार करके हम आश्रम देखनेके लिअे चले। कुछ दूर तक तो वगीचे ही वगीचे नजर आये। जहा तहा नहरोंमे पानी दौडता था, और हरियाली ही हरियाली हसती दिखाथी देती थी।

वादमे आयी रेत। आगे, पीछे, दाये, वाये रेत ही रेत। पवन अपनी अिच्छाके अनुसार जहा तहा रेतके टीले वनाता था, और दिल वदलने पर अुतनी ही सहजतासे अुन्हे विखेर देता था। अैसी रेतमें

शातिसे गुजर करनेवाले तुगकाय ताडवृक्ष आनदके साथ डोल रहे थे। घूपसे अकुलाकर वे खुद अपने ही अूपर चमर डुलाते थे या हमारे जैसे पथिको पर तरस खाकर पखा करते थे, यह भला ताडोने कभी स्पष्ट किया है? दोपहरकी धूप कर्मकाडी ब्राह्मणोके समान कठोरतामे तप रही थी। पाव जलते थे। सिर तपता था। और शरीरके वीचके हिस्सेको सम-वेदना देनेके लिअे प्यास अपना काम करती थी।

अिस प्रकार त्रिविध तापमे तप्त होकर हम आश्रममे पहुचे। वहा मै अेक वडे टेकरे पर जा चढा। और अेकाअेक पिनाकिनीका तरल प्रवाह आखोमे वस गया। कितना शीतल अुमका दर्शन था! गेहूके रवेके जैसी सफेद रेत पर स्फटिक जैसा पानी वहता हो, और अूपरसे चड भास्करके प्रतापी किरण वरसते हो, अैसी शोभाका वर्णन कैसे हो सकता है? मानो चादीके रसकी कोठी भट्टीका ताप सहन न कर सकनेके कारण टूट गयी है, और अदरका रस जिस ओर मार्ग मिले अुस ओर दौड रहा है! पवनने दिशा वदली और पिनाकिनी परसे वहकर आनेवाला ठडा पवन सारे शरीरको आनद देने लगा। पासकी अमराअीके अेक पेड पर चढकर दो डालियोके वीच आरामकुर्सी जैसा स्थान ढूढकर मै वैठ गया। दूर ताडवृक्ष डोल रहे थे। वयोवृद्ध आम्रवृक्ष छाव फैला रहे थे। और पिनाकिनी शीतल वायु फूक रही थी। क्या नदनवनमे भी अिससे अधिक सुख मिलता होगा?

नदी-किनारेके अिस काव्यका पान करके आखे तृप्त हुअी और मुदने लगी। स्वर्गीय अस्थिर आम्रासनसे भ्रष्ट होनेका डर यदि न होता तो जाग्रतिके अिस काव्यसे तुलना हो सके अैसा स्वप्नकाव्य मै वहा जरूर अनुभव कर लेता।

पिनाकिनीका पट वहुत वडा है। सुना है कि वर्षाऋतुमे वह रुद्रावतार धारण करती है। अुसकी अिस लीलाके वर्णनोकी शैली परसे मालूम हुआ कि पिनाकिनीके प्रति यहाके लोगोकी कुछ अनोखी ही भक्ति है। असलमे पिनाकिनी दो है। जिसे मै देख रहा था वह है अुत्तर पिनाकिनी अथवा पेन्नेर। यह ठेठ नदीदुर्गसे आती है। वहासे

आते आते वह जयमगली, चित्रावती और पापघ्नीका पानी ले आती है। मानवने अिन नदियोंके स्तन्यसे वहुत लाभ अुठाया है। और अव तो तुगभद्राका भी कुछ पानी पेन्नारको मिलेगा। और वह सव धान अुगानेके काममें आयेगा।

१९२६–'२७

१२

जोगका प्रपात

ठेठ वचपनसे ही, मैं पश्चिम समुद्रके किनारे कारवारमें था तवसे, गिरसप्पाके वारेमें मैंने सुना था। अुस समय सुना था कि कावेरी नदी पहाड परसे नीचे गिरती है और अुसकी अितनी वडी आवाज होती है कि दो मीलकी दूरी पर अेकके अूपर अेक रखी हुअी गागरें हवाके धक्केसे ही गिर जाती हैं! तव फिर अुस प्रपातकी आवाज तो कहा तक पहुचती होगी? वादमें जव भूगोल पढने लगा तव मनमें सदेह पैदा हुआ कि कावेरीका अुद्गम तो ठेठ कुर्गमें है और वह पूर्व-समुद्रसे जा मिलती है। वह पश्चिम घाटके पहाड परसे नीचे गिर ही नही सकती। तव गिरसप्पामें जो गिरती है वह नदी दूसरी ही होगी। अुसे तो शीघ्रतासे होन्नावरके पास ही पश्चिम-समुद्रमें मिलना था। अिसलिअे सवा-सौ, डेढ-सौ पुरुष जितनी अूचाअी से वह कूद पडी है। अुस नदीका नाम क्या होगा?

नायगराके प्रपातके कअी वर्णन मेरे पढनेमें आये थे। प्रकृति माताका अमरीकाको दिया हुआ वह अद्भुत आभूषण है। दुनिया भरके लोग अुसकी यात्राके लिअे जाते हैं। कअी लोगोंने वडे मजवूत पीपेमें वैठकर अुस प्रपातमें से पार होनेके प्रयत्न किये हैं आदि वर्णन जैसे जैसे मैं अधिक पढता गया वैसे वैसे मेरा कुतूहल वढता गया। अनेक दिशाओंसे लिये हुअे चित्र और अक्षिपट (Bioscopes) नायगराको नजरके सामने प्रत्यक्ष करने लगे। अिस प्रकार नायगराका अप्रत्यक्ष दर्शन जैसे जैसे वढता

गया, वैसे वैसे बचपनमें सुने हुअे अुस गिरसप्पाके प्रपातकी मानसपूजा बढती गयी। बादमें जब यह पता चला कि नायगरा तो सिर्फ १६४ फुटकी अूचाअीसे गिरता है, जब कि गिरसप्पाकी अूचाअी ९६० फुट है, तब तो मेरे अभिमानका कोअी पार न रहा। सबसे मुख्य और ससारका सबसे बडा पर्वत हिन्दुस्तानमें है। सिधु, गगा, और ब्रह्मपुत्रा जैसी नदियोंके बारेमें किसी भी देशको जरूर गर्व हो सकता है। यह सिद्ध करनेके लिअे कि सबसे लबी नदी हमारे ही यहा है, अमरीकाको दो नदियोकी लबाअी मिलाकर अेक करनी पडी। मिसोरी और मिसिसिपीको अलग अलग माने तो अुनकी लबाअी कितनी होगी? हिन्दुस्तानका अितिहास जिस तरह पृथ्वी पर सबसे पुराना है, अुसी तरह हिन्दुस्तानकी भू-रचना भी सारे ससारमें अद्‌भुत है।

क्या हिन्दुस्तान केवल प्रपातके बारेमें हार जायगा? सारे ससारने कबूल किया है कि अशोकके समान दूसरा सम्राट् दुनियामें नहीं हुआ है। भूगोलमें भी लोगोको स्वीकारना चाहिये कि भव्यतामें गिरसप्पासे (अुसका सही नाम जोग है) मुकाबला हो सके अैसा दूसरा अेक भी प्रपात ससारमें नही है।

कारकल राजकीय परिषद्‌के लिअे मै दक्षिण कर्णाटकमें गया था तब अुम्मीद रखी थी कि अगुबा घाट चढकर शिमोगा होते हुअे गिरसप्पा देखनेके लिअे जाअूगा। किन्तु वैसा नही हो सका।

मनसा चिंतित कार्यं दैवेनान्यत्र नीयते।

निराशामें मैने मान लिया कि अिस चिरसचित आशासे आखिर मै हमेशाके लिअे वचित हो गया हू और गिरसप्पाका दर्शन मुझे ध्यानके द्वारा ही करना होगा।

किन्तु अितना तो जान लिया था कि जोग मैसूर राज्यकी सीमा पर है। वहा जानेके दो रास्ते है। अूपरका रास्ता शिमोगा सागर होकर जाता है और दूसरा नदीके मुखकी ओरसे जाता है। अिसमें बदर होन्नावरसे नावमें बैठकर जगलोको पार करके गिरसप्पा गाव तक जाना होता है और वहासे घाट चढना पडता है। दोनो रास्तोसे जाकर आये हुअे लोग कहते है कि अेक ओरकी शोभा दूसरी ओर देखनेको

नही मिलती। यह तो कहा ही नही जा सकता कि अेक ओरकी शोभा दूसरी ओरकी शोभासे अुतरती है। अेक रास्तेसे जाअू और दूसरी ओरका साक्षात् अनुभव न करू, तब तक तो मुझे कबूल करना ही चाहिये कि मैने जोगके आधे ही दर्शन किये है।

गुजरातमे बाढ आयी थी अुस समय गाधीजी अपनी बीमारीके दिन बगलोरमे बिता रहे थे। मै अुनसे मिलने गया था। वहासे मैसूर राज्यमे घूमते घामते गाधीजी सागर तक पहुचे। श्री गगाधरराव और राजगोपालाचार्य साथमे थे। सागर पहुचनेके बाद गिरसप्पा देखनेके लिअे न जाना तो मेरे लिअे असभव था। मोटरसे अेक ही घण्टेका रास्ता था। शिमोगामे तुगाके किनारे घूमने गये थे तब मैने गाधीजीसे आग्रह किया था, "आप गिरसप्पा देखने चलिये न? लॉर्ड कर्जन सिर्फ गिरसप्पा देखनेके लिअे खास तोर पर यहा आये थे। अिस ओर आना फिर कब होगा?" गाधीजी बोले, "मुझसे अितनी भी मनमानी नही हो सकेगी। तुम जरूर हो आओ। तुम देख आओगे तो विद्यार्थियोको भूगोलका अेकाध पाठ पढा सकोगे।" मैने दलील पेश की "मगर यह ससारका अेक अद्‌भुत दृश्य है। नायगरासे जोग छ गुना अूचा है। ९६० फुट अूपरसे पानी गिरता है। आपको अेक बार अुसे देखना ही चाहिये।"

अुन्होने पूछा, "बारिशका पानी आकाशसे कितनी अूचाअीसे गिरता है?" और मै हार गया। मनमे कहा "स्थितधी कि प्रभाषेत? किमासीत? व्रजेत किम्?"

मुझे मालूम था कि गाधीजीको सगीतकी तरह सृष्टि-सौदर्यका भी बडा शौक है। घूमने जाते हुअे सूर्यास्तकी शोभाकी ओर या बादलोमें से झाकते हुअे किसी अकेले सितारेकी ओर अुन्होने मेरा ध्यान किसी समय खीचा न हो अैसी बात नही थी। किन्तु प्रजाकी सेवाका व्रत लिये हुअे गाधीजी जैसे सेवक महात्मा मनमानी किस तरह कर सकते है?

कुलशिखरिण क्षुद्रा नैते न वा जलराशय।

अेक वात अिस तरह समाप्त हुअी अिसलिअे मैंने दूसरी वात शुरू कर दी "आप नही आते अिसलिअे महादेवभाअी भी नही आते। आप अुनसे कहेंगे तो ही वे आयेंगे।"

"अुसकी अिच्छा हो तो वह भले तुम्हारे साथ जाये। मैं मना नही करूगा। किन्तु वह नही आयेगा। मैं ही अुसका गिरसप्पा हू।"

वाकीके हम सव ठहरे दुनियवी आदर्शके लोग! पहाड परसे गिरता हुआ प्रपात चर्मचक्षुमे न देखे तव तक हमें तृप्ति नही हो सकती थी। अिसलिअे भोजनके पहले ही हम सागरसे रवाना हुअे और मोटरकी मददसे जगल पार करने लगे। पहाडोको कुरेदकर रेलवेवाले जव खोह या सुरग वनाते हैं तव हमें वहुत आश्चर्य होता है। किन्तु वम्वअीकी वस्तीसे भी घने सह्याद्रिके जगलोमें से रास्ता तैयार करना अुससे भी अधिक कठिन है। यहा आपका डायनेमाअिट (सुरग) नही चलेगा। तनेको काटनेके वाद भी अेक अेक पेडको शाखाओंके जालसे मुक्त करना हिन्दू-मुसलमानोके झगडोको निवटाने जितना कठिन काम है। खडाला घाटकी गहरी खोहके वीचोवीच जाने पर आदमी जिस भयानक रमणीयताका अनुभव करता है, अुसी तरहकी स्थितिका अनुभव अिन जगलोमें होता है। अैसे जगलोमें हाथी, वाघ या अजगर जैसे प्राणी ही शोभा देते हैं। अिनमें मनुष्य तो विलकुल तुच्छ प्राणी मालूम होता है। लगता है, यह अैसे जगलमें कहासे आ गया!

खैर, हम जगल पार करके शरावतीके किनारे पहुचे। अिस ओर अुसे भारगी भी कहते हैं। भारगी यानी वारहगगा। यहाके लोग यदि यह मानते हो कि गगा नदीमें अिस नदीका माहात्म्य वारह गुना अधिक है, तो हम अुनसे झगडा नही करेंगे। हरेक वच्चेको अपनी ही मा सर्वश्रेष्ठ मालूम होती है न? पानी रिमझिम वरस रहा था। यहा गगनभेदी महावृक्ष भी थे, और छोटे-वडे झाड-झखाड भी थे। अमर घास भी थी और जमीन तथा पेडोकी वूढी छाल पर अुगनेवाली शैवाल (काअी) भी थी। अुस पारके छोटे-वडे पेड नदीका पानी कितना ठडा या गहरा है यह जाचनेके लिअे अपने पत्तोवाले हाथ पानीमें

डालते थे। और कुहरेके चद वादल आलसी साडकी तरह अिवर-अुधर भटक रहे थे।

नदीको देखकर हमेशा सवाल अुठता है कि यह नदी कहासे आती है और कहा जाती है? मेरे मनमे तो हमेशा नदी कहासे आती है, यही सवाल 'प्रथम अुठता है। दूसरोके मनमे भी यही सवाल अुठता होगा। अिसका क्या कारण है? नदी कहा जाती है, यह जाचना आसान है। नदीमे कूद पडे कि वह हमे अनायास अपने साथ ले चलती है। अुतनी हिम्मत न हो तो अेकाध पेडके तनेको कुरेदकर वस अुसमे वैठ जाअिये। किन्तु नदी कहासे आती है, यह जाचनेके लिअे प्रतीप गतिसे जाना चाहिये। अैसा तो सिर्फ ऋषिगण ही कर सकते है। अुस दिनका दृश्य अैसा था जिससे मनमें सदेह अुत्पन्न होता था कि भारगी या शरावतीका पानी पहाडमे आता है या वादलोंसे?

नावमे वैठकर हम अुस पार गये। किनारेकी जमीनसे कअी नन्हे नन्हे झरने कूद कूदकर नदीमे गिरते थे। अुन परसे हम सहज अनुमान लगा सके कि अगले दिन भारी वरसात होनेके कारण नदीका पानी काफी वढ गया था। आज वह करीव पाच फुट अुतरा था। नाव हमे नीचे अुतारकर दूसरोको लाने वापस गअी। शात पानीमे नाव जव डाडकी डव् डव् आवाज करती हुअी जाती या आती है अुस समयका दृश्य कितना सुदर मालूम होता है! और जव यह नाव हमारे प्रियजनोको अपने पेटमे स्थान देकर अुन्हे गहरे पानीकी सतह परसे खीचकर लाती है, तव चिंताका कोअी कारण न होते हुअे भी मनमे डर मालूम हुअे विना नही रहता। राजगोपालाचार्य अपने पुत्र और पुत्रीको साथ लेकर नावमे वैठने जा रहे थे। मैंने अुनसे कहा, 'हमारे पुरखोने कहा है कि अेक ही कुटुवके सव लोग अेकसाथ अेक ही नावमे नैठे यह ठीक नही है। या तो पिता हमारे साथ आये या पुत्र, दोनो नही।' साथी लोग अिस रिवाजकी चर्चा करने लगे। किसीको अिसमे प्रतिष्ठाकी वू आअी, किसीको और कुछ सूझा। किन्तु किसीके ध्यानमे यह वात नही आयी कि सर्वनाशकी सभावनाको टालनेके लिअे ही यह नियम वनाया गया है। मुझे यह अर्थ स्पष्ट करके वायुमडलको विषण्ण नही वनाना

था। अिसलिअे पुरखोकी बुद्धिकी निंदा सुनता हुआ मै अुस पार पहुचा। जब नाव मझधारमे पहुची तब मत्र बोलकर आचमन करना मै नही भूला। नदीके दर्शनके साथ स्नान, पान और दानकी विधि होनी ही चाहिये। तभी कहा जायगा कि नदीका पूरा साक्षात्कार किया।

दूसरी टुकडी आ पहुची और हम दाहिनी ओरके रास्तेसे चलने लगे। नदीका वह बाया किनारा था। रास्तेके बडे बडे पेडोको मस्जिदके स्तभोकी तरह सीधे अूचे जाते देखकर हमें आनद हुआ। हमारी टोली अितनी बडी थी कि अिस निर्जन अरण्यमे देखते ही देखते हमारा वार्ताविनोद और हमारा अट्टहास्य चारो ओर फैल गया। मगर कितनी देर तक? हम कुछ ही दूर गये होगे कि नदीने अपनी गभीर ध्वनि शुरू की। अिस आवाजको किसकी अुपमा दी जाय? अितनी गभीर आवाज और कही सुनी हो तभी तो अुपमा दी जा सके न? मेघगर्जना भीषण जरूर होती है, और यह भी सच है कि वह सारे आकाशमें फैल जाती है। किन्तु वह सतत नही होती। यहा तो आप सुन सुनकर थक जाये तो भी आवाज रुकती ही नही। क्या यहा बादल टूट पडते है? क्या तोपे छूटती हैं? अथवा पहाडके बडे बडे पत्थरोकी धानी फूटती है? या नदी अपना ध्यानमौन छोडकर महारुद्रका स्तवराज बोलती है?

'अब कौनसा दृश्य आयेगा?', 'अब कौनसा दृश्य आयेगा?' अैसे कुतूहलसे आखे फाडकर चारो ओर देखते देखते हम मुसाफिरखाने (डाकबगले) तक पहुचे। जहासे प्रपातका दर्शन सबसे सुन्दर होता है, वही मैसूर राज्यकी ओरसे यह अतिथिशाला बनायी गयी है। हम निरीक्षणके चबूतरे पर जा पहुचे। मगर यह क्या! सर्वव्यापी कुहरेके अलावा और कुछ दिखायी ही नही देता था। और प्रपात अपनी गभीर आवाजसे सारी घाटीको गूजा रहा था। ठीक दोपहरको भी सूर्यके दर्शन नही हो पाये। जहा देखे वहा कुहरा ही कुहरा! कुहरेके घने बादल मानो कुरुक्षेत्रका महायुद्ध मचा रहे हो और जोग अपने तालसे अुनका साथ दे रहा हो। अितनी अुम्मीदके साथ आनेके बाद अिस तरहका तमाशा हमे कभी देखनेको नही मिला था। मिनट पर
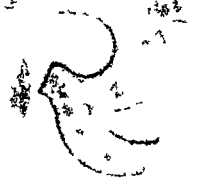
मिनट वीतते जाते थे और हमारी निराशाके साथ कुहरा भी घना होता जाता था। आखिर हम मौन तोडकर आपसमें वाते करने लगे। वाते करनेके लिअे कोओी खास विषय नही था, किन्तु निराशाकी शून्यताको भरनेके लिअे कुछ तो चाहिये था।

क्या अिंद्रदेव कुपित हो गये है या वरुणदेव अप्रसन्न हो गये हैं? मे यह सोच ही रहा था कि अितनेमे वायुदेवने मदद की और अेक क्षणके लिअे — सिर्फ अेक ही क्षणके लिअे — कुहरेका वह घना परदा दूर हटा और जिदगीभर जिसके लिअे तरसता रहा था वह अद्‌भुत दृश्य आखिर आखोके सामने आया। महादेवजीके सिर पर जिस तरह गगाका अवतरण होता है, अुसी प्रकार अेक वडा प्रपात नीचेकी खोहसे वाहर निकले हुअे हाथी जैसे पत्थर पर गिरकर, पानीका आटा वनाकर, चारो ओर अुसकी वौछारे अुडा रहा है।!

नही। अिस दृश्यका वर्णन शब्दोमें हो ही नही सकता। आश्चर्यमग्न होकर मै वोल अुठा

नम पुरस्तात्, अथ पृष्ठतस् ते नमोऽस्तु ते सर्वत अेव सर्व।
अनन्त-वीर्यामित-विक्रमस् त्वम् सर्व समाप्नोषि ततोऽसि सर्व ।।

तुरन्त सामनेका वह हाथीके समान पत्थर सिरसे प्रपातकी जटाओको झाडकर वोला

सुदुर्दर्शम् अिद रूप दृष्टवान् असि यन् मम।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्य दर्शन-काक्षिण ।।

कुहरेका परदा फिर पहलेकी तरह जम गया और हमारी स्थिति अैसी हो गयी मानो हमने जो दृश्य देखा था वह सब स्वप्न था, माया थी या मतिभ्रम था! वह विस्तीर्ण खोह, वह विशाल पात्र, वह भयानक गहराअी और अुसके वीच पानीका नही वल्कि आटेका — नही, मैदेका — वह अद्‌भुत प्रपात और फव्वारा! सारा दृश्य कल्पनातीत था। यह प्रतीति दृढ होनेके पहले ही कि हम जो अपनी आखोसे देख रहे है वह सच्चा ही है, कुहरेका क्षीरसागर फिर फैल गया और हम सामनेके काव्यके साथ अुसमे डूब गये।

अब कोअी किसीसे बोलता नही था। जो देखा था अुस पर सब सोचने लगे। जहा कुछ भी नही था वहा अितनी बडी और गहरी सृष्टि कहासे पैदा हुअी और देखते ही देखते वह कहा लुप्त हो गयी — अिसी आश्चर्यने मानो हम सबको घेर लिया।

मनमे आया, चाहे अेक क्षणके लिअे ही क्यो न हो, जो देखने आये थे अुसे हमने देख लिया। अद्‌भुत रीतिसे देख लिया। अेक क्षणके लिअे जो दर्शन हुआ अुसके स्मरण और ध्यानमे घटो विताये जा सकते है।

अितनेमे वह शुभ्र जटाधारी पत्थर फिरसे बोला

व्यपेतभी प्रीतमना पुनस् त्व तदेव मे रूपम् अिद प्रपश्य।

कुहरेका आवरण फिर दूर हटा और अब तो अिस छोरसे अुस छोर तक सब कुछ स्पष्ट दीख पडने लगा। सामनेकी ओरसे ठेठ बाये छोर पर 'राजा' अर्धचद्राकार पत्थर परसे नीचे कूद रहा था। अुसका पानी बारिशके कीचडके कारण कॉफीके रगका हो गया था। किन्तु सबसे अधिक पानी राजाको ही मिलता है। छाती फुलाता हुआ जब वह ठेठ सीधा नीचे गिरता है तब अिस बातका खयाल होता है कि प्रकृतिकी शक्ति कितनी अपरिमित है। राजा प्रपातका विस्तार भी कुछ कम नही है। और अुसके दोनो ओर बडे बडे मोतियोके कअी हार लटकते दौडते है। सचमुच यह प्रपात राजाके नामके काबिल ही है।

अुसके पासके जिस प्रपातका दर्शन मुझे सबसे प्रथम हुआ था वह व स्तवमे तीसरा था। अुसका नाम है वीरभद्र। वीचका अेक प्रपात रुद्र अिस ओरसे स्पष्ट दिखाअी ही नही देता। वह कदम कदम पर जोरसे चिल्लाता हुआ आखिर राजामे मिल जाता है।

ठेठ दाहिनी ओर अेक छोटासा प्रपात है। अुनकी कमर कुछ पतली है। अिसलिअे मैने अुसका नाम पार्वती रखा। जी भरकर देखनेके बाद हमारी बाते फिरसे शुरू हुअी। स्वय जो कुछ देखा हो अुसे दूसरेको दिखानेकी अुमग जिसमे न हो वह आदमी आदमी नही

है। आदमी सचारशील होता है, सवादशील होता है। अुसने जो अनुभव किया वही दूसरोंको भी होता है—हो सकता है—अैसा विश्वास जब तक न हो तब तक अुसे परम सतोष नहीं होता। राजाजीने ध्यान खींचा, 'यह नीचे तो देखो! ठडी भापके ये बादल कैसे अूपर कूद आते हैं?' देवदास कहने लगे, 'अुन पक्षियोंको तो देखो! कैसे निर्भय होकर अुड रहे हैं?' मणिबहनने भी अैसा ही कुछ कहा और लक्ष्मीने अपने अण्णाको तमिल भाषामें बहुत कुछ समझाकर अपना आनद व्यक्त किया। हमारे साथ और अेक भाओी आये थे। वे रास्तेमें अकारण ही नाराज हो गये थे। हम जब अिस स्वर्गीय दृश्यके आनदमें विभोर हो रहे थे तब अुन भाओीको अपने माने हुअे अपमानकी ही जुगाली करनी थी। चद्रशकरने अुनकी अिस स्थितिकी ओर मेरा ध्यान खींचा। मैं मन ही मन बोला

> पत्र नैव यदा करीर-विटपे दोषो वसतस्य किम्?
> नोलूकोप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम्?

अिस ससारमें निराशा, गलतफहमी, अप्रतिष्ठा, या वियोग सच्चे दुःख नहीं हैं। बल्कि अहकार ही सबसे बडा दुःख है। अहकारकी विकृतिको बडे बडे धन्वतरि भी दूर नहीं कर सकते।

अुन भाओीकी अनेक प्रकारकी परेशानियों और विकृतियोंको मैं जानता था। अिसलिअे गिरसप्पाके जोगके सामने भी अुन्हें दो क्षण दिये बिना मुझसे रहा नहीं गया। मैंने अुनको गिरसप्पाके बारेमें थोडी जानकारी दी और अुन्हें प्रसन्न करनेका प्रयत्न किया।

राजा प्रपातके पीछेकी ओरकी खोहमें असख्य पक्षी रहते हैं, और दूर दूरके खेतोंसे चुनकर लाये हुअे 'अुच्छिष्ट' और अुत्कृष्ट दानोंका सग्रह करते हैं। अेक बार किसीसे सुना था कि यह सग्रह अितना बडा होता ， कि सरकारकी ओरसे अुसका नीलाम किया जाता है। मधुमक्खियोंका मधु लूटनेवाला मानव-प्राणी पक्षियोंके सग्रहको भी लूटे तो अुसमें आश्चर्यकी क्या बात है? जो सग्रह करता है वह लूटा जाता है, अैसी सृष्टिकी व्यवस्था ही दीख पडती है: 'परिग्रहो भयायैव'।

फिर कुहरेका आवरण फैला और मुझे अन्तर्मुख होकर विचारमें डूब जानेका मौका मिला। अैसे भव्य दृश्योंका रहस्य क्या है? भूगोलवेत्ता और भूस्तरशास्त्री फौरन कह देंगे 'यहाका पहाड 'निस्' कोटिके पत्थरके स्तरका है। घाटीमें से अेक कगार टूट गअी होगी और आसपासकी मिट्टी घुल गअी होगी। अेक बार प्रपात शुरू होने पर वह नीचेकी जमीनको अधिकाधिक गहरा खोदता जाता है और जहासे प्रपात शुरू होता है अुस कोनेको घिसता जाता है। अूपरका वह माथा यदि सख्त पत्थरका हो, तो अूचाअी हजारो बरसो तक कायम रह सकती है। प्रपातसे समुद्र अधिक दूर न होनेसे नदीका आगेका हिस्सा साफ हो गया है और प्रपातकी अूचाअी कायम रही है।' किन्तु यह तो हुआ प्रपातका जड रहस्य। किसी आधुनिक यांत्रिकसे पूछिये तो वह कहेगा 'अकेले गिरसप्पाके प्रपातमें अितना प्रचड सामर्थ्य है कि मैसूर और कानडा (कर्णाटक) अिन दोनो जिलोको चाहिये अुतनी शक्ति वह दे सकता है। फिर, आप अुसमें बिजली लीजिये, हरेक शहर और गावको प्रकाशित कीजिये, कल-कारखाने चलाअिये और अपने मुल्कके या दूसरोके मुल्कके चाहे अुतने लोगोको बेकार बना दीजिये।'

प्रकृतिसे जो कुछ फायदा मिलता है वह पृथ्वीकी सभी सतानें आपसमें समझ-बूझकर बाट ले और जीवनयात्राका बोझा हल्का कर लें, अैसी बुद्धि आदमीको जब सूझेगी तबकी बात अलग है। किन्तु आज तो मनुष्यके हाथमें किसी भी तरहकी शक्ति आ गयी कि वह फौरन अुसका अुपयोग दूसरोंसे स्पर्धा करके श्रेष्ठत्व पानेके लिअे ही करता है। फिर वह श्रेष्ठत्व अुसे भले दूसरोको मारकर मिलता हो, गुलाम बनाकर मिलता हो, या आधे पेट पर रखकर मिलता हो।

मैसूर राज्य अेक आगे बढा हुआ राज्य है। बडे बडे अिजी-नियरोने दीवानपदको सुशोभित करके यहाकी समृद्धिको बढानेकी कोशिश की है। यदि कहे कि सारे ससारके लिअे आवश्यक चदनका तेल सिर्फ मैसूर राज्य ही देता है तो अिसमें अधिक अत्युक्ति नही होगी। हिन्दुस्तानकी बडीसे बडी सोनेकी खाने मैसूरमें ही है। भद्रावतीके लोहेके कल-कारखानेकी कीर्ति बढती ही जा रही है। और

कृष्णसागर तालाव तो मानव-पराक्रमका अेक सुन्दर नमूना है। यह तो हो ही नहीं सकता कि अैसे मैसूर राज्यको गिरसप्पाके प्रपातको भुनाकर खानेकी व त सूझी न हो। किन्तु अब तक यह वात अमलमें नही आयी — अितनी वडी शक्तिका कौनसा अुपयोग किया जाय, यह न सूझनेसे या सीमाका कोअी झगडा वीचमें आनेसे या अन्य किसी कारणसे, यह मै भूल गया हू। मगर अिसमें कोअी शक नही कि गिरसप्पाकी शोभा अब भी अुतनी ही प्राकृतिक, अुदात्त और अक्षुण्ण है।

भगिनी निवेदिताकी प्रख्यात तुलनाका यहा स्मरण हो आता है। किसी भी स्थानकी रमणीयताने जब भारतवासीको आकर्षित किया है तब अुसने फौरन अुसका धार्मिक रूपान्तर कर ही दिया हे। भारतका हृदय जब किसी अद्भुत, रमणीय या भव्य दृश्यको देखता है, तब तुरत अुसको लगता है कि यह तो गाय जैसे बछडेको पुकारती हे वैसे परमात्मा जीवात्माको पुकार रहा है। नायगराका प्रपात यदि हिन्दुस्तानमे गगामैयाके प्रवाहमे होता तो यहाकी जनताने अुसका वायुमडल कैसा बना डाला होता? आमोद-प्रमोद और पिकनिककी टोलियोंके वदले और रेलके यात्रियोंके वदले प्रपातकी पूजा करनेके लिअे वार्षिक या मासिक यात्रियोंकी टोलिया ही टोलिया यहा अिकट्ठा होतीं। भोगविलासके सब साधन मुहैया करनेवाले होटलोंके वदले प्रपातके किनारे या अुसके वीचोवीच अुमडे हुअे हृदयकी भक्ति अुडेलनेके लिअे वडे वडे मदिर वनाये गये होते। सृष्टिके वैभवको देखकर भडकीले अैश-आराम और शान-शौकतके वदले लोगोंने यहा तप किया होता। और अितनी प्रचड शक्तिको मनुष्यके फायदेके लिअे और सुख-चैनके लिअे कैद करनेकी वात सूझनेके वदले अुसे प्रकृतिके साथ अैक्यका अनुभव करनेवाली मस्तीमे भैरवजापके साथ पानीके प्रवाहमे अपने जीवन-प्रवाहको मिला देनेकी ही वात सूझती। स्वभाव-भिन्नतामें क्या कुछ वाकी रहता है?

मगर प्रकृतिकी भव्यताको देखकर अुसमे अपने शरीरको छोड देनेमे आध्यात्मिकता है क्या? नही। अिसमे कोअी सदेह नही कि शरीरके वधन टूट जायें, 'किसी भी हालतमे जीवित रहूगा ही' अिस तरहकी पामर जीवनाशा मनुष्य छोड दे, अिसमे आध्यात्मिक प्रगति

है। किन्तु यह वृत्ति स्थायी होनी चाहिये। क्षणिक अुन्मादका कोअी अर्थ नही है। फना होनेकी अिच्छा हरेक मनुष्यके दिलमे किसी समय पैदा होती ही है। अिश्ककी यह अेक विकृति है। अिसमे किन्ही आध्यात्मिक तत्त्वोकी झाकी देखकर अुस पर फिदा होना मनुष्य-जीवनकी महत्ताको शोभा नही देता। भगवान बुद्धने अपनी अचूक नजरसे अुसको विभव-तृष्णाका नाम देकर अुसे धिक्कारा है। विभवका अर्थ है नाश। भगवान मनुने भी यह बात साफ शब्दोमे बताअी है

नाभिनन्देत मरणम्, नाभिनन्देत जीवितम्।

अिसमे सदेह नही कि गिरसप्पाके प्रपात जैसे रोमहर्षण दृश्यके सामने यत्रो, शक्तिके हॉर्स-पावर, बिजलीके प्रकाश या कल-कारखानोंके बारेमे सोचना आत्माको भूलकर बाहरी वैभवका ध्यान करनेके बराबर है। किन्तु आसपासका प्रदेश यदि अकालसे पीडित हो, लोग अनेक रोगोके शिकार होते हो, और जनताका यह दुख प्रपातके पानीका अन्य अुपयोग करनेसे ही दूर होता हो, तो अुस समय हमारा क्या आग्रह होगा? सृष्टि-सौदर्यका रसपान करनेवाले हमारे चित्तके आह्लादक साधनको — प्रपातको — वैसाका वैसा रखनेका, या हमारे आपद्ग्रस्त भाअियोको दुखमुक्त करनेके लिअे अुसका बलिदान देनेका? जहा पर्याप्त अनाज न मिलता हो वहा अनाजकी खेतीको छोडकर गुलाबकी खेती करने लगे, तो क्या अिससे हमारा हृदयविकास होगा? गुलाबमे काव्य है, अनाजमे कारुण्य है। दोनोमे से हम किसे पसन्द करेगे? अिग्लैडके अेक प्राचीन राजाने अनेक गावोको अुजाडकर मृगयाके लिअे अेक महान अुपवन तैयार किया था। अिसमे कोअी सदेह नही कि यह राजा मर्दाने खेलोका रसिया था। किन्तु सवाल यह है कि अुसे प्रजासेवक माने या नही? जब कलाके सामने सेवाका सवाल खडा होता है, किस वृत्तिको — काव्यकी या कारुण्यकी — पोषण दे यह तय करना होता है, तब निर्णय किस कसौटी पर कसकर दिया जाय? जलते हुअे रोमको देखकर नीरोका फिडल बजाना और जलती मिथिलाको देखकर जनक राजाकी आध्यात्मिक चर्चा करना, दोनोमे फर्क है। जनताकी सेवा जितनी बन सकती थी अुतनी सब करनेके बाद व्यर्थकी चितामे दिलको जलानेकी

8. निर्दलीय
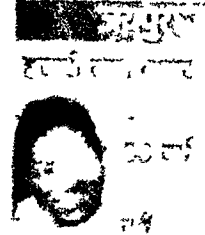
अपेक्षा हृदयमे अंतर्यामीके स्मरणको दृढ करनेका प्रयत्न आर्यवृत्तिको सूचित करता हैं। अिनेगिने लोगोंके विलास या अैश्वर्यके लिअे प्रकृतिकी शक्तिका अुपयोग करना और प्राकृतिक सौंदर्यका नाश करना अधर्म है। किन्तु प्राणियोंके आनिनाशमें होनेवाले हृदयविकासको छोडकर प्रकृतिके विभूति-दर्शनमें अुसको ढूढनेकी अिच्छा रखना अुचित है या नही, यह विचारने जैसा हैं।

वे रूठे हुअे भाअी अपने कल्पित अपमानकी जलनमे सामनेका दृश्य भूल गये थे और मैं अपने तात्त्विक कल्पना-विहारमें शून्य दृष्टिसे सामने देख रहा था। दोनों अभागे थे, क्योंकि कल्पना या जलन चलानेके लिअे बादमे चाहे अुतना समय मिलता। कुहरेका आवरण फिर फैला। अब क्या प्रपात फिरसे दिखाअी देनेवाला था? राजाजीने कहा, 'गरमीके दिनोंमे जब प्रपात गिरता है तब पानीकी फुहार पर तरह तरहके अिंद्रधनुष दिखाअी देते हे। अुस समयकी शोभा बिलकुल निराली होती हैं।' और यह भी नही कहा जा सकता कि चादनी रातमे भी धनुष नही दिखाअी देते। मैसूरका सर्वसंग्रह (गॅजेटियर) लिखता है कि घासके बडे बडे गट्ठोंको आग लगाकर प्रपातमे छोड देनेसे अैसा दिखाअी देता है मानो अंधेरी रातमे सारी घाटी जल अुठी हो। चंद लोगोंने रातके समय आतिशबाजी करके भी यहा अद्भुत आनंद पाया है। अुत्पाती मानव क्या क्या नही करता? मुझे तो अैसी कोअी बात पसन्द नही हैं। अैसे स्थान पर प्रकृति जो खुराक परोसती है अुसकी स्वाभाविक रुचि अनुभव करनेमे ही सच्ची रसिकता है। मानवी मसाले डालनेसे स्वाद और पाचनशक्ति, दोनों खराब होते हैं।

अब हम बंगलेके भीतर पहुचे। साथमें जो भोजन लाये थे अुसको अुदरस्थ किया। यहाका पानी पी नही सकते, क्योंकि फौरन मलेरिया होता है। अधिकतर लोगोंने गरम-गरम कॉफी पीकर ही प्यास बुझाअी। मैंने तो अुस दिन चातककी तरह बारिशकी कुछ बूंदे पाकर ही संतोष माना।

प्रपातका और अेक बार दर्शन करके हम वापस लौटे। अब तो सब तरहसे स्पष्ट हो चुका कि प्रपात तीन नही बल्कि चार हैं।

बाओी ओरका पहला बडा प्रपात है राजा। अुसकी बगलकी खोहसे आक्रोश करता हुआ अुससे आ मिलनेवाला 'रोअरर' (Roarer) मेरा रुद्र है। सिर पर छूट रहे फव्वारेकी शुभ्र जटाओंवाला 'रॉकेट'। अुसे अब वीरभद्र कहनेके सिवा चारा नही था। और अंतमे आनेवाले प्रपातका नाम मैने तन्वगी पार्वती ही रखा। अग्रेजोने रुद्रको Roarer नाम दिया है। वीरभद्रको Rocket और पार्वतीको Lady का नाम दिया है।

अब हम वापस लौटे। पावोंमे जोंके चिपकनेका डर था। यहाके लोगोंने हम सबको सावधानीसे चलनेके बारेमें चेतावनी दे रखी थी। अुन्होंने कहा था, जोंके चिपकेंगी तो मालूम ही नही होगा कि चिपक गयी है, और खून चूसा जायेगा। मैंने कहा, आप अिसकी फिक्र मत कीजिये। अग्रेजोंको हम पहचान गये हैं, तो क्या जोंकोंमे सावधान नही रहेंगे? तिस पर भी करीब करीब हरेकके पावमें अेक अेक जोंक चिपक ही गओी। हो सकता है, मेरे शरीरमे खूनका विशेष आकर्षण न होनेसे या मेरा खून कसैला होनेसे या शायद काकदृष्टिसे देख देखकर मैं चलता था अिससे, मैं बच गया था। हम कुछ आगे गये। किन्तु मणिबहनसे रहा नही गया। 'जरा ठहरिये। बन सके तो फिर अेक बार अिस ओरसे प्रपातके दर्शन कर आती हू।' 'मगर कुहरा खुले ही नही तो?' 'न खुले तो कोओी हर्ज नहीं। वापस लौट आयेंगे। किन्तु अेक बार देखने तो दीजिये।'

वापस लौटते समय बीचमे अेक जगह रास्ता फूटा था। वहासे होकर कओियोंने नजदीकसे पार्वतीका दर्शन किया और वहाकी जमीन फिसलनेवाली होनेसे पार्वतीको 'वदे मातरम्' कहकर साष्टाग प्रणिपात भी किया!

जाते समय जिस रास्तेसे अज्ञात और अननुभूत दशाका काव्य अनुभव किया था, अुसी रास्तेसे वापस लौटते समय हम सस्मरणोंके स्मृति-काव्यका अनुभव करने लगे, हालाकि वही दृश्य अुलटी दिशासे देखनेमे कम नवीनता न थी। जिन पेडोंके बारेमें जाते समय हमने बाते की थी, वही पेड वापस लौटते समय ध्यान तो खीचेंगे ही।

अिसलिअे अिन परिचित भाअियोंसे 'क्योंजी कैसे हो?' कहकर कुशल-समाचार पूछे विना भला आगे कैसे जाया जा सकता है? और पेड-पेडके वीच प्रेमका पुल वाधनेवाली लतायें? अुनकी नम्रताको नमन किये विना जो आगे जाता है वह अरसिक है। हम आहिस्ता-आहिस्ता नदीके किनारे तक आ पहुचे। अव अुसी शात प्रवाहके अूपरसे वापस लौटना था। कुहरेके वादल विखर गये थे। नदीके शात पानीको आहिस्ता-आहिस्ता प्रपातकी ओर जाता हुआ देखकर मेरे मनमें वलिदानके लिअे जाते हुअे भेडोंके झुडकी तस्वीर खडी हो गअी। मैंने अुस पानीसे कहा 'तुम्हारे भाग्यमें कितना वडा अवपतन लिखा है अिस वातका खयाल तक तुम्हें नहीं है। अिसीलिअे अितने शात चित्तसे तुम आगे वढते हो। या नहीं — मैं ही गलती कर रहा हू। तुम जीवनधर्मी हो। तुम्हें विनाशका क्या डर है?

प्राय कन्दुक-पातेन पतत्यार्य पतन्नपि।

जितनी अूचाअीसे गिरोगे अुतने ही अूचे अुछलोगे। तुम्हारी दया खानेवाला मैं कौन हू? शरावतीके पवित्र पानीका स्पर्श करनेके लिअे मैंने अपना हाथ लवा किया। पानी खिलखिलाकर हसा और वोला, 'न हि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गति तात! गच्छति।' नाव अिस पार आ गअी और हमें सूझा कि मोटरको अिस ओर जरा नीचे तक दौडाया जाय तो अुसी प्रपातकी फिरसे दाहिनी यात्रा भी होगी। हम जिस ओर हो आये थे अुसे 'मैसूरकी तरफ' कहते हैं और दाहिनी ओरसे जानेके लिअे निकले अुसे 'वम्वअीकी तरफ' कहते हैं। क्योंकि जोग दोनों राज्यकी सीमा पर है।

यहा तो हम विलकुल नजदीक आ पहुचे। मैं वडी वडी शिलाओंके वीचमें दौडने लगा। दो सालके वीमारके रूपमें मेरी ख्याति काफी फैली हुअी थी। अिससे मुझे दौडते देखकर राजाजीको आश्चर्य हुआ। किसीने कहा, 'वे तो महाराष्ट्रके मावले हैं और हिमालयके यात्री भी हैं। मछलियोंको जिस तरह पानी, अुसी तरह अिन मराठोंको पहाड होते हैं।' अिन वचनोंको सुननेके लिअे मुझे कहा रुकना था? मैं तो दौडता दौडता राजा प्रपातकी वगलमें अुस प्रख्यात टीलेके पास

जा पहुचा। यहासे खडे खडे नीचेकी ओर देखा ही नहीं जा सकता। चक्कर खाकर आदमी गिर जाता है। कानोमे चारो प्रपातोंकी आवाज अितनी भरी हुअी थी कि दूसरा कुछ सुननेके लिअे अुनमे गुजाअिश ही बाकी न थी। जिस तरह प्रपातका पानी अूपरसे नीचे गिरकर फिर अूचा अुछलता था, अुसी तरह कानमे आवाज भी अुछलती होगी। प्रथम मेरा ध्यान खीचा राजाके गडस्थल पर लटकती मोतियोकी लडियोने और जलप्रलयसे लोगोको बचानेके लिअे जिस तरह वीर तैराक पानीमे कूदते है अुसी तरह अिस ओरके प्रपातमें होकर युक्तिसे गुजरनेवाले पक्षियोने। क्या अिन पक्षियोको अिस प्रपातकी भीषण भव्यताका खयाल ही नही है, या अीश्वरने अुनके दिलमे अितनी हिम्मत भर दी है? मेरा खयाल है कि आगतुक पक्षियोंकी अितनी हिम्मत नही होगी। अिन जोगवासियोका जन्म यहीं हुआ, प्रपातके पटलकी सुरक्षिततामे अुनकी परवरिश हुअी। शेरके बच्चे शेरनीसे नही डरते। सागरकी मछलिया लहरोमे आनद मानती है, अुसी तरह ये जोगके बच्चे जोगके साथ खेलते होगे।

राजा प्रपातको मैसूरकी ओरसे दूरसे देखा था, तब अुसका असर भिन्न प्रकारका हुआ था। यहा तो हम अुसके अितने नजदीक थे, मानो हाथीके गडस्थल पर ही सोये हो। अूपरका पानी प्रपातकी ओर अैसा खिचा चला आता था, मानो कोअी महाप्रजा जाने-अनजाने, अिच्छा-अनिच्छासे महान क्रातिकी ओर घसीटी जाती हो। कोअी महाप्रजा जब सामाजिक और राजनीतिक प्रगतिके प्रवाहमे बहने लगती है तब आगे क्या होनेवाला है अिस बातका अुसे खयाल तक नही होता। और खयाल हो भी तो 'हमारे बारेमे यह सच्चा नही होगा, हम किसी न किसी तरह बच जायेगे,' अैसी अधी आशा वह रखती है। अिस बीच प्रगतिका नशा बढता ही जाता है। अतमे अुग्र लोग सयम सुझाते है और नरम (मॉडरेट) लोग अधे होकर गैरजिम्मेदार लोगोके साथ मिल जाते है और फिर अिच्छा होने पर भी पीछे नही हट सकते। या खुद पीछे हटे तो भी क्या? धनुषसे निकला हुआ तीर कभी पीछे खीचा जा सका है? जो अटल न हो वह क्राति काहेकी?

प्रपातका पानी नीचे कहा तक जाता है यह देखना या जानना असभव था। क्योकि अुछलते हुअे पानीके वडे वडे वादल प्रपातके पावोसे लिपटे हुअे थे। पानीके अुन्मत्त अुत्सवको देखकर लगता था मानो महादेवजी महारकारी ताडव-नृत्य ही कर रहे हो और सामनेका रुद्र अुसमें ताल दे रहा हो! परन्तु रोमाचकारी शोभाका परम अुत्कर्ष तो वीरभद्र ही दिखाता है। आपको यह मालूम ही नही होगा कि यहा पानी गिरता है और पानी अुछलता है। अैसा मालूम होता था मानो वडी वडी तोपोसे गोलोके सहारे कोरे आटेके फव्वारे अुडते हो। अुस दृश्यका वर्णन शव्दोमे हो ही नही सकता, क्योकि शव्दोकी परवरिश ‘शाति और व्यवस्था’ के वीच होती है।

हमने लेटे लेटे यहासे अिस दृश्यको जी भरकर देखा। या सच कहे तो चाहे अुतने लेटने पर भी तृप्त होना असभव है अिस वातका यकीन हुआ तव तक देखा। आखिर हम खडे होकर वापस लौटे। लेकिन वापस लौटना आसान न था। कोअी तो अुठता ही नही था। अुसे खीचकर लानेके लिअे दूसरा जाता था तो वह भी खुद अुस नयनोत्सवमे चिपक जाता था। पहला पछताकर अुठता था तो जो वुलाने जाता वह नही अुठता था। और जव दोनो मुश्किलसे सयम करके वापस लौटते, तव अिन पर गुस्सा होकर झगडा करनेके लिअे गये हुअे तीसरे भाअी अेक क्षणके लिअे आखोको तृप्त करने वहा खडे हो जाते और अुन दोनोके सयमको थोडा शिथिल वना देते। अुन दोनोके मनमें आता अितने चिढे हुअे! समाज-नियता जितनी छूट लेते हैं अुतनी यदि हम भी लें तो अिसमे कोअी गलती नही है। हम कहा अुनसे अधिक सयमी होनेका दावा करते है? मेरे दिलमे आया कि अुस शिला पर पहुच जाअूगा तो राजाके पानीमे पाव डाल सकूगा। किन्तु नदीका पानी कुछ वढता जा रहा था और अुसमे वह शिला अेक छोटे द्वीपके जैसी वन गअी थी। अिसलिअे राजाजीने मुझे मना किया। मुझे भी लगा कि अुनकी वात नही मानूगा तो दूनी अुद्धतता होगी। राजाजीकी आज्ञाका अुल्लघन कैसे किया जाय? और ‘राजा’ के सिर पर पाव कैसे रखा जाय?

हम वापस लौटे। भक्ति, विस्मय, मानव-जीवनकी क्षणभगुरता, दृश्यकी भव्यता, अिस क्षणकी धन्यता — कअी वृत्तियोंके वादल हृदयमें भरे थे और वहासे अुस वीरभद्रकी तरह सिरमें अपने तीर छोडते थे। विचारोकी यह आतिशवाजी अद्‌भुत होती है। हृदयसे तीर छूटकर सीधे सिर तक पहुचता है और वहा फूटता है तब स्वस्थ शरीर कैसा अस्वस्थ हो जाता है, अिस वातका जिसने अनुभव लिया है वही अिसके चमत्कारको जान सकता है।

अिस स्थान पर मदिर क्यो नही है? हमारे मदिर तो मानो जन्मभूमिके काव्यमय स्थान है। अगर पहाडका अमुक शिखर अुत्तुग है, तो वहा कोअी ऋषि ध्यान करनेके लिअे जाकर वैठा ही है और भक्तोने वहा अेक मदिर वनाया ही है। फिर वह चाहे पूनाके पासका पार्वती शिखर हो, चपानगरके पासका पावागढ हो, जूनागढके पासका गिरनार हो या हिमालयका कैलास शिखर हो। दक्षिणकी ओर दौडनेवाली नदी कही अुत्तरवाहिनी हुअी है? तो चलो, वहा अेकाध तीर्थकी स्थापना करो, करोडो लोग आकर पावन हो जायगे। वडी वडी दो नदिया अेक-दूसरेसे मिलती हो तो अुस प्रयागमे हमारे सतोने तीसरी अपनी सरस्वती वहायी ही हे। सारी यात्रा पूरी करके समुद्र तक पहुचे, तो वहा भक्तोने जगन्नाथजीकी या सेतुवध महादेवजीकी स्थापना की ही है। जहा जमीनका अत दीख पडा वहा या तो कन्याकुमारी होगी या देवद्र होगा। लवे रेगिस्तानमे अेकाध सरोवर दिखाअी दे तो वह नारायणका ही सरोवर है, अुसकी पूजा होनी ही चाहिये। और क्षीरभवानीकी स्थापना भी होनी ही चाहिये!

हमारे सत कवियोने तीर्थस्थानोकी स्थापना कहा कहा की है, यह खोजने चलेगे तो हिन्दुस्तानका सारा भूगोल पूरा करना पडेगा। मुसलमान सतोने और रोमन कैथलिक पादरियोने भी हमारे देशमे अिसी तरह अद्‌भुत काव्यमय स्थान पसद किये है और वहा पूजा-प्रार्थनाकी व्यवस्था की है। फिर अिस प्रपातके पास मदिर क्यो नही है? क्या जीवनराशिके अितने वडे अध पतनको देखकर मुनि खिन्न हुअे होगे? क्या भैरवघाटीकी तरह यहा शरीर छोडनेका नशा पैदा

देखा ही अैसा अिद्रजाल फैलायेंगे। अुस समय सारी घाटी अेक महान रगभूमिके जैसी वन जायगी और चारो खडोंके भूदेव अुसे देखनेके लिअे अवतार लेंगे। परन्तु अुस समय क्या किसीको अीश्वरका स्मरण होगा? मालूम होता है, अपनी बुद्धिशक्तिका अुपयोग अीश्वरको पहचाननेके लिअे करनेके वदले मनुष्यने अुसका अुपयोग अीश्वरको भूलनेकी युक्तिया और पद्धतिया खोजनेमे ही किया है।

शायद अैसा भी हो कि सब ओरसे परास्त होनेके बाद ही बुद्धि अीश्वरको अधिक अच्छी तरहसे समझ सकेगी।

हरेक वस्तुका अत होता है। अिसलिअे हमारी अिस जोग-यात्राका भी अत हुआ। अत्यत पवित्र और मीठे सस्मरणोंके साथ हम वापस लौटे। किन्तु फिर अेक वार वहा जानेकी वासना तो रह ही गअी। अिसलिअे 'पुनरागमनाय च' अिन शास्त्रोक्त शब्दोका अुच्चार करके हम भारत-वैभवकी अिस असाधारण विभूतिसे विदा ले सके।

सितवर, १९२७

१३
जोगके प्रपातका पुनर्दर्शन

हिमालय, नीलगिरी और सह्याद्रि जैसे अुत्तुग पर्वत, गगा, सिंधु, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र जैसी सुदीर्घ नद-नदिया, और चिलका, वुलर तथा मचर जैसे प्रसन्न सरोवर जिस देशमे विराजते हो, अुस देशमें अेकाध महान, भीषण और रोमाचकारी जलप्रपात न हो तो प्रकृतिमाता कृतार्थताका अनुभव भला किस प्रकार करे? दक्षिण भारतमे कारवार जिले तथा मैसूर रियासतकी सीमा पर अेक अैसा प्रपात है, जो ससारमे अद्वितीय या सर्वश्रेष्ठ पदका अेकमात्र भोक्ता चाहे न हो, फिर भी अैसे सर्व-श्रेष्ठ प्रपातोमे अेक जरूर है। अग्रेज लोग अुसे 'गिरसप्पा फॉल्स' के नामसे पहचानते है। अुसका स्वदेशी नाम है 'जोग'।

लॉर्ड कर्जन जब भारतमे आया तब जोगका प्रपात देखनेके लिअे वह अितना अुत्सुक हुआ था कि अिस देशमे आनेके बाद पहले मौकेका

फायदा अुठाकर वह अुसे देखने गया और अुसके अद्‌भुत सौंदर्यसे अुसने अपनी आखे ठडी की। अुसके वाद हमारे देशमे अिस प्रपातकी प्रतिष्ठा वढ गअी। जहासे लॉर्ड कर्ज़नने प्रपातको देखकर अपने आपको कृतार्थ किया था, वहा मैसूर सरकारने अेक चबूतरा वनवाया है। अुसको 'कर्ज़न सीट' कहते है।

प्रपातके पास ही मैसूर सरकारने अेक अतिथिशाला वनवाअी है। अुसके मेहमानोकी सूचीमे प्रकृति-प्रेमी देशी-विदेशी यात्रियोने समय समय पर अपने आनदोद्‌गार लिख रखे है। अिन अुद्‌गारोका ही अेक सग्रह यदि प्रकाशित करे तो वह प्रकृति-काव्यकी अेक असाधारण मजूषा हो। यह सारा काव्य अुच्च कोटिका होता तो भी जोगके प्रत्यक्ष दर्शनसे अुसकी अपूर्णता ही सिद्ध होती और मुहसे यकायक अुद्‌गार निकलते :

अेतावान् अस्य महिमा अतो ज्यायाश्च पूरुष ।

शरावती तो है अेक छोटीसी नदी। फिर भी अुसके तीन तीन नाम क्यो रखे गये होगे? प्रथम वह भारगी या वारहगगाके नामसे पहचानी जाती है। वीचके हिस्सेमे अुसे शरावती कहते है। और जहा वह प्रौढतासे समुद्रमें मिलती है वहा अुसे वालनदी कहते है। शरावतीके प्रवाहने यदि अिस रोमाचकारी प्रपातका रूप धारण न किया होता तो भी अुसने अपने प्राकृतिक सौंदर्यके द्वारा मनुष्योका मन हरण किया ही होता। किन्तु तव वह हिन्दुस्तानकी अनेक सुन्दर नदियोमें से अेक नदी ही मानी जाती। अिस प्रपातके कारण छोटीसी शरावती भारतवर्षकी अेक अद्वितीय सरिता वन गअी है।

जोगके अिस अलौकिक दृश्यका दर्शन करनेके लिअे राजाजी तथा दूसरे मित्रोके साथ मै प्रथम गया था, अुस समयके अुस अद्‌भुत दृश्यके दर्शनसे अेक कुतूहल तृप्त हो ही रहा था कि अितनेमे मनुष्य-स्वभावके अनुसार मनमे कुतूहलजन्य अेक नया सकल्प अुठा कि अितनी अूचाअीसे कूदनेके वाद यह नदी आगे कहा जाती होगी, वहा कैसी मालूम होती होगी और सरित्पतिके साथ अुसका किस तरह मिलन होता होगा,

यह सब कभी न कभी जरूर देखना चाहिये। और बन सके तो बच्चा बनकर शरावतीके वक्षस्थल पर (नौका) विहार करना चाहिये। अंतरात्माकी अिस जिज्ञासाको सत्यसंकल्प अीश्वरने आशीर्वाद दिया और अेक तप (१२ वर्ष) की अवधि पूरी होनेके पहले ही जोगका दूसरी बार दर्शन करनेका मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहली बार हम अूपरकी ओरसे प्रपातकी तरफ गये थे। अिस बार नदीके मुखकी ओरसे प्रवेश करके नावमें बैठकर हमने प्रतीप यात्रा की। और नाव जहां अटक गअी वहांसे तैलवाहन (मोटर) के सहारे घाट चढकर हम प्रपातके सिर पर पहुंचे।

वहां शरावतीकी अुस अर्धचंद्राकार घाटीमें चार प्रपात हैं। दाअीं ओर 'राजा' नामक प्रपात है, जो अूपरसे अेकदम ९६० फुट नीचे कूदता है। अुसका 'राजा' नाम यथार्थ ही है। अुसकी जलराशि, अुसका अुन्माद और अुसकी हिम्मत किसी जगदेक-सम्राट्को शोभा दे सके अैसी है। अुसकी बाअीं ओरका महारुद्रके समान गर्जना करनेवाला 'रुद्र (Roarer) प्रपात' राजाके चरणों पर जाकर गिरता है। रुद्रकी घोर गर्जना आसपासकी टेकरियों तथा घाटीको मीलों तक निनादित करती है। अुसकी ध्वनिको न तो मेघ-गंभीर कह सकते हैं, न सागर-गंभीर। क्योंकि मेघगर्जना आकाश-विद्रावी होने पर भी क्षण-जीवी होती है और सागरकी सनातन गर्जनाको ज्वार-भाटेके अनुसार झूलना पडता है। रुद्रकी ध्वनि अविरत, अखंड और धारावाही होती है। अुस ध्वनिका अुन्माद विलक्षण होता है।

राजा और रुद्रको संसारमें कहीं पर भी सम्राट्की पदवी मिल सकती है। किन्तु जोगका सच्चा वैभव तो आकाशमें विविध रूपसे अुडनेवाली वीरभद्र (Rocket) की शुभ्र जल-जटाओंके कारण है। वीरभद्रका प्रपात हाथीके गंडस्थल जैसे अेक विशाल शिलाखंड पर गिरते ही अुसमें से बारूदखानेके तीरों जैसे फव्वारे अूंचे और अूंचे अुडते ही चले जाते हैं। यह क्या शंकरका तांडव-नृत्य है? या महाकवि व्यासकी प्रतिभाका नवनवोन्मेषशाली कल्पना-विलास है? या सूर्यबिंबके पृष्ठभागसे बाहर पडनेवाली सर्वसंहारकारी किन्तु कल्पनारम्य ज्वालायें हैं? या भूमाताकी वात्सल्य-प्रेरित स्तन्यधाराओंके फव्वारे हैं? अैसी अैसी अनेक

कल्पनायें मनमे अुठती है। वीरभद्र सचमुच देखनेवालोंकी आखोको पागल वना देता है।

वीरभद्रकी वाअी ओरकी कर्पूरगोरा, तन्वगी और अनुदरी पर्वत-कन्या पार्वती (Lady) अपने लावण्यसे हमें आनदित करती है।

चारो प्रपातोंकी मानो रक्षा करनेके लिअे ही अुनके दोनो ओर दो प्रचड पहाड खडे है। ये सतरी खडे खडे और क्या कर सकते है? प्रपातोकी अखड गर्जनाको प्रतिक्षण प्रतिध्वनित करते रहना, अुनके अिद्रधनुषोको धारण करना और विविध प्रकारकी वनस्पतिसे अपनी देहको सजा कर पुलकित रहना, यही अुनकी अविरत प्रवृत्ति हो वैठी है।

अवकी वार जव हम गये तव गरमीके दिन थे। भारगीका पानी अच्छा खासा अुतर गया था। वीरभद्रकी जटाये कही भी नजर नही आती थी। रुद्रकी लवी लवी अुछल-कूद भी कम हो गअी थी। पार्वतीने अव विरहिणीका वेश धारण कर लिया था। हमे अुम्मीद थी कि कमसे कम राजाका वैभव तो देखने लायक होगा ही। किन्तु विश्व-जित् यज्ञके अतमें धन्यता अनुभव करनेवाला कोअी सम्राट् जिस प्रकार अकिंचन वन जाता है और अुस हालतमें भी अपने वैभवको व्यक्त करता है, ठीक वही हालत 'राजा' की हो गअी थी।

अवकी वार हम शरावतीकी दाअी ओर यानी अुत्तरकी ओर आ पहुचे थे। अतिथिगृहमे रुके विना हम दौडते दौडते सीधे 'राजा' प्रपातकी वगलमे जा खडे हुअे।

वहा अेक ओर मस्त धूप थी और दूसरी ओर नीचेसे अुडनेवाले तुषारोका ठडा कोहरा था, अिन दोनोंके वीच फसनेसे हमारी जो दशा हुअी अुसका वर्णन करना कठिन है। राजाके मुकुट जैसे शोभनेवाले गरम गरम पत्थरो पर झुककर हमने नीचे घाटीमे देखा। अूपरसे राजाकी जो धारा नीचे गिरती थी वह ठेठ जमीन तक पहुचती ही नही थी। किसी मन्दोमत्त हाथीकी सूडके समान अेक प्रचड स्रोत अूपरसे नीचे गिरता हुआ दीख पडता था। नीचे गिरते गिरते शतधा विदीर्ण होकर अुसकी सहस्र धाराये वन जाती थी, और आगे जाकर अुन धाराओंके वडे वडे जलविंदु वन जानेके कारण वे मोतीकी मालाओंकी तरह शोभा

पाने लगती थी। अिन मोतियोंका भी आगे जाकर चूर्ण बन गया और अुनके बड़े बड़े कण नजर आने लगे। अब नीचे और आगे जाना छोड़कर अुन्होंने थोड़ा स्वच्छंद-विहार शुरू किया। ये बड़े कण भी छिन्नभिन्न हो गये, अुन्होंने सीकर-पुंजका रूप धारण किया और बादलोंके समान विहार करने लगे। मगर प्रकृति-माताको अितनेसे ही संतोष नहीं हुआ। आगे जाकर अिन बादलोंसे नीहारिकाओंका कोहरा बना और पवनकी लहरोंके साथ अुड़कर वह सारी हवाको शीतल बनाने लगा। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि अितनी बड़ी जलधाराकी अेक बूंद भी जमीन तक पहुंच नहीं पाती थी। नीचेकी जमीन गरम और अूपरकी ठंडी! अिस स्थितिको देखकर मुझे राजाओंका वगैर किसी व्यवस्थाका दान याद आया। प्रजाजनोंको अकालमें पीड़ित देखकर हमारे राजा जब अुदार हाथोंसे पैसे देने लगते हैं तब अुनके जयनादमें सारा वायुमंडल गूंज अुठता है। किन्तु बेचारी गरीब जनताके मुंह तक अन्नका अेक दाना भी पहुंच नहीं पाता! बीचके अमले ही सब खा जाते हैं।

अलकेश्वरके दिलमें भी औीर्ष्या अुत्पन्न हो अैसी यहांके अिंद्रधनुषोंकी शोभा थी। भेद केवल यह था कि ये अिंद्रधनुष स्थायी नहीं थे। पवनकी तरंगें जैसे जैसे दिशायें बदलती जातीं, वैसे वैसे ये सीकर-पुंज भी अपने स्थान बदलते जाते। अिस कारणसे, पार्वतीके अिशारेसे जिस तरह शंकर नाचने लगते हैं, अुसी तरह ये अिंद्रधनुष भी अिधर-अुधर दौड़ते हुअे नजर आते थे। क्षणमें क्षीण हो जाते, तो दूसरे ही क्षण मयासुरके महलकी शोभा धारण करते। कर्मके साथ जिस प्रकार अुसका फल आता ही है, अुसी प्रकार हरेक धनुषके साथ अुसका प्रति-धनुष भी अपना वर्णक्रम ठीक अुलटा करके हाजिर होता ही था। हमने स्थान बदला, जिससे अुन सुरधनुषोंने भी अपना स्थल बदला। सुरधनु और सुरधनुीका यह आह्लादजनक खेल हम काफी देर तक विस्मय-विमुग्ध भावसे देखते ही रहे। जितना अधिक देखते अुतनी दर्शनकी पिपासा बढ़ती जाती। हमें मालूम था कि हम घंटे दो घंटे ही यहां पर रह सकेंगे। प्रति-क्षण हमारा समयरूपी पुण्य क्षीण होता जा रहा है, और थोड़ी ही देरमें हमें मर्त्यलोकमें वापस लौटना होगा, अिस बातका हमें खयाल था।
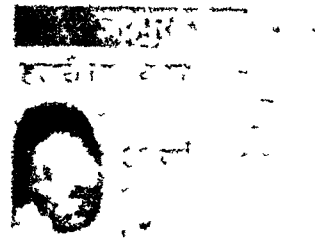
स्वर्गलोभी देवता जिस विषादके साथ स्वर्गसुखका अुपभोग करते है, पराक्रमी पुरुष अपने यौवनके अुत्तरार्धमे अपने सकल्पकी पूर्तिके लिअे जितने अधीर बन जाते है, अुतने ही विषादमे और अुतने ही अधीर बनकर हम सब अुस गधर्व-नगरीका आख, कान, नाक और सारी त्वचासे सेवन करने लगे और साथ साथ हमारी कल्पनाओ द्वारा अुमी आनदको शतगुणित करके अुसका अुपभोग करने लगे।

* * *

अेक दिन पहले हम तीन नावे लेकर निकले थे। बीचकी नावमें स्त्रिया और बालक थे और हम पुरुष लोग दोनो ओरकी दोनो नावोमें बैठे थे। रातका समय था। अूपर आकाशमें चाद हस रहा था। अुसका वह काव्य लडकियोने हृदयमे ग्रहण कर लिया और वहासे वह अुनके आलापोके रूपमे बाहर आने लगा। हरेक लडकीने अपना प्यारा गीत नदीकी सतह पर तैरता छोड दिया। वह नाद कानो पर पडते ही किनारे परके नारियल और सुपारीके पेड रोमाचित हो अुठे और अपने अुन्नत सिर कुछ झुकाकर अुन आलापोका पान करने लगे। थक जाने तक लडकियोने गीत गाये। फिर वे सो गअी। चाद अस्त हुआ। सर्वत्र अधकारका साम्राज्य प्रस्थापित हुआ। और अनत सितारे आसपासकी टेकरियोको अनिमेष दृष्टिसे देखने लगे। यह कहना मुश्किल था कि आसपासकी नीरव शाति जाग रही थी या वह भी निद्रामे पडी थी।

जब जब हम नीदमें से जग जाते तब तब कभी पतवारकी आवाज, कभी खलासियोके बासके साथ कुश्ती खेलते हुअे पानीकी आवाज, और कभी खलासियोके अेक-दूसरेको पुकारनेकी तीक्ष्ण आवाज सुनाअी देती। आखिर पौ फटी। पछियोने अपना कलरव शुरू किया। मेरे मनमें आया बीचकी नावमे सोयी हुअी कोयलें भी यदि जग जाये तो कितना अच्छा हो! मेरे गद्य निमत्रणका अुन्होने आलापोसे ही अुत्तर दिया। वृक्षोने भी रातके समय सुने हुअे आलापोकी याद करके, अेक-दूसरेको यह बतानेके लिअे कि 'यही तो रातका सगीत है' अपने सिर हिलाना शुरू किया। रातका जलविहार सचमुच सात्त्विक, शातिमय और यौवनमय था।

अुष कालका जलविहार भी अुतना ही सात्त्विक, शातिमय और यौवन-प्रसन्न था, जव कि प्रपातका यहाका दर्शन तो अद्भुत-भीपण और रोम-हर्पण था। अव अुन लडकियोके चेहरो पर प्रात कालकी मुग्ध प्रसन्नता नही रही थी। 'अितने अद्भुत दृश्यका सर्जन किस प्रकार हुआ होगा? सचमुच हम पृथ्वीतल पर है या स्वप्नसृप्टिमे?' अिसका विस्मय अुनके चेहरो पर स्पप्ट रूपसे नजर आता था। वे अेक-दूसरेकी आखोकी ओर देखकर अपना विस्मय वढाती जा रही थी। और अुनके अिस विस्मयको देखकर हमें अिस प्रकारका गर्व मालूम होता था, मानो हम ही अिस काव्यमय सृप्टिके विधाता हो।

भोजनका समय हो चुका था। नौकायें छोडकर हम अेक गावके नजदीक आ पहुचे। वहा चावल कूटनेकी अेक चक्की थी। भक् भक् भक् करती हुअी यह चक्की गरीव लोगोकी शाति, अुनका स्वास्थ्य और अुनकी आजीविकाको भी कूटपीट कर नप्ट कर रही थी। हमने अघाकर खाना खाया और हमारे अिन्तजारमे खडे तैलवाहनमे हम आरूढ हुअे।

पेट्रोलके अेक डिव्वेमे थोडासा तेल वाकी था। हमारा सारथी अुसीमे पानी भरकर ले आया और मोटरमे डाला। पानी गरम हुआ और तेलका धुआ पानीमे मिला। फिर क्या पूछना था? कदम कदम पर मोटर रुकने लगी, चिल्लाने लगी, शिकायत करने लगी और वदवू छोडने लगी। हम भी अूव गये, गुस्सेमे आये, आग-वबूला हुअे और अतमे यह देखकर कि अव कोअी अिलाज ही नही है, ठडे पड गये। वगला भापाकी अेक कहावतका मुझे स्मरण हो आया 'जले तेले मिश खाये ना'। वडी मुश्किलसे, किसी न किसी तरह जव हम पानीवाली जगह पर आ पहुचे तव पुराने विप्लवी पानीको निकालकर हमने अुसमे शुद्ध सज्जन पानी भर लिया। अुसके वाद हमारा रास्ता विलकुल आसान हो गया।

वरसोसे चर्चा चल रही है कि गिरसप्पाके प्रपातमे विजली पैदा की जाय या नही। शरावतीके पानीको अेक ओरसे मोडकर वडे वडे नलो द्वारा नीचे अुतारकर वहा अुसकी मददसे यदि विजली पैदा की जा सके,

तो सारी मैसूर रियासतको सस्ते दाममें विजली दी जा सकेगी। जितना ही नही, बल्कि अुत्तर और दक्षिण कानडा जिलोंको भी दी जा सकेगी। अिससे लोगोको वडा फायदा होगा। किन्तु अिससे वह अद्भुतरम्य प्राकृतिक दृश्य हमेशाके लिअे नष्ट हो जायगा। अिन दो वातोंमे से कौनसी अधिक अिष्ट है, अिसका अव तक कोअी निर्णय नही हो सका है। हजारो — नही, लाखो लोगोको पेटभर अन्न मिलेगा। सैकडो विज्ञानवेत्ता नवयुवकोको अपनी योग्यता सिद्ध करनेका मौका मिलेगा। हजारो जानवरोंकी पीडा दूर होगी। अेक स्थान पर अिस तरहका कारखाना सफल हो सका तो भारतके सव प्रपातोंका अैसा ही अुपयोग किया जा सकेगा। और देशको अेक महान शक्तिका हमेशाके लिअे लाभ मिल जायगा। तव क्या केवल अेक भीषणरम्य दृश्यके लोभसे हम अिन अनेक हितकर वातोंको छोड दें? कलाके शौककी भी कोअी सीमा है या नही? अपनी रानीके मनोविनोदके लिअे अपनी राजवानी रोमको जला डालनेवाले नीरोकी सुलतानी वृत्तिमें और अिस प्रकारकी कला-भक्तिमे तत्त्वत क्या फर्क है?

अिस प्रश्नके अुत्तरमे जो कुछ कहा जाता है अुसका जिक्र करनेके पहले थोडेसे विषयांतरकी आवश्यकता है। युरोपमे जव महा-युद्ध छिड गया और लाखो नौजवान तोपो तथा वदूकोंके शिकार हुअे, तव साहित्य-शिरोमणि रोमें रोलाकी भूतदया द्रवीभूत हुअी और अन्य लोगोंके समान, खुद अुन्होंने भी अिन घायल लोगोंकी सेवाका कुछ प्रवंध किया। किन्तु जव अुभय पक्षके शत्रुओंने अेक-दूसरेकी कलापूर्ण अिमारतो पर वम-वर्षा शुरू की तव अुनकी कलात्मा पुण्यप्रकोपसे सुलग अुठी और अुन्होंने वुलद आवाजसे सारे युरोपको चेतावनी दी "अै कमवख्तो, तुम्हे अेक-दूसरेको मार डालना हो तो मार डालो, अिस ससारमे तुम्हे विलकुल नष्ट हो जाना हो तो नष्ट हो जाओ। किन्तु ये कलाकृतियां तो आत्माकी अभिव्यक्ति करनेवाली अमर कृतियां हैं। अुन्हींके द्वारा समस्त मानव-जातिकी आत्मा अपने आपको व्यक्त करती है — और कुछ नही तो कम-से-कम अिनका तो नाश न करो!!"

रोमें रोलाकी आर्षवाणी युरोपकी आत्माने सुनी और युध्यमान पक्षोंने कलाकृतियोंका संहार बंद कर दिया। अब सवाल यह है कि क्या कलाकृतियां सचमुच मानवकी आत्माकी अभिव्यक्तिकी द्योतक या प्रेरक हैं? या अुच्च अभिरुचिके आवरणके पीछे रही हुअी विलासिताकी ही साधन-सामग्री है?

कलाको जिसने सचमुच पहचाना है वह फौरन बता देगा कि कला और विलासिताके बीच जमीन आसमानका फर्क है और सच्ची कलाकृतिके द्वारा जो निरतिशय आनंद होता है वह सोयी हुअी आत्माको सचमुच जाग्रत करता ही है। करोड़ों वॉल्टकी विद्युत्‌शक्ति पैदा करके लाखों लोगोंकी आजीविकाका प्रबंध करना कोअी साधारण बात नहीं है। किन्तु असंख्य लोगोंको कलाके द्वारा जो आनंद या संस्कारिता प्राप्त होती है वह तो अुनकी आत्माको पोषण देनेवाली चीज है।

और जोग कोअी मानवकृत कलाकृति नहीं है। अुल्टे, वह तो कलाकारोंको भव्यता और सम्यताकी अेक ही साथ शिक्षा और दीक्षा देनेवाली प्रकृति-माताकी अलौकिक विभूति है। अुसे नष्ट करना नास्तिक विद्रोहके समान है। अुसे नष्ट करनेके पहले हमें सहस्र बार सोचना होगा। जोगका प्रपात वर्तमान युगकी ही संपत्ति नहीं है। हमारे अनेक ऋषि-पूर्वजोंने अुसके पास बैठकर ओश्वरका ध्यान किया होगा, और भविष्यमें हमारे वंशजोंके वंशज अुसका दर्शन करके अपने जीवनकी अज्ञात वृत्तियों और शक्तियोंका साक्षात्कार करेंगे।

अुपयुक्ततावादका सहारा लेकर 'अल्पस्य हेतो बहु हातुम् अिच्छन्' जैसे जड हम न बनें। अिस प्रपातको सुरक्षित रखकर अुससे कोअी लाभ अुठाया जा सकता हो तो भले अुठायें। मानव-बुद्धिके लिअे यह बात असंभव न होनी चाहिये। किन्तु अिस तांडवयोगके दर्शनसे मनुष्य-जातिको वंचित करनेका धर्मत किसीको हक नहीं है। मंदिरमें हम मूर्तिकी स्थापना करते हैं। अुसी तरह प्रकृतिने भी विराट् स्वरूपकी भव्य प्रतिमाओंकी यहां, हमारे सामने, स्थापना की है। यहां केवल दर्शन, ध्यान और अुपासनाके लिअे आना चाहिये और

हृदयमे यदि कुछ सामर्थ्य हो तो अिनके साथ तदाकार हो जाना चाहिये। यही हमारा अधिकार है।

मअी, १९३८

१४

जोगका सूखा प्रपात

याद नही किस कविने यह विचार प्रकट किया है, मगर अुसका वह विचार मै अपनी भाषामें यहा रख देता हू।

"यह सही है कि पहाडोके जैसी अूची अूची लहरे अुछालनेवाला समुद्र भयानक मालूम होता है। मगर अुसका सारा पानी सूखकर यदि पात्र खाली हो जाय तो हजारो मील तक फैले हुअे अुसके गहरे गड्ढे कितने भयावने मालूम होगे, अिसकी कल्पना भी करना कठिन है। यह सही है कि किसी दुर्जनके पास सपत्तिके भडार हो तो वह अुनका दुरुपयोग करके लोगोको सतायेगा। मगर अुसकी यह सपत्ति नष्ट हो-कर वह यदि भूखा कगाल वन जाय, तो वह किस राक्षसी दुष्टतासे वाज आयेगा? अच्छा ही है कि समुद्र पानीसे भरपूर है, और दुर्जनोके पास अुनकी दुष्टताकी आग बुझानेके लिअे पर्याप्त सपत्ति रहती है।"

जोगके प्रपातमे से राजा और रुद्रके सूखे हुअे प्रपातोको देखकर कविकी अूपर बताअी हुअी अुक्ति याद आनेका यद्यपि कोअी कारण नही था, फिर भी यह अुक्ति याद आअी जरूर।

सन् १९२७ में जब पहले पहल मैंने जोगका प्रपात देखा था, तब अुसका वैभव सोलहो कलासे प्रकट हुआ था। पानीका मुख्य प्रपात अपनी प्रचड जलराशिके साथ ८४० फुट नीचे कूदकर नीचेकी घाटीमें प्रपातके प्रवाहके ही द्वारा तैयार की हुअी १५० फुट गहरे तालावकी गद्दी पर गिरता था। अिस मुख्य प्रवाहकी प्रतिष्ठा वढानेके लिअे अुसके

दोनों ओर मोतियोंकी मालाओंके समान पानीकी अनेक धारायें अनेक ढगमें गिरती थीं। अुसके दक्षिणकी ओर टेढी सीढियों परसे कूदता कूदता रुद्र अपना पानी, आवेसे अधिक पतनके वाद, राजाके पानीमें फेंक देता था। राजाकी गर्जना प्राय नीचे पहुचनेके वाद ही पैदा होती है। रुद्रका प्रपात रावणकी तरह अपने जन्मके साथ ही चिल्लाने लगता है।

दोनों प्रपात अद्भुत तो हैं ही। किन्तु अुस समय मुझे जो दृश्य अलौकिक लगा था वह था वीरभद्रकी अुछलती जटाओंका। यह दृश्य मैं फिर कभी नहीं देख पाया। किसी तसवीरमें भी वीरभद्रकी अुन जटाओंका चित्र नहीं आया है।

आखिरी प्रपात है पार्वतीका। अुसे देखते ही मनमें स्त्रीदाक्षिण्य पैदा होता है।

दस सालके वाद जब मैंने फिरसे जोगका दर्शन किया, तब राजाका स्रोत काफी क्षीण हो चुका था। वीरभद्रकी जटाओंका मुडन हो गया था। रुद्रकी चिल्लाहट यद्यपि कम नहीं हुअी थी, फिर भी अुसका वह वडा ताल जोगके क्षीण प्रपातके साथ मिलता नहीं था। और पार्वती तो विलकुल कृशागी तपस्विनी जैसी वन गयी थी।

किन्तु अिन सब सकोचोंको भुला दे अैसी खूबी तो थी प्रपातकी ठडी भापमें से अुत्पन्न होनेवाले अिन्द्रधनुषोंके भ्रूविलासमें। यह शोभा जितनी ओरसे देखने जाते अुतनी ओरसे अिन्द्रधनुष अपने मुह घुमाकर नया नया सौंदर्य प्रकट करते थे।

फिर ठीक दस सालके वाद जोगका वही प्रपात देखनेके लिअे जब हम अबकी वार गये तब चार प्रपातोंमें से तीन तो विलकुल सूख गये थे। रुद्रके अभावमें सर्वत्र स्मशान-शाति फैली हुअी थी। राजाके सूख जानेसे अुसके पीछेकी अेकके नीचे अेक दो वडी दरारें औरगजेव द्वारा निकाली हुअी सभाजीकी आखों जैसी भयावनी मालूम होती थीं। पार्वती तो मानो दक्षके यज्ञमें जाकर भस्म हो गअी थी और वीरभद्र अैसा मालूम होता था मानो दक्षका नाश करनेके वाद कुछ शात होकर

अपने स्वामीके ससुरकी मृत्यु पर नीरव आसू ढाल रहा हो। अितनी खिन्नता तो शायद महाभारतके युद्धके वाद कुरुक्षेत्र पर भी नहीं छाअी होगी!

पहली वार हम गये थे शिमोगा-सागरके रास्तेसे — गुजरातमे आयी हुअी वाढके सकटके दिनोमे। दूसरी वार गये अिरादतन समुद्रके छोरसे अुलटे क्रमसे — शरावतीके पानीमे अूपरकी ओर यात्रा करके। हमारे पूर्वजोने कहा है 'नदीमुखेनैव समुद्रमाविशेत्।' अिस नसीहतसे ठीक अुल्टे हम शरावती-सागर-सगमसे नावमे वैठकर प्रतीप क्रमसे प्रपातकी सीढियो तक पहुचे और वहासे पहाडकी पगडडीसे अूपर चढकर प्रपातके सिर पर जा पहुचे थे। अवकी वार हमने तीसरा रास्ता लेकर यात्रा की। शिरसीसे सिद्धापुर होकर हम प्रपातकी ववअीवाली वाजू पर गये। वहा राजाके सिर पर विराजनेवाली अेक वडी शिला पर लेटकर हमने नीचेका रोमहर्षण दृश्य देखा। आलेके जैसी भयावनी दरारके सिर पर जाकर अदर देखनेसे सारा वदन काप अुठता है। मनमे यह सदेह पैदा हुअे विना नहीं रहता कि यह शिला अपने ही भारसे कही छूट तो नहीं जायगी?

अिस शिलाके वगलमें अुतनी ही वडी और अुतनी ही भयावनी जगह पर दूसरी शिला है। अुस पर प्राचीन कालमें किसी राजाका लग्नमडप खडा किया गया होगा। आज अुस मडपके चार स्तभ जिस पर खडे किये गये थे वह चार सुराखोवाला अेक वडा चवूतरा अुस शिला पर दिखाअी देता है। भयावने प्रपातकी दरारके किनारे मडप खडा करके विवाह करनेवाले राजाकी काव्यमय वृत्तिकी वलिहारी है! अैसे शौकीन राजाके साथ जिसने शादी की अुस राजकन्याको अिस मडपमें वैठते समय कैसा अनुभव हुआ होगा! किसीने वताया, 'भीषण रसके रसिया अुस राजाके नाम पर ही अिस प्रपातका नाम राजा रखा गया है।' मैंने मनमें सोचा, 'तव तो अुससे शादी करनेवाली राजकन्याका नाम हम नहीं जानते अिस वातका फायदा अुठाकर अुसीको हम पार्वती क्यो न कहें? पर्वतकी दरारके किनारे अुसने शादी की, क्या अितना कारण अुसे पार्वती कहनेके लिअे वस नहीं है?'

अैसा नहीं है कि पहाडोमे आलेकी जैसी गहरी दरारे मैने न देखी हो। मस्जिदोमे भी दीवारोमे गहराअी साधकर अुनके किनारे मेहराब बनाते है। किन्तु राजाके नीचेका आला तो कालपुरुषके मुहसे भी बडा और गहरा था। अुसके भीतर जहा जगह मिले वहा पक्षी अपने घोसले बनाते है और चुनकर लाये हुअे अनाजके दानोका सग्रह करते है।

बम्बअीकी ओरसे यानी अुत्तरकी ओरसे जी भरकर देखनेके बाद हम मोटरमे बैठकर पूर्वकी ओर गये। वहा दो नावोको बाधकर बनाये हुअे बेडे पर — जिसे यहा 'जगल' कहते है — हमारी मोटरको चढाकर हम शरावती नदीको पार करके दक्षिणके किनारे आ पहुचे। वहा मैसूर सरकारकी अतिथिशालाके पाससे फिर अेक बार सारी दरारका दृश्य देखा। बीस साल पहले यहीसे राजा, वीरभद्र और पार्वतीका देवदुर्लभ दृश्य देखा था। अैसा नही था कि अबकी बारके सूखे दृश्यमे काव्य न हो। अेकके नीचे अेक, दो बडे आले ८४० फुटके पतनको नाप रहे है। अैसा दृश्य विधाताकी अिस विविध सृष्टिमे हर कही देखनेको थोडे ही मिलनेवाला है!

मेरे मनमे छाया हुआ विषाद मैने पेडो पर नही देखा। दोनो आलोमे गोल गोल चक्कर काटनेवाले पक्षी भी विषण्ण नही दिखाअी देते थे। आकाशमे तैरते हुअे और प्रपातकी दरारमे ताकनेवाले बादल भी गभीर नही मालूम होते थे। फिर रिक्तताका यह दृश्य देखकर मै ही अितना बेचैन क्यो होता हू? क्या बीस साल पहले यहा देखी हुअी जल-समृद्धिकी याद आनेसे? या दस साल पहले अुसमे देखे हुअे अिन्द्र-धनुषोको याद करके? मगर वह जल-समृद्धि और वर्णसकरका वह चमत्कार हमेशाके लिअे थोडे ही लुप्त हो गये है? हजारो सालसे हर ग्रीष्मकालमे अैसी ही रिक्तता देखनेको मिलती होगी और हर वर्षाकालमे भारगी सारी घाटीको जलमग्न कर देती होगी। यह क्रम तो चलता ही रहेगा। तब 'तत्र का परिदेवना'?

जोगके प्रपातके अिस तीसरे दर्शनके बाद हमने यहाके अितिहासका नया अध्याय खोला।

2010
पा 8, निर्दलीय

वीस साल पहले मैंने सुना था कि 'मैसूर सरकार अिस प्रपातके पानीसे विजली पैदा करना चाहती है। वम्बअी सरकार और मैसूर सरकारके वीच अिस सिलसिलेमे पत्रव्यवहार चल रहा है। अव तक ये दोनो सरकारें अेकमत नही हो पाअी, अिसलिअे विजलीकी वह योजना अमलमें नही लाअी गअी।'

अुस समय मैंने मनमें चाहा था कि अीश्वर करे ये दोनो सरकारें अेकमत न होने पायें। मेरे मनमे डर था कि विजली पैदा करके यहा कल-कारखाने चलेंगे और देशकी समृद्धि वढानेके वहाने देशकी गरीव जनता चूसी जायगी। और अिससे भी अविक अकुलाहट तो यह थी कि यत्र आने पर प्रपात टूट जायगा और प्रकृतिका यह भव्य दर्शन हमेशाके लिअे मिट जायगा। किन्तु सौभाग्यमे मेरा यह डर सच्चा नही निकला।

अिजीनियर लोगोंने प्रपातसे काफी अूपर अेक वाघ वाधकर वहा पानीके जत्थेको रोका है। अभी यह काम पूरा नही हुआ है। वाघ वाधकर जो पानी रोका गया है अुसकी चार नहरोको अेक दिशामे ले जाकर मैसूरकी ओर, प्रपातसे काफी दूर, टेकरी परसे नीचे छोड दिया गया है—प्रपातके रूपमें नही, वल्कि टेढे अुतरे हुअे महाकाय चार नलो द्वारा। पानी नलके द्वारा जहा पहुचता है वहा अिस पानीकी रफ्तारसे चलनेवाले यत्र रखकर अुनसे विजली पैदा की जाती है। अव यहा अितनी विजली पैदा होगी कि मैसूर राज्यकी भूख मिटाकर थोडी हैदरावाद राज्यको भी दी जायगी। और ववअी सरकारकी होन्नावर तालुकेकी सीमा परसे शरावती नदी गुजरती है अिसलिअे कुछ हजार किलोवाट विजली वम्वअी सरकारको भी दी जायगी। न्यायत अिस विजली पर सवसे पहला अधिकार है होन्नावर तालुकेका और कारवार जिलेका। किन्तु यह जिला औद्योगिक दृष्टिसे अभी खिला हुआ नही है। अिस कारणसे यह तय हुआ है कि विजली धारवाड जिलेको दी जाय। अिससे कारवार जिलेके लोग नाराज हुअे हैं। कारवार जिलेकी खनिज-सपत्ति और अुद्भिज्ज-सपत्ति धारवाड जिलेसे कअी गुनी अधिक है। अुसके पास समुद्र-किनारा होनेसे

अुसका व्यापार भी काफी बढ सकता है। कारवार जिलेमें काली, गगावली, अघनाशिनी और शरावती — ये चार नदिया नौकानयनके लिअे अनुकूल होनेसे अिस जिलेका अुद्योगीकरण भी बहुत आसान है। किन्तु आज यह कहकर कि अिस जिलेमे बडे अुद्योग नहीं हैं, अुसको बिजली देनेसे अिनकार किया जाता है! और अुसके पास बिजली न होनेसे वहा अुद्योग नही बढाये जा सकते, यह भी अुसे सुना दिया जाता है!! तामिल भाषाकी अेक कहावत है कि 'शादी नही होती अिसलिअे लडकीका पागलपन नही जाता, और पागलपन नही जाता अिसलिअे अुसकी शादी नही होती'। अैसी है यह स्थिति।

मै अुम्मीद रखता हू कि स्वराज्य सरकार द्वारा यह अन्याय दूर होगा और कारवार जिलेको शरावतीकी बिजली मिलेगी। अलावा अिसके, कारवारके पास अच्छळ्ळी, मागोड जैसे दूसरे भी छोटे बडे तीन चार प्रपात है। शरावतीकी बिजली मिलने पर अुसकी मददमे दूसरे प्रपातो पर भी जीन कसा जायेगा और कारवार जिलेमे बारिशकी तरह बिजलीकी भी समृद्धि होगी। जहा चार नदिया पहाडकी अूचाअीसे नीचे गिरती है वहा आज नही तो कल मनुष्य तिजारती बिजली पैदा करने ही वाला है।

मुझे सतोष हुआ केवल अिसीलिअे कि शरावतीके पानीसे बिजली तैयार करने पर भी जोगके प्रपातका प्राकृतिक स्वरूप तनिक भी खडित होनेवाला नही है। बाधके कारण चाहे जितना पानी रोकने पर भी नदीके सामान्य प्रवाहमे पानी कम नही होगा। बारिशका पानी भर देनेके बाद हमेशाका प्रवाह हमेशाकी ही तरह चलेगा। अिसमे प्रवाहकी दिशा, गति या पानीका जत्था — किसी बातमें भी कमी नही आयेगी। अुलटा, लाभ यह होगा कि गरमीके दिनोमें हजारो सालसे जो प्रपात सूख जाता था वह, किसी दिन चाहने पर बाधके खजानेमे से पानी छोडकर, चाहे जितने प्रचड और तूफानी रूपमे प्रत्यक्ष किया जा सकेगा, जिसे देखकर आकाशके गरमीके अुष्मपा देवता भी चकित हो जायेंगे।

बलिहारी है मानवी विज्ञानकी!

अप्रैल, १९४७

१५

गुर्जर-माता साबरमती

अग्रेज सरकारके खिलाफ असहयोग पुकार कर महात्माजी स्वराज्यकी तैयारी कर रहे हैं। अहमदाबादमे गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी है। स्वातन्त्र्यवादी नौजवान महाविद्यालयमे शरीक हुअे हैं। वे अपनी आकाक्षाये ओर कल्पना-विलास व्यक्त करनेके लिअे अेक मासिक पत्रिका चाहते हैं। मेरे पास आकर वे पूछते हैं, "मासिक पत्रिकाका नाम क्या रखेगे?" वह जमाना अैसा था जब चाचा (काका) को ही बुआका काम करना पडता था।

मैंने कहा, "मासिक पत्रिकाअें तो काफी प्रकाशित हो रही हैं। तुम दो-दो महीनोमें, ऋतु ऋतुमे, नये रूपसे प्रकट होनेवाली पत्रिका शुरू करो और अुसका नाम रखो 'साबरमती'।" द्विमासिककी कल्पना तो पसद आअी। किन्तु 'साबरमती' नाम किसीको न भाया। 'साबरमती' तो है हमारी हमेशाकी परिचित नदी। हम अुसमे रोज स्नान करते हैं। अुसमे क्या नावीन्य है कि हम यह नाम अपने नवचेतनवाले साहित्य-प्रवाहको दे? मैंने कहा, "साबरमतीका प्रवाह सनातन है — अिसीलिअे नित्य-नूतन है।" मिसाल देनेकी दृष्टिसे मैंने दलील पेश की, "सिंध-हैदराबादके हमारे मित्रोने अपनी कॉलेजकी पत्रिकाका 'फुलेली' नाम रखा है। 'फुलेली' सिंधुकी अेक नहर है। हमारी यह अनाविला (कीचड-रहित) साबरमती गाधीयुगकी प्रतीक बन सकती है। मेरी बात मान लो और साबरमती नाम अपना लो।"

युवकोने मेरी आज्ञाका पालन करनेके लिअे साबरमती नामको अपनाया, हालाकि वे चाहते थे अिससे कोअी अधिक जोशीला नाम।

मैंने नरहरिभाअीसे कहा — "साबरमती गुजरातकी विशेष लोक-माता है। आबूके परिसरमे जिन नदियोका अुद्गम होता है अुनमे यह ज्येष्ठ और श्रेष्ठ है। अुसका अेक गद्यस्तोत्र लिख दीजिये।" अुन्होने अुत्साहपूर्वक अेक छोटासा, सुन्दर लेख लिख दिया। विद्यार्थियोकी भावनाये जाग्रत हुअी। अिस लोकमाताके प्रति अुनमे भक्ति पैदा हुअी

देखकर मैने मौकेसे लाभ अुठाया और विद्यार्थियोंसे कहा, "मेरा सुझाया हुआ नाम तुम लोग अनिच्छासे स्वीकार करो, यह मुझे पसन्द नही है। चाहो तो मै दूसरा नाम सुझाता हू।" सबने अेक ही आवाजमे जवाब दिया, "नही, नही, हम दूसरा नाम नही चाहते। 'सावरमती' ही सबसे सुन्दर है।"

मैने कहा, "अिसमे तो कोअी सदेह ही नही है।"

* * *

मेरे नदी-पूजक हृदयने भारतकी अनेक नदियोको समय समय पर अजलिया अर्पित की है। सिंधुसे लेकर ब्रह्मपुत्रा और अिरावती तक और दक्षिणमे पिनाकिनी तथा कावेरी तक, अनेक नदियोको मैने सस्मरणाजलि दी है। किन्तु यह देखकर कि अिनमें गुजरातकी ही मुख्य नदिया रह गअी है, मेरे कअी पाठकोंने अिसका कारण पूछा और गुजरातकी लोकमाताओंके बारेमे लिखनेकी आग्रहपूर्वक सूचना की।

मैने कहा, "नदीके अुपस्थानकी प्रेरणा मैं दे चुका हू। अब गुजरातकी नदियोके बारेमे गुजरातीमे कोअी गुर्जरी-पुत्र लिखे, अिसीमे औचित्य है।"

अिसकी भी काफी राह देखी गयी और बार बार मुझे सूचना की गयी। किन्तु अन्तमे मेरी श्रद्धा सच्ची साबित हुअी और गुजरात विद्यापीठके अेक विद्यार्थी, वनस्पति-अुपासक श्री शिवशकरने गुजरातकी लोकमाताओके बारेमे लिखना शुरू किया। यह काम किसी समय अवश्य पूरा होगा। मुझे सतोष है कि साबरमतीके प्रवाह-कुटुबके बारेमें अुन्होने पर्याप्त लिखा है। अिसलिअे मुझे विस्तारपूर्वक लिखनेकी कोअी आवश्यकता नही है। किन्तु जिस नदीके किनारे मैने महात्माजीके और नव साथियोंके सपर्कमे २५–३० साल बिताये, अुस नदीको श्रद्धाजलि अर्पण करनेका कर्तव्य तो रह ही जाता था। अुसे आह्लादपूर्वक पूरा करनेके लिअे थोडासा लिखता हू।

हमारे कवि हरेक नामको सस्कृत रूप देनेका प्रयत्न तो करेंगे ही। सावरमतीका सस्कृत शब्द बनाते समय अुन्होने 'साभ्रमति' शब्द खोज

निकाला और फिर अुसका दो तरहसे पदच्छेद किया। अेक दलने बताया 'सा भ्रमति' — वह भ्रमण करती है, टेढे-मेढे मोड लेती है। दूसरेने कहा कि अिस नदीके प्रवाहके अूपरके आकाशमें अभ्र — बादल दिखाअी देते है, अिसलिअे वह अभ्रमति या 'साभ्र-मति' है। मेरा खयाल है कि यह सारा प्रयास मिथ्या है।

जिस नदीके किनारे गायोंके झुड घूमते है, चरते है और पुष्ट होते है, वह जिस प्रकार या तो गो-दा (गोदावरी) या गो-मती होती है, जिस नदीके किनारे और प्रवाहमे बहुत पत्थर होते है, वह जिस प्रकार दृषद्-वती होती है, अुसी प्रकार अनेक सरोवरोको जोडनेवाली या सारस पक्षियोंसे शोभनेवाली नदी सरस्-वती या सारस-वती कही जाती है। अिसी न्यायसे भारतकी नदियोंको बाघ-मती, हाथ-मती, अैरावती आदि अनेक नाम हमारे पूर्वजोंने दिये है। अिनमें हाथमती तो साबरमतीसे ही मिलनेवाली नदी है। हिरन या साबर जिसके किनारे बसते है, लडते है और आजादीसे विहार करते है, वह है साबर-मती। अुसका सबध 'श्वभ्र' के साथ जोड देनेकी कोअी आवश्यकता नही है।

गुजरातकी नदियोमे तीन-चार बडी नदिया आतरप्रानीय है। नर्मदा, तापी, मही — तीनो दूर दूरसे निकलकर पूर्वकी ओरसे आकर गुजरातमें घुसती है और समुद्रमे विलीन हो जाती है। साबरमती अिनसे अलग है। आरवल्ली पहाडमें जन्म पाकर तथा अनेक नदियोंको साथमे लेकर दक्षिणकी ओर बहती हुअी अतमे वह सागरसे जा मिलती है। साबरमतीके जैसी कुटुब-वत्सल नदिया हमारे देशमें भी अधिक नही है। साबरमतीको विशेष रूपसे गुर्जरी माता कह सकते है। अुसके किनारे गुजरातके आदिम निवासी सनातन कालसे बसते आये है। अुसके किनारे ब्रह्मणोंने तप किया है। राजपूतोंने कभी धर्मके लिअे, तो बहुत बार अपनी बेवकूफीसे भरी हुअी जिदके लिअे, वीर पुरुषार्थ कर दिखाया है। वैश्योंने अिसके किनारे गाव और शहर बसा-कर गुजरातकी समृद्धि बढायी है और अब आधुनिक युगका अनुकरण करके शूद्रोंने भी साबरमतीके किनारे मिलें चलाअी है।

सच पूछा जाय तो अिन नदियोंके साथ घनिष्ठ सपर्क तो पशु-पक्षियोंकी तरह आदिम निवासियोंका ही होता है। अिसलिअे सावरमतीके कुटुब-विस्तारका काव्य यदि अिकट्ठा करना हो तो पुराणोंकी ओर मुडनेके वदले आदिम निवासियोंकी लोक-कथाओ और लोक-गीतोंकी ओर हमारा ध्यान जाना चाहिये। डर यह है कि आजके सशोधक नवयुवकोमे अिस कामके लिअे अुत्साह पदा हो और आदिम निवासी गिरिजनोंके साथ मिलजुल जानेके लिअे वे समय निकाल सके, अुसके पहले ही आदिम निवासियोंकी नदी-कथाये कही लुप्त न हो जाय।

केवल नदी-भक्तिसे प्रेरित होकर आदिम निवासियोंका 'वौठा' का मेला जव तक होता है, तव तक विलकुल निराश होनेका कोअी कारण नही है। सात नदियोका पानी क्रमश अेक-दूसरेमे मिलकर जिस जगह अेकत्र होता है, अुसके काव्यका आनन्द भोगने या नहाने के लिअ जहा आदिम निवासी तथा दूसरे लोग अिकट्ठे होते है, वहा 'वौठा'मे सावरमतीके वारेमे आदि-कथाये हमे मिलनी ही चाहिये।

सावरमतीके पुराने नामोंकी खोज करते हुअे कश्यपगगा या अैसा ही दूसरा अेकाव नाम अवश्य मिल जायगा। नदीको किसी न किसी प्रकार गगाका अवतार जव तक न वनाये तव तक आर्योको सतोप नही होता। किन्तु मुझे तो सावरमतीका पुराना नाम 'चदना' सवसे अधिक आकर्षित करता है। क्योकि—जैसा मैंने सुना है—कही कही पीली मिट्टीके वीचसे वहनेके कारण वह गोरोचनका रग धारण करती है। किन्तु सावरमतीके जिस किनारे पर मैंने तीस साल विताये, वहा अुसका पानी सज्जनो और महात्माओके मनकी तरह विलकुल निर्मल है।

जहा नदीका पानी छिछला होनेसे अुस पार तक आसानीसे जाया जा सकता है, अैसे स्थानको सस्कृतमे तीर्थ कहते है। अनेक स्थानो पर प्रयत्न कर देखनेके वाद यात्री लोग तय करते है कि अमुक अमुक जगह अैसे घाट है। अत थोडा वहुत चलकर वे अैसे घाटके पास आते है, वही अिकट्ठे होते है, वैठकर विश्राति लेते है, वातचीत करते है और नदीका पानी यकायक वढ गया हो तो जव तक वह कम न हो जाय तव तक कुछ घटो या कुछ दिनो तक वहा ठहरते भी है। अिस प्रकार जहा स्वाभाविक

रूपमे लोग अिकट्ठे होते है, वहा धर्मसेवा और लोकसेवाके लिअे परम कारुणिक सत आकर वस जाते है। अिसीलिअे तीर्थ शब्दको अुसका नया अर्थ प्राप्त हुआ। मूलमे तीर्थ शब्दका अर्थ होता था केवल अैसा घाट जहासे नदीको आसानीसे पार किया जा सके। अिससे अधिक अर्थ कुछ नही। किन्तु जहा साधु-सन्त लोगोको भवनदी पार करनेकी नसीहत देते है और अुसकी कला भी सिखाते है, अुस तीर्थ स्थानको विशेष पवित्रता अपने आप प्राप्त होती है।

अहमदावादके पास सावरमतीमे रेलवे-पुलसे लेकर सरदार-पुल तक और अुससे भी अधिक दक्षिणकी ओर कअी तीर्थ है। अिनमे भी जहा चद्रभागा नदी सावरमतीसे मिलती है वहा दधीचिने तप किया था, अिसलिअे वह स्थान अधिक पवित्र माना जाता है। और आसपासके लोगोने अिहलोकको छोडकर परलोक जानेवाले यात्रियोको अग्निदाह देकर विदा करनेकी जगह भी वही पसद की है। अिससे वह स्मशान घाट भी है। स्मशानके अधिपति दूधेश्वर महादेव वहा विराजमान है और अिस महायात्राकी निगरानी करते है।

* * *

मुझे वह दिन याद है जब पूज्य गाधीजी अपने स्नेही रगूनवाले डॉ० प्राणजीवन महेता तथा रणोलीके मेरे स्नेही नाथाभाअी पटेलको साथमे लेकर आश्रमकी भूमि पसन्द करनेके लिअे निकले थे। मै भी साथ था। अुस दिनसे अिस भूमिके साथ मेरा सम्बन्ध वध गया। अिस स्थान पर पहली कुदाली मैने ही चलाअी। पहला खेमा भी मैने ही खडा किया और अुसके वाद अनेक तबू भी खडे किये। झोपडिया बनाअी, मकान बधवाये। खादीकी प्रवृत्ति, खेती और गोशालाकी प्रवृत्ति, राष्ट्रीय शाला, राष्ट्रीय त्यौहार, रास-नृत्य, लोक-सगीत तथा शास्त्रीय सगीत, 'नव-जीवन' तथा 'यग अिडिया', साहित्य-निर्माण, सत्याग्रह, मिल-मालिकोके साथका मजदूरोका झगडा और अतमे ब्रिटिश साम्राज्यको जडमूलसे अुखाड फेकनेके लिअे शुरू किया गया दाडी-कूच — अिन सब प्रवृत्तियोका अिस आश्रममे ही अुद्भव हुआ और यही वे विकसित भी हुअी। रौलेट

अेक्टके खिलाफ आन्दोलन, अुसमे से अुत्पन्न हुअे पंजाबके दंगे, जलियावाला बाग, खेडा-सत्याग्रह, बारडोलीकी लडाओी, गुजरात विद्यापीठकी स्थापना, कांग्रेसके अधिवेशन, देशके हरेक राजकीय, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक आन्दोलनका केंद्र साबरमतीका यह किनारा था। साबरमतीकी रेतमे जब सभाये होती थी तब लाख लाख लोगोंकी भीड जम जाती थी। अिस साबरमतीकी जीवनलीलाने केवल गुजरातका ही नही बल्कि सारे हिन्दुस्तानका जीवन बदल दिया। अुस समयका वायुमडल आज सारी दुनियाकी राजनीतिमे अेक नया सिलसिला शुरू कर रहा है और नये युगकी नीव डाल रहा है।

अिस साबरमतीके नीरमे हमने क्या क्या आनन्द नही मनाया है? आश्रमके कओी लडके-लडकियोको, और शिक्षकोको भी, मैंने वहा तैरने-की कला सिखाओी है। अुसकी रेतमे गीता और अुपनिषदोका चिंतन-मनन किया है। गीता-पारायणके अनेक सप्ताह चलाये है। जिस आश्रम-भूमि पर खडे करीब करीब सभी पेड हमारे हाथो ही बोये गये है।

वह रचनाकाल था ही अद्भुत। हरेक हृदयमे अेक नओी शक्तिशाली आत्मा आकर बसी थी। वह सबोंसे तरह तरहके काम ले सकी। केवल आहारके प्रयोग भी हमने वहा कम नही किये। कौटुंबिक जीवनके अनेक प्रकार आजमाये। शिक्षाका तंत्र अनेक बार बदला और अुसमे भी कओी दफा क्रांति की। और जीवनके हरेक पहलूके लिअे हम नयी नयी स्मृतियां तैयार करते गये। अिस सारे पुरुषार्थकी साक्षी साबरमती नदी है।

जब तक भारतका अितिहास दुनियाके लिअे बोध-दायक रहेगा और भारतके अितिहासमे महात्मा गांधीका स्थान कायम रहेगा, तब तक साबरमतीका नाम दुनियाकी जबान पर अवश्य रहेगा।

मओी, १९५५

१६
अभयान्वयी नर्मदा

हमारा देश हिन्दुस्तान महादेवजीकी मूर्ति है। हिन्दुस्तानके नक्शेको यदि अुल्टा पकडे, तो अुसका आकार शिवलिंगके जैसा मालूम होगा। अुत्तरका हिमालय अुसका पाया है, और दक्षिणकी ओरका कन्या-कुमारीका हिस्सा अुसका शिखर है।

गुजरातके नक्शेको जरा-सा घुमाये और पूर्वके हिस्सेको नीचेकी ओर तथा सौराष्ट्रका छोर — ओखा मंडल — अूपरकी ओर ले जाय तो यह भी शिवलिंगके जैसा ही मालूम होगा। हमारे यहां पहाडोंके जितने भी शिखर है, सब शिवलिंग ही है। कैलासके शिखरका आकार भी शिवलिंगके समान ही है।

अिन पहाडोंके जंगलोंसे जब कोअी नदी निकलती है, तब कवि लोग यह कहे बिना नहीं रहते कि 'यह तो शिवजीकी जटाओंसे गंगाजी निकली है!' चंद लोग पहाडोंसे आनेवाले पानीके प्रवाहको अप्सरा कहते है। और चंद लोग पर्वतकी अिन तमाम लडकियोंको पार्वती कहते है।

अैसी ही अप्सरा जैसी अेक नदीके बारेमें आज मुझे कुछ कहना है। महादेवके पहाडके समीप मेकल या मेखल पर्वतकी तलहटीमें अमर-कंटक नामक अेक तालाब है। वहांसे नर्मदाका अुद्गम हुआ है। जो अच्छा घास अुगाकर गौओंकी संख्यामें वृद्धि करती है, अुस नदीको गो-दा कहते है। यश देनेवालीको यशो-दा और जो अपने प्रवाह तथा तटकी सुन्दरताके द्वारा 'नर्म' याने आनंद देती है, वह है नर्म-दा। अिसके किनारे घूमते-घामते जिसको बहुत ही आनंद मिला, अैसे किसी ऋषिने अिस नदीको यह नाम दिया होगा। अुसे मेखल-कन्या या मेखला भी कहते है।

जिस प्रकार हिमालयका पहाड तिब्बत और चीनको हिन्दुस्तानसे अलग करता है, अुसी प्रकार हमारी यह नर्मदा नदी अुत्तर भारत अथवा हिन्दुस्तान और दक्षिण भारत या दक्खनके बीच आठ सौ मीलकी अेक चमकती, नाचती, दौडती सजीव रेखा खींचती है। और कहीं

अिसको कोअी मिटा न दे, अिस खयालसे भगवानने अिस नदीके अुत्तरकी ओर विंध्य तथा दक्षिणकी ओर सातपुडाके लम्बे लम्बे पहाडोंको नियुक्त किया है। अैसे समर्थ भाअियोंकी रक्षाके बीच नर्मदा दौडती कूदती अनेक प्रांतोंको पार करती हुअी भृगुकच्छ यानी भडौंचके समीप समुद्रसे जा मिलती है।

अमरकटकके पास नर्मदाका अुद्गम समुद्रकी सतहसे करीब पांच हजार फुटकी अूंचाअी पर होता है। अब आठ सौ मीलमें पांच हजार फुट अुतरना कोअी आसान काम नहीं है, अिसलिअे नर्मदा जगह जगह छोटी-बडी छलांगें मारती है। अिसी परसे हमारे कवि-पूर्वजोंने नर्मदाको दूसरा नाम दिया 'रेवा'। 'रेव्' धातुका अर्थ है कूदना।

जो नदी कदम कदम पर छलांगें मारती है, वह नौका-नयनके लिअे यानी किश्तियोंके द्वारा दूर तककी यात्रा करनेके लिअे कामकी नहीं। समुद्रसे जो जहाज आता है, वह नर्मदामें मुश्किलसे तीस-पैंतीस मील अंदर जा-आ सकता है। वर्षा ऋतुके अंतमें ज्यादासे ज्यादा पचास मील तक पहुंचता है।

जिस नदीके अुत्तरकी और दक्षिणकी ओर दो पहाड खडे हैं, अुसका पानी भला नहर खोदकर दूर तक कैसे लाया जा सकता है? अतः नर्मदा जिस प्रकार नाव खेनेके लिअे बहुत कामकी नहीं है, अुसी प्रकार खेतोंकी सिंचाअीके लिअे भी विशेष कामकी नहीं है। फिर भी अिस नदीकी सेवा दूसरी दृष्टिसे कम नहीं है। अुसके पानीमें विचरने-वाले मगर और मछलियोंकी, अुसके तट पर चरनेवाले ढोरों और किसानोंकी, और दूसरे तरह-तरहके पशुओंकी तथा अुसके आकाशमें कलरव करनेवाले पक्षियोंकी वह माता है।

भारतवासियोंने अपनी सारी भक्ति भले गंगा पर अुडेल दी हो, पर हमारे लोगोंने नर्मदाके किनारे कदम कदम पर जितने मंदिर खडे किये हैं, अुतने अन्य किसी नदीके किनारे नहीं किये होंगे।

पुराणकारोंने गंगा, यमुना, गोदावरी, कावेरी, गोमती, सरस्वती आदि नदियोंके स्नान-पानका और अुनके किनारे किये हुअे दानका माहात्म्यका वर्णन भले चाहे जितना किया हो, किन्तु अिन नदियोंकी

प्रदक्षिणा करनेकी वात किसी भक्तने नही सोची। जव कि नर्मदाके भक्तोने कवियोको ही सूझनेवाले नियम वनाकर सारी नर्मदाकी परिक्रमा या 'परिकम्मा' करनेका प्रकार चलाया है।

नर्मदाके अुद्‌गमसे प्रारभ करके दक्षिण-तट पर चलते हुअे सागर-सगम तक जाअिये, वहासे नावमे वैठकर अुत्तरके तट पर जाअिये और वहासे फिर पैदल चलते हुअे अमरकटक तक जाअिये — अेक परिक्रमा पूरी होगी। नियम वस अितना ही है कि 'परिकम्मा' के दरम्यान नदीके प्रवाहको कही भी लाघना नही चाहिये, न प्रवाहसे वहुत दूर ही जाना चाहिये। हमेशा नदीके दर्शन होने चाहिये। पानी केवल नर्मदाका ही पीना चाहिये। अपने पास धन-दौलत रखकर अैश-आराममे यात्रा नही करनी चाहिये। नर्मदाके किनारे जगलोमे वसनेवाले आदिम निवासियोके मनमे यात्रियोकी धन-दौलतके प्रति विशेष आकर्षण होता है। आपके पास यदि अधिक कपडे, वर्तन या पैसे होगे, तो वे आपको अिस वोझसे अवश्य मुक्त कर देगे।

हमारे लोगोको अैसे अकिचन और भूखे भाअियोका पुलिसके द्वारा अिलाज करनेकी वात कभी सूझी ही नही। और आदिम निवासी भाअी भी मानते आये है कि यात्रियो पर अुनका यह हक है। जगलोमे लूटे गये यात्री जव जगलसे वाहर आते है, तव दानी लोग यात्रियोको नये कपडे और सीधा देते है।

श्रद्धालु लोग सव नियमोका पालन करके — खास तौर पर ब्रह्म-चर्यका आग्रह रखकर नर्मदाकी परिक्रमा धीरे धीरे तीन सालमे पूरी करते है। चौमासेमे वे दो तीन माह कही रहकर साधु-सतोके सत्सगसे जीवनका रहस्य समझनेका आग्रह रखते है।

अैसी परिक्रमाके दो प्रकार होते है। अुनमे जो कठिन प्रकार है, अुसमे सागरके पास भी नर्मदाको लाघा नही जा सकता। अुद्‌-गमसे मुख तक जानेके वाद फिर अुसी रास्तेसे अुद्‌गम तक लौटना तथा अुत्तरके तटसे सागर तक जाना और फिर अुसी रास्तेसे अुद्‌गम तक लौटना। यह परिक्रमा अिस प्रकार दूनी होती है। अिसका नाम है जलेरी।

मौज और आरामको छोड़कर तपस्यापूर्वक अेक ही नदीका ध्यान करना, अुसके किनारेके मंदिरोंके दर्शन करना, आसपास रहनेवाले संत महात्माओंके वचनोंको श्रवण-भक्तिसे सुनना, और प्रकृतिकी सुन्दरता तथा भव्यताका सेवन करते हुअे जीवनके तीन साल बिताना कोअी मामूली प्रवृत्ति नहीं है। अिसमें कठोरता है, तपस्या है, बहादुरी है, अंतर्मुख होकर आत्म-चिंतन करनेकी और गरीबोंके साथ अेकरूप होनेकी भावना है, प्रकृतिमय बननेकी दीक्षा है, और प्रकृतिके द्वारा प्रकृतिमें विराजमान भगवानके दर्शन करनेकी साधना है।

और अिस नदीके किनारेकी समृद्धि मामूली नहीं है। असंख्य युगोंसे अुच्च कोटिके संत-महंत, वेदांती, संन्यासी और अीश्वरकी लीला देखकर गद्‌गद होनेवाले भक्त अपना अपना अितिहास अिस नदीके किनारे बोते आये हैं। अपने खानदानकी शान रखनेवाले और प्रजाकी रक्षाके लिअे जान कुरबान करनेवाले क्षत्रिय वीरोंने अपने पराक्रम अिस नदीके किनारे आजमाये हैं। अनेक राजाओंने अपनी राजधानीकी रक्षा करनेके हेतुसे नर्मदाके किनारे छोटे-बडे किले बनवाये हैं। और भगवानके अुपासकोंने धार्मिक कलाकी समृद्धिका मानो संग्रहालय तैयार करनेके लिअे जगह जगह मंदिर खडे किये हैं। हरेक मंदिर अपनी कलाके द्वारा आपके मनको खींचकर अंतमें अपने शिखरकी अुंगली अूपर दिखाकर अनंत आकाशमें प्रकट होनेवाले मेघश्यामका ध्यान करनेके लिअे प्रेरित करता है।

जिस प्रकार 'अजान' की आवाज सुनकर खुदापरस्तोंको नमाजका स्मरण होता है, अुसी प्रकार दूर दूरसे दिखाअी देनेवाली मन्दिरोंकी शिखररूपी चमकती अुंगलियां हमें स्तोत्र गानेके लिअे प्रेरित करती हैं।

और नर्मदाके किनारे शिवजी या विष्णुका, रामचंद्र या कृष्णचंद्रका, जगत्पति या जगदंबाका स्तोत्र शुरू करनेसे पहले नर्मदाष्टकसे प्रारंभ करना होता है — 'सबिंदुसिंधु सुस्खलत् तरंगभंग-रंजितम्'। अिस प्रकार जब पंचचामरके लघु-गुरु अक्षर नर्मदाके प्रवाहका अनुकरण करते हैं, तब भक्त लोग मस्तीमें आकर कहते हैं, 'हे माता! तेरे पवित्र जलका दूरसे दर्शन करके ही अिस संसारकी समस्त बाधायें दूर

हो गओ — 'गत तदैव मे भय त्वदम्बु वीक्षित यदा'। और अतमें भक्तिलीन होकर वे नमस्कार करते है — 'त्वदीय पाद-पकज नमामि देवि! नर्मदे!'।

हमे यह भूलना नही चाहिये कि जिस प्रकार नर्मदा हमारी और हमारी प्राचीन मस्कृतिकी माता ह, अुमी प्रकार वह हमारे भाओ आदिम निवासी लोगोकी भी माता है। अिन लोगोने नर्मदाके दोनो किनारो पर हजारो साल तक राज्य किया था, कओ किले भी वनवाये ये और अपनी अेक विशाल आरण्यक मस्कृति भी विकमित की थी।

मुझे हमेशा लगा हे कि हिन्दुम्तानका अितिहाम प्रातोके अनुसार या राज्योके अनुसार लिखनेके वजाय यदि नदियोके अनुमार लिखा गया होता, तो अुसमे प्रजा-जीवन प्रकृतिके माथ ओतप्रोत हो गया होता और हरेक प्रदेशका पुरुषार्थी वैभव नदीके अुद्गममे लेकर मुख तक फेला हुआ दिखाओ देता। जिस प्रकार हम सिन्धुके किनारेके घोडोको सैंधव कहते है, भीमाके किनारेका पोपण पाकर पुष्ट हुअे भीमथडीके टट्टुओकी तारीफ करते है, कृष्णाकी घाटीके गाय-बैलोको विशेप रूपसे चाहते है, अुमी प्रकार पुराने समयमे हरेक नदीके किनारे पर विकमित हुओ सस्कृति अलग अलग नामोंमे पहचानी जाती थी।

अिसमे भी नर्मदा नदी भारतीय सस्कृतिके दो मुख्य विभागोकी सीमारेखा मानी जाती थी। रेवाके अुत्तरकी ओरकी पचगौडोकी विचार-प्रधान सस्कृति और रेवाके दक्षिणकी ओरकी द्रविडोकी आचार-प्रधान सस्कृति मुख्य मानी जाती थी। विक्रम मवत्‌का काल-मान और शालिवाहन शकका काल-मान, दोनो नर्मदाके किनारे मुनाओ देते है और वदलते है।

मैने कहा तो सही कि नर्मदा अुत्तर भारत तथा दक्षिण भारतके वीच अेक रेखा खीचनेका काम करती है, किन्तु अुसके माथ मुकावला करनेवाली दूसरी भी अेक नदी है। नर्मदाने मध्य हिन्दुम्तानसे पश्चिम किनारे तक सीमा-रेखा खीची है। गोदावरीने यो मानकर कि यह ठीक नही हुआ, पश्चिमके पहाड सह्याद्रिसे लेकर पूर्व-सागर तक अपनी अेक तिरछी रेखा खीची है। अत अुत्तरकी ओरके ब्राह्मण नर्मदा तटते

समय कहेंगे — "रेवाया अुत्तरे तीरे," और पैठणके अभिमानी हम दक्षिणके ब्राह्मण कहेंगे — "गोदावर्या दक्षिणे तीरे।" जिस नदीके किनारे शालिवाहन या शातवाहन राजाओंने मिट्टीमें से मानव बनाकर अुनकी फौजके द्वारा यवनोंको परास्त किया, अुस गोदावरीको संकल्पमें स्थान न मिले, यह भला कैसे हो सकता है?

* * *

नर्मदा नदीकी 'परिकम्मा' तो मैंने नहीं की है। अमरकंटक तक जाकर अुसके अुद्गमके दर्शन करनेका मेरा संकल्प बहुत पुराना है। पिछले वर्ष विन्ध्यप्रदेशकी राजधानी रीवा तक हम गये भी थे। किन्तु अमरकंटक नहीं जा सके। नर्मदाके दर्शन तो जगह जगह किये हैं। किन्तु अुसके विशेष काव्यका अनुभव किया जबलपुरके पास भेडाघाटमें।

भेडाघाटमें नावमें बैठकर संगमरमरकी नीली-पीली शिलाओंके बीचमें जब हम जलविहार करते हैं, तब यही मालूम होता है मानो योगविद्यामें प्रवेश करके मानव-चित्तके गूढ रहस्योंको हम खोल रहे हैं। अिसमें भी जब हम बंदरकूदके पास पहुंचते हैं, और पुराने सरदार यहां घोडोंको अिशारा करके अुस पार तक कूद जाते थे आदि बातें सुनते हैं, तब मानो मध्यकालका अितिहास फिरसे सजीव हो अुठता है।

अिस गूढ स्थानके अिस माहात्म्यको पहचानकर ही किसी योग-विद्याके अुपासकने समीपकी टेकरी पर चौंसठ योगिनियोंका मंदिर बनवाया होगा और अुनके चक्रके बीच नदी पर विराजित शिव-पार्वतीकी स्थापना की होगी। अिन योगिनियोंकी मूर्तियां देखकर भारतीय स्थापत्यके सामने मस्तक नत हो जाता है और अैसी मूर्तियोंको खंडित करनेवालोंकी धर्मांधताके प्रति ग्लानि पैदा होती है। मगर हमें तो खंडित मूर्तियोंको देखनेकी आदत सदियोंसे पडी हुअी है!!

* * *

धुवांधार प्रकृतिका अेक स्वतंत्र काव्य है। पानीको यदि जीवन कहें तो अधःपातके कारण खंड खंड होनेके बाद भी जो अनायास पूर्वरूप धारण करता है और शांतिके साथ आगे बहता है, वह सचमुच

जीवनतम कहा जायगा। चौमासेमे जब सारा प्रदेश जलमग्न हो जाता है, तब वहा न तो होती है 'धार' और न होता है अुसमे से निकलनेवाला ठडी भापके जैसा 'धुवा'। चौमासेके बाद ही धुवाधारकी मस्ती देख लीजिये। प्रपातकी ओर टकटकी लगाकर ध्यान करना मुझे पसन्द नही है, क्योकि प्रपात अेक नशीली वस्तु है। अिस प्रपातमे जब धोबीघाट परके साबुनके पानीके जैसी आकृतिया दिखाअी देती है और आसपास ठडी भापके बादल खेल खेलते है, तब जितना देखते है अुतनी चित्तवृत्ति अस्वस्थ होती जाती है। यह दृश्य मन भरकर देखनेके बाद वापस लौटते समय लगता है, मानो जीवनके किसी कठिन प्रसगमे से हम बाहर आये है और अितने अनुभवके बाद पहलेके जैसे नही रहे है।

*　　　*　　　*

अिटारसी-होशगाबादके समीपकी नर्मदा बिलकुल अलग ही प्रकारकी है। वहाके पत्थर जमीनमे तिरछे गडे हुअे है। किस भूकपके कारण अिन पत्थरोके स्तर असे विषम हो गये है, कोअी नही बता सकता। नर्मदाके किनारे भगवानकी आकृति धारण करके बैठे हुअे पाषाण भी अिस विषयमे कुछ नही बता सकते।

और वही नर्मदा जब शिरोवेष्टनके साफेके समान लबे किन्तु कम चौडे भडौचके किनारेको धो डालती है और अकलेश्वरके खलासियोको खेलाती है, तब वह बिलकुल निराली ही मालूम होती है।

*　　　*　　　*

कबीरवडके पास अपनी गोदमे अेक टापूकी परवरिश करनेका आनद जिसे अेक बार मिला, वह सागर-सगमके समय भी अिसी तरहके अेक या अनेक टापू-बच्चोकी परवरिश करे, तो अिसमे आश्चर्य ही क्या है?

कबीरवड हिन्दुस्तानके अनेक आश्चर्योमे से अेक है। लाखो लोग जिसकी छायामे बैठ सकते है और बडी बडी फौजे जिसकी छायामे पडाव डाल सकती है, असा अेक वट-वृक्ष नर्मदाके प्रवाहके बीचोबीच अेक टापूमे पुराण पुरुषकी तरह अनतकालकी प्रतीक्षा कर रहा है। जब बाढ आती है, तब अुसमे टापूका अेकाध हिस्सा बह जाता है, और अुसके साथ

अिस वट-वृक्षकी अनेक शाखायें तथा अुन परसे लटकनेवाली जड़ें भी वह जाती हैं। अब तक कबीरवटके अैसे नटवारे कितनी बार हुअे, अितिहासके पास अिनकी नोंध नहीं है। नदी बहती जाती है, और वडकी नअी नअी पत्तियां फूटती जाती हैं! सनातन काल वृद्ध भी है और बालक भी है। वह त्रिकालज्ञानी भी है और विस्मरणशील भी है।

अिस काल-भगवानका और कालातीत परमात्माका अखंड ध्यान करनेवाले ऋषि-मुनि और संत-महात्मा जिसके किनारे युग-युगमें बसते आये हैं, वह आर्य अनार्य सबकी माता नर्मदा भूत-भविष्य-वर्तमानके मानवोंका कल्याण करे। जय नर्मदा, तेरी जय हो!

अगस्त, १९५५

१७

सध्यारस

गौरीशंकर* तालावका दर्शन यकायक होता है। हमने बगीचेमें जाकर पेड़ोंकी शोभा देख ली, चीनी तश्तरीके टुकड़ोंसे बनाये हुअे निर्जीव हाथी, घोड़े और शेरोंका रुआब देखकर तथा पेड़ोंके बीच मौज करनेवाले सजीव पक्षियोंका कलरव सुनकर तालावके किनारे पहुंचे, सीढ़ियां चढ़ने लगे, और ठंडे पवनकी शांति अनुभव करने लगे, तो भी खयाल नहीं हुआ कि यहां पर तालाव होगा। आखिरी (यानी अूपरकी) सीढ़ी पर पांव रखा कि यकायक मानो आकाशको चीरकर कोअी अप्सरा प्रकट हुअी हो, अिस प्रकार सरोवरका नीर हमारे सामने सस्मित वदनसे देखने लगता है। आप भले अकेले ही सरोवरका दर्शन करने आये, परन्तु आप वहां अकेले नहीं रहेंगे। आप देखेंगे कि आकाशके बादल और सबसे जल्दी दौड़कर आयी हुअी संध्या-तारिकायें भी आपके साथ ही सरोवरकी शोभाको निहार रही हैं।

* सौराष्ट्रमें भावनगरका बोर तालाव।

सरोवर तो हमेशा नीची सतह पर होते है। पहाडसे अुतरकर नीचे आते है तभी हम सरोवरके जलमें पावोंका प्रक्षालन कर पाते है। किन्तु यह तो मानो गवर्व सरोवर है, मानो वादल पिघलकर टेकरीके सिर पर छलक रहे है!

अुस पारका किनारा दिखाअी दे अैसा सरोवर भला किसे पसन्द आयेगा? अितना सारा पानी कहासे आता है, अैसी अतृप्त जिज्ञासा जिसके साथ न हो, अुसके सौंदर्यमे दैवी गूढ भाव कैसे हो सकता है? रेल्वे लाअिन भी विलकुल सीधी हो तो हमें पसन्द नही आती। चढाव हो, अुतार हो, दाअी या वाअी ओर मोड हो, तभी वह फवती है। सरोवर कोअी प्रपात नही है कि वह अूचे-नीचेकी क्रीडा दिखाये। गौरीशकर चारो ओर टेकरियोंसे घिरा हुआ है। किन्तु ये टेकरिया मौतकी परवाह न करनेवाले वीरोकी भाति भीड करके खडी नही है। जिसलिअे पानीको अिधर-अुधर सभी जगह फैलनेके लिअे अवकाश मिला है।

सरोवरके वाध परसे पश्चिमकी ओर देखने पर पानीमे भाति-भातिके रग फैले हुअे दिखाअी देते है, मानो किसी अद्भुत अुपन्यासमे नवो रस गूथे गये हो। पावके नीचे आत्महत्याका गहरा हरा रग मानो हर क्षण हमे अदर वुलाता है। अिसमे भी सभी जगह समानता नही है। कही मेहदीकी पत्तियोकी तरह गाढा, तो कही नीमकी पत्तियोकी तरह गहरा। काफी देखनेके वाद लगता है कि यह पानीका रग नही है, वल्कि पानीमे छिपा हुआ स्वतत्र जहर है। कुछ आगे देखने पर वादामी रग दीख पडता है, मानो निराशामे से आशा प्रकट होती हो। रग तो है वादामी, किन्तु अुसमे धातुकी चमक है। आगे जाकर वही रग कुछ रूपातर पाकर नारगी रगके द्वारा सध्याका अुपस्थान करता हुआ दिखाअी देता है। वादलोकी जामुनी छाया वीचमे यदि न आअी होती तो पता नही अिस ओरके नारगी और अुस ओरके सुनहरे रगके वीच कैसी शोभा प्रकट होती!

हमारा ध्यान सुनहरे रगकी ओर जाता है अुसके पहले ही मद-मद वहता हुआ पवन जलपृष्ठ पर वीचिमाला अुत्पन्न करके हमसे कहता है, 'सुनिये, यह समयोचित स्तोत्र!' सामनेकी टेकरीने सिर अूचा न किया

होता तो यह रसवती पृथ्वी कहा पूरी होती है और नि शब्द आकाश कहा शुरू होता हे, यह जानना किसी पडितके लिअे भी कठिन हो जाता।

बाअी ओर काट-छाट की हुअी मेहदीकी बाड हे। सुघड बाड किसे पसद न होगी? किन्तु शृगार-साधिका मेहदीका शिरच्छेद मुझे असह्य मालूम हुआ। दाहिनी ओर ठडे पडे हुअे किन्तु गाढ न हुअे सूर्यके तेजके समान सरोवर और बाअी ओर नीचे घनी-छिछरी झाडी! अैसे परस्पर भिन्न रसोके नीचमे जनककी तरह योगयुक्त चित्तसे हम आगे बढे। वहा मिला अेक निराधार सेतु। सस्कृत कवियोने अुसे देखा होता तो वे अुसका नाम शिक्य-सेतु ही रखते। अैसे सेतुओकी खोज पहले-पहल हिमालयके वनेचरोने ही की होगी। यह निराधार पुल हमे धीरे धीरे ले जाता हे पानीके बीच तप करनेवाले ऋषि-जैसे अेक द्वीपके जटाभारमे। पुलके बीचोबीच पहुचने पर आतिथ्यशील जल चेतावनी देता हे 'सावधानीसे चलिये, सावधानीसे चलिये।' और योग्य अवसर मिलने पर पादप्रक्षालन करनेमे भी नही चूकता।

और वह द्वीप? वह तो नीरव शातिकी मूर्ति है। पानीमे चाद अितना खिलखिलाकर हसता है, फिर भी अुसकी प्रतिध्वनि कही सुनाअी नही देती। मानो प्रकृतिको डर मालूम होता है कि कही ध्यानी मुनिकी शातिमे खलल न पडे। अिस बेटमे न तो साप है, न गिरगिट। पक्षी हो तो वे अब अपने घोसलोमे निश्चित सो गये है। आतिथेय मडपके नीचे हम विराजमान हुअे। अब तो पानीके अूपर अज्ञात या गूढ अधकारकी छाया फैलने लगी थी। अष्टमीकी चादनी सीधी पानीमे अुतर रही थी। सिर्फ जातिवैरी सुर-असुरोके गुरु दीर्घ विग्रहसे अूबकर पश्चिमकी ओर चमक रहे थे, मानो समझौता करनेके लिअे अिकट्ठे हुअे हो। प्रकाश और अधकारकी सधि करनेका प्रयत्न सध्याने अनेक बार किया है। अिसमे यदि वह कभी कामयाब हो सके तो ही सुर-असुरोके बीच हमेशाके लिअे समाधान हो सकेगा। देखिये, दोनोके गुरु अपनी दिशाको बदलकर अपनी स्वभावोचित गतिसे जा रहे है और सध्याकी रक्त कालिमा दोनोको किसी

पक्षपातके विना घेर रही है। जो हमेशा विग्रह ही चलाता है, अुनका अस्त तो होने ही वाला है।

अव पानीने अपना रग वदला। अव तक पानीके पृष्ठ पर चादीके वनाये हुअे रास्तोंके समान जो पटे विना कारण दिखाअी देते थे वे अव दिखने वद हुअे। खेल काफी हो चुका है, अव गभीरताके साथ सोचना चाहिये, अैसा कुछ विचार आनेसे पानीकी मुखमुद्रा अतर्मुख हो गअी। टेकरिया अैसी दिखाअी देने लगी, मानो प्रेतलोकके वासनादेह विचरते हो। विस्तीर्ण शाति भी कितनी वेचैन कर सकती है, अिस वातका खयाल यहा पूरा-पूरा हो आता है। सव टेकरिया मानो हमारी अेक आवाज सुननेकी ही राह देख रही है। अिसमें कोअी सदेह नही रहता कि जरासी आवाज देने पर वे 'हा, हा! अभी आअी, अभी आअी।' कह कर दौडती हुअी आयेगी। किन्तु अुन्हे वुलानेकी हिम्मत ही कैसे हो? क्या वे टेकरिया मध्यरात्रिके समय, कोअी न देख रहा हो तव, कपडे अुतारकर सरोवरमे नहानेके लिअे अुतरती होगी? आज तो वे नही अुतरेगी, क्योकि दुर्विनीत चन्द्रमा मध्यरात्रि तक सरोवरमे टकटकी वाधकर देखता रहेगा। और मध्यरात्रिके पहले ही शिशिरकी ठडका साम्राज्य शुरू होनेवाला है। फिर पता नही, अुषःकालके पहले माघस्नान करनेकी अिच्छा अिन्हे होगी या नही। अैसे किसी पुण्यसचयके विना टेकरियोको भी अितनी स्थिरता कैसे प्राप्त हुअी होगी?

कोअी पुल परसे निकला। पानीमे अुससे खलवली मचती है, और अुसमे से निकलनेवाली लहरोके वर्तुल दूर दूर तक दौडते है। लोग अपने अपने गावोमे रहते है फिर भी जिस तरह खवरे अुनके द्वारा दूर दूरकी यात्रा करती है, अुसी तरह पुलके पास जो क्षोभ शुरू हुआ वह किनारे तक पहुचने ही वाला है। शरीरमे अेक जगह चोट लगनेसे जैसे सारे शरीरको अुसका पता चल जाता है, वैसी पानीकी भी वात है। पानीकी शातिमे यदि भग हो तो अुसके परिणामस्वरूप अुसके अुदरमे प्रतिविवित हुआ सारा ब्रह्माड डोलने लगता है।

अब सितारोंका राम शुरू हुआ। पानीमें अुनका अनुकरण चलता दीख पडता है। किन्तु भूलोकका ताल तो अलग ही है।

फरवरी, १९२७

१८

रेणुका का शाप

रेणुका का मतलब है रेत। अुसके शापसे कौनसी नदी सूख न जायगी? गयाकी नदी फल्गु भी अिस तरह अंतःस्रोता हो गअी है न! फिर वढवाणके पासकी भोगावो भी अैसी क्यों न हो? सौराष्ट्रमें भोगावो (बरसातके बाद सूखनेवाली नदियां) बहुत हैं। क्या हरेकको किसी न किसी राणकदेवीका शाप लगा होगा? शेत्रुंजी, भादर, मच्छु, आजी, रगमती, मेगळ — चारों दिशाओंमें बहनेवाली अिन नदियोंमें कितनी नदियां अैसी हैं, जिनमें बारह मास पानी बहता हो? समस्त भारतवर्षसे सौराष्ट्र-काठियावाड अनेक प्रकारसे अलग मालूम होता है। अुसका आकार भी कितना है! चोटीला या बरडा, शेत्रुंजा या गिरनार पर्वत भला पानी देगा भी तो कितना देगा? और अुनकी लडकियां भी खींच-खींचकर आखिर कितना पानी लायेंगी? नीलगिरि और सह्याद्रि, सातपुडा और विन्ध्याद्रि, हिंदूकुश और हिमालय, नागा, खासी और ब्रह्मी योमा जैसे समर्थ पर्वतराजोंको ही बादलोंका मुख्य करभार मिलता है। अुनकी लडकियां गौरवसे कैसी अलमस्त होकर चलती हैं! अुनके मुकाबलेमें बेचारी काठियावाडी नदियां क्या हैं? पानी बरसा कि बहने लगी। बरसात बन्द हुआ कि असमंजसमें पडकर सूख गअी।

हरेक नदीने अेक-दो अेक-दो शहरोंको आश्रय दिया है। भोगावोके कारण वढवाण (अब सुरेन्द्रनगर) की शोभा है। राणकदेवीका शाप अगर न लगा होता तो अिस नदीका मुख कितना अुज्ज्वल मालूम होता! अंत्यजोंका शाप लेकर आगेके लोग भविष्यमें अुसकी क्या दशा करनेवाले

पा 8, निर्दलीय 1

है? शेत्रुजीकी वक्रता देखनी हो तो अुनके वीर(भाअी)के शिखर परसे देख लीजिये। कुदनके समान पीली घास अुगी हुअी है, दूर दूर तक गालीचोंके समान खेत फैले हुअे हैं और नीचमें से शेत्रुजी धीमे धीमे अपना रास्ता काटती जा रही है। शेत्रुजीकी यह चाल सम्कारी और चित्ताकर्षक है।

और मेगळका नाम मेगळ (=मयगळ?) क्यों पडा होगा? क्या देवघरामें मगरने किसी हाथीको पकड रखा होगा असलिअे? या समुद्र और अुसके नीच आनेवाले अूचे सिकता-पट पर वह सिर पटकती है अिस-लिअे? समुद्रमें मिलनेका हक तो हरेक नदीको है ही। किन्तु बेचारी मेगळके भाग्यमें सालमें आठ महीनों तक नटिनाकी तरह अपने पतिके दूरसे ही दर्शन करना बदा है। वर्षा ऋतुमें जब समुद्रसे भी रहा नहीं जाता तभी अिन दोनोंका सगम होता है। चोरवाडके लोगोंको अिस सगम पर ही स्मशान बनानेकी क्या सूझी होगी? या कैसे कह सकते हैं कि अिसमें भी औचित्य नहीं है? स्मशान भी तो अिहलोक और परलोकका सगम ही है न!

भादर ही अेक अैसी नदी है, जिसके लिअे काठियावाड गर्व कर सकता है। भादरका असली नाम क्या होगा? भाद्रपदी या भद्रावती? बहादुर तो हरगिज नहीं होगा। अिस नदीकी प्रतिष्ठा बहुत है। जेतपुर, नवागढ और नवीबदर जैसे स्थान अुसके तट पर खडे हैं। नवीबदर जब बसा होगा तब अुसको 'नवी' (=नयी) नाम देनेवाले पुरुषोंके दिलमें कितनी आकाक्षा, कितना अुत्साह होगा! पोरबदरसे भी यह श्रेष्ठ होगा, बडे बडे जहाज दूर दूरके देशोंका माल देशके अदर पहुचायेंगे! दैव यदि अनुकूल होता तो क्या भादर टेम्स नदीकी प्रतिष्ठा न पाती? किन्तु नदीकी प्रतिष्ठा तो अुसके पुत्रोंके पुरुषार्थ पर निर्भर है। आज भादरको हिन्दुस्तानकी पश्चिम-वाहिनी नदियोंका नेतृत्व मिला है यही काफी है।

रगमती, आजी और मच्छु नदिया चाहे जितनी परोपकारी हों और नवानगर, राजकोट और मोरबीके वैभवको वे भले अखड रूपमें निहारती हों, फिर भी अुन्हें सागरको छोडकर छोटे अखातको ही ब्याहना पडा है।

काठियावाडकी जिन सब नदियोंने देशी रियासतोंकी करतूतोंको तथा प्रपंचोंको पुराने जमानेमें देखा होगा। मगर काठियावाडके भिन्न भिन्न विभागोंके विशिष्ट रीति-रिवाजोंका दर्शन यदि वे हमें करा दें तो वह कथा रोचक जरूर होगी।

सौराष्ट्रकी नदियोंका पानी पीनेवाले किसी पुत्रका यह काम है कि वह अिन नदियोंके मुंहसे अुनका अपना अपना अनुभव सुनवावे।

१९२६–२७

१९

अंबा-अंबिका

भीष्म-पितामह अंबा-अंबिका नामक दो राजकन्याओंको जीतकर राजा विचित्रवीर्यके पास ले आये। कन्याओंने साफ-साफ कह दिया, 'हमारा मन दूसरी जगह बैठा हुआ है।' विचित्रवीर्य अब अिनसे विवाह कैसे करे? और जिसमें अिनका मन चिपका था वह राजा भी जीती हुअी कन्याओंका स्वीकार किस प्रकार करे? बेचारी राजकन्याओंको कोअी पति नहीं मिला और वे झूर झूर कर मर गअीं।

गरमीके दिनोंमें आबूके पहाड परसे सरस्वती और बनास नदियोंके दर्शन किये थे। वे बेचारी समुद्र तक पहुंच ही न पाअीं। बीचमें कच्छके रेगिस्तानमें ही झूर झूर कर लुप्त हो गअी हैं। अंबा-अंबिकाकी तरह कौमार्य, सौभाग्य और वैधव्यमें से अेक भी स्थिति अिनके लिअे नहीं रही। गुजरात और राजपूतानाके अितिहासमें अिन नदियोंका कितना भी महत्त्व क्यों न हो, राजा कर्णके दो आंसुओंके अलावा हम अुन्हें क्या दे सकते हैं?

१९२६–'२७

२०

लावण्यफला लूनी

खारची (मारवाड जक्शन) से सिंघ हैदरावाद जाते हुअे लूनी नदीका दर्शन अनेक वार किया है। अूटोंके स्वदेश जोधपुर जानेका रास्ता लूनी जक्शनसे ही है, अिसलिअे भी अिस नदीका नाम स्मृतिपट पर अकित है। यहाके स्टेशन पर हिरणके अच्छे-अच्छे चमडे मस्तेमे मिलते थे। अैसे मुलायम मृगाजिन यहासे खरीदकर मैंने अपने कअी गुरुजनोको और प्रियजनोको ध्यानासनके तौर पर भेंट दिये थे। पता नही कि चमडेके अिस अुपयोगसे हिरणोको अुनके ध्यानका कुछ पुण्य मिला या नही।

लूनीका नाम सुनते ही हृदय पर विषाद छा जाता है। यो तो सव-की-सव नदिया अपना मीठा जल लेकर खारे समुद्रसे मिलती है। और अिसी तरह अपने पानीको सडनेसे वचाती है। लेकिन सागरका सगम होने तक नदीका पानी मीठा रहे यही अच्छा है। वेचारी लूनीका न सागरसे सगम होता है, और न आखिर तक अुसका पानी मीठा ही रहता है।

अगर यह नदी साभर सरोवरसे निकली होती तो अुसका खारापन हम माफ कर देते। लेकिन अुसका अुद्गम है अजमेरके पास अरवली, आरावली या आडावलीकी पहाडियोंसे। वहा भी अुसे सागरमती कहते है। वह गोविन्दगढ तक पहुच गअी तो वहा पुष्कर सरोवरके पवित्र जल लाकर सरस्वती नदी अुससे मिलती है।

लूनीका असली नाम था लवणवारि। अुसका अपभ्रश हो गया लोणवारी, और आज लोग अुसे कहते है लूनी। अजमेरसे लेकर आवू तक जो आरवलीकी पर्वत श्रेणी फैली हुअी है, अुसका पश्चिमका सारा पानी छोटे-वडे स्रोतोके द्वारा लूनीको मिलता है। अिस पानीके वदौलत जोधपुर राज्यका आधा भाग अपनी द्विदल धान्यकी खेती करता

है। सिंघाडेकी अुपज भी यहा कम नही है। जहा-जहा लूनीकी बाढ पहुचती हे, वहा किसान अुसे आशीर्वाद ही देते है।

जब लूनी बालोतरा पहुचती है तब अुसका भाग्य — सौभाग्य नही किन्तु दुर्भाग्य, अुस पर सवार होता है। जहा जमीन ही खारी है वहा बेचारी नदी क्या करे?

जोधपुरके राजा जसवतसिंहको सद्‌बुद्धि सूझी। अुनने लूनी नदीका पानी खारा होनेके पहले ही, बिलाडाके पास अेक बडा बाध बाध दिया और बाअीस वर्गमीलका अेक बडा विशाल, मनुष्य-कृत सरोवर बना दिया। तेरह हजार वर्गमीलका पानी अिस सरोवरमे अिकट्ठा होता है। अिसकी गहराअी अधिक-से-अधिक चालीस फुटकी है। अिस सरोवरका नाम 'जसवत-सागर' रखा सो तो ठीक ही है, क्योकि राजाने अुसे बनाया। अगर किसानोसे पूछा जाता तो वे अुसे 'लूनी-प्रसाद' कहते।

अपनी दो सौ मीलकी यात्राके अन्तमे यह नदी कच्छके रणमें अपने भाग्यको कोसते-कोसते लुप्त हो जाती है। अिसके तीनो मुख नमकसे अितने भरे हुए रहते है कि समुद्र भी अिसके पानीका आचमन करनेमे सकोच करता है।

अब देखना है कि लूनी, सरस्वती, बनास और अैसी ही दूसरी नदिया जिस श्रद्धासे अपना जल कच्छके रणमे छोड देती है, अुस श्रद्धाका फल अुन्हे कब मिलता है और रणका परिवर्तन अुपजाअू भूमिमे कब हो जाता है। आज लूनी नदी करीब-करीब पाकिस्तानकी सरहद तक पहुच जाती है और कच्छके रणको दिन-पर-दिन अधिक खारा करती जाती है! अैसी लवण-प्रधान, लवण-समृद्ध नदीको अगर हम 'लावण्यवती' कहे तो वैयाकरण अुस नामको जरूर मान्य करेगे।

काव्यरसिक क्या कहेगे अिसका पता नही।

१९५७

२१

अुंचळ्ळीका प्रपात

जोगके विलकुल ही मूखे प्रपातके अिस वारके दर्शनका गम हलका करनेके लिअे दूसरा अेकाध भव्य और प्रसन्न दृश्य देखनेकी आवश्यकता थी ही। कारवार जिलेके सर्वसग्रह—गॅजेटियर—के पन्ने अुलटते अुलटते पता चला कि जोगसे थोडा ही घटिया अुचळ्ळी नामक अेक सुन्दर प्रपात शिरसीसे वहुत दूर नही हे। लशिग्टन नामक अेक अग्रेजने सन् १८४५ में अिसकी खोज की थी, मानो अुसके पहले किसीने अिसे देखा ही न हो! अग्रेजोकी आखो पर वह चढा कि दुनियामे अुसकी शोहरत हो गयी!

यह अुचळ्ळी कहा है? वहा किस ओरसे जाया जा सकता है? हम कैसे जायें? हमारे कार्यक्रममें वह नैठ सकता है या नही? आदि पूछताछ मैंने शुरु कर दी। श्री शकरराव गुलवाडीजीने देखा कि अव अुचळ्ळीका कार्यक्रम तय किये विना शाति या स्वास्थ्य मिलनेवाला नही है। वे खुद भी मुझसे कम अुत्साही नही थे। अुन्होने वताया कि जव विजली पैदा करनेकी दृष्टिसे कारवार जिलेके प्रपातोकी जाच—सरवे की गअी थी, तव अिंजीनियर लोगोने अुचळ्ळीके प्रपातको प्रथम स्थान पर रखा था, और गिरसप्पा यानी जोगके प्रपातको दूसरे स्थान पर, मागोडाको तीसरा और सूपाके नजदीकके प्रपातको चौथा स्थान दिया था।

समुद्रके साथ कारवार जिलेकी दोस्ती जोडनेवाली मुख्य चार नदिया है—काळी नदी, गगावळी, अघनाशिनी और शरावती। अिनमे से शरावती या वालनदी होन्नावरके पास समुद्रसे मिलती है। दस साल पहले जव हमने जोगका प्रपात दूसरी वार देखा था, तव अिस शरावती नदी पर नावमे वैठकर होन्नावरसे हम अूपरकी ओर गये थे। शरावतीका किनारा तो मानो वनश्रीका साम्राज्य है!

अवकी वार जव हम हुवलीसे अकोला और कारवार गये तव आरवेल घाटीमें से 'नागमोडी' रास्ता निकालनेवाली गगावळीको

देखा था। और अकोरामें गोकर्ण जाते समय अुनके पृष्ठभाग पर नौका-क्रीडा भी की थी। काळी नदीके दर्शन तो मैंने बचपनमें ही कारवारमें किये थे। पचास साल पहलेके ये संस्मरण दस साल पहले ताजे भी किये थे और अबकी बार भी कारवार पहुचते ही काळी नदीके दो बार दर्शन किये। किन्तु अितनेसे संतोष न होनेके कारण कारवारसे हळगा तक की दस मीलकी यात्रा — आना-जाना — नावसे की।

चौथी है अघनाशिनी। अुसका नाम ही कितना पावन है! गोकर्णके दक्षिणकी ओर तदडी बदरके पास वह टेढी-मेढी होकर खूब फैलती है। किन्तु समुद्र तक पहुचनेके लिअे अुसको जो रास्ता मिलता है वह बिलकुल छोटा है। यह अघनाशिनी जहा समुद्रमें मिलनेके लिअे अुतावली होकर सह्याद्रिके पहाड परसे नीचे कूदती है, वही स्थान अुचळ्ळीके प्रपातके नामसे पहचाना जाता है।

हमने सिद्धापुरसे शिरसीका रास्ता लिया। किन्तु शिरसी तक जानेके बदले अेक रास्ता पश्चिमकी ओर फूटता था, अुससे हम नीलकुद पहुचे। वहा श्री गोपाल माडगावकरके चाचा रहते थे। वे बडे प्रतिष्ठित जमीदार थे। अुनके आतिथ्यका स्वीकार करके हम अुचळ्ळीकी खोजमें निकल पडे। नीलकुदसे होसतोट (=नया बगीचा) जाना था। काजी 'जीप'का प्रबंध होनेसे जगलका रास्ता कैसे तय करेंगे, यह चिंता करीब करीब मिट गअी थी। होसतोटसे होन्नेकोब (=सोनेका सीग) की ओरका रास्ता हमें लेना था। किन्तु अिस रास्तेसे मोटर तो क्या, बैलगाडी या पालकी भी नही जा सकती थी। अिसे तो बाघका रास्ता कहना चाहिये। मनुष्य भी बाघके जैसा बनकर ही अैसे रास्तेसे जा सकता है। हमने अपनी जीपको अेक पेडकी छाहमें आराम करनेके लिअे छोड दिया और 'अथाऽतो प्रपात-जिज्ञासा' कहकर जगलमें रास्ता तय करना शुरू किया। होसतोटसे अेक स्थानिक नौजवान हाथमें अेक बडा 'कोयता' लेकर हमें रास्ता दिखानेके लिअे हमारे आगे चला। अिस बेचारेको धीरे चलनेकी आदत नही थी, न सृष्टि-सौंदर्य निहारनेकी लत! वह तो आगे ही आगे चलने लगा। हमें अुनका

बहुत ही कम लाभ मिला। हम कुछ आगे गये। अूपर चढे, नीचे अुतरे, फिर चढे और फिर अुतरे। अितनेमें जगल घना होने लगा। थोडे समयके बाद वह घनघोर हो गया।

So steep the path, the foot was fain,
Assistance from the hand to gain

हमारी मुख्य कठिनाअी तो पगडडीकी थी। वहा सूखे पत्ते अितने जमा हो गये थे कि पाव न फिसले तो ही गनीमत समझिये! मेहर मालिककी कि अिन पत्तोमें से सरसराता हुआ कोअी साप न निकला। वरना हमारी अुचळ्ळी वहीकी वही रह जाती। जहा सख्त अुतार होता था वहा लाठीसे पत्तोको हटाकर देखना पडता था कि कोअी मजबूत पत्थर या किसी दरख्तकी अेकाध चीमड जड है या नही।

दोपहरके बारहका समय था। किन्तु पेडोकी 'स्निग्ध-छाया'के अदर धूप आये तभी न? चलकर यदि गरम न हो गये होते तो सर्दी ही लगती। जरा आगे बढते और अेक-दूसरेसे पूछते, "हमने कितना रास्ता तय किया होगा? अब कितना बाकी होगा?" सभी अज्ञान! किन्तु सिद्धापुरसे अेक आयुर्वेदिक डॉक्टर कैमेरा लेकर हमारे साथ आये थे। ये सज्जन अेक साल पहले दूसरे किसी रास्तेसे अुचळ्ळी गये थे। अपने पुराने अनुभवके आधार पर वे रास्तेका अदाज हमें बताते थे। बीच बीचमे तो हमारा यह नाममात्रका रास्ता भी बन्द हो जाता था। आगे अदाजसे ही चलना पडता था। किन्तु सच्ची मुसीबत रास्ता बन्द हो जाने पर नही, बल्कि तब होती है जब अेक पगडडी फूटकर दो पगडडिया बन जाती है। जब सही रास्ता दिखानेवाला कोअी नही होता और अधा अदाज करनेवाले अेक साथीकी रायसे दूसरेका अधा अदाज मेल नही खाता, तब 'यद् भावि तद् भवतु' — जो होनेवाला होगा सो होगा — कहकर किस्मतके भरोसे किसी अेक पगडडीको पकड लेना पडता है।

किसीने कहा कि दूरसे प्रपातकी आवाज सुनाअी देती है। मेरे कान बहुत तीक्ष्ण नही है। अेकने तो कभीका अिस्तीफा दे दिया है और दूसरा काम भरकी ही बात सुनता है। किन्तु अपनी कल्पना-शक्तिके

बारेमें मैं अैसा नहीं कहूंगा। मैंने कान और कल्पना, दोनोंके सहारे सुननेकी कोशिश की। किन्तु जिसे प्रपातकी आवाज कहें वैसी कोओ आवाज सुनाओ न दी। कहीं मधुमक्खियां भनभनाती होतीं तो भी मैं कहता, "हां, हां, प्रपातकी आवाज सचमुच सुनाओी देती है।" कठिन यात्रामें साथियोंके साथ झट सहमत हो जानेके यात्रा-धर्ममें मेरा पूर्ण विश्वास है। किन्तु यहां मैं लाचार था।

अेक ओर यदि जंगलकी भीषण सुंदरताका मैं रसास्वादन कर रहा था, तो दूसरी ओर चि० सरोजके कितने बेहाल हो रहे होंगे अिस चितासे अुसकी ओर देखता था। जब सरोजने कहा, "जंगलकी अैसी यात्राके अंतमें अगर कोओ प्रपात देखनेको न मिले तो भी कहना होगा कि यहां आना सार्थक ही हुआ है। कैसा मजेका जंगल है! ये बड़े बड़े पेड़, अुन्हें अेक-दूसरेसे बांधनेवाली ये लतायें — सब सुन्दर है!" तब मुझे बहुत संतोष हुआ।

आगे जब रास्ता लगभग असंभव-सा मालूम हुआ, और अेक हाथमें लकड़ी तथा दूसरेसे किसीका कंधा पकड़कर अुतरना भी संदेहप्रद प्रतीत हुआ, तब भी सरोज कहने लगी "मेरा अुत्साह कम नहीं हुआ है। किन्तु दूसरोंको अड़चनमें डाल रही हूं अिस खयालसे ही हताश हो रही हूं। यह अुतार फिर चढ़ना होगा अिसका भी खयाल रखना है।"

मैंने कहा, "अेक बार अुचळ्ळीके दर्शन करनेके बाद किसी न किसी तरह वापस तो लौटना होगा ही। किन्तु हम पूरा आराम लेकर ही लौटेंगे। यहां तक तो आ ही गये हैं, और अब प्रपातकी आवाज भी सुनाओ दे रही है। अिसलिअे अब तो आगे बढ़ना ही चाहिये।"

हमारे मार्गदर्शकने नीचे जाकर आवाज दी। डॉक्टरने कहा, "शायद अुसने पानी देखा होगा।" हमारा अुत्साह बढ़ा। हम फिर अुतरे। आगे बढ़े। फिर दाहिनी ओर मुड़े और आखिर जिसके लिअे आंखें तरस रही थीं अुस प्रपातका सिर नजर आया!

अेक तंग घाटीके अिस ओर हम खड़े थे और सामने अघनाशिनीका पानी, जिसे सुबह जीपकी यात्राके दरम्यान हमने तीन-चार बार

लाधा था, यहा अेक वडे पत्थरके तिरछे पट परसे नीचे पहुचनेकी तैयारी कर रहा था। गीत जिस प्रकार तम्बूरेके तालके साथ ही सुना जाता है, अुसी प्रकार प्रपातके दर्शन भी नगारेके समान धव-धव आवाजके साथ ही किये जाते है।

अुचळ्ळीका प्रपात जोगके राजाकी तरह अेक ही छलागमे नीचे नही पहुचता है। सुवहकी पतली नीदके हरेक अशका जिस प्रकार हम अर्ध-जाग्रत स्थितिमे अनुभव लेते है, अुसी प्रकार अघनाशिनीका पानी अेक अेक सीढीसे कूदकर सफेद रगका अनेक आकारोका परदा वनाता है। अितने शुभ्र पानीमे ससारका कालेसे काला 'अघ'—पाप भी सहज ही धुल सकता है

जिस प्रकार धान पछोरने पर सूपके दाने नाचते-कूदते दाहिनी ओरके कोने पर दौडते आते है, और साथ साथ आगे भी वढते है, अुसी प्रकार यहाका पानी पहाडके पत्थर परसे अुतरते समय तिरछा भी दौडता है और फेनके वलय वनाकर नीचे भी कूदता है। पानी अेक जगह अवतीर्ण हुआ कि वह फौरन घूमकर अगरखेके घेरकी तरह या धोतीके घुमावकी तरह फैलने लगता है और अनुकूल दिशा ढूढकर फिर नीचे कूदता है।

अब तो विना यह जाने कि यह पानी अिस प्रकार कितने नखरे करनेवाला है और अतमें कहा तक पहुचनेवाला है, सतोप मिलनेवाला न था। हममे से चद लोग आगे वढे। फिर अुतरे। और भी अुतरे। पेडकी लचीली डालियोको पकडकर अुतरे। अैसा करते करते पूरे प्रपातका अखड साक्षात्कार करानेवाले अेक वडे पत्थर पर हम जा पहुचे। अुस पर खडे रहकर सामनेकी वडी अूची चट्टानसे गिरते हुअे पानीका पदक्रम देखना जीवनका अनोखा आनन्द था। हम टकटकी लगाकर पानीको देखते थे। मगर हम लोगोको देखनेके लिअे पानीके पास फुरसत न थी। वह अपनी मस्तीमे चूर था। कपूरके चूर्णमे शुभ्र रगका जो अुत्कर्ष होता है, वही अिस जीवनावतारमे था।

भगवान सूर्यनारायण माथे परसे हमे अपने आशीर्वाद देते थे। पसीनेके रेले हमारे गालो परसे चाहे जितने अुतरे, सामनेके प्रपातके आगे वे किसीका ध्यान थोडे ही खीच सकते थे! सूर्यनारायणके आशीर्वाद झेलनेकी जैसी शक्ति अुचळ्ळीके प्रपातमे थी, वैसी मुझमें न थी। पानी चमक कर सफेद रेशम या साटिनकी शोभा दिखाने लगा। A moving tapestry of white satin and silver filigree

कटकमे चादीके बारीक तार खीचकर अुसके अत्यन्त नाजुक और अत्यत मोहक फूल, गहने आदि बनाये जाते है। तारके बनाये हुअे पीपलके पत्ते, कमल, करड आदि अनेक प्रकारकी चीजे मैने अुडीसामें मन भरकर देखी है और कहा है, 'अिन गहनोने बेशक कटकका नाम सार्थक किया है।'

प्रकृतिके हाथोसे बननेवाले और क्षण-क्षणमे बदलनेवाले चादीके सुदर और सजीव गहने यहा फिरसे देखकर कटकका स्मरण हो आया। सोनेके ढक्कनसे सत्यका रूप शायद ढक जाता होगा, किन्तु चादीके सजीव तार-कामसे प्रकृतिका सत्य अद्भुत ढगसे प्रगट होता था। "अब अिस सत्यका क्या करू? किस तरह अुसे पी लू? अुसे कहा रखू? किस तरह अुठाकर ले चलू?" असी मधुर परेशानी मैं महसूस कर रहा था, अितनेमे पुरानी आदतके कारण, अनायास, कठसे अीशावास्यका मत्र जोरोसे गूजने लगा। हा, सचमुच अिस जगतको अुसके अीशसे ढकना ही चाहिये — जिस तरह सामनेका तिरछा पत्थर पानीके परदेमे ढक जाता है और वह परदा चैतन्यकी चमकमे छा जाता है। जो जो दिखाअी देता है — फिर वह चाहे चर्म-चक्षुकी दृष्टि हो या कल्पनाकी दृष्टि हो — सबको आत्मतत्त्वसे ढक देना चाहिये। तभी अलिप्त भावसे अखड जीवनका आनन्द अत तक पाया जा सकता है। मनुष्यके लिअे दूसरा कोअी रास्ता नही है।

दृष्टि नीचे गअी। वहा अेक शीतल कुड अपनी हरी नीलिमामें प्रपातका पानी झेलता था और यह जाननेके कारण कि परिग्रह अच्छा नही है, थोडी ही देरमे अेक सुदर प्रवाहमे अुस सारी जलराशिको बहा देता था। अघनाशिनी अपने टेढे-मेढे प्रवाहके द्वारा आसपासकी सारी भूमिको

पावन करनेका और मानव-जातिके टेढे-मेढे (जुहुराण) पाप (अेनम्) को धो डालनेका अपना व्रत अविरत चलाती थी। मैंने अंतमें अुनीसे प्रार्थना की

युयोधि अस्मत् जुहुराणम् अेन
भूयिष्ठा ते नम अुक्ति विधेम।

हे अघनाशिनी! हमारा टेढा-मेढा कुटिल पाप नष्ट कर दे। हम तेरे लिअे अनेको नमस्कारके वचन रचेंगे।

जून, १९४७

२२
गोकर्णकी यात्रा

लकापति रावण हिमालयमें जाकर तपश्चर्या करने बैठा। अुसकी माने अुसे भेजा था। शिवपूजक महान सम्राट् रावणकी माता क्या मामूली पत्थरके लिंगकी पूजा करे? अुसने लडकेसे कहा, "जाओ बेटा, कैलास जाकर शिवजीके पाससे अुन्हींका आत्मलिंग ले आओ। तभी मेरे यहा पूजा हो सकती है।" मातृभक्त रावण चल पडा। मानसरोवरसे हररोज अेक सहस्र कमल तोडकर वह कैलासनाथकी पूजा करने लगा। यह तपश्चर्या अेक हजार वर्ष तक चली।

अेक दिन न जाने कैसे, नौ कमल कम आये। पूजा करते करते बीचमें अुठा नहीं जा सकता था, और सहस्रकी सख्यामें अेक भी कमल कम रहे तो काम नहीं चल सकता था। अब क्या किया जाय? आशुतोष महादेवजी शीघ्रकोपी भी है। सेवामें जरा भी न्यूनता रही कि सर्वनाश ही समझ लीजिये। रावणकी बुद्धि या हिम्मत कच्ची तो थी ही नहीं। अुसने अपना अेक-अेक शिर-कमल अुतारकर चढाना शुरू कर दिया। अैसी भक्तिसे क्या प्राप्त नहीं होता? भोलानाथ प्रसन्न हुअे। कहने लगे 'वर माग, वर माग। जितना मागे अुतना कम

है।' रावणने कहा, 'मा पूजामे बैठी है। आपका आत्मलिंग चाहिये।' शब्द निकलनेकी ही देर थी। शंभुने हृदय चीरकर आत्मलिंग निकाला और रावणको दे दिया।

त्रिभुवनमे हाहाकार मच गया। देवाधिदेव महादेवजी आत्मलिंग दे बैठे। और वह भी किसको? सुरासुरोंके काल रावणको! अब तीनों लोकोका क्या होगा? ब्रह्मा दौडे विष्णुके पास। लक्ष्मी सरस्वतीसे पूछने गओ। अिन्द्र मूर्छित हुआ। आखिर विघ्ननाशक गणपतिकी सबने आराधना की और अुनसे कहा, 'चाहे सो कीजिये। किन्तु यह लिंग लंकामे न पहुचने पाये अैसा कुछ कीजिये।'

महादेवजीने रावणसे कहा था, 'लो यह लिंग। जहा जमीन पर रखोगे वही यह स्थिर हो जायगा।' महादेवजीका लिंग पारेसे भी भारी था। रावण अुसे लेकर पश्चिम समुद्रके किनारे चला जा रहा था। शाम होने आयी थी। रावणको लघुशंकाकी हाजत हुअी। शिव-लिंगको हाथमे लेकर बैठा नही जा सकता था, जमीन पर तो रखा ही कैसे जाता? रावणके मनमें यह अुधेडबुन चल ही रही थी कि अितनेमे देवताओंके संकेतके अनुसार गणेशजी चरवाहेके लडकेका रूप लेकर गौअे चराते हुअे प्रकट हुअे। रावणने कहा, 'अै लडके, यह लिंग जरा संभाल तो। जमीन पर मत रखना।'

गणेशने कहा, 'यह तो भारी है। थक जाअूगा तो तीन बार आवाज दूगा। अुतनी देरमे तुम आये तो ठीक, वरना तुम्हारी बात तुम जानो।'

हाजत तो लघुशंकाकी ही थी। अुसमे भला कितनी देर लगती? रावण बैठा। बैठा तो सही किन्तु न मालूम कैसे, आज अुसके पेटमे सात समुद्र भर गये थे! जनेअू कान पर चढाने पर तो बोला भी नही जा सकता था। सिद्धि-विनायकने अिकरारके अनुसार तीन बार रावणके नामसे आवाज दी। और अर्र्र्र्की चीख मारकर लिंग जमीन पर रख दिया, मानो वजन असह्य मालूम हुआ हो! जमीन पर रखते ही लिंग पाताल तक पहुच गया! रावण क्रोधके मारे लाल-लाल होकर आया और गणपतिकी खोपडी पर अुसने कसकर अेक घूसा मारा। गजाननका सिर खूनसे लथपथ हो गया।

बादमें रावण दौड़ा लिंग अुखाड़ने। किन्तु अब तो यह बात असंभव थी। पाताल तक पहुंचा हुआ लिंग कैसे अुखाड़ा जा सकता था? सारी पृथ्वी कांपने लगी, किन्तु लिंग बाहर नहीं आया। आखिर रावणने लिंगको पकड़कर मरोड़ डाला। अिससे अुसके चार टुकड़े हाथमें आये। निराशाके आवेशमें अुसने चारों टुकड़े चारों दिशाओंमें फेंक दिये और बेचारा खाली हाथ लंकाको वापस लौटा।

मरोड़े हुअे लिंगका मुख्य भाग जहां रहा, वही है गोकर्ण-महाबळेश्वर। सारी पृथ्वी पर अिससे अधिक पवित्र तीर्थ-स्थान नहीं है।

* * *

गोकर्ण-महाबळेश्वर कारवार और अंकोला बंदरगाहोंके बीच स्थित तदडी बंदरगाहसे करीब छ मील अुत्तरकी ओर ठीक समुद्रके किनारे पर है। दक्षिणमें अिसका माहात्म्य काशीसे भी अधिक माना जाता है। लिंग अधिकतर जमीनके अंदर ही है। अुसकी जलाधारीके बीचोंबीच अेक बड़ा सुराख है। अुसमें अंदर अंगूठा डालने पर भीतरके लिंगका स्पर्श होता है। दर्शनका तो प्रश्न ही नहीं। वहांके पुजारी कहते हैं कि लिंगकी शिला अत्यंत मुलायम है। भक्तोंके स्पर्शसे वह घिस जाती है, अिसलिअे प्राचीन लोगोंने यह प्रबंध किया है। बहुत बरसोंके बाद शुभ शकुन होने पर जलाधारी निकाली जाती है और आसपासकी चुनाअीको हटाकर मूल लिंगको दो-तीन हाथोंकी गहराअी तक खोल दिया जाता है। कुछ महीनों तक खुला रखनेके बाद मोतियोंको पीसकर बनाये हुअे चूनेसे आसपासकी चुनाअी फिरसे कर दी जाती है। यदि मैं भूलता नहीं हूं, तो अिस क्रियाको 'अष्टबंध' या अैसा ही कुछ नाम दिया जाता है।

हम कारवारमें थे तब अेक बार कपिलाषष्ठी जैसा दुर्लभ अष्टबंधका योग आया। पिताश्री, आअी (मां) और मैं — हम तीनों अिस यात्रामें गये। तदडी बंदरगाह पर मुझे अुठा लेनेके लिअे 'कुली' किया गया। अुसके कंधे पर बैठकर मैं गोकर्ण गया। कोटितीर्थमें स्नान किया। गोकर्ण-महाबळेश्वरके दर्शन किये। स्मशानभूमि और अुसकी रखवाली करनेवाले हरिश्चंद्रका दर्शन किया। हड्डियां डालने पर जिसमें

गल जाती है वैसे पानीका जेक तीथ देखा। अहल्याबाओीके अतनश्रमे अुस माध्वीकी मूर्ति देखी। सिरमे चोटके निशानवाले और दो हाथोवाले चरवाहे गजाननके दर्शन किये। ब्रह्माकी अेक मूर्ति देखी। और सबसे बडी बात तो यह थी कि रावणकी अुस मशहूर लनुशकाका कुड भी देखा। आज भी वह भरा हुआ है और अुसमे नदन् आती है। और भी बहुत कुछ देखा होगा, किन्तु वह आज याद नही है।

हा, अिस प्रदेशकी अेक खासियत बताना तो मै भूल ही गया। घर चाहे गरीबका हो या अमीरका, फर्श तो गारेकी ही होगी, किन्तु वह काले सगमरमरके पत्थरके समान सख्त और चमकनेवाली होती है। सच-मुच अुसमे मुह दिखाओी देता है। गरमीके दिनोमे दोपहरके समय आदमी बगैर कुछ बिछाये गारेके अुस पलस्तर पर आरामसे सो सकता है। समय समय पर यह जमीन गोबर और काजल मिलाकर अुससे लीपी जाती है। किन्तु हाथमे नही लीपा जाता। सुपारीके पेड पर अेक तरहकी छाल तैयार होती है। अुससे फर्शको घिस-घिसकर चमकीला बनाया जाता है। अिस छालको वहाकी भाषामें 'पोवली' कहते है।

गोकर्णसे वापस लौटते समय तदडी तक समुद्री रास्तेमे बाफर यानी स्टीमलोचमे जानेका विचार था। मौसमी तूफान शुरू होनेको बहुत ही थोडे दिन बाकी थे। आठ दिनके बाद आगबोटे भी बद होनेवाली थी। अिसलिअे वापस लौटनेवाले यात्रियोकी भीडका पार नही था। तदडी बदरसे चढनेवाले यात्रियोको स्टीमरमें जगह मिलेगी या नही, अिस बातका सदेह था। अिसीलिअे हमने स्टीमलोचमें बैठकर स्टीमर तक जल्दी पहुचना पसद किया था।

गोकर्णका बदर बधा हुआ नही था। किनारेमे मेरी छाती बराबर पानी तक तो चलकर जाना पडता था। वहासे नावमे बैठकर स्टीम-लोच तक जाना पडता था। नौजवान लोग नाव तक चलकर जाते,-किन्तु औरते तथा बच्चे तो कुलियोके कधे पर चढकर या दो कुलियोके हाथोकी पालकीमे बैठकर जाते।

शुरूमे ही अेक अपशकुन हुआ। अेक गरीब बुढिया शरीरसे कुछ स्थूल थी। किन्तु किराये पर दो कुली करने जितने पैसे अुसके

पाम न थे। अुसने अेक लोभी कुलीको कुछ अधिक मजदूरी देनेका लालच देकर अपनेको कन्धे पर अुठा ले जानेके लिअे राजी किया। वह था दुवला-पतला। वह किनारे पर वैठ गया। विधवा वुढिया अुमके कन्धे पर सवार हुअी। किन्तु ज्यो ही कुली अुठने गया, त्यो ही दोनों धम्मसे गिर पडे। अितनेमे अेक नटखट लहरने दौडते आकर दोनोंको कृतार्थ कर दिया!

यह वोट लगभग आखिरी होनेसे गोकर्णमे भी चढनेवाले यात्री वहुत थे। वे सवके सव स्टीमलोचमे कैसे समाते? अिसलिअे सौ आदमी वैठ सके अितना वडा अेक पडाव (यानी नाव) स्टीमलोचके पीछे वाध दिया गया। और अुसके पीछे कस्टम्स विभागके अेक अफसरकी सफेद नाव वाध दी गअी। मैने देखा कि खानगी नावोकी पतवारे कडछी या पखे जैसी गोल होती है, जव कि कस्टमवालोकी पतवारे क्रिकेट-वैटकी तरह लवी-लवी और चपटी होती है।

हमारा काफला ठीक समय पर निकला। अेक दो मील गये होगे कि अितनेमे आसमान वादलोंमे घिर गया। हवा जोरसे वहने लगी। लहरे जोर जोरसे अुछलने लगी, मानो वडी दावत मिल रही हो। नावे डोलने लगी। और स्टीमलोच परका खिचाव भी वढने लगा। अरे! यह क्या? वारिशके छीटे! वडे वडे वेरोके जैसे छीटे! अव क्या होगा? लहरे जोर जोरसे अुछलने लगी। स्टीमलोच वेकावू घोडेकी तरह अूपर-नीचे कूदने लगी। पीछेकी नावकी रस्सिया कर्‌र्‌र्‌ कर्‌र्‌र्‌ आवाज करने लगी। अितनेमे स्टीमलोच और नावके बीच अेक लहर अितनी वडी आअी कि नाव दिखाअी ही न दी।

मैं स्टीमलोचमे वॉयलरके पास लकडीके तख्तोके चबूतरे पर वैठा था। हमारे कप्तानको जल्दीसे जल्दी स्टीमर तक पहुचना था। अुसने स्टीमलोच पागलकी तरह पूरी रफ्तारमे छोड दी। चवूतरा गरम हुआ। मैं जलने लगा। समझमे न आया कि क्या करू? जरा अिधर-अुधर हटता तो 'समुद्रास्तृप्यन्तु' होनेका डर था! और वैठना विलकुल नामुमकिन हो गया था। अिस अुलझनमे मुझे वडे भयानक ढगसे छुटकारा मिला। समुद्रकी अेक प्रचड लहर चढ आअी

और जुसने मुझे नखशिखान्त नहला दिया। अब चबूतरा गरम रहता ही कैसे? पिताश्री परेशान हुअे। आअी (मा) को तो कुलदेवका स्मरण हो आया 'मगेशा! महारुद्रा! मायबापा! तून आता आम्हाला तार!' मूसलधार वर्षा होने लगी। हम स्टीमलोचवाले तो कुछ सुरक्षित थे। किन्तु पीछेके अुन नाववालोंका क्या? शुरु शुरूमे तो स्टीमलोचको पानी काटना था, अिसलिअे अुसमे पानी आसानीसे आ जाता था। किन्तु नावको तो हर हिलोर पर सवार ही होना था, अिसलिअे चाहे जितना डोलने-पर भी अुसके अदर पानी नही आ पाता था। किन्तु जब हवा और वारिशके बीच होड लगी और दोनोका अट्टहास्य बढने लगा, तब अेक ही लहरमे आधीके करीब नाव भर जाने लगी। लहरे सामनेसे आती, तब तक तो ठीक था। नाव अुन पर सवार होकर अुन पार निकल जाती थी। कभी लहरोके शिखर पर तो कभी दो लहरोंके बीचकी घाटीमे। कभी कभी तो नाव अेक हिलोर परसे अुतरती कि नीचेसे नअी लहर अुठकर अुसे अधरमे ही अुठा लेती थी। अैसी अननोखी हलचल होने पर अदर जो लोग खडे थे वे धडाधड अेक-दूसरे पर गिर पडते थे।

लेकिन अब लहरे बाजुओंसे टकराने लगी। नावके अदर बैठी हुअी औरतो और बच्चोको तो सिर्फ फूट फूटकर रोनेका ही अिलाज मालूम था। जितने जवामर्द थे वे सब डोल, गागर या डिब्बा, जो भी हाथमें आता अुसीमे पानी भर-भरकर बाहर फेकने लगे। फायर अेजिनके नने भी अिससे ज्यादा तेजीसे क्या काम कर पाते? नाव खाली होती न होती अितनेमे अेकाध क्रूर लहर विकट हास्यके साथ 'ध . ड' से नावसे टकराती और अदर चढ बैठती। अुस समय स्त्री-बच्चोंकी चीखे और दहाडे कानोको फाडे डालती थी। दिल चीर डालती थी। कुछ यात्री अवधूत दत्तात्रेयको सहायताके लिअे पुकारने लगे, कुछ पढरपुरके विठोबाको पुकारने लगे। कोअी अबा भवानीकी मन्नत मनाने लगे, तो कोअी विघ्नहर्ता गणेशको बुलाने लगे। शुरु शुरूमे स्टीमलोचके कप्तान और खलासी हम सबको धीरज देते और कहते 'अजी आप डरते क्यो है? जिम्मेदारी तो हमारी है। हमने अैसे कअी तूफान देखे है।' किन्तु

देखते ही देखते मामला अितना वढ गया कि कप्तानका भी मुह अुतर गया। वह कहने लगा 'भाअियो, रोनेसे क्या फायदा? अिन्सानको अेक वार मरना तो है ही। फिर वह मौत विस्तरमे आये या घोडे पर, शिकारमे आये या समुद्रमें। आप देख ही रहे है कि हम सव तरहकी कोशिश कर रहे है। किन्तु अिन्सानके हाथमे क्या है? मालिक जो चाहे वही होता है।' मै अुसके मुहकी ओर टकटकी लगाकर देख रहा था। यात्राके प्रारभमे जो आदमी गाजरकी तरह लाल-लाल था, वही अव अरवीके पत्तोकी तरह हरा-हरा हो गया था।

मै अुस समय विलकुल वालक था। किन्तु गभीर अवसर पर वालक भी सच्ची स्थितिको समझ लेता है। पल पल पर मै स्थानभ्रष्ट हो रहा था। अपने दोनो हाथोसे पकडकर मै वडी मुश्किलसे अपने स्थानको सभाले हुअे था। हमारा सारा सामान अेक ओर पडा था। किन्तु अुनकी ओर देखना ही कौन? लेकिन पूजाकी देव-मूर्तिया और नारियल वेतकी जिस 'सावळी' मे रखे हुअे थे, अुसे मै अपनी गोदमे लेकर वैठना नही भूला था।

मेरे मनमे अुस समय कैसे कैसे विचार आ रहे थे। वह काल था मेरी मुग्ध भक्तिका। रोज सुवह दो-दो घटे तो मेरा भजन चलता था। मेरा जनेअू नही हुआ था। अिसलिअे सध्या-पूजा तो कैसे की जाती? फिर भी पिताश्री जव पूजामे वैठते, तव पास वैठकर अुनकी मदद करनेमे मुझे खूव आनद आता। मनमे आया, आज यदि डूवना ही भाग्यमे वदा हो, तो देवताओकी यह 'सावळी' छातीसे चिपटाकर ही डूवूगा। दूसरे ही क्षण मनमे विचार आया, माके देखते ही लोचमे से पानीमे लुढक जाअूगा तो माकी क्या दशा होगी? यह विचार ही अितना असह्य मालूम हुआ कि मेरी सास रुध गअी। सीनेमे अिस तरह दर्द होने लगा, मानो पत्थरकी चोट लगी हो। मैने अीश्वरसे प्रार्थना की कि 'हे भगवान्, यदि डुवाना ही हो तो अितना करो कि 'आअी' और मै अेक-दूसरेको भुजाओमे लेकर डूवे।'

हरेक वालककी दृष्टिमें अुसके पिता तो मानो धैर्यके मेरु होते है। वालकका विश्वास होता है कि आकाश भले टूटे, किन्तु

पिताका धैर्य नहीं टूट सकता। अिसलिअे जब असे अवसर पर बालक अपने पिताको भी दिङ्मूढ बना हुआ, घबडाया हुआ देखता है, तब वह व्याकुल हो अुठता है। मैं तूफानमें अितना नहीं डरा था, बरसातमें भी अितना नहीं डरा था, 'आदमकी बू आ रही है, मैं अुसे खाअूंगी' असा कहते हुअे मुह फाडकर आनेवाली लहरोंसे भी अितना नहीं डरा था, जितना पिताजीका परेशान चेहरा देखकर तथा अुनकी रुंधी हुअी आवाज सुनकर डर गया।

हरेक आदमी कप्तानसे पूछता, 'हम कितनी दूर आ गये है? अभी कितना फासला बाकी है?' चारों ओर जहा भी नजर डालते वहा बारिश, आंधी और तरंगोंका ताडव ही नजर आता! अितना पानी गिरा, किन्तु आकाश जरा भी नहीं खुला। मैंने कप्तानसे गिड-गिडाकर कहा, 'लॉंचको कुछ किनारेकी ओर ले चलो न, जिससे यदि वह डूब ही गअी तो भी चद लोग तो किनारे तक तैरकर जा सकेंगे!' वह अुत्साह-हीन हास्यके साथ बोला, 'कैसा बेवकूफ है यह लडका! किनारेसे जितने दूर है, अुतने ही सुरक्षित है। जरा भी पास गये तो शिलाओंसे टकराकर चकनाचूर हो जायेंगे। आज तो जानबूझ कर हम किनारेसे दूर रह रहे है। स्टीमर तक पहुच गये कि गगा नहाये समझो। आज दूसरा अिलाज ही नहीं है।'

मैंने अिससे पहले कभी बडी अुम्रके लोगोंको अेक-दूसरेसे गले लगकर रोते नहीं देखा था। वह दृश्य आज अुस नावमें देखा। अुसमें स्त्री-पुरुष अेक-दूसरेको भुजाओंमें लेकर फूट फूटकर रो रहे थे। दो-तीन बच्चोंवाली अेक मा अपने सब बच्चोंको अेक ही साथ गोदमें लेनेकी कोशिश कर रही थी। केवल पाच-पचीस जवामर्द जीतोड मेहनत करके समुद्रके साथ अ-समान युद्ध कर रहे थे। तूफान अितना बढ गया और स्टीमलॉंच तथा नाव अितनी अधिक डोलने लगी कि लोग डरके मारे रोना तक भूल गये। मृत्युकी अेक काली छाया सर्वत्र फैल गयी। होशमें थे सिर्फ नावके बहादुर नौजवान और काली-काली वर्दी पहने हुअे स्टीमलॉंचके खलासी। हमारा कप्तान हुक्म छोडते छोडते कभी परेशान हो अुठता, किन्तु खलासी बराबर अेकाग्र मनसे, बिना परेशान

हुअे, अचूक ढगसे अपना अपना काम कर रहे थे। कर्मयोग क्या अिससे भिन्न होगा?

आखिरकार तदडी वदर आया। हम स्टीमरको देखते अुससे पहले ही स्टीमरने हमारी लाँचको देख लिया। स्टीमरने अपना भोंपू वजाया 'भो !' मानो सवकी करुण वाणी सुनकर अीश्वरने ही 'मा भै' की आकाशवाणी की हो। हमारी स्टीमलाँचने अपनी तीक्ष्ण आवाजसे जवाव दिया। सवके दिलमे आशाके अकुर फूटे। चारो ओर जय-जयकार हुआ।

अितनेमे, मानो अपना अतिम प्रयत्न कर देखनेकी दृष्टिसे और हम सवके भाग्यके सामने हारनेसे पहले आखिरी लडाअी लड लेनेके लिअे अेक वडी लहर हमारी लाँच पर टूट पडी। और पिताजी जहा वैठे थे वही पर पीछेकी ओर गिर पडे। मैंने कातर होकर चीख मारी। अव तक मैं रोया नही था। मानो अुसका पूरा वदला मुझे अेक ही चीखमे ले लेना था। दूसरे ही क्षण पिताजी अुठ वैठे और मुझे छातीसे लगाकर कहने लगे, 'दत्तू, डरे मत। मुझे कुछ भी नही हुआ है।'

हम स्टीमरके पास पहुच गये। किन्तु विलकुल पास जानेकी हिम्मत कौन करे? कस्टमवाली नावको तो अुन लोगोने कभीका अलग कर दिया था, क्योंकि लाँच तथा वडी नावके झोंके वह सह नही सकती थी। अुसकी सुरक्षितता अलग होनेमे ही थी। स्टीमलाँचने दूरसे स्टीमरकी प्रदक्षिणा कर ली। मगर किसी भी तरह पास जानेका मौका नही मिला। तरगोंके धक्केसे लाँच यदि स्टीमरके साथ टकरा जाती, तो विलकुल आखिरी क्षणमे हम सव चकनाचूर हो जाते। आखिर अूपरसे रस्सा फेंका गया और हमारे खलासी लाँचकी छत पर खडे होकर लम्वे लम्वे वासोंसे स्टीमरकी दीवालोंसे होनेवाली लाँचकी टक्करको रोकने लगे। तरगें अुसे स्टीमरकी ओर फेंकनेकी कोशिश करती, तो खलासी अपने लम्वे लम्वे वासोंकी नाकोंकी ढाल वनाकर सारी मार अपने हाथो और पैरो पर झेल लेते। तिस पर भी अंतमे स्टीमरकी सीढीसे स्टीमलाँचकी छत टकरा ही गयी, और कडडड आवाज करता हुआ अेक लम्वा पटिया टूटकर समद्रमे जा गिरा।

मै पास ही था, अिसलिअे स्टीमरमें चढनेकी पहली बारी मेरी ही आअी। चढनेकी काहेकी? गेंदकी तरह फेंके जानेकी! खुद कप्तान और दूसरा अेक खलासी लॉंचके किनारे खड रहकर अेक अेक आदमीको पकडकर स्टीमरकी सीढीके सबसे नीचेके पाये पर खडे जलासियोंके हाथमे फेंक देते थे। अिसमे खास सावधानी तो यह रखी जाती कि जब लॉंच हिलोरोके गड्ढेमे अुतर जाती तब वे लोग राह देखते और दूसरे ही क्षण जब वह तरगोके शिखर पर चढ जाती और सीढी बिलकुल पास आ जाती, तब झट यात्रीको सौंप देते! दोनो ओरके खलासी यदि आदमीके हाथ पकड रखें तो दूसरे ही क्षण जब लॉंच तरगोंके गड्ढेमे अुतरे तब अुसकी धज्जिया अुड जाय! मै अूपर सीढी पर चढा और मुडकर देखने लगा कि मा आती है या नहीं। जब अेक बिलकुल अजनबी मुसलमानको माकी बाहें पकडते देखा तो मेरा मन बेचैन हो अुठा। किन्तु वह समय था जान बचानेका। वहा कोमल भावनाये किस कामकी? थोडी ही देरमे पिताजी भी आ पहुचे। देवताओंकी 'सावळी' तो मैने कधे पर ही रखी थी। अूपर अच्छी जगह देखकर पिताजीने हमे बिठा दिया और वे सामान लाने गये। मै श्रद्धालु लडका अवश्य था, पर अुस समय मुझे पिताजी पर सचमुच गुस्सा आया। भाडमे जाये सारा सामान! जान खतरेमे डालनेके लिअे दुबारा क्यो जाते होंगे? किन्तु वे तो तीन बार हो आये। आखिरी बार आकर कहने लगे, 'गोकर्ण-महाबळेश्वरके प्रसादका नारियल पानीमे गिर गया।' अेक ही क्षणमे आअी और मै दोनो बोल अुठे, आअीने कहा, 'अरे अरे!' और मैने कहा, 'बस अितना ही न?'

लॉंचवाले सब यात्रियोंके चढनेके बाद नाववालोंकी बारी आयी। वे सब चढे। अुसके बाद लॉंच और नाव निशाचर भूतोंकी तरह चीखें मारती हुअी तदडीके किनारेकी ओर गअी और किनारे पर तपश्चर्या करते बैठे हुअे यात्रियोंको थोडे थोडे करके लाने लगीं। तूफान अब कुछ ठडा पडा था। मगर अधेरी रात और अुछलती हुअी तरगोंके बीच अुन लोगोका जो हाल हुआ होगा, अुसका वर्णन कौन कर सकता है?

स्टीमर यात्रियोंसे ठसाठस भर गअी। जो भी बोलता, समुद्रमें डूबे हुअे अपने सामानकी बातें ही सुनाता। आखिर यात्री सब आ गये। मेहर मालिककी कि किसीकी जान न गयी।

स्टीमर आखिर छूटी और लोग अपनी अपनी पुरानी यात्राओंके अैसे ही खतरनाक सस्मरण अेक-दूसरेको सुनाकर आजका दुःख हलका करने लगे। बडी देर तक किसीको नीद नही आअी। मैं कब सोया, कारवारका बदरगाह सुबह कब आया, और हम घर पर कब पहुचे, आज कुछ भी याद नही है। किन्तु अुस दिनका तूफानका वह प्रसग स्मृतिपट पर अितना ताजा है, मानो कल ही हुआ हो। सचमुच

दुःख सत्य, सुख मिथ्या, दुःख जन्तोः परं धनम्।

अक्तूबर, १९२५

२३

भरतकी आंखोंसे

किनारे पर खडे रहकर समुद्रकी शोभाको निहारनेमें हृदय आनदसे भर जाता है। यह शोभा यदि किसी अूचे स्थानसे निहारनेको मिले तब तो पूछना ही क्या? जहाजके अूपरके हिस्सेसे या देवगढ जैसे टापूके सिर परसे समुद्रका किनारे पर होनेवाला आक्रमण देखनेमें अेक अनोखा ही आनद आता है। मनमें यह भाव अुत्पन्न होते ही कि हम समुद्रके राजा है और तरगोकी यह फौज हमारी ही ओरसे सामनेके भूमि-भागको पादाक्रान्त कर रही है, हमारे हृदयमें अेक प्रकारका अभिमान स्फुरित होने लगता है। ध्यानसे देखने पर मालूम होता है कि समुद्रका हरा-हरा या काला-काला पानी मस्तीमें आकर सफेद बालूके किनारे पर जोरोसे आक्रमण करता है और आखिरी क्षणमें 'अजी, यह तो महज विनोद ही था' कहकर हस पडता है। तब अुनके अिस मिथ्या-भाषण पर हम भी खिलखिला कर हस पडते है।

समुद्र-किनारे रहनेवालोंको अिस तरहके दृश्य कभी भी देखनेको मिल जाते है। मगर समुद्र और वालुका-पट जहा अखड जलक्रीडा करते हो, अुस दिशामें समकोणमें अूचाओ पर खडे रहकर वालूका यह जलविहार और तरगोका सिकता-विहार निहारनेका सौभाग्य यदि किसी दिन प्राप्त हो तो मनुष्य 'अद्य मे सफला यात्रा, धन्योऽह अप्प्रसादत ।' क्यो नही गायेगा ?

सन् १८९५मे मैने जिस गोकर्णकी यात्रा की थी और जिस गोकर्णके दर्शन मैने श्री गगाधरराव देशपाडेके साथ दस साल पहले किये थे, अुसी गोकर्णके पवित्र किनारे पर सगववेला* मे समुद्रके दर्शन करनेका सौभाग्य प्राप्त होनेसे मै आनन्द-विभोर हो गया था। गोकर्णका समुद्र-तट काफी विस्तृत और भव्य है। दाहिनी यानी अुत्तरकी ओर कारवारके पहाड और टापू धुधले क्षितिज पर अस्पष्ट-से दिखाओ देते है, बायी यानी दक्षिणकी ओर रामतीर्थका पहाड और अुस पर खडा भरतका छोटा-सा मदिर दिखाओ देता है। और सामने अगाध अनत सागर 'अमर होकर आओ' कहता हुआ अहोरात्र आमत्रण देता है। अिस तरहका हृदयको अुन्मत करनेवाला दृश्य अेक वार देख लेने पर भला कभी भूला जा सकता है ? रामतीर्थकी पहाडी पर जाकर वहाके झरनेमे स्नान करनेका यदि सकल्प न किया होता, तो सागरके अिस भव्य दृश्यमे तैरते रहना ही मैने पसद किया होता। नारियलके बगीचो और खुरदरी शिलाओंको पार करके हम रामतीर्थ तक पहुचे। वहाकी धाराके नीचे बैठकर नहानेका सात्त्विक जीवनानद या स्नानानद आपाद-मस्तक लेकर रामेश्वरके दर्शन किये। शाडिल्य महाराज नामक अेक साधुने असख्य लोगोमे अुत्साह प्रकट करके यहाके मदिरका निर्माण मुफ्तमें करवा लिया था। यह मदिर समुद्रमे घुसे हुअे अेक अुन्नत पहाड पर स्थित है। मदिरकी अूचाओी परसे वालूका पट और लहरोका

* गायोका दोहन करनेके बाद तथा गोशाला साफ करनेके बाद वनमें चरनेके लिअे अुन्हे अिकट्ठा किया जाता है, अुस समयको (सुबहके करीब नौ बजे) 'सगववेला' कहते है। यह शब्द वेदकालीन है।

पट जहा अेक-दूसरेका आलिगन करके क्रीडा करते है, अुसका मीलो तक फैला हुआ सौंदर्य हम देख सके। नारियलके दो-अेक वृक्षोंने अिसी स्थान पर खडे रहकर सागर-सिकता-मिलनके दृश्यका आनद सेवन करनेकी वात तय की थी। अपनी डालिया हिलाकर अुन्होंने हमसे कहा 'आअिये, आअिये! वस यही स्थान अच्छा है। यहासे सिकता-सागरके मिलनकी रेखा नजरके सामने सीधी दीख पडती है।'

यहासे मैंने देखा कि पानीकी तरगोको सागरके गहरे पानीका सहारा था। लेकिन वालूके पटको सहारा कौन दे? कोअी पहाडी नजदीकमे नही थी, अिसलिअे नारियल और सरो जैसे पेडोंने यह जिम्मेदारी अपने सिर पर अुठा ली थी। ये अूचे पेड और सागरका गहरा पानी—दोनोके हरे रगमें फर्क तो जरूर था, किन्तु अुनके कार्यमे कोअी फर्क नही मालूम होता था। पेड अपने पावोके नीचेकी वालूको आशीर्वाद देते और समुद्रका गहरा पानी लहरोको आगे वढनेके लिअे प्रोत्साहन देता। यह दृश्य देखकर भला कौन तृप्त होगा?

किसी दृश्यमे मनुष्य तृप्ति अनुभव नही करता, अिसलिअे अेक जगह खडे रहकर अुसीका पान करते रहना भी मनुष्यको पसन्द नही आता। मैंने देखा कि रामतीर्थके झरनेकी और रामेश्वरके मदिरकी मानो रखवाली करनेके लिअे श्रीरामचद्रजीके प्रवर्धक प्रतिनिधि भरत यहाकी पहाडीके अूपर खडे है। अुनके दर्शन तो करने ही चाहिये। और वन सके तो योग्य अूचाअी पर जाकर अुनकी दृष्टिसे भी सागरको देखना चाहिये। विना अूचे चढे विशाल दृष्टि कैसे प्राप्त हो? सीढियोने निमत्रण दिया, अिसलिअे नाचता और कूदता या अुडता हुआ मैं भरतके मदिर तक पहुच गया, मानो मुझे पख लग गये हो। वहा छोटे शुभ्रकाय भरतजी सुदर पीतावर पहनकर समुद्र-दर्शन कर रहे थे।

मेरी दृष्टिसे भरतकी मूर्तिके आसपास मदिर वनाना ही नही चाहिये था। अुन्हें ताप, पवन और वरसातकी तपश्चर्या ही करने देना चाहिये था। समुद्र परसे आनेवाले शीतल पवनमे सूर्यका ताप वे आसानीसे सह लेते। और लोग यह कैसे भूल गये कि भरत आखिर सूर्यवशी राजपुत्र थे? वायुपुत्र हनुमानका और सूर्यवशी राघवोका

स्मरण करते हुअे हम वहा काफी देर तक खडे रहे। हृदयमे भक्ति-भाव अुमड रहा था और सामने समुद्रके पानीमे ज्वार चढ रही थी।

अुस दिनके शुभ भव्य और पावन दर्शनके लिअे रामतीर्थका और दिक्‌पाल भरत महाराजका मै सदा आभारी रहूगा।

मअी, १९४७

२४

वेळगंगा — सीताका स्नान-स्थान

वेरूळग्रामका हरा कुड देखकर लौटते समय रास्तेमे वेळगगाका झरना देखा था। झरना अितना छोटा था कि अुसे नाला भी नही कह सकते। किन्तु अुसे 'वेळगगा'का प्रतिष्ठित नाम प्राप्त हुआ है। नदीका नाम सुनने पर अुसका अुद्‌गम कहा हे, जिसकी खोज किये विना क्या रहा जा सकता हे? किन्तु हम तो गुफाओंकी अद्‌भुत कारीगरीमे मस्त होकर विचर रहे थे, अिसलिअे हमे वेळगगाका स्मरण तक नही हुआ। 'अपौरुषेय' कारीगरीवाली कैलासकी गुफाको देखकर हम जैन तीर्थंकरोकी अिन्द्रसभाकी ओर वढ रहे थे। अितनेमे श्री अच्युत देशपाडेने कहा, 'वेळगगाका अुद्‌गम यहीं है।' नाम सुनते ही वेळगगा दिमाग पर सवार हुअी!

अिन्द्रसभासे लौटते समय हम २९ वीं गुफामे जा पहुचे। अनेक गुफाओमे घूमनेके कारण काफी थकावट मालूम हो रही थी। सारे वदनकी हड्डियोमे दर्द होने लगा था। ठीक अुसी समय ववअीके निकट स्थित धारापुरीकी अेलिफटा गुफाका स्मरण करानेवाली यहाकी २९ वीं गुफाने भव्यताका कमाल कर दिखाया। यह कहना मुश्किल था कि घूम-घूमकर हमारे पैर ज्यादा थके थे या देख-देखकर हमारी आखे ज्यादा थकी थी। हम निश्चय कर ही रहे थे कि अव नाश्तेके साथ थकावट अुतारनेके वाद ही आगे जायगे, अितनेमे सीताके स्नान-स्थानका स्मरण हुआ।

अयोव्यासे जनस्थान तककी यात्रा मीताने पैदल की थी। वहासे रावण अुसे अुठाकर लका ले गया था। दु खावेगमें सीताने दक्षिणका यह प्रदेश शायद देखा भी न होगा। किन्तु रामने रावणका वध करके अुसीके पुष्पक विमानमे वैठकर जव लकासे अयोध्या तककी हवाअी यात्रा की, तव सीतामाताको नीचेकी प्राकृतिक शोभा देखकर कितना आनद हुआ होगा! रामायणमे वाल्मीकिने प्राकृतिक सौंदर्यके प्रति सीताके पक्षपातका वर्णन जहा-तहा किया हे। मृष्टि-मौंदर्य देखकर मीताको कितना अलौकिक आनद होता था, अिसका वर्णन भवभूतिने भी किया है। सीताने यदि भारतके ललित और भव्य, सुन्दर और पवित्र स्थानोंका वर्णन स्वय लिखा होता, तो मैं समझता हू कि अुसके वाद सस्कृतके किसी भी कविने मृष्टि-वर्णनकी अेक पक्ति भी लिखनेका माहस न किया होता।

सीतामाता पहाडोको देखकर आनदित होती, नदियोको अपने आनदाश्रुओंसे नहलाती, हाथीके वच्चोको पुचकारती, सारस-युगलोको आशीर्वाद देती, सुगधित फूलोके सौरभसे अुन्मत्त होती और प्रत्येक स्थान पर सारे आनदको राममय वनाकर अपने-आपको भूल भी जाती। लकामे राम-विरहसे झूरनेवाली मीता भी वहाकी अेक नदीसे अेकरूप हुअे विना न रह सकी। आज भी लकामें 'मीतावाका' वर्षा-ऋतुमे अपने दोनो किनारो परसे वह निकलती हे और जितने खेतोको डुवाती है अुन सवको सुवर्णमय वना देती ह। सीताका जन्म ही जमीनसे हुआ था। भारतभूमिकी भक्तिके रूपमे आज भी वह हमे दर्शन देती है।

मीताको लगा होगा कि गोदावरीके विशाल प्रदेशमे चल-चलकर अव हम थक गये हैं। लक्ष्मणको वनफल लानेके लिअे भेज देगे। और राम तो धनुष लेकर पहरा देते ही रहेगे। तव अिस चद्राकार करारके नीचे वेळगगाका आतिथ्य स्वीकार करके थोडा-सा जलविहार क्यो न कर लिया जाय?

*   *   *

पहले तो हमारी वृत्ति किसी अनुकूल जगहमें वेळगगाके सुन्दर प्रपातका सिर्फ दर्शन करनेकी ही थी। अिसलिअे २९ नबरकी गुफामें, अुसकी बाअी ओर और हमारी दाहिनी ओर, जो झरोखा दिखाअी देता था वहा हम गये। मनमें यह चोरी तो अवश्य थी कि यदि नीचे जाया जा सकेगा, तो वहाका आनद लूटनेमे हम चूकेंगे नही।

झरोखेसे देखा तो अेक पतला-सा प्रपात पवनके साथ खेलता हुआ नीचे अुतर रहा है और अपनी अगुलिया हिलाकर हमे चुपचाप न्योता दे रहा है। मै विचार करने लगा कि नीचे अुतरा जा सकेगा या नही? अितना समय खर्च करना अुचित होगा या नही? साथियोको मेरी यह स्वच्छदता रुचेगी या नही? मुझको अिस प्रकार अुलझनमे पडा हुआ देखकर घाटीमें दौड-धाम करनेवाले नन्हे नन्हें पक्षी तिरस्कारमे हस पडे "देखो तो, कितना अरसिक मनुष्य है! प्रपात अितने प्रेमसे न्योता दे रहा है और यह विचारमे डूबा हुआ है! अिन मानवोमें काव्य लिखनेवाले कअी हैं, किन्तु काव्यका अनुभव करनेवाले विरले ही होते हैं। और यह सामनेवाला आदमी अपने-आपको प्रकृतिका बालक कहलवाता है। आखे फाड-फाडकर प्रपातकी ओर देख रहा है। नीचेका स्फटिक जैसा निर्मल पानी देखकर अिसका हृदय भी अुमड पडता है। किन्तु यह सकल्प नही कर पाता। अिसके पैर नहीं अुठते। अिसे किसीने शाप तो दिया नही कि 'तू पत्थर बनकर पडा रहेगा।' फिर भी यह पत्थरसे चिपका हुआ है!"

पक्षियोकी यह निर्भर्त्सना सुनकर मै लज्जित हुआ, और होशमें आनेके पहले ही मेरे पैर सीढिया अुतरने लगे। मै सोच रहा था कि दाहिनी ओर वाले गड्ढेको लाघकर अुस पारसे प्रपातके पास जाया जाय, या बाअी ओरसे कगारके पीछेसे होकर २८ नबरकी छोटी-सी गुफा तक पहुचा जाय और वहासे प्रपातके जलकणोका आनन्द लिया जाय? दाहिनी ओरका रास्ता लम्बा और सुरक्षित था, जब कि बाअी ओरवाले रास्तेमे काव्य था। नहानेकी तैयारी करके ही मैं अुतरा था, अिसलिअे भीगनेका तो सवाल ही नही था।

२८ नवरकी छोटी-सी गुफामें अेक दो मूर्तिया हैं, किन्तु अुस गुफाके अदर विशेप काव्य नही है। काव्य तो वाहर ही विखरा हुआ है। अिस गुफामे वैठकर यदि कोअी वाहर देखे, तो पानीके पतले परदेमे से अुसे अपने सामनेकी सृप्टिका जीवनमय विस्तार दिखाअी देगा। प्रपात तो वहा गिरता है, किन्तु वह अितना घना नही है कि आरपार कुछ दिखाअी ही न दे। यह गुफा पानीके परदेके पीछे ढकी हुअी रहने पर भी विलकुल भीगती नही, क्योंकि खिलाडी पवन भी पानीके तुषारोंको गुफाके अदर नही ले जा सकता। गुफाके जरा वाहर आये तो फिर यह शिकायत मत कीजिये कि पवनने आपको गीला क्यो कर दिया।

हम अिस गुफामे नीचे अुतरे। कहनेकी आवश्यकता नही कि पहाडी चतुष्पाद वनकर ही हमे अुतरना पडा। प्रपात जिस पत्थर पर गिरता है, वही मैंने अपना आसन जमाया। सौ फुटकी अूचाअीसे जो पानी गिरता है, वह केवल गुदगुदा कर ही सतोप नही मानता। अुसने पहले सिर पर थप्पडे मारना शुरू किया, वादमें कधे पर चपते जमाअी, फिर पीठ पर रप् रप् रप् रप् चपते वरसने लगी और यात्राकी सारी थकावट अुतरने लगी। अक्सर हम पहले मालिश करा कर वादमे नहाते हैं। यहा तो मालिश ही स्नान था और स्नान ही मालिश! सीतामाताने यहा अपने वालोंको खोलकर पानीमे साफ-सुथरा कर लिया होगा।

किन्तु यह क्या? मैं घुमक्कड यात्री हू या दुनियाका वादशाह हू? मेरी पलथीके नीचे यह रत्नखचित आसन कहासे आ गया? पानीके तुषार चारो ओर अैसे फैल रहे हैं, मानो मोतियोंकी माला हो! और आसनके नीचे दो सुन्दर अिद्रधनुष मुझे सम्राट्की प्रतिष्ठा प्रदान कर रहे हैं! अलकापुरीके कुवेरसे मेरा वैभव किस वातमें कम है? अिद्रधनुषकी दुहरी किनारवाले, चादीके धागोंके आसन पर मैं वैठा हू और मोतियोंकी मालाका अुत्तरीय ओढकर यहा आनद कर रहा हू। माथे पर सूर्यनारायणका चमकता हुआ छत्र है और चारों ओर ये अुडते हुअे द्विजगण जगन्नायके स्तोत्र गा रहे हैं!

वदन साफ करनेके लिअे नहीं, बल्कि व्यायामका आनद मनानेके लिअे पत्थर पर सवार होकर प्रपातके नीचे मैंने अपना सारा वदन मला। स्नान-पानका आनद लूटा और रामरक्षा-स्तोत्रका स्मरण किया। सीतामैयाने जो स्थान पसद किया, वहा रामरक्षा-स्तोत्रके गायनका ही स्फुरण होना स्वाभाविक था। और सिरसे लेकर पैर तकके सारे गात्रोंको मलकर साफ करते समय 'शिरो मे राघव पातु, भाल दशरथात्मज' आदि श्लोकोंको याद करनेका यह न्याय कितना अुचित था!

* * *

स्वर्गको गये हुअे लोग भी यदि अतमें मृत्युलोकमें वापस आते है, तो फिर अिस प्रपात-स्नानका नशा चढने पर भी अुसमे से व्युत्थान करके फिर गद्यमय जीवनमे प्रवेश करनेकी आवश्यकता मुझे मालूम हुअी, अिसमे भला आश्चर्य कैसा? अिसलिअे आखिर अितने सारे आनदका स्वेच्छासे त्याग करनेकी अपनी सयम-शक्तिको सराहता हुआ मै वापस लौटा। और नये कपडे पहनकर नाश्तेके लिअे तैयार हुआ। नाश्ता क्या — वह तो कला-निरीक्षणके लिअे की हुअी दोपहर तककी तपस्या और प्रपात-स्नानकी शातिके बादका अमृत-भोजन तथा वेळगगाका कृपा-प्रसाद ही था!

गुफामे स्थिर होकर खडे हुअे द्वारपालोंके यदि आखे होती, तो अुन्हें जरूर हमसे अीर्ष्या हुअी होती!

सितम्बर, १९४०

२५

कृषक नदी घटप्रभा

घटप्रभा और मलप्रभा हमारी ओरके कर्णाटककी प्रमुख नदिया हैं। वे स्वभावसे किसान हैं। वे जहा जाती है वहा खेती करती हैं, जमीनको खाद देती हैं, पानी देती है और मेहनत करनेवाले लोगोंको समृद्धि देती हैं। अिसमे भी गोकाकके पास अेक बडा बाध बनाकर मनुष्यने अिस नदीकी शक्ति बढा दी है। जहा नदीके पानीकी पहुच न थी, वहा अिस बाधके कारण वह पहुच गयी। घटप्रभाका नाम लेते ही गोकाकके पासका लबा बाध ध्यानमे जरूर आयेगा। बडी बडी नदिया जहा-तहासे पक खीच-खीचकर ले जाती है, जब कि अैसी छोटी नदिया, बन सके वहासे, थोडा थोडा करके अच्छा कीमती पक किसानोको अपने पानीके साथ मुफ्तमे देकर अपने बालकोका पालन करती है। सचमुच घटप्रभा कृषक जातिकी नदी है।

बेलगामसे अितना नजदीक होते हुअे भी गोकाकके पासका घटप्रभाका प्रपात अभी देखना बाकी ही है।

१९२६–'२७

२६

कश्मीरकी दूधगंगा

श्रीनगरमे भला पानीकी कमी कैसे हो?

सतीसर नामक पौराणिक सरोवरको तोडकर ही तो कश्मीरका प्रदेश बना हुआ है। झेलम नदी मानो अिस अुपत्यकाकी लबाअी और चौडाअीको नापती हुअी सर्पाकारमें बहती है। अिसके अलावा जहा नजर डाले वहा कमल, सिंघाडे तथा किस्म किस्मकी साग-सब्जी पैदा करनेवाले 'दल' (सरोवर) फैले हुअे दीख पडते हैं। जिस वर्ष जल-प्रलय न हो वही सौभाग्यका वर्ष समझ लीजिये। अैसे प्रदेशमें गाडीके सकरे रास्ते जैसे छोटे प्रवाहको भला पूछे ही कौन?

फिर भी अैसे अेक प्रवाहको कश्मीरमे भी प्रतिष्ठा मिली है।

अिसमें पानी अधिक चाहे न हो, किन्तु यह प्रवाह अखंड रूपमें बहता है। न कम होता है, न बढ़ता है। अिसका पानी सफेद रंगका है, अिसीलिअे शायद अिसका नाम दूधगंगा रखा गया होगा। जिस नारायणाश्रममें हम रहते थे, अुसके नजदीकसे ही यह दूधगंगा बहती थी। अेक लम्बी लकड़ी डालकर अुस पर पुल बनाया गया था। नहानेके लिअे दूधगंगा बहुत अनुकूल है। अुसमें खड़े खड़े नहाया जा सकता है, और तैरना हो तो थोड़ा तैरा भी जा सकता है। बुवा बीमार थे तब बरतन माजनेमें, कपड़े धोनेमें और अन्य कामोंमें दूधगंगाकी मुझे काफी मदद मिलती थी। अुस अपरिचित प्रदेशमें जब हम दोनों बीमार पड़े, तब यदि दूधगंगाकी मदद हमें न मिलती तो हमारी क्या दशा हुअी होती?

कृतज्ञताके कारण दूधगंगाका माहात्म्य खोजनेकी अिच्छा हुअी। सार्वजनिक पुस्तकालयमें जाकर मैंने अनेक पुस्तकें ढूंढ निकालीं। यह जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि अितनी छोटी दूधगंगा बहुत दूरसे आती है और दूर दूर तक जाती है। किस ऋषिने दूधगंगाको जन्म दिया, किस-किसने अुसके किनारे तपस्या की आदि सब जानकारी मैंने खोज करके प्राप्त कर ली। अितिहासकी अनंत घटनाओंकी तरह यह जानकारी भी विस्मृतिके प्रवाहमें फिरसे बह गअी, और असली कृतज्ञता ही केवल शेष रही है।

अितना याद है कि रोज सुबह मठके साधु स्नान करनेके लिअे नदी पर अिकट्ठा होते थे। और रातको जब सब सो जाते तब मैं दूधगंगाके किनारे बैठकर आकाशके ध्रुवका ध्यान करता था। मेरा ध्यान भी अधिक न चला, क्योंकि कश्मीरमें ध्रुव अितना अूंचा होता है कि अुसकी ओर देखनेमें गर्दन दर्द करने लगती है। वहां सप्तर्षिमें से अरुंधती-सहित वसिष्ठको सीधा सिर पर विराजमान देखकर कितना आश्चर्य मालूम होता था!

कश्मीर-तल-वाहिनी सती-कन्या दूधगंगाको मेरा प्रणाम।

१९२६-'२७

२७

स्वर्धुनी वितस्ता

'ससारमें अगर कहीं स्वर्ग है,
तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है।'

सम्राट् जहागीरने झेलम नदीके अुद्गमको देखकर अूपरका
वचन कहा था। अुसका यह वचन वहाके अष्टकोनी तालावके पास
पत्थरमे खोद दिया गया है। सचमुच यह स्थान भू-स्वर्गके पदके योग्य
ही है। वेदकालमे अिस नदीका नाम था वितस्ता।

जहा अग-अगमें और रोम-रोममे प्राण फूकता हुआ ठडा मीठा
पवन वहता है, जहा वनश्री अपने यौवनका पूरा-पूरा अुन्माद प्रकट
करती है, जहाके पहाड अपने सौंदर्यसे मनमे सदेह पैदा करते है कि
ये पहाड है या रगभूमिका परदा, और जहाकी शाति चैतन्यसे
भरी हुअी है — वहींसे झेलमका अुद्गम हुआ है। जहागीरने अिस अुद्गम-
स्थान पर अेक अष्टकोनी तालाव बनवाया है। और अदरका पानी?
वह तो मानो नीलमणिका अमृत-रस हो! देखते ही मनमे आता है कि
यहा नीलमें रगे कपडे किसीने धो डाले है। किन्तु अितना स्वच्छ
और मीठा पानी अन्यत्र कहा मिलेगा?

अिस तालावके अेक ओरसे जो सुन्दर, सीधी नहर वहती है वही
है हमारी वितस्ता-झेलम। अिस स्वर्गका आनद लूटनेके लिअे मानो
गधर्व मछलियोका रूप धारण करके अिस तालाव और नहरमे
नहानेके लिअे अुतरे है। अैसी अुसकी शोभा है। अिस प्रदेशमें मछ-
लियोको पकडनेकी यदि सख्त मनाही न होती तो भला अिस सौंदर्यकी
क्या दशा हो जाती? मैंने अेक वडा वरतन नहरमें डुवो दिया तो अुसीमें
नहरकी पाच-सात मछलिया आ गअीं — अितनी भोली है वे। मैने
अुनको फिरसे नहरमे छोड दिया।

अिस स्थानको वेरीनाग कहते है। यहासे आगे खनवल नामक
अेक स्थान आता है। यहासे झेलम नदी नावे चलाअी जा सके अितनी
वडी हो जाती है। खनवलके पास ही अनतनाग नामक अेक सुन्दर तालाव

है। यहासे आगे सारी जमीन समतल है। कश्मीरकी सारी घाटी अिसी तरह चारो ओर सपाट है।

झेलमको सीधा चलनेकी सूझती ही नही। मोड लेती लेती मद गतिसे वह आगे बढती है। अुसके किनारे अेक बडी वैभवशाली सस्कृतिका विकास हुआ और अस्त भी हुआ। परन्तु वितस्ता आज भी जैसीकी तैसी ही वहती है।

सनबलसे आगे नीजव्यारा नामक अेक स्थान आता है। वहा चिनारका अेक खास पेड हमने देखा। नौ आदमियोने हाथ फैलाकर अुसको आलिगन किया और अुसके तनेको नापा। ठीक चौपन फुटका घेरा था।

नीजव्याराके मदिरके वारेमे हमने यहा अेक मजेदार दतकथा सुनी, जो अग्रेज लेखकोने भी लिख रखी है।

धर्मांध मुसलमान जब यह मदिर तोडनेके लिअे आये, तब यहाके पुजारियोने अुनका न तो कोअी विरोध किया, न धन देकर मन्दिरको बचानेकी बात की। अुन्होने कहा, "आअिये, आअिये, मदिरको तोड डालिये। हमारे शास्त्रोमे लिखा है कि यवन आयेगे और मूर्तिका नाश करके मदिरको तोड डालेगे। हमारे शास्त्रोमे जो लिखा है, वह झूठा होनेवाला नही है।" बुतशिकन गाजीको लगा, "अिनका मदिर यदि तोडेगे तो अिन काफिरोंके शास्त्र सच्चे साबित होगे। अिससे बेहतर तो यह है कि यह अेक मदिर छोड दिया जाय।" पता नही यह कहानी कहा तक सच हे, किन्तु यह हमारे यहाके बनियेकी कहानी जैसी चतुराअीकी कहानी जरूर है। और यह बात भी सही है कि नीजव्याराका मदिर मुसलमानोंके आक्रमण या अमलके दरम्यान भी टूटा नही।

यहासे कुछ दूरी पर अनतपुर नामक अेक प्राचीन शहर जमीनके नीचे दबकर छोटी पहाडी बन गया है। खेतोमे खोदते समय पुरानी सुन्दर कारीगरी, कअी प्राचीन कोठिया और कोयला बना हुआ चावल यहा मिला है, जिन्हें मैने खुद देखा है।

नदी अिधर अुधर घूमती-घामती अितनी धीरेसे बहती है कि पानीका प्रवाह मालूम ही नही होता। नदीके प्रवाहकी विरुद्ध दिशामे

जब जाना होता है तब पतवार चलानेके बजाय किश्तीकी नाकको काफी लम्बी डोरी बांधकर अेक या दो आदमी किनारे परसे खींचते चलते है। किश्ती प्रवाहमे ही चले, किनारे पर न आये, अिसलिअे नावमें बैठा हुआ माझी हाथमे रही पतवारको टेढा पकड रखता है।

कश्मीरी शालोंके कोने पर आमके या काजूके आकारके जो बेलबूटे होते है वे यहाकी कारीगरीकी विशेषता है। कहते है कि झेलमके मोड देखकर यहाके कारीगरोंको ये बेलबूटे सूझे। अेक दफा हमने नदीमे अेक बंदरसे चौदह मीलकी यात्रा की। अितनेमे पिछले बंदर पर जरा देरीसे आया हुआ यात्री पैदल चलकर हमसे आ मिला। अुसे केवल ढाअी मील ही चलना पडा। अितने मोड लेती हुअी यह नदी बहती है।

अिन मोडोंके कारण प्रवाहका जोर टूट जाता है और नदीका पात्र घिसता नही। जब बाढ आती है तभी सिर्फ 'सर्वत सम्प्लुतोदके' जैसी स्थिति हो जाती है। यहाके प्राचीन अिंजीनियर राजाओंने बाढके वक्त नदीको काबूमे रखनेके लिअे असे अनेक मोड तथा नहरे खोद रखी है।

यह अिलाज अितना अकसीर है कि आज भी अुसीका अनुकरण करना पडता है। अेक बडी किश्तीमे से सूअरके दांतके जैसा अेक बडा राक्षसी हल नदीके तलकी जमीनको चीरता हुआ जाता है और अंदरके कीचडको बिजलीके पंप द्वारा बाहर फेंकता जाता है। यह सारी प्रवृत्ति 'वराहमूलम्' (आजकलका बारामुल्ला) क्षेत्रमे देखनेको मिलती है।

बारामुल्ला कश्मीरकी घाटीका अुस पारका सिरा है। वहांसे आगे झेलम जोरोंसे दौडती है।

अिस सारे प्रदेशके बीचोबीच कश्मीरकी राजधानी है। श्रीनगर शहर नदीके दोनो किनारो पर बसा हुआ है। नदीके अूपर थोडे थोडे अंतर पर सात पुल (कदल) बनाये गये है। अिसके सिवा, दोनों ओरसे शहरके अंदर तक नदीमे से नहरे खोदी हुअी होनेके कारण अनायास ही

प्रवाही यान जलमार्ग मिलते हैं। नदीका मुख्य प्रवाह ही राजमार्ग है। बाकीकी नहरें अिस राजमार्गमें आकर मिलनेवाले गौण रास्ते हैं। खुश्की रास्तों पर जिस प्रकार गाडियां दौडती हैं, अुसी प्रकार यहां लम्बी और सकरी 'शिकारा' किश्तियां तीरकी तरह दौडती हैं। नदीमें किश्तियोंकी चाहे जितनी धूमधाम हो, वह बिना आवाजकी ही होती है।

दोपहरको जब महाराजाके मंदिरकी पूजा पूरी होती है और अगले दिनके निर्माल्य फूल नदीके पाट पर फेंक दिये जाते हैं, तब ये फूल करीब आधे मील तक आहिस्ता आहिस्ता लम्बी हारमें बहते हुअे बडे सुन्दर दिखाअी देते हैं।

और अिस नदीके किनारे चलनेवाली प्रवृत्ति भी किस प्रकारकी है! कहीं शतरंजियां बुनी जाती हैं तो कहीं अप्रतिम गालीचे। अेक जगह अखरोटकी लकडी पर सुंदर कारीगिरीका काम चल रहा है, तो दूसरी जगह रेशमका कारखाना भट्टे कीडोंको अुबालकर सुंदर मुलायम रेशम बना रहा है। चीन, तिब्बत तथा समरकंद और बुखाराके सौदागर यहां महीनों तक पडाव डाले पडे रहते हैं और होशियार पंजाबी अुनसे तिजारत करनेमें मशगूल रहते हैं। जहां देखें वहां हाथोंसे ज्यादा लम्बी बांहवाले कोट पहने हुअे लोग घूमते नजर आते हैं।

आगे जाकर यही झेलम हिन्दुस्तानके बडेसे बडे सरोवर वुलरमें जा गिरती है और अुसमें विलीन होकर गुप्त रूपमें लम्बी यात्रा करके दूसरे छोर पर बाहर निकलती है और बारामुल्लाकी ओर जाती है। वहां अिस नदीमें से अेक कृत्रिम नहर पैदा करके जो बिजली तैयार की जाती है वही कश्मीरके राज्यको पर्याप्त शक्ति देती है। अबटाबादके नजदीक यह नदी दिशा बदलती है और दौडती हुअी आगे बढती है। झेलमकी सारी घाटी अपने सौंदर्यके लिअे प्रख्यात है।

लोककथा कहती है कि अकबर बादशाह अिस घाटीके सौंदर्यके नशेमें अूपरसे नीचे कूद पडे थे। यह कवि-कल्पना भले हो, किन्तु घाटीको देखने पर अिस तरहका नशा चढना संभव तो अवश्य जान पडता है। अैसी लोककथाअें किसी राजाके गौरवका वर्णन करनेकी अपेक्षा

नदीके मोहक सौंदर्यकी तारीफ करनेके लिये ही अर्थवादके तौर पर गढ ली जाती है।

जब हिन्दुस्तानका सच्चा अितिहास लिखा जायगा, तब अुसमें बडी बडी नदियोंके अनुसार देशके अलग अलग विभाग बनाये जायंगे। अैसे अितिहासमें झेलमकी स्वर्गीय संस्कृतिका विभाग मामूली नहीं होगा। सचमुच झेलमको स्वर्धुनीका ही नाम शोभा देता है।

१९२६–'२७

२८

सेवाव्रता रावी

सिन्धु नदीको करभार देनेवाली पांच नदियोंमें वितस्ता — झेलम — और शुतुद्री दो ही महत्त्वकी मानी जाती हैं। बाकीकी नदियां अपने जिम्मे आया हुआ काम नम्रताके साथ पूरा करती हैं। जिस प्रकार किसी श्रेष्ठ पुरुषसे मिलनेके लिअे शिष्ट-मंडल जाता है, अुसी प्रकार ये नदियां धीरे धीरे साथ मिलकर आखिर सिन्धुमें जा मिलती हैं। ब्यास सतलजसे मिलती है। चिनाव झेलमसे मिलती है और रावी अिन दोनोंसे मिलती है। मुल्तानके पास तीन नदियोंका पानी लाती हुअी झेलम हिन्दुस्तानके अुस पारसे आनेवाली सतलजसे मिलती है। और अन्तमें अिन सबोंका बना हुआ पंचनद सिन्धुमें मिलकर कृतार्थ होता है। सिन्धुसे बातें करनेवाले शिष्ट-मंडलका अध्यक्षीय स्थान तो सत-लजको ही मिल सकता है, क्योंकि वह भी सिन्धुकी तरह परलोकसे (हिमालयके अुस पारसे) ही आती है।

अिन पांच नदियोंमें मध्यम स्थान अिरावतीका यानी रावीका है। वेदोंमें अिराका अर्थ है पानी, आह्लादक पेय। यों तो नदीमें पानी होता ही है। किन्तु अिस नदीके विशेष गुणको देखकर ऋषियोंने अुसे अिरावती नाम दिया होगा। ब्रह्मदेशकी अैरावती (अिरावान् = समुद्र) को

समुद्रके समान विस्तृत देखकर क्या यह नाम दिया होगा? रावी अितनी विस्तृत नहीं है।

स्वामी रामतीर्थकी जीवनीमे रावीका जिक्र अनेक जगह पर आता है। रावीको देखकर स्वामी रामतीर्थकी आखे प्रेमसे भर जाती थी। वैराग्य और सन्यासके कच्चे विचार अुन्होने जिस नदीके किनारे ही पक्के किये। किन्तु रावी तो सिक्ख-गुरु अर्जुनदेव और सिख-महाराज रणजितसिहके लिअे ही आसू बहाती दिखाअी देती है।

मै लाहौर गया था तब अिरावतीके पुण्यदर्शन कर पाया था। अुस समय वह कितनी शात थी! अुसके विशाल पट पर सारा लाहौर अुलट पडा था। लोगोकी धूमधाम और पैसेवालोकी शान-शौकत तथा विलासके सामने रावीकी शाति विशेष रूपसे शोभा पाती थी। यहा रावीका दृश्य अैसा मालूम होता था, मानो सारे लाहौरको अपनी गोदमे लेकर खेलाती हो!

अपना पावन और पोषक जल देनेके अलावा रावी अपने बच्चोकी विशेष सेवा करती है। हिमालयके घने अरण्योमे चीड, देवदार, बाझ, सफेता आदि आर्य वृक्षोके घने नगर बसे हुअे है। कही कही तो अैन दोपहरके समय भी सूरजकी धूप जमीन तक बडी मुश्किलसे पहुचती है। और वयोवृद्ध वृक्षोका अेकाध पितामह जब अुन्मूल होकर गिर पडता है तब भी अुसका जमीन तक पहुचना असभव-सा हो जाता है। आसपासके वृक्ष अपनी बलवान भुजाओमे अुसको अतरिक्षमे ही पकड लेते है। मानो बाणशय्या पर पडे हुअे भीष्माचार्य हो। बरसो तक अिस तरह अधर ही अधरमें रहकर ठड, धूप तथा बारिश सहते हुअे आखिर अिस भीष्माचार्यका विशाल शरीर छिन्न-भिन्न और चूर्णित होकर लुप्त हो जाता है।

अैसे जगलोमे अिमारती लकडी काटकर लाना आसान बात नही है। अिसलिअे लोगोने रावीका आश्रय लिया। रावीके किनारे जहा बडे बडे जगल है वहा लकडी काटनेवाले जाते है और लकडीके बडे बडे लट्ठे काटकर रावीके प्रवाहमे छोड देते है। बस हो-हा करते हुअे वे चलने लगते है। कही कही पाठशालामे जानेवाले आलसी लडकोकी

भाति वे धीरे धीरे और रुकते रुकते भी चलते हैं। और कही कही शामके समय घरकी ओर दौडनेवाले साडोंकी तरह वे नाचते-कूदते, अूपर-नीचे होते, अेक-दूसरेसे टकराते हुअे दौडते जाते है।

जब सजीव जानवरोंको भी हाकनेके लिअे गडरियोंकी आवश्यकता होती है, तब ये निर्जीव लट्ठे अैसी किसी देखरेखके बिना मुकाम तक कैसे पहुच सकते है? नदीका कही मोड देखा कि सब रुक गये। अेक रुका अिसलिअे दूसरा रुका। अुसके सहारे तीसरा रुका। 'आगे जानेका रास्ता नही है' कहकर चौथा रुका। 'क्या देखकर ये सब यहा खडे हो गये हैं, देखू तो सही!' कहकर पाचवा रुका। रात बितानेके लिअे यह पडाव होगा, अैसा अीमानदारीके साथ मानकर सातवा, आठवा और दसवा रुका। बादमें आये हुअे तो यह मानने लगे कि हमारा मुकाम ही यही है, अब यात्रा करना बाकी नही रहा। जहा सब रुके 'सा काष्ठा सा परा गति'।

सुबह होते ही अिन लट्ठोंके गडरिये आते है और सबको आगे हाक ले जाते हैं। 'अरे भअी, चलो चलो' करते यह काफिला फिर कूच शुरू करता है। नदीका प्रवाह अच्छा हो वहा तक तो यह यात्रा ठीक चलती है। मगर जहा प्रवाह ज्यादा तेज, छिछला या पथरीला होता है वहा बडी मुश्किल होती है। अेकाध लम्बे लट्ठेको दो बडे पत्थरोंका आश्रय मिल गया कि वह वही रुक जायगा और कहेगा 'मैं तो यहासे हटनेवाला ही नही हू। और दूसरोंको भी नही जाने दूगा।' अैसी जगह पर अुन लट्ठोंके जानेके लिअे पाच-सात ही रास्ते नहरें होगी। वे रुक गअी कि सारा काफिला रुक गया समझिये। गडरिये यहा तैर कर आनेकी हिम्मत भी नही करेंगे, क्योंकि अुनको अिन लट्ठोंसे अधिक अपना सिर प्यारा होता है। किनारे पर खडे रहकर लम्बे लम्बे बासोंसे ढकेल ढकेल कर कअियोंको निकाला जा सकता है। किन्तु जो प्रवाहके बीचोबीच रुक गये हो अुनका क्या?

मनुष्यने अिस आफतका भी अिलाज खोज निकाला है। हिमालयमें भैंसके समान बडे जानवर रहते होंगे। अुनकी पूरी खाल अुतार कर अुसको सी लेते है और अुसका थैला बनाते है। गलेकी ओरसे

हवा भर कर अुसमें भी मी डालते हैं। जिससे यह जानवर अप्सराकी तरह, बिना मांस या हड्डियोंका, हवासे भरा हुआ हो जाता है और पानी पर तैरने लायक बन जाता है। अुसके चार पाव भी हड्डियोंको निकालकर जैसेके तैसे रखे जाते हैं। फिर अिस तैरते हुअे फुग्गे या मशकको पानीमें छोड़कर ये गडरिये अुसके पेट पर अपनी छाती रख देते हैं और पाव हिलाते हिलाते तय किये हुअे मुकाम पर पहुंच जाते हैं। फुग्गेके कारण पानीमें तैरना आसान हो जाता है। फुग्गेके पावोंको पकड़ रखने पर वह छातीके नीचेसे खिसकता नहीं और तेज प्रवाहमें कहीं पत्थरसे टकराने पर चोट खालको ही लगती है, अुस पर सवार हुअे आदमीको नहीं।

अितनी तैयारी होने पर वे लट्ठे भटकते कैसे रह सकते हैं? अेक अेकको तो आगे बढ़ना ही पड़ता है। पहाड़की घाटियोंको पार कर अेक बार बाहर निकल आये कि ये लट्ठे मनचाहे ढंगसे अलग अलग न हो जाय अिसलिअे अुनके गडरिये सबको रस्सेसे बांधकर अुन पर सवार होते हैं और अुन्हें आगे ले जाते हैं।

लाहौरमें रावीके प्रवाह पर अिन लट्ठोंके कअी काफिले तैरते हुअे दीख पड़ते हैं। अुनके शत्रु अुनको पानीसे बाहर निकालकर अुनके टुकड़े टुकड़े कर डालते हैं, और फिर मनुष्योंके मकान या दूसरे साज-सामान तैयार करनेके लिअे दधीचि ऋषिकी तरह अुन्हें अपना शरीर अर्पण करना पड़ता है। अपने पर्वतीय सहोदरोंको मनुष्यकी सेवामें अिस प्रकार लाकर छोड़ते समय रावीको कैसा लगता होगा? रावी अितना ही कहती होगी 'भाअियो, परोपकाराय अिदं शरीरम्।'

जून १९३७

२९

स्तन्यदायिनी चिनाब

कश्मीरसे लौटते समय पैर अुठते ही नही थे। जाते समय जो अुत्साह मनमे था, वह वापस लौटते वक्त कैसे रह सकता था? अिसी कारण, जाते समय जो रास्ता लिया था, अुसे छोडकर पीर पुजाल्के पहाडोको पार करके हम जम्मूके रास्तेसे आ रहे थे। श्रीनगरसे जम्मू तक गाडीका रास्ता भी नही है। हिम्मत हो तो पैदल चलिये, वरना कश्मीरी टट्टू पर सवार हो जाअिये। रास्तेमे प्रकृतिकी सुदरता और जहागीरकी विलासिताका कदम कदम पर अनुभव होता है। जहा देख वहा बधे हुअे जलाशय और पहाडोमे बनाये हुअे रास्ते दीख पडते है। आज शिमलाकी जो प्रतिष्ठा है, वही या अुससे भी अधिक प्रतिष्ठा जहागीरके समयमे श्रीनगरकी थी। अैसे बादशाही पहाडी रास्तेसे वापस लौटते समय भगवती चद्रभागाके दर्शन किये थे। लोग आज अुसे चिनावके नामसे पहचानते है।

यदि मै भूलता नही हू तो हम रामवनके आसपास कही थे। सारा दिन ओर सारी रात चलना था। चादनी सुदर थी। थके-मादे हम रास्ते पर पियक्कड आदमीकी तरह लडखडाते हुअे चल रहे थे। पावोके तलुओमे छाले निकल आये थे। घुटनोमे दर्द था ओर निराश नीदका रूपातर हुआ था आधी क्लान्तिमे। निद्रा सुखावह होती है, तन्द्रा वैसी नही होती।

अैसी हालतमे हम आगे बढ रहे थे, अितनेमे दायी ओरकी गहरी घाटीमे से गभीर ध्वनि सुनाअी दी। सामनेकी टेकरी परसे झुककर आया हुआ पवन शीतल-सुगधित मालूम होने लगा। तन्द्रा अुड गअी। होश आया। और दृष्टि कलरवका अुद्गम खोजने दौडी। कैसा मनोहर दृश्य था! अूपरसे दूधके जैसी चादनी बरस रही है। नीचे चद्रभागा पत्थरोंसे टकराकर सफेद फेन अुछाल रही है। और अुसका आस्वाद लेकर तृप्त हुआ पवन हमे वहाकी शीतलता प्रदान कर रहा है।

साथ आये हुअे अेक आदमीसे मैंने पूछा, "यह कोअी नदी है, या पहाडी प्रवाह है?" अुसने जवाब दिया, "दोनों है। वह तो मैया चिनाव है।" मैंने चिनावको प्रणाम किया। नीचे तो अुतरा नहीं जा सकता था। अत दूरसे ही दर्शन करके पावन हुआ। प्रणाम करके कृतार्थ हुआ और आगे चलने लगा।

क्या यही है वेदकालीन भगवती चद्रभागा! कअी ऋषियोंने अपने ध्यान और अपनी गायोंको यहा पुष्ट किया होगा। आज भी अुद्यमी लोग अिस नदी माताका दोहन कम नहीं करते। मेरी जीवन-स्मृति शुरु होती है अुसी समय पहाडों जैसे कद्दावर पजाबी अिस नदीके किनारे पर नहरें खोदते थे। आज पचीस लाख अेकड जमीन अिस माताके दूधसे रसकस प्राप्त करती है और पजाबी वीरोंका पोषण करती है। वेदकालीन चिनावका सत्त्व आर्योंके अुत्कर्षमे काम आता था। रणजितसिंहके समयमे यही जल गुरुकी फतह पुकारता था। आजका रग भी अन्तिम नहीं है। चिनावका पानी बिल्कुल नि सत्त्व नहीं हुआ है। पचनदकी प्रतिष्ठा फिरसे जागेगी और सप्तसिंधुका प्रदेश भारतवर्षको भाग्यके दिन दिखलायेगा।

१९२६–'२७

[चिनावका प्रवाह पजावकी भाग्यरेखा होनेके बजाय आज पजावके बटवारेकी रेखा बना है, यह कितना दैवदुर्विपाक है!]

३०

जम्मूकी तवी अथवा तावी

किसी नदीके बारेमे कहने जैसा कुछ न मिले तो भी क्या? अुसमे स्नान करनेका आनद कम थोडे ही होनेवाला है! नदीका महत्त्व स्वत सिद्ध है। अुसके नामके साथ कोअी अितिहास जुडा हुआ हो तो धन्य है वह अितिहास। नदीको अुससे क्या? अितिहासकी दिलचस्पी विग्रहके साथ अधिक होती है — जब कि नदीका काम मंत्रिता, मेलजोलका होता है। किसानोको और पथिकोको, पशुओको और पक्षियोको अपने जलसे सतुष्ट करती हुअी नदी जब बहती है, तब वह 'आत्मरति, आत्मक्रीड और आत्मन्येव च सतुष्ट' जैसी मालूम होती है। आप नदीसे पूछिये, 'तेरा अितिहास क्या है?' वह जवाब देगी, 'मै पहाडकी लडकी हू। असख्य मानव तथा तिर्यक् प्रजाकी माता हू। मै सागरकी सेवा करती हू, और आकाशके बादल ही मेरे स्वर्गस्थान है। बस अितना अितिहास मेरी दृष्टिमे महत्त्वका है।' ज्यादा पूछो तो तावी कहेगी कि 'आसपासके प्रदेशको पिलानेके बाद मेरा जो पानी बचता है वह मै चिनावको देती हू। चिनाब अपना पानी झेलममे विसर्जन करती है। झेलम सिंधुमे मिलती है। और सिंधु हम सबका पानी सागरमे छोडकर अपनेको और हम सबको कृतार्थ करती है। वही है हमारी सायुज्य मुक्ति। बाकी तुम पागलोका अितिहास तुम जानो। दुश्मनी और पागलपनका अितिहास भला कभी लिखा जाता है? वह तो भूल जानेकी बात है, भूल जानेकी। क्या तुम दुश्मनी और जहरको कायम रखनेके लिअ अितिहास लिखते हो? अैसे अितिहासको दफना दो या धो डालो। सेवाका अितिहास ही सच्चा अितिहास है। द्विगर्तवासी डोगरा, गद्दी और गुज्जर जैसी प्रजा मेरी सतान है। अुनका जीवन ही मेरा जीवन है।'

कश्मीरकी यात्रा पूरी करके हम जम्मू आये और रघुनाथजीके मदिरमें ठहरे। पास मे ही तवी बह रही थी। जम्मूकी ओरका तवीका किनारा खासा अूचा है। तवी भी वैसी ही है जैसी बहुतसी नदिया

होती है। अुनमें असाधारण कुछ नहीं है। अेक महाराष्ट्रीय अिंजीनियरसे हम मिलने गये थे। अुन्होंने बताया कि 'नदीके अूपर बिजलीके यंत्र लगाये गये हैं। अिस बिजलीसे बहुतसा काम किया जा सकता है।' किन्तु नदीको अुससे क्या? वह तो निरन्तर बहती ही रहती है।

१९२६-'२७

३१

सिंधुका विषाद

हिमालयके अुस पार, पृथ्वीके अिस मानदण्डके लगभग बीचमें, कैलासनाथजीकी आंखोंके नीचे चिर-हिमाच्छादित पुण्यवान प्रदेश है, जिसके छोटेसे दायरेमें आर्यावर्तकी चार लोकमाताओंका अुद्गम-स्थान है। अुस पार और अिस पारका विचार यदि न करें, तो हम कह सकते हैं कि अुत्तर भारतकी लगभग सभी नदियां यहींसे अुगती हैं।

हिमालय हिन्दुस्तानका ही है, और किसी देशका नहीं, मानो यही सिद्ध करनेके लिअे हिमालयके अुत्तरकी ओर बहनेवाले पानीका अेक-अेक बूंद अिकट्ठा करके, हिमालयके दोनों छोरोंसे घूमकर अुन्हें हिन्द महासागर तक पहुंचानेका काम सिन्धु और ब्रह्मपुत्र, दोनों नद अखंड रूपसे करते हैं। ये दो नद अैसे लगते हैं, मानो श्री कैलासनाथजीने भारतवर्षको अपनी भुजाओंमें लेनेके लिअे दो बाहुप्रवाह फैलाये हों। हिमालयकी रुकावट मानो सहन न होती हो जिस तरह सतलज और घाघरा हिमालयकी गोदमें से सीधा रास्ता निकाल कर मानसरोवरका जल भारतवर्षके दो बड़े प्रांतोंको पिलाने लगती हैं। जब कि गंगा, यमुना और अुनकी असंख्य बहनें पिताका लिहाज रखकर अिस ओर रहते हुअे वही काम करती हैं। पंजाबकी पांच नदियां और युक्तप्रांतकी (अुत्तर प्रदेशकी) पांच नदियां मिलकर भारतवर्षकी समृद्धिको दसगुना बना देती हैं। ये दसों नदियां भारतीय हैं। केवल सिंधु और ब्रह्मपुत्रको अति-भारतीय कह सकते हैं।

भारतवासी गगा मैयाको प्राप्त करके सिंधुको मानो भूल ही गये है। सिन्धुके तट पर आर्योंके धर्मप्रसिद्ध तीर्थ है ही नही। वैदिक देवताओंके देवता अिन्द्रको जिस प्रकार हम भूल गये है, अुसी प्रकार सप्त-सिंधुमे से मुख्य सिन्धु नदीको भी मानो हम भूल ही गये है। दक्षिण और पूर्वकी ओर महासाम्राज्योकी स्थापना करके प्राचीन आर्य वायव्य दिशाके प्रति कुछ अुदासीनसे बने और अिस कारण हमेशाके लिअे खतरेमे आ पडे। अुत्तरकी ओर तो हिमवानकी रक्षा थी ही। पश्चिमकी ओर ठेठ अन्दर तक राजपूतानेकी मरुभूमि और राजपूत तथा डोगरा जातिके शौर्यसे पूरी रक्षा मिलती थी। अुससे बाहर वेगवती सिंधु रक्षा कर रही थी। अिससे आगे करतार (खिरथर) से लेकर हिन्दूकुश तक प्रचड पर्वतमालाकी रक्षा थी। पहाडी परोपनिसदी (अफगान) लोगोकी स्वातत्र्य-प्रियता भी विदेशियोको अिस ओर आने नही देती थी। मगर जहा देशवासी ही अुदासीन हो गये, वहा पहाडी दीवारे और नदिया कितनी रक्षा कर सकती है? परोपनिसदी लोगोमें यवन मिल गये और बाल्हीकके पास हिन्दुस्तानकी जो शास्त्रीय फौजी सीमा थी, वह खिसकती खिसकती अटक तक आकर अटक गअी। और अटकने भी विदेशियोको अदर आनेसे अटकानेके बजाय भारतवासियोको बाहर जानेसे ही अटकाया! रानी सेमीरामिस हिन्दुस्तान आनेसे नही अटकी। फारसके सम्राट दरायस पजाब और सिंधुसे सुवर्ण-करभार लेनेसे न अटके। युअेची तथा हूण लोग हिन्दुस्तान आनेसे न अटके। सिकदर पाच नदियोको पार करनेसे न अटका। महमूद या बाबरको भी यह अटक न अटका सकी। हमे मालूम होना चाहिये था कि जिस नदीने काबुल नदीके पानीका स्वीकार किया वह पश्चिमकी ओरसे आनेवाले लोगोको नही अटकायेगी!

पश्चिम तिब्बतमे कैलासकी तलहटीमे सिन्धुका अुद्गम है। वहासे सीधी रेखामे वायव्यकी ओर वह दौडती है, क्योकि अतमें अुसे नैऋत्यकी ओर जाना है। कश्मीरमे घुसकर लेहकी फौजी छावनीकी मुलाकात लेती हुअी काराकोरम पहाडकी रक्षामें वह सीधी आगे बढती है। स्कार्डुके पास अुसे होश आता है कि मुझे हिन्दुस्तान जाना है। गिलगिटके किलेको

दूरसे देखकर वह दक्षिणकी ओर मुडती है। चित्रालकी ओर तो वह खुद जाना नही चाहती, लेकिन यह जाचनेके लिअे कि वहाका पानी कैसा है, वह स्वात नदीको अपने पास बुलाती है। स्वात भला अकेली क्यो आने लगी? असुकी निष्ठा काबुल नदीके प्रति है। सफेद कोहका पानी लानेवाली काबुलसे मिलकर वह अटकके पास सिन्धुमे आ मिलती है। अब सिन्धु पूरी पूरी भारतीय बन जाती है। स्वात और काबुलके पास सुननेके लिअे काफी अितिहास पडा है। खैबरघाटमे कौन कौन लोग आये और गये, बैक्ट्रियाके यूनानी लोग किस रास्तेमे आये, और कर्नल यगहसबड वहासे चित्रालकी चढाअी पर कैसे गया — आदि सारा अितिहास ये दो नदिया बता सकती है। अमीर अमानुल्लाने गरमीके पागलपनमे परसो ही जो चढाअी की थी असुकी बात यदि पूछे तो वह भी ये बता सकेगी। और कोहाटकी क्रूरतासे भी सिन्धु अपरिचित नही है। वजीरिस्तान और बन्नूमे क्षात्र-धर्मको लज्जित करनेवाली जो घटनाअे घटी थी, अनुकी कहानी कुर्रमके मुहसे सुनकर सिन्धुका जी काप अुठता है। कुर्रु या कुरम नदी सिन्धुमे मिलती है तब असुका प्रवाह बिगडता है। पहाडके अभावमे वह मर्यादामे नही रह पाता। छोटे बडे टापू बनाती बनाती सिन्धु डेरा अिस्माअिलखासे लेकर डेरा गाजीखा तक जाती है।

अब सिन्धु पाचो नदियोके पानीकी राह देखती हुअी सबूरी होकर दौडती है। जम्मूकी ओरसे आनेवाली चिनाब कश्मीरी झेलम नदीसे मिलती है। लाहौरके वैभवका अनुभव करके तृप्त बनी हुअी रावी अिन दोनोंसे मिलती है। व्यासके पानीसे पुष्ट बनी सतलज अिन तीनोंके पानीमे जा मिलती है। और फिर अुन्मत्त बना हुआ पञ्चनदका प्रवाह अपनी पूरी रफ्तारके साथ मिट्ठनकोटके पास सिन्धुके अूपर टूट पडता है। अितने बडे आक्रमणको सहकर, हजम करके, अपना ही नाम कायम रखनेवाली सिन्धुकी शक्ति भी अुतनी ही बडी होनी चाहिये।

सिन्धु न सिर्फ अपना नाम ही कायम रखती है, बल्कि यहासे वह अपने जीवनकी अुदार कृपाको अनेक प्रकारसे फैलाती हुअी आस-पासके प्रदेशको भी अपना नाम अर्पण करती है। 'त्यागाय सभृतार्था-

नाम्’ के अुदाहरणरूप आर्य राजाओंका ही वह अनुकरण करती है। वडी वडी सात घाटियोका पानी वह अिकट्ठा जरूर करती है, मगर सारा पानी अनेक मुखोंसे महासागरको देनेके लिअे ही। और बीचमे यदि कोअी गरजमद आदमी अुसमे से मनमाना पानी कही ले जाना चाहे, तो सिन्धुको कोअी अेतराज नही है।

फिर भी गगा मैयाकी अुदारता सिन्धुमे नही है। अिसलिअे अटक और सक्करसे लेकर हेदरावाद तक अुस पर पुल वनाये गये है। सक्करका पुल फौजी दृष्टिसे वहुत महत्त्वका है। सिंधुमे स्थित अेक वडे टापूसे लाभ अुठाकर यह पुल वनाया गया है। मगर रोहरीकी ओर जहा पानी गहरा है, वहा यह पुल किसी भी समय पखेकी तरह समेटकर अिकट्ठा किया जा सकता है। यदि फौजके लिअे सिन्धुको पार करना असभव-सा वना देना हो, तो अेक मत्र वोलते ही सारा पुल लुप्त हो सकता है। फिर शिकारपुर-सक्कर अलग और रोहरी अलग।

यह वात नही है कि शिकारपुर-सक्करको अग्रेजोने ही महत्त्व दिया है। यहाके हिन्दू व्यापारी प्राचीन कालमे वोलनघाटके रास्तेमे कदहार जाकर मध्य अेशियामे तिजारत करते आये है। हिरात या मर्व, वुखारा या समरकद, कही भी देखिये आपको शिकारपुरके व्यापारी जरूर मिल जायेगे। शिकारपुरकी हुडी मास्को और पिटर्सवर्ग (लेनिनग्राड) तक सकारी जाती थी। सक्करका स्मरण करे और वडे जहाजके समान पानीमे तैरनेवाले साधुवेला नामक टापूका स्मरण न हो यह असभव है। साधुओकी काव्यमय अभिरुचि हमेशा सुन्दरसे सुन्दर स्थान पसद करती है। साधुवेलाके सोदर्यकी अीर्ष्या सम्राट् भी करेगे।

पता नही, सिन्धुको आराम लेनेकी सूझी या सिघाडे खानेकी, वह यहासे मचर सरोवरकी दिशामे दौडती है। किन्तु समय पर सावधान होकर या खिरथर (करतार) के कहने पर वह वापस लौटती है और शेवणसे आग्नेय दिशामे मुडकर हेदरावाद तक जाती है। यह प्रदेश कअी युद्धोका साक्षी है। मालूम नही, जयद्रथके समयमे यहाकी स्थिति कैसी थी। मगर दाहिर और जच्चके समयमे यह प्रात काफी पिछडा

हुआ रहा होगा। चद्रगुप्तके पहले ओीरानी साम्राज्यको सोना दे देकर निःसत्त्व हो जानेके कारण कहो, या वहाके ब्राह्मण राजाओके अनाचारोके कारण कहो, वहाकी प्रजा बिलकुल कगाल और कमजोर हो गओी थी। ओीरानका बादशाह आये या सिकदर आये, बगदादका मुहम्मद-बिन-कासिम आये या सर चार्ल्स नेपियर आये, सिन्धु-तटवासी लोग हर समय हारे ही हैं।

जब सिकदरने जहाजोमे बैठकर सिन्धुको पार किया तब अुसने अपनी रक्षाके लिअे दोनो किनारो पर अपनी फौज चलाओी थी। आज अग्रेजोने सिन्धुकी रक्षाके लिअे नही, बल्कि पजाबका गेहू विलायत ले जानेके लिअे सिन्धुके दोनो तट पर रेले दौडाओी है। सिन्धुका प्रवाह काफी वेगवान होनेसे गगाकी तरह अुसमे जहाज नही चल सकते। अिसी कारणसे कराचीके पासके केटी बदरगाहका कोओी महत्त्व नही रहा है।

सिन्धुके मुखका प्रदेश सिन्धुके ही पुरुषार्थके कारण बना है। दूर दूरसे कीचड और बालू ला लाकर सिन्धु वहा अुडेलती गओी है। नतीजा यह हुआ है कि अरबी समुद्रको हमेशा अत्यत सूक्ष्मतासे या ‘बहादुरीसे’ पीछे हटना पडा है।

सिन्धुका प्रवाह सिन्धु नामको शोभा दे अितना विस्तीर्ण और वेगवान है। गरमीके दिनोमे जब पिघले हुअे बर्फके पानीका पूर अुसमे आता है, तब अुसको घोडे या हाथीकी अुपमा शोभा तो क्या दे, वह सूझती भी नही। अुसको तो जल-प्रलय ही कहना होगा। सागरकी लहरे जैसी अुछलती है, वैसी ही सिन्धुकी लहरे अुछलती है। मगर-मच्छोके गुरु बन सके, अैसे तैराक भी पूरके समय पानीमे कूदनेकी हिम्मत नही करते।

प्रेम-दिवानी सती सुहिणीकी ही, कच्चे घडेके आधार पर, अैसे प्रवाहमे कूदनेकी हिम्मत हो सकती थी। प्रेमका प्रवाह, प्रेमका वेग और परिणामके बारेमे प्रेमका निरादर महासिधुसे भी बडा होता है।

सितबर, १९२९

३२

मंचरकी जीवन-विभूति

जिसने पानीको जीवन कहा, वह कवि था या समाजशास्त्री? मुझे लगता है वह दोनो था। विना पानीके न तो वनस्पति जी सकती है, न पशु-पक्षी ही जी सकते है। तव फिर दोनोका आश्रित मनुष्य तो बिना पानीके टिक ही कैसे सकता हे? अीश्वरने पृथ्वीके पृष्ठभाग पर तीन भाग पानी और अेक भाग जमीन वनाकर यह वात सिद्ध की है कि पानी ही जीवन है। वेहोश आदमी आखोको पानीकी अेक ठडी वूद लगनेसे भी होशमे आ जाता है, तो फिर अनत वूदोसे छलकते हुअे सरोवरको देखकर जीवन कृतार्थ होने जैसा आनन्द यदि वह अनुभव करे तो अिसमे आश्चर्य ही क्या?

अनत सागर और असकी अनत तरगोको देखने पर मनुष्यको अुन्माद होना स्वाभाविक है। पर जिसके सामनेके किनारेकी थोडी झाकी ही हो सकती है, ओर अिस कारण आखोको जिसके विशाल विस्तारका माप पानेका आनद मिल सकता हे, अैसे शात सरोवरका दर्शन मित्र-दर्शनके समान आह्लादक होता है। सागर अज्ञातमे कूद पडनेके लिअे हमे वुलाता है, जव कि सरोवर अपनी दर्पण जैसी शीतल पारदर्शक शाति द्वारा मनुष्यको आत्म-परिचय पानेके लिअे प्रोत्साहन देता है। सरोवरमे हमे जीवनकी प्रसन्नताका दर्शन होता है, जव कि सागरमे जीवनकी प्रक्षुब्ध विराटताका साक्षात्कार होता है। सागरका ताडव-नृत्य देखकर जो मनुष्य कहेगा

दिशो न जाने न लभे च शर्म।

वही मनुष्य विशाल सरोवरके किनारे पहुचते ही 'हाश' करके गायेगा

अिदानी अस्मि सवृत्त, सचेता, प्रकृति गत ।

अिस प्रकार सागर और सरोवर जीवनकी दो प्रधान और भिन्न विभूतिया हैं।

मैं जानता था — कभीका जानता था — कि जीवन-विभूतिका अैसा अेक सुभग दर्शन सिंधमें सदाके लिअे फैला हुआ है। किन्तु अुसे देखनेके सौभाग्यका अुदय अभी तक नहीं हो पाया था। जब मेरे लोकसेवक सस्कार-सपन्न रसिक मित्र श्री नारायण मलकानीने मुझे अिस बार सिंधमें घूमनेका आमत्रण दिया, तब मैंने अुनसे यह शर्त की कि अबकी बार यदि जीवन और मरण दोनोंका साक्षात्कार करानेके लिअे आप तैयार हों तो ही मैं आअूगा। अिस तरहकी गूढ वाणीकी अुलझनमें मित्रको लम्बे समय तक डालना मैंने पसन्द नहीं किया। मैंने अुनको लिखा, जहा अेक अेक करके तीन युग दबे पडे हैं, और जहा मृत्युने अपना सबसे बडा म्यूजियम खोला है, वह 'मोहन-जो-दडो'* मुझे फिरसे देखना है। अुसी तरह जहा कमलकदकी जडमें से पैदा होनेवाले असख्य कमलों, अिन कमलोंके बीच नाचनेवाली छोटी-बडी मछलियों, अिन मछलियों पर गुजर करनेवाले रगबिरगे पक्षियों और कमलकद से लेकर पक्षियों तक सबको बिना किसी पक्षपातके अपने अुदरमें स्थान देनेवाले सर्वभक्षी मनुष्योंकी निश्चिततताके साथ जहा वृद्धि होती है, अुस जीवन-राशि मचर सरोवरका भी मुझे दर्शन करना है। नारायणकी स्थिति तो 'जो दिल-पसन्द था वही वैद्यने खानेको कहा' जैसी हुआी होगी। अुन्होंने सिंधके सूफी दर्शनका पालन करके प्रथम लारकानाके रास्तेसे 'मौतके टीले' का दर्शन कराया, और अुसके पश्चात् ही जीवनकी अिस राशिकी ओर वे हमें ले गये।

सिन्धुके पश्चिम तट पर, जहा पजाबका गेहू कराची तक पहुचा देनेवाली रेलवे दौडती है, दादू और कोटरीके बीच बूबक स्टेशन आता है। बगैर पूछे आदमीको कैसे पता चले कि अनूबकर नामके दोनों छोरके अक्षर कम करके बूबक नामका सर्जन हुआ है? स्टेशनसे पश्चिमकी ओर चार मीलका धूल-भरा रास्ता पार करके हम बूबक पहुचे। वहाके लोग बाजे, शहनाअी और थोडी-बहुत दक्षिणा लेकर हमें लेने

* अुसका सही नाम है 'मूअन-जो-दडो'। अिसका अर्थ होता है मरे हुअे लोगोंका टीला।

आये। अुनके साथ सारा गाव घूमकर, गली-कूचोको देखकर, हम अपने मिजवान श्री गोवूमलजीके घर पहुचे। अुनके आतिथ्यको स्वीकार करके खाया-पिया, दस-पद्रह मिनट तक स्वप्नसृष्टि पर राज्य किया और वहाके गालीचो तथा रगाओी-कामकी कद्र करके हम मचरके दर्शन करने निकले।

दो मीलका धूल-भरा रास्ता हमे फिर तय करना पडा। अुसके वाद ही खेतोके वीच अटसट वाते करनेवाली और गडरियोकी कुटियोकी मुलाकात लेनेवाली अेक नहर आओी। जहासे वह शुरु होती थी, वही नओी-पुरानी किश्तियोका अेक झुड कीचडमे पडा था। अुनमे से अेक वडी किश्ती हमने पसन्द की और अुसमें सवार हुअे। ('सवार' या 'असवार' यानी 'अश्वारोही', हम तो नौकारोही हुअे थे।) अिस प्रकार हमने और दो मीलकी प्रगति की। दोनो ओर पानीके साथ क्रीडा करनेवाली रहट घुमानेका पुण्य प्राप्त करनेवाले अूट हमने देखे। खुले वायुमडलमे ही अपना जीवन, अपना विनोद और अपना अुद्योग चलानेवाले किसान भी हमने वहा देखे। और जमीन तथा पानीके वीच आवा-जाओी करनेवाले वनजारे पक्षी भी देखे।

हमारे काफिलेके वीसो जन आनदके अुपासक वने थे। कुछने 'चल चल रे नौजवान — रुकना तेरा काम नही, चलना तेरी शान' वाला कूचगीत छेडा। अिसमे हमनेकी वात तो अितनी ही थी कि नौकारोही हम लोग पैदल कूच नही कर रहे थे, मगर लवे लवे वासोसे कीचडको कोचते कोचते आगे वढ रहे थे। हमारे पैर कोओी हल-चल किये विना अजगरोकी अुपासना कर रहे थे। पर जव सभी खुश-मिजाज होते है, तव वातो तथा गीतोमें औचित्यके व्याकरणकी कोओी परवाह नही करता।

जव चि० रैहानावहनको 'नेनवा फकीर' की मुरलीके सुर छेडनेका निमत्रण दिया गया तभी सच्चा रग जमा, ठीक अिसी समय हमारी नहरने अपना मुह चौडा करके हमारी किश्तीको सरोवरमे ढकेल दिया। फिर तो पूछना ही क्या? जहा देखो वहा जीवन ही जीवन फैला आ था! पद्रहसे वीस मील लवा और दस मील चौडा जीवनका

काव्यमय विस्तार ! ! पानीकी विस्तृत जलराशिकी कांति और बीच बीचमें हरे घासके टापुओंकी शांति ! प्रकृतिको अितना काव्य कैसे सूझा होगा ? मैंने गोवूमरजीसे कहा, 'यहां तो मेरा हृदय द्रवित होता जा रहा है।' अुन्होंने अुतनी ही रसिकताके साथ जवाब दिया 'यदि आप नवम्बरमें यहां आते तो यहांके लाखों कमलोंसे दब जाते। आपको यदि यह अुल्लास देखना हो तो अपने विष्णुशर्माको किसी भी साल लिखकर सूचना कर दीजिये। वे मुझे लिखेंगे और मैं आपके लिअे सब तैयारी कर रखूंगा। हमारा प्रदेश अितना अलग पड़ गया है कि आपके जैसे लोग शायद ही यहां आते हैं। जहां तक मुझे याद आता है, अिसके पहले यहां अेक ही महाराष्ट्रीय प्रोफेसर आये थे और वे भी आपकी ही तरह आनन्द-विभोर हो गये थे। हां, हर साल कुछ गोरे फौजी अफसर यहां मछलियां मारने या शिकार खेलने जरूर आते हैं। मगर अुससे हमें क्या लाभ हो सकता है ?'

दूरी पर अेक किश्ती दिखाअी दी। देहातका कोअी कुटुंब स्थलांतर करता होगा। अुनकी नारंगी रंगकी ओढनी तथा नीले रंगके पाय-जामेका प्रतिबिंब पानीमें कितना सुशोभित हो रहा था — मानो ग्रामीण काव्य ही आनंदमें आकर जल-विहार कर रहा हो ! दूर दूर काले जल-कुक्कुट पानीकी सतह पर तैरते हुअे अुदर-पूजन कर रहे थे। हममें से कुछ लोगोंको किश्तीके किनारे बैठकर पानीमें पांव धोनेकी सूझी। अुन्होंने रिपोर्ट दी कि कहीं पानी बिलकुल ठंडा है और कहीं कुनकुना। अिसका कारण क्या है, यह तो लोग मुझसे ही पूछेंगे न ? अैसी लहरी टोलीमें मैं हमेशा सर्वज्ञ होता हूं। मैंने फौरन कारण ढूंढ निकाला और सबको शास्त्रीय अुपपत्तिका संतोष प्रदान किया।

'वे सामने जो टेकरियां दिखाअी देती हैं, अुनका क्या नाम है ?' मैंने आसपासके लोगोंसे पूछा। अुन्हें मेरे प्रश्नसे आश्चर्य हुआ। मानो अुन्हें मालूम ही नहीं था कि स्वदेशी टेकरियोंके नाम भी होते हैं। और अिधर प्रत्येक रूपके साथ यदि नाम न जुड़ा हो तो मेरी दार्शनिक आत्मा संतुष्ट नहीं होती। हमारी टोलीमें नूरकाका अेक छोटा, नाजुक और शर्मीले स्वभावका लड़का अेक कोनेमें बैठा था। मैंने

अुसे 'औस्सरदास' कहकर पुकारा। पाठशालामें पढा हुआ भूगोल अुसके काम आया। अुसने तुरन्त कहा, 'सामनेकी टेकरियोंको खिरथर कहते हैं।' मैं हस पडा और मेरे मुहसे अुद्‌गार निकल पडा 'धन्य है करतार!' छुटपनमे हाला और सुलेमान पर्वतके नाम हमने रटे थे। आगे जाकर हाला पर्वतने करतारका नाम धारण किया था। अुसका कारण अितना ही था कि अग्रेजोंने खिरथरकी स्पेलिंग की थी Kirthar। विदेशी लिपिके कारण हमारे यहा कअी अनर्थ हुअे हैं। यह अुनमें से ही अेक था। खिरथरकी टेकरिया अिस किनारेसे दस वारह मील दूर है। वहा सिंध पूरा होकर वलूचिस्तान शुरू होता है।

अव सूरज थककर खिरथरका आश्रय लेनेकी सोच रहा था। हमने भी सोचा कि अव लौटकर घर जाना चाहिये और सात वजनेसे पहले जठराग्निको आहुति देना चाहिये! नावने दिशा वदली और हम पूर्वकी ओरकी शोभा देखने लगे। 'वऽऽह सामने दूर जो नाव दिखाअी दे रही है वह अिस समय पश्चिमकी ओर कहा जाती होगी?' मैंने भाअी गोवूमलजीसे पूछा। अुन्होंने वताया, 'अुस किनारे खिरथरकी वगलमे अेक गाव है। वहा महाशिवरात्रिका अेक मेला लगता है। अुस दिन हिन्दू लोग महाशिवरात्रिके कारण वहा अिकट्ठा होते हैं। मुसलमान भी अुस दिन वही अपने किसी पीरके नाम पर अिकट्ठा होते हैं। वहुत वडा मेला लगता है। ये लोग शायद मेलेके लिअे ही जा रहे होंगे।' हम गये अुस दिन फरवरीकी २१ तारीख थी। महाशिवरात्रि विलकुल पास यानी २४ तारीखको थी। हमारे कार्यक्रममें फेरवदल किया ही नहीं जा सकता था। 'आज यदि २४ तारीख होती तो मैं जल्दी निकलकर अुस गावमे जरूर जाता। मैं महाशिवरात्रिका व्रत रखता हू। हिन्दू और मुसलमानोंको अेकहृदय होकर अेक ही अीश्वरकी भक्ति करनेके लिअे हजारोंकी तादादमे अेक ही जगह अिकट्ठा हुअे देखकर अपने हृदयको पवित्र करनेका मौका मैं न छोडता। शिवरात्रिके दिन जिस वृत्तिसे हिन्दू और मुसलमान प्रेमसे अिकट्ठा होते हैं, वही वृत्ति यदि हिन्दुस्तानमें सर्वत्र फैल जाय तो हमारा बेडा पार! वह दिन हिन्दुस्तानके लिअे सुदिन तथा शिवदिन हो जाय।'

अितना कहकर मैं खामोश हो गया। अब किसीके साथ बातें करनेमें मेरी दिलचस्पी न रही। मैं दूर दूर तक देखने लगा। पृथ्वी पर या आकाशमें नहीं, बल्कि कालके अुदरमें देखने लगा। कोलंबस जिस प्रकार श्रद्धापूर्वक अमरीकाका रास्ता खोजता था, अुसी प्रकार शिवरात्रिका कब शिवदिन होगा अिसकी मैं श्रद्धाकी दृष्टिसे खोज करने लगा।

'वह सामने जो हरे हरे खेत दीख पड़ते हैं अुनके पीछे तमाकू या भागकी खेती होती है।' बूबकके अेक साथीने मेरा ध्यान भंग किया। हमने सरोवरमें से नहरमें प्रवेश किया था। नहरके किनारे, बांसकी कमानी पर, पैरोंको बांधकर खड़े हुअे बगुले मछलियोंका ध्यान कर रहे थे। झोंपडियोंमें से चूल्हेका धुआं निकलने लगा था। आगे बूबकके अूंचे अूंचे चौरस मकानोंके स्थापत्यको निहारने लगे। अिन मकानोंके कुछ 'मघ' बगुलोंकी तरह सिर अूंचा करके वायुसेवनके पैंतरेमें पड़े थे। हमने तमाकू और भागके खेत भी पार किये। भागके विषयमें सरकारी नीतिका अितिहास सुना। और घर लौटकर समय पर भोजन करने बैठे।

किन्तु मेरा मन तो मचरके 'ढठ' (बांध) पर महाशिवरात्रिका आनन्द ले रहा था।

मार्च, १९४१

३३

लहरोंका तांडवयोग

[कराचीके पास कीआमारीसे जरा दूर मनोरा नामक अेक टापू है। वहा अेक सुन्दर मदिर है। टापू पर अधिकतर पोर्टट्रस्टके लोग और थोडी-सी फौज रहती है। मनोरा टापू कराचीका गहना तथा समुद्रका खिलौना है। अिसके दक्षिणके छोर पर अेक वडी खोह है, जिस पर समुद्रकी लहरे टकराती है। अिससे आगे काफी दूर तक अेक वडी दीवार खडी करके लहरोको रोका गया है। अिससे वहा लहरोका अखड सत्याग्रह देखनेको मिलता है। यह दृश्य देखनेके लिअे मै अेक वार गया था।

हिंदी-साहित्य-समेलनमे भाग लेनेके लिअे अिस साल कराची गया, तव दुवारा वह दृश्य देख आया। लहरोका असर अुन पत्थरो पर चाहे न भी हो, परतु हृदय पर अुनका असर हुअे विना थोडे ही रहता है! हृदय और समुद्र दोनो स्वभावसे ही अूर्मिल है।]

कोअी प्राकृतिक दृश्य पहली वार देखकर हृदय पर जो असर होता है, वह दूसरी वार देखने पर नही होता। पहली वार सव नया ही नया होता है। अुस समय अज्ञात वस्तुओका परिचय करना होता है। कदम कदम पर आश्चर्य और चमत्कृतिका अनुभव होता है। दूसरी वार अुसी जगह जाने पर किन किन वातोकी आशा करनी चाहिये, अिसका मनुष्यको खयाल होता है। अिसलिअे अुतनी मात्रामें चमत्कृतिके लिअे गुजाअिश कम रहती है। परिचित वस्तुके प्रति प्रेम हो सकता है, आश्चर्य और चमत्कृति तो अपरिचितके लिअे ही हो सकती है।

अैसी ही प्रेमपूर्ण किन्तु अुत्सुकता-रहित वृत्तिसे मै कराचीके पासके मनोराकी लहरे देखनेके लिअे अवकी वार गया। यह आशा भी मनमे थी कि पुराने किन्तु नौजवान मित्रोंसे अिस रम्य स्थान पर विस्रब्ध वार्तालाप हो सकेगा। लहरे तो वहा है ही, अुनको देखकर आनन्द जरूर होगा। अिससे विशेष कुछ नही होगा — अिस प्रकार मनको समझाकर मै वहा गया।

पिछली बार जब गया था तब मैंने अुछलती लहरोंके धवल हास्यको पकडनेके लिअे तरह तरहके फोटो खींचे थे। मगर अुनमें से अेक भी अच्छा नही आया था। अिस कारण अिन लहरोंके प्रति मनमे थोडा गुस्सा होते हुअे भी अितना विश्वास था कि वार्तालापके लिअे वहा अनुकूल वायुमडल अवश्य मिलेगा।

किन्तु वहा जाकर मैंने क्या देखा? पिछली बार जो दृश्य देखा था और जिसके काव्यमय चित्रोको मैंने चित्तमे सग्रह करके रखा था, अुन्हें फीके बना कर चित्तमे मे घो डालनेवाला लहरोका अेक अखड ताडव अेकाअेक दीख पडा! अब बातचीत काहेकी और विस्रब्ध कया काहेकी! मुझे तो वहा मानो अुन्मत्त करनेवाला नशा ही मिल गया। वहा मे यदि अकेला होता तो अिन लहरोके ताडवमें कूदकर अुनके साथ अेकरूप होनेके भीतरी खिचावको रोक पाता या नहीं, यह मे निश्चय-पूर्वक नही कह सकता।

अेक आदमी गाने लगे तो दूसरेको गानेकी स्फूर्ति अवश्य होगी। अेक सियार रात्रिकी शातिके खिलाफ यदि बगावत करे तो दूसरे क्रातिकारी सियार अपने फेफडोकी कसरत जरूर करेंगे। अजी, तरबवाली सितारके मुख्य तारको अपने प्राणोके साथ छेड दीजिये, तुरन्त नीचेके तार अपने-आप अपना आनद-झकार शुरु कर देगे। तो फिर मेरे जैसा प्रकृति-प्रेमी जीव कुदरतकी भव्यताके दर्शन करके अुससे अपना भिन्नत्व यदि भूल जाय तो मानवीय सयानपनकी दृष्टिसे अुसमे आश्चर्य भले हो, किन्तु वह अनहोनी बात नही है।

जिस प्रकार हाथीकी सारी शोभा अुसके गडस्थलमे केंद्रीभूत होती है, किलेकी सपूर्ण शोभा अुसके गजेन्द्र-भव्य बुर्जमे होती है, जहाजकी शोभा अुसके तूतक (अूपरके डेक) मे परिपूर्ण होती है, अुसी प्रकार मनोराके अिस छोर पर किलेके समान जो दीवारे खडी हैं अुनके कारण यह टापू यहा विशेष रूपसे शोभा पाता है, और समुद्रकी लहरें भी यहीं वप्रक्रीडा करके अपनी खुजली (कडु) शात करती है। यह कडु-विनोद सतत चलता रहे तो भी देखनेवाला अूबता नही। अिसलिअे यह दृश्य चिर-मनोहारी होता ही है। परन्तु यहा पर आदमीने अेक लबी दीवार बना-

कर समुद्रकी लहरोको बेहद छेडा है, और अब अितने साल हो गये फिर भी लहरे अिस अधिक्षेप (अपमान)को न तो आज तक सह सकी है, न आगे सहनेवाली है। जितनी वार अुन्हे अिस अपमानका स्मरण होता है, अुतनी ही वार वे बडी फौज लेकर अिन दीवारो पर टूट पडती है और अिन पत्थरोका प्रतिकार करनेके लिअे अेक-दूसरेको भडकाती जाती है। कैसा अुनका यह अुन्माद! कैसी अुनकी दृढ प्रतिज्ञा! कैसा अुनका वह प्राणघातक आक्रमण! आज तो अुनका यह अमर्ष चरम सीमाको पहुच गया था। फिर पूछना ही क्या था! मानो वीरभद्र सारे शिवगणोको अेकत्र करके लहरोंके रूपमे यहा प्रलय-काल मचाना चाहता हो!

अेक अेक लहर मानो अुठती पहाडी-सी मालूम होती थी। अेककी अुत्तुग शोभाको देखकर वैसी ही दूसरी लहरोको अुसकी कदर करना चाहिये। किन्तु अिसके बदले, दोनो अेक होकर अेक नयी ही अूचाअी पर पहुचती है और आसपासकी लहरोको भी अुतनी ही अूचाअी तक चढनेके लिअे अुत्तेजित करती जाती है। और यह ताडव नृत्य, अेक क्षणके लिअे भी रुके विना, अखड रूपसे चलता रहता है। टकटकी लगाकर अिस ताडवको देखते रहिये तो अुसमें अेक प्रचड ताल मालूम होता है। मानो शिव-ताडव-स्तोत्रका प्रमाणिका वृत्त अपनी शक्ति आजमाने लगा है, और दिल भर आने पर प्रवाह-वेग बढनेसे देखते ही देखते प्रमाणिकाका पचचामर छन्द हो जाता है। और फिर अपनी सुधबुध भूलकर पुष्पदत भी अुस तालके साथ ताडव-नृत्य करने लगता है।

जिस तरफ लहरोका आक्रमण अधिकसे अधिक जोरदार है, और जहा टकरानेवाली लहरे चकनाचूर हो जाती है तथा आकाशमें अुनके अिन्द्रधनुषको झेलनेवाला बडा पखा तैयार होता है, वही कुछ सीढिया अखड स्नान करते हुअे ऋषियोकी तरह ध्यान करती बैठी है। लहरोका पानी अुनके सिर पर गिरकर हसता हुआ और गोमूत्रिका-बध करता हुआ सीढिया अुतरता जाता है। दिल्ली-आगरेमें और कश्मीर या मैसूरके वृदावनमे मनुष्यने विलासके जो साधन निर्माण किये है और पानीका प्रवाह श्रावण-भादोकी बडी धाराओमें बहाया है, अुसका यहा स्मरण हुअे विना नही रहता।

मगर कुछ लहरें तो अुस लंबी दीवारके साथ टकराकर अुसके सिर पर पानीकी लंबी लंबी धारायें फेंकनेमें ही मशगूल रहती हैं। लहर टकराती है, दीवार पर सवार होती है और दीवारकी चौडाअीका अनादर करके सामनेकी ओर कूद पडती है और होजकी पिचकारियां दूरसे हमारी ओर दौडती आती हैं — यह दृश्य हर तरहसे अुन्मादक होता है। और यह महोत्सव मनाने आये हुअे हम लोगोंका स्वागत करनेका कर्तव्य मानो अपने सिर आ पडा हो, अैसा समझकर अिन धाराओं तथा अुस परसेमें से फेंकेवाले पानीके कण सारी हवाको शीतल बना देते हैं। जब यह खारी ओस आंखकी पलकों पर, नाककी नोक पर और आश्चर्यसे खुले हुअे ओठों पर जमती है, तब लगता है कि हम भी नागरिक या ग्रामवासी नहीं हैं, बल्कि वरुणके सामुद्रिक राज्यकी प्रजा हैं।

और महासागरके अूपरसे दौडकर आनेवाला शुद्ध पवन कहता है "अिस दृश्यका आतिथ्य स्वीकारनेकी पूरी शक्ति तुम्हारे पामर हृदयमें कहांसे होगी! चलो, मैं तुम्हें दूर दूरसे लाये हुअे ओझोन (प्राणवायु) की दीक्षा देता हूं, पाथेय देता हूं। ओझोन जब तुम्हारे दिलमें भर जायगा, तब तुम्हारे फेफडे प्राणपूर्ण होंगे, पवित्र होंगे। अुसके बाद ही तुम यहांका वातावरण तथा अुदावरण सहन कर सकोगे।" और सचमुच, प्राणवायुके श्वासोच्छ्वाससे हरेकके मुंह पर अुषाकी लालिमा छा गयी थी। हम आठों जन आठ दिशाओंमें देख देखकर भी तृप्त नहीं होते थे।

अिसी स्थान पर हमारे पहले अेक सिंधी सज्जन अेक बडी शिला पर बैठकर चुपचाप किस काव्यमें ओतप्रोत होकर भावनामें नहा रहे थे। वे न बोलते थे, न चलते थे, न हंसते थे, न गाते थे। तल्लीन होकर जरा डोल रहे थे। हम बातें कर रहे थे, हृदयके अुद्गार प्रकट कर रहे थे। मगर अुन सज्जनको अिसकी क्या परवा? अुन्हें मनुष्यकी गाज नहीं मनाना था, बल्कि लहरोंकी मस्तीको जानना था, अुसे पी जाना था। अेक पैर पर दूसरे पैरकी पलथी लगाकर अुस पर कुहनी रखकर और सिरको अेक ओर झुकाकर वे समुद्रका ध्यान कर रहे थे।

अुनकी वालोकी मागमे मीकर-विन्दुओकी मुक्तामाला चमक रही थी। मानो वरुणदेवने अपना वरद हस्त अुनके सिर पर रख दिया हो।

हमने स्थान वदल वदल कर अनेक दृष्टिकोणोंसे यह दृश्य देखा। अिससे लहरोंके मनमे हमारे प्रति सद्भावकी जागृति हुआी। वे कहने लगी, "आओ आओ, अितनी दूरसे क्या देख रहे हो? तुम पराये नही हो। पास आओ, मौज मनाओ, लहरोंका आनन्द लूटो, हमो और कूदो। यह क्षण और अनत काल — अिनके वीच कोओ फर्क नही है। चलो, आ जाओ।" लहरोंकी शिष्टता भिन्न प्रकारकी होती है। न्योता देते समय वे हाथ नही पकडती, वल्कि पाव पखारती हैं। हमने सभ्यतासे अिस स्वागतको स्वीकार करके कहा, "सचमुच आनेका जी होता है। मगर अभी नही। अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है। काफी वाकी रहा है। हमारे मनके कओ सकल्प अभी अधूरे हैं। जिस भारतमाताके चरणोंका तुम अखड रूपसे प्रक्षालन कर रही हो, वह अभी तक आजाद नही हुआी है। मनुष्य-मनुष्यके वीचका विग्रह शात नही हुआ है। गरीव तथा दवी हुआी जनताके साथ जव तक पूरी अेकताका हम अनुभव नही करते, तव तक तुम्हारे साथ अेकता अनुभव करनेका अधिकार हमे कैसे प्राप्त होगा? तुम मुक्त हो, अखड कर्मयोगी हो, सतत कार्य करते हुअे भी तुम्हारे लिअे कर्तव्य जैसा कुछ नही रहा है। हम तो कर्तव्योंका पहाड सामने देखते हुअे भी आलस्यमे पडे हैं। तुम्हारी पक्तिमे खडे रहकर नाचनेका अधिकार हमें नही है। तुम हमे प्रेरणा दो। हमारे दिलमे तुम्हारी मस्ती भर दो। तुम्हारा वेदान्त हमारे चित्तमे वो दो। फिर हमे अपना कार्य पूरा करनेमे, भारतको आजाद करनेमे देर नहीं लगेगी। और यह अेक सकल्प यदि पूरा हुआ, तो विना किसी विषादके हम तुम्हारे पास दौड आयेंगे। तुम्हारे साथ अद्वैत सिद्ध करेंगे। और जिसमे यदि हड्डिया, चमडी या मास शिकायत करने लगे, तो जिस प्रकार कष्ट देनवाले कपडे फाड दिये जाते हैं, अुसी प्रकार अिस शरीरको हम चकनाचूर कर डालेंगे और फिर अुसके पिंडोंके नये नये आकारोंको देखकर हसने लगेंगे।"

"ठीक है। जब अनुकूल हो तब आना। तुम आओ या न आओ, हमारा यह तांडव-नृत्य तो चलता ही रहेगा। जीवनका रास पूरा करके गोपियां अिसमें मिल गअी हैं। संसारके चक्रव्यूहमें मुक्त हुअे तमाम साधु-संत, फकीर और औलिये अिसमें आ मिले हैं। विज्ञानवीर तथा सत्यके अुपासक अिसमें मिलकर शांत हो गये हैं। अिसीलिअे हमारा यह संघ अखंड अशांति मचाते हुअे भी शांतिका सागर-संगीत सुना सकता है।

"क्या तुम्हें सुनाअी देता है यह संगीत?"

जून, १९३७

३४

सिन्धुके बाद गंगा

फरवरीकी १५ या १६ तारीखको ठेठ पश्चिमकी ओर रोहरी-सक्करके बीच सिंधुके विशाल पट पर जल-विहार करनेके बाद और २८ फरवरीको कोटरीके समीप अुसी सिन्धुके अंतिम दर्शन करनेके बाद, बारह-पंद्रह दिनके भीतर ही पूर्वकी ओर पाटलिपुत्रके निकट गंगाका पावन प्रवाह देखनेको मिला। यह कितने सौभाग्यकी बात है! आर्योंकी वैदिक माता सिन्धु और अुन्हीं भारतीयोंकी सनातन माता गंगाके दर्शन अिस प्रकार अेकके बाद अेक होते रहे तो अुस सौभाग्यका स्वागत कौनसा नदी-पुत्र नहीं करेगा? गंगाको जिस प्रकार अुसके पानीका अुपयोग करनेवाला भगीरथ मिला अुसी प्रकार यदि सिन्धुको भी मिल जाता, तो राजस्थान और सिन्धका अितिहास दूसरे ही ढंगसे लिखा जाता। सिन्धु बिना किसीके कहे, अनेक दिशाओंमें बहती है और अपना पात्र बदलनेमें संकोच नहीं करती। तब यदि भगीरथ और जह्नु जैसे अुपासक अिंजीनियर अुसे मिल जाते, तो वह सिंध तथा सौवीर देशोंके लिअे क्या क्या न करती? क्या आज भी रोहरी और सक्करके बीच अपना पानी अेकत्र करके नहरोंके सात प्रवाहों द्वारा

यह स्वच्छंद-विहारिणी सिन्धु अपना स्तन्य सिंधु देशको पिलाने नहीं लगी है?

सिन्धु नदी पंजाबके सात प्रवाहोंका पानी अेकत्र करके मिट्ठन-कोट और कश्मोर तक युक्तवेणी रहती है, बड़ी सिन्धु सक्कर-रोहरीके बाद पहले-पहल मुक्तवेणी हो जाती है और कोटरीके बाद केटी बंदर तक तो न मालूम कितने मुखोंसे समुद्रमें जा मिलती है।*

गंगा नदी गोआलंदो तक युक्तवेणी रहती है। गोआलंदोमें गंगा और ब्रह्मपुत्राके मिलनसे अुनके अमर्याद प्रवाहोंकी अैसी अराजकता मच जाती है कि मुक्तवेणी और युक्तवेणीका भेद ही नहीं किया जा सकता। कलकत्ताके बाद सुन्दरवनका पंखा देखनेको जरूर मिलता है। किन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि गंगाका विस्तार अितना ही है।

गांधी-सेवा-संघकी अंतिम बैठकके लिअे हम मालीकांदा गये थे। तब असम प्रांतसे शिलांगके रास्ते सुरमा घाटी होकर वापस लौटे थे। जाते और आते समय भगवती गंगाके विविध दर्शन किये थे। किन्तु सम्राट् अशोकके पाटलिपुत्र (आजकलके पटना) के समीप गंगाकी शोभा अनोखी है। पटनाके पास मैंने भिन्न भिन्न समय पर कमसे कम तीन-चार बार गंगा पार की होगी। फिर भी वहां गंगाके दर्शनकी नवीनता कम होती ही नहीं। मेरा खयाल है कि नेपालकी यात्रा

---

* जिस प्रदेशमें अनेक प्रवाह आकर अेक नदीमें मिल जाते हैं, अुस सारे प्रदेशको अंग्रेजीमें 'region of tributaries' कहते हैं। और जहां अेक नदीमें से अनेक प्रवाह निकल कर चारों ओर फैल जाते हैं अुस प्रदेशको 'region of distributaries' कहते हैं। हमारे यहां यही भाव व्यक्त करनेके लिअे 'युक्तवेणी' और 'मुक्तवेणी' शब्द कायम किये गये हैं।

जब नदी समुद्रको मिलनेके लिअे दो या अधिक मुखोंमें विभक्त होती है, तब बीचके अुस तिकोने प्रदेशको अुसी आकारके ग्रीक अक्षर परसे 'delta' कहते हैं। हमें अैसे प्रदेशको 'नदीका पंखा' कहना चाहिये।

समाप्त करके मैं मुजफ्फरपुरसे कलकत्ता गया तब पहले पहल पटना गया था। फाल्गुन मासके दिन थे। जहां जायें वहां आमके मौरसे हवा महक रही थी। और अजनबी मैं पटनाके छोटे बड़े रास्तों पर मतवालेकी तरह अपने अंतःकरणमें वसंतोत्सव मना रहा था। वहां जो पहली छाप मन पर पड़ी, वह आज भी मौजूद है। फिर भी अुसके बाद जब जब मैं पटना गया हूं, तब तब कुछ न कुछ नवीनता मैंने वहां अवश्य पायी है।

श्री राजेन्द्रबाबू जहां रहते हैं और जहां बिहार विद्यापीठ चल रहा है, वह सदाकत आश्रम गंगाके ठीक किनारे पर ही है। आश्रमके सामनेका रास्ता लांघकर तीन फुटके बांध पर चढ़ते ही गंगाकी विस्तीर्ण जलराशि पश्चिमसे आकर पूर्वकी ओर बहती हुअी नजर आती है। अुस पारका किनारा देखनेकी यदि कोशिश करें, तो जमीनकी अेक पतली-सी रेखाके सिवा कुछ दिखाअी ही नहीं देता। चकित होकर आप सामने आये हुअे किसी आदमीसे कहें कि 'गंगाका पाट कितना चौड़ा है!' तो वह तुरत हंसकर कहेगा, 'वह जो सामने दीख पड़ता है वह केवल अेक टापू है। अुसके आगे भी गंगाका प्रवाह है। अुस पारका किनारा यहांसे दिखाअी नहीं पड़ता।'

सामने जो पतली-सी लकीर दिखाअी देती है वह अेक चौड़ा टापू है, यह सुनने पर भी यकीन नहीं होता कि पानीके अितने बड़े विस्तारके बाद, लकीरके अुस पार और भी विस्तार हो सकता है। अेक बार संदेह मनमें पैदा हुआ कि वह कुतूहलका रूप अवश्य धारण कर लेता है। कुतूहल परिपक्व होने पर अुसमें से संकल्प अुठता है। और संकल्पके जैसी बेचैन बनानेवाली दूसरी कोअी वस्तु भला हो सकती है?

सदाकत आश्रममें रहे तब तक रोज गंगाके किनारे टहलना हमारा काम था। क्योंकि गंगाकी संस्कृति-पुनीत मोहिनी न होती, तो भी किनारे पर खड़े पुराण-पुरुष जैसे वृक्षोंकी पंक्ति हमें खींचे बिना न रहती। सह्याद्रि या हिमालयके अुत्तुंग वृक्ष जितने देखे हैं, अुनका जी ललचानेकी शक्ति मामूली वृक्षोंमें कहांसे आवे? किन्तु गंगाके

तट पर, पटनाके आसपास, योजनो तक चलते रहिये — चारो ओर अूचे-अूचे वृक्ष अपनी पुष्ट शाखाये चारो दिशाओमे अूपर और नीचे दूर दूर तक फैलाये हुअे नजर आते है। किसी समय, पटना सम्राट् अशोकके साम्राज्यकी राजधानी था। आज वही पटना वृक्षोंके अेक विशाल साम्राज्यका पोषण करता है।

अैसे स्थान पर खडे रहकर, जो न तो बहुत दूर हो और न बहुत पास, अिन बडे वृक्षोंके अग-प्रत्यगोकी शोभाको यदि ध्यानसे निहारे, तो अुनका स्वभाव, अुनकी चित्तवृत्ति और अुनकी कुलीनताका खयाल आये बिना नही रहता। सभी वृक्ष तपस्वी नही होते। कुछ मौनी ध्यानी जैसे दिखाओी देते है, कुछ क्रीडाप्रिय होते है, कुछ वियोगी विरही जैसे, तो कुछ अत्युत्कट प्रेमी जैसे। परन्तु किसी भी स्थितिमें वे अपना आर्यत्व नही छोडते। कुछ वृक्षोकी शाखाये अूपर अितनी फैली हुअी होती है, मानो टूटते हुअे आसमानको बचानेका काम अुन्हीके जिम्मे आया हो।

चार बूढे सज्जन शातिसे गभीर बाते कर रहे है और तुतलाते हुअे बच्चे अुनकी गोदमे अुछल-कूद मचा रहे है — क्या अैसा दृश्य आपने कभी देखा है? बूढे बच्चोको डाटते नही, कोमलताके साथ अुन्हे पुचकारते है। फिर भी अुनकी गभीर बातचीतमे खलल नही पडती। गगाके किनारे सनातन मत्रणा चलानेवाले अिन पेडोके बीच जब छोटे-बडे पक्षी मीठा कलरव करते है, तब ठीक वही वृद्ध-अर्भक-दृश्य नये ढगसे आखोके सामने आता है।

फाल्गुन पूर्णिमाके आसपासके दिन थे। शामको अगर घूमने निकलते तो 'चदामामा' पेडोकी ओटमे मे दर्शन देते ही थे। हमने यहा अेक नये आनदकी खोज की। जिस प्रकार अलग अलग प्रकारकी अगूठियोमे जडने पर हीरा नयी नयी शोभा दिखाता है, अुसी प्रकार अलग अलग पेडोकी ओटमे चाद नयी नयी छवि धारण करता था। अेक बार सीग जैसी दो शाखाओके बीचमे अुसे खडा करके हमने देखा। दूसरी बार गोल-कीपर (goal-keeper) या लक्ष्यपाल जैसे अेक बडे पेडको अुसी चद्रको हवा-गेद (फूटबॉल) की तरह अुछालते हुअे

देखा। दीघाघाटके नदरगाहके पास अेक जगह तो दो पेडोंके नीच चन्द्रमा अिस तरह जमकर बैठा था कि मालूम होता था माना "यह चाद तेरा नहीं है, मेरा है" कहकर पेड आपसमें लड रहे हो। और अंतमे अिन दोनोका झगडा निपटानेके लिअे चादने मुह बनाकर कहा, "तुम दोनोमे से मै किसीका भी नहीं हू, जाओ।" अितना कहकर वह रुका नहीं। वह तो सीधा अूंचा ही चढता गया। चद्रकी अिस तटस्थताकी कद्र करके हम थोडे आगे बढे ही थे, अितनेमें वह अपना न्यायाधीशपन भूलकर अेक पेडमे जाकर चिपक गया! और अनमें भुजाओमे जकडे जानेके कारण हसने लगा।

मनमें सकल्प अुठा अैसे चादनीके दिनोमे कुछ समय सामनेके अुस निर्जन टापूमे बिता सके तो कितना अच्छा हो! होली और धुलेडीके दिन तो छोड ही देने पडे, क्योकि लोग होली पीकर अुन्मत्त हो गये थे, और अुन्होने दो दिन तक गगा-किनारेके कीचड और पेडोके रगोका अनुकरण करनेका निश्चय किया था। जब वे अिससे निवृत्त हुअे, तब हम अेक नावकी व्यवस्था करके चल पडे।

चद्र निकले अुसके पहले रवाना होनेमें भला मजा कैसे आवे? किन्तु चद्रको जल्दी थी ही नहीं। निकला भी तो प्रकाश नहीं देता था। किसीको पता चले बिना जिस प्रकार कोअी नया धर्म स्थापित होता है, अुसी प्रकार चद्रमा निकला। अुसका प्रकाश अितना मद था कि स्वातिको भी अुस पर तरस आ रहा था। जब चद्र ही अितना मद था, तब वफादार चित्रा अदृश्य रहे, अिसमे आश्चर्य क्या? शनि और गुरु मत्र पढते हुअे पश्चिमकी ओर अस्त हो रहे थे। तारकाकित झोपडीके स्वामी अगस्ति दक्षिण पर आरोहण कर रहे थे। हमारी नाव चलने लगी। पानीमे चन्द्रका अेक लम्बा स्तभ दिखाअी देने लगा। प्रथम स्थिर, बादमे तरल। हम ज्यों ज्यो आगे बढते गये त्यो त्यो पानीका पृष्ठभाग अधिकाधिक चचल होता गया, और भाति भातिकी आकृतियोका प्रदर्शन करने लगा।

मेरे मनमे विचार आया कि पानीके जलने और रफ्तारके साथ ये आकृतिया भी बदलती है। तो अिनका अध्ययन करके हरेकको अलग

अलग नाम देकर अैसी योजना क्यों न बनायी जाय कि नदीकी रफ्तार दिखानेके लिअे अुन आकृतियोंका नाम ही बता दिया जाय? अुच्च और नीच ध्वनिको हम यदि 'सा, रे, ग, म, प, ध, नी' जैसे नाम दे सकते है, अत्यत अुग्र तापको (white heat) सूर्यकांति अुष्णता कह सकते है, तो नदीकी रफ्तारको गोमूत्रिका-वेग, वलय-वेग, आवर्त-वेग, विवर्त-वेग आदि नाम क्यों नही दे सकते?

अिस कल्पनाके साथ ही मै विचारोंके आवर्तमें अुतर गया और चित्रा कब प्रकट हुअी, अिसका पता ही न चला। हम मनवारमे पहुचे और मुझे प्रार्थना सूझी। अैसे स्थान पर आखे मूदकर कहीं अधेरी प्रार्थना की जा सकती है? हमारा प्रार्थना-स्वामी जब हमारे सामने विविध रूपसे प्रत्यक्ष विराजमान हो, तब आँखे मूंदकर हम गुहा-प्रवेश किसलिअे करे? 'रसो वै स' कहकर जिसे हम पहचानते है, वह जब रसपूर्ण भूमि, पवित्र जल, सौम्य तेज, आह्लादकारी पवन और पितृ-वात्सल्यसे हमारी ओर देखनेवाले आकाशके विस्तार आदिके विविध रूपोंमे प्रकट हो और 'विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिन, रसवर्जं रसोप्यस्य पर दृष्ट्वा निवर्तते।' श्लोक हम गाते हो, तब सारा जीवन-दर्शन नये सिरेसे सोचा जाता है। गहरा विचार लम्बा होता ही है, अैसी कोअी बात नही है। **रसका निवर्तन कब होता है और परिवर्तन किस तरह होता है,** अिसका सारा मीमासा मैने तीन-चार क्षणोंमे ही मनमे कर ली और देखते ही देखते प्रार्थनामे ताजगी आ गअी। 'रघुपति राघव राजाराम' की धुन शुरू हुअी, और चचल मन जीवन-रसकी गभीर मीमासा छोडकर तुरन्त पूछने लगा, 'श्री रामचद्रजीने गुहककी सहायतासे गगा किस स्थान पर पार की होगी? गुहककी नाव हमारी नावके अितनी चौडी होगी या किसी पेडके तनेसे बनाअी हुअी नन्हीसी डोंगी जैसी होगी?'

बातकी बातमे हम अुस टापू पर पहुच गये। और सलिल-विहार छोडकर हमने सिकता-विहार शुरू किया। चमकीली बालू चमकीले पानीसे कम आनददायक नही थी। टापूके किनारे थोडी दूब अुगी हुअी थी। अेक क्षणका विचार करके हमने निश्चय कर लिया कि यहा

सांप, बिच्छू, कांटा कुछ भी नहीं हो सकता। यहां तो अक्षुण्ण बालू ही बिछी हुअी है। यदि कोअी निशानी है तो वह अस्थिर-मति पवनकी लहरोंकी ही। गंगाकी लहरोंके कारण रेतमें बनी हुअी आकृतियोंको मिटानेकी क्रीड़ा मनमौजी पवन किस प्रकार करता है, अिसका आलेख यहां देखनेको मिलता था। रेत पर बनी हुअी आकृतियां अैसा दिखाअी देती थीं, मानो पाठशालाके बच्चे थककर सो गये हों और अुनकी कापियां तथा स्लेटें किताबोंके साथ अिधर-अुधर बिखर पड़ी हों। कहीं मनचले, लहरी पवनकी लिखावट दिखाअी देती, तो कहीं लहरोंकी स्वर-लिपि रेतमें अंकित दिखाअी देती थी। अिनमें अपने पदचिह्न अंकित करनेका मेरा जी नहीं होता था। किन्तु बालूके झट टूट जानेवाले पपड़े जब पैरों तले टूट जाते, तब पापड़ खाने जैसा मजा आता था। पैरोंके आनंदको सारे शरीरने अनुभव किया और अुसे लगा कि दरअसल मूसलकी तरह खड़े खड़े चलनेमें पूरा मजा नहीं है। All rights reserved का दावा करनेवाला कोअी गंगा वहां नहीं था। अिसलिअे हमने निःशंक होकर रेतमें लोटनेकी सोची। किन्तु दुर्भाग्यवश अिस बातमें हमारे साथियोंका अेकमत नहीं हो सका। किसीकी प्रतिष्ठा अिसमें बाधक हुअी, तो किसीका कैंकर्य आड़े आया। हमारे सलामी तो हमें वहीं छोड़कर किसीसे मिलने टापूके दूसरे छोर पर चले गये। शराबखानेके नौकर पियक्कड़ोंकी ओर जिस दृष्टिसे देखते हैं, अुसी दृष्टिसे अुन्होंने हम सौंदर्य-पिपासु लोगोंकी ओर देखा होगा।

गया कांग्रेसके बाद हम चंपारणकी ओर गये थे, तब अिसी स्थानसे हमने गंगा पार की थी। अुस समय आश्रमके दो विद्यार्थियोंने अेक मीठा भजन गाया था 'मंगल करहु दयाऽऽऽ करी देवी'। अिस स्थान पर आते ही वह सब याद आया और मैं भीमसेनका अनुकरण करके मुक्तकंठसे गाने लगा। साथियोंने अुदारतासे सार अुसे सह लिया। अिससे मैं और भी चढ़ गया और मथुरादाससे कहने लगा, "मुझे छपरासे मुंगेर तक नावमें जाना है। कितना समय लगेगा?" अैसी यात्रा मेरे नसीबमें है या नहीं, अीश्वर जाने! किन्तु कल्पनामें तो मैंने वह पूरी भी कर ली।

आकाशमें ब्रह्महृदय अस्त होनेकी तैयारी कर रहा था। महाश्वान अपनी मृगयामे मशगूल था। अगस्तिकी झोपडी अब अपनी जगह पर आ गयी थी। और कृत्तिका तटस्थतासे स्मित कर रही थी। पुनर्वसुकी नावने अपना अग्रभाग जरा अूचा करके दक्षिणकी यात्रा शुरू की और हमे अिस बातकी याद दिलाअी कि हम अिस टापूके निवासी नही है, यहासे हमे वापस लौटना है और परियोकी सृष्टिको छोडकर मानवी सृष्टिमे अुतरना है। हम तुरत टापूके किनारे पर आ गये और पुनर्वसुकी तरह अपनी नाव हमने दक्षिणकी ओर बढाअी।

'फिर यहा कब आयेगे?' अैसा विषाद मनमें नही अुठा। गगोत्रीसे लेकर हीरा बदर तक गगाके अनेक बार दर्शन करके मैं पावन हुआ हू और मैयाकी कृपासे आगे भी अनेक बार दर्शन होगे। अब अिस पूर्णानदमे घट-बढ होनेकी सभावना नही है। अिसीलिअे वापस लौटते समय मुहसे शातिपाठ निकल पडा

ॐ पूर्णम् अद, पूर्णम् अिद, पूर्णात् पूर्णम् अुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय पूर्णम् अेवावशिष्यते॥

अप्रैल, १९४१

३५
नदी पर नहर

श्रावण पूर्णिमाके मानी है जनेअूका दिन, और यदि ब्राह्मण्यको भूल जाय तो राखीका दिन। अुस दिन हम रुडकी पहुचे। मजाकिये वेणीप्रसादने देखते ही देखते मुझसे दोस्ती कर ली और कहा, 'अजी काकाजी, आज तो आपके हाथसे ही जनेअू लेगे। यहाके ब्राह्मण वेदमत्र बराबर बोलते ही नही। आप महाराष्ट्र हैं। आप ही हमे जनेअू दीजियेगा।' वेणीप्रसादके मामा परम भक्त थे। अुनसे जनेअूके बारेमे चर्चा चली। अुत्तर भारतके ब्राह्मण चाहते है कि वे ही नही बल्कि तीनो द्विज वर्ण नियमित रूपसे जनेअू पहने और सध्यादि नित्यकर्म करें। मगर यहाके लोगोकी बडी अनास्था है।

अिससे ठीक विपरीत, दक्षिणमें जब ब्राह्मणेतर जनेअू मांगते हैं, तब महाराष्ट्रके ब्राह्मण 'कलौ आद्यन्तयो स्थिति' के वचनके अनुसार अैसी बेहूदी जिद लेकर बैठते हैं, मानो बीचके दो वर्ण हैं ही नहीं। (सौभाग्यसे आज वह स्थिति नहीं रही।) जिन्हें जनेअू पहननेका अधिकार है, वे अुसे पहननेके बारेमें अुदासीन रहते हैं, और जो हाथापाअी करके भी जनेअू पहननेका अधिकार प्राप्त करना चाहते हैं, अुनके लिअे अपना द्विजत्व सिद्ध करनेमें कठिनाअी पैदा की जाती है! यह चर्चा सुनकर वेणीप्रसादको लगा कि 'आज हमें जनेअू मिलनेवाली नहीं है।' अुसने दलील पेश की 'कलियुगमें क्या नहीं हो सकता? नदी पर यदि नदी सवार हो सकती है, तो महाराष्ट्रके ब्राह्मण भी हमें जनेअू दे सकते हैं।' दलील मंजूर हुअी। किन्तु विषय बदला और कलियुगके भगीरथोंकी बहादुरीके अुदाहरण-स्वरूप गंगाकी नहरके बारेमें बातें चलीं।

दोपहरके समय हम लोग मानवका यह प्रताप देखने निकले। गंगाकी नहर शहरके समीपसे जाती है। लड़के अुसमें मछलियोंकी तरह अेक खेल खेल रहे थे। नहरके किनारे किनारे हम अुस प्रख्यात पुल तक गये। वह दृश्य सचमुच भव्य था। पुलके नीचेसे गरीब ब्राह्मणीके समान सोलानी नदी बह रही थी और अूपरसे गंगाकी नहर अपना चौड़ा पाट जरा भी संकुचित किये बिना पुल परसे दौड़ती जा रही थी। पुलके अूपर पानीका बोझ अितना ज्यादा था कि मालूम होता था, अभी दोनों ओरकी दीवारें टूट जायेंगी और दोनों ओरसे हाथीकी झूलके समान बड़े प्रपात गिरना शुरू होंगे। पुलकी दीवार पर खड़े रहकर नहरके बहावकी ओर देखते रहनेसे दिमाग पर अुसका असर होता था। दुःखी मनुष्यको जिस प्रकार अुद्वेगके नये नये अुभार आते हैं, अुसी प्रकार नहरके जलमें भी अुभार आते थे। किन्तु ससुराल आयी हुअी बहू जिस प्रकार अपनी सब भावनायें नये घरमें दबा देती है, अुसी प्रकार गंगा नदीकी यह परतन्त्र पुत्री अपने सब अुभारोंको दबा देती थी। अुसका विस्तार देखकर प्रथम दर्शनमें तो मालूम होता था मानो यह कोअी धनमत्त सेठानी है। किन्तु नजदीक जाकर देखने पर श्रीमतीके नीचे परतन्त्रताका दुःख ही अुसके वदन पर दीन पड़ता था।

अूपरसे नीचे देखने पर निम्नगा मोलानाका क्षीण किन्तु स्वतत्र बहाव दोनो ओरसे आकर्पक मालूम होता था। चुभता केवल अितना ही था कि नहरकी दोनो ओरकी दीवारोमें परिवाहके तीर पर कअी सूराख रखे गये थे, जिनमे से नहरका थोडा पानी अिस तरह सोलानामे गिर रहा था मानो अुस पर अहसान कर रहा हो।

हम पुलसे नीचे अुतरे और सोलानाके किनारे जा बैठे। अूचेसे दिये जानेवाले अुपकारको अस्वीकार करने जितनी मानिनी सोलाना नही थी। मगर कोअी कृपा अवतरित होगी, अैसी लोभी दृष्टि रखने जितनी हीन भी वह न थी। हीनता अुसमे जरा भी नही थी। और मानिनीकी वृत्ति अुसको शोभती भी नही। अुसकी निर्व्याज स्वाभाविकता प्रयत्नसे विकसित अुदात्त चारित्र्यसे भी अधिक शोभा देती थी।

भगीरथ-विद्यामे (अिरिगेशन अिजीनियरिंगमे) पानीके प्रवाहको ले जानेवाले छ प्रकार बताये गये है। अुनमे अेक प्रवाहके अूपरसे दूसरे प्रवाहको ले जानेकी योजनाको अद्‌भुत और अत्यन्त कठिन प्रकार माना गया है। अिस प्रकारके रेलके या मोटरके मार्ग हमने कअी देखे है। मगर, जहा तक मै जानता हू, हिन्दुस्तानमे अिस प्रकारके जल-प्रवाहका यह अेक ही नमूना है। सस्कृतिके प्रवाहकी दृष्टिसे यदि सोचे, तो सारा भारतवर्ष अैसे ही प्रकारसे भरा हुआ है। यहा हरअेक जातिकी अपनी अलग सस्कृति है, और कअी वार आमने सामने मिलने पर भी वे अेक-दूसरीसे काफी हद तक अस्पृष्ट रह सकी है।

१९२६–'२७

३६

नेपालकी वाघमती

कश्मीरकी जैसे दूधगगा है वैसे [illegible] । अितनी छोटी नदीका आर [illegible] अैसा अितिहास प्रसिद्ध [illegible] जबान पर [illegible] गया है। [illegible] घरवाला और [illegible] मदान। दक्षिणका आर [illegible] गौरीशंकरका [illegible] सभालता है। पूर्वका [illegible] है जिसका नारायण।

हिमालयका [illegible] स्वतन्त्र [illegible] प्राचीन [illegible] ललितपुर [illegible] काठमाडू या [illegible] पानीका [illegible] और बीचमें [illegible] पागल [illegible] मिलाना [illegible] आवाज [illegible] आती है। [illegible] बल्कि [illegible] सस्कृतिकी [illegible] मूर्तियां [illegible] नियमोकी [illegible] सकता है, अिसके [illegible] । मालूम होता है [illegible] है।

३६

नेपालकी वाघमती

कश्मीरकी जैसे दूधगगा है, वैसे नेपालकी वाघमती या वाघमनी है। अितनी छोटी नदीकी ओर किसीका ध्यान भी नही जायेगा। किन्तु वाघमतीने अेक अैसा अितिहास-प्रसिद्ध स्थान अपनाया है कि अुसका नाम लाखोकी जवान पर चढ गया है। नेपालकी अुपत्यका अर्थात् अठारह कोसके घेरेवाला और चारो ओर पहाडोसे सुरक्षित रमणीय अण्डाकार मैदान। दक्षिणकी ओर फरपिग-नारायण अुसका रक्षण करता है। अुत्तरकी ओर गौरीशकरकी छायाके नीचे आया हुआ चगु-नारायण अुसको सभालता है। पूर्वकी ओर विशगु-नारायण है और पश्चिमकी ओर है अिचगु-नारायण।

हिमालयकी गोदमे वसे हुअे स्वतत्र हिन्दू राज्यके अिस घोसलेमे तीन राजधानिया अैसी है, मानो तीन अडे रखे गये हो। अत्यन्त प्राचीन राजधानी है ललितपट्टन, अुसके वादकी है भादगाव, और आजकलकी है काठमाडू या काष्टमडप। नेपालके मदिरोकी वनावट हिन्दुस्तानके अन्य स्थलोकी वनावटके समान नही है। मदिरकी छतसे जहा वरसातके पानीकी धारायें गिरती है वहा नेपाली लोग छोटी-छोटी घटिया लटका रखते है। और वीचमें लटकनेवाले लोलकको पीतलके पतले पीपल-पान लगा दिये जाते है। जरा-सी हवा लगते ही वे नाचने लगते है। यह कला अुन्हे सिखानी नही पडती। अेकसाथ अनेक घटिया किणकिण किणकिण आवाज करने लगती है। यह मजुल ध्वनि मदिरकी शातिमे खलल नही डालती, वल्कि शातिको अधिक गहरी और सतरित करती है। भादगावकी कअी मूर्तिया तो शिल्पकलाके अद्भुत नमूने है। शिल्पशास्त्रके सव नियमोकी रक्षा करके भी कलाकार अपनी प्रतिभाको कितनी आजादी दे सकता है, अिसके नमूने यदि देखने हो तो अिन मूर्तियोको देख लीजिये। मालूम होता है यहाके मूर्तिकार कलाको अतिमानुषी ही मानते है।

खेतोमे दूर दूर भव्याकृति स्तूप अैसे स्वस्थ मालूम होते है, मानो समाधिका अनुभव ले रहे हो।

और काठमाडू तो आजके नेपाल राज्यका वैभव है। नेपालमे जानेकी अिजाजत आसानीसे नही मिलती। अिसीलिअे परदेके पीछे क्या है, अवगुठनके अदर किस प्रकारका सौदर्य है, यह जाननेका कुतूहल जैसे अपने-आप अुत्पन्न होता है, वैसे नेपालके वारेमें भी होता हे। आठ दिन रहनेकी अिजाजत मिली है। जो कुछ देखना है, देख लो। वापस जाने पर फिर लौटना नही होगा। अैमी मन स्थितिमें जहा देखो वहा काव्य ही काव्य नजर आता है।

पशुपतिनाथका मदिर काठमाड्से दूर नही है। वह अैसा दिखता है मानो मदिरोके झुडमे वडा नदी वेठा हो। निकटमें ही वाघमनी वहती है। रेतीली मिट्टी प्ररमे अुमका पानी वहता है, अिसलिअे वह हमेशा मटमैला मालूम होता है। अुममे तैरनेकी अिच्छा जरूर होती हे, मगर पानी अुतना गहरा हो तभी न? गुह्येश्वरी और पशुपनिनाथके वीचसे यह प्रवाह वहता है, अिमी कारण अुमकी महिमा है।

पशुपतिनाथसे हम मीधे पश्चिमकी ओर शिगु-भगवानके दर्शन करने गये। रास्तेमे मिली वाघमतीकी वहन विष्णुमती। अिम नदी पर जहा तहा पुल छाये हुअे थे। पुल काहेके? नदीके पट पर पानीमे अेक हाथकी अूचाअी पर लकडीकी अेक अेक वित्ता चौडी तख्तिया। सामनेसे यदि कोअी आ जाय तो दोनो अेकसाथ अुम पुल परसे पार नही हो सकते। दोनोमे से किमी अेकको पानीमे अुतरना पडता हे। कही कही पानी अधिक गहरा होता है, वहा तो आदमी घुटनो तक भीग जाता है।

शिगु-भगवानकी तलहटीमे ध्यानी वुद्धकी अेक वडी मूर्ति सूर्यके तापमें तपस्या करती हे। टेकरी पर अेक मदिर है। अुसमे तीन मूर्तिया हैं। अेक वुद्ध भगवानकी, दूसरी धर्म भगवानकी, तीसरी सघ भगवानकी। हरेकके सामने घीका दीया जलता है। और अेक कोनेमे लकडीकी वनायी हुअी अेक चौखटमे पीतलकी अेक पोली लाट खडी कर रखी है, जिस पर ‘ॐ मामे पामे हुम्’ (ॐ मणिपद्मेऽहम्)का पवित्र मत्र कअी वार खुदा

हुआ है। दस्ता घुमाने पर लाट गोल गोल घूमती है। रुद्राक्ष या तुलसीकी माला फेरनेकी अपेक्षा यह सुविधा अधिक अच्छी है! हर चक्करके साथ अुस पर जितनी बार मत्र लिखा हुआ है अुतनी बार आपने मत्रका जाप किया, और अुतना पुण्य आपको अपने-आप मिल गया, अिसमें सदेह रखनेका कोअी कारण नही है! 'नात्र कार्या विचारणा'। तथागतको अपने सदेशका यह स्वरूप देखनेको नही मिला, यह अुनका दुर्भाग्य है, और क्या? अिसी मदिरके पास पीतलका बनाया हुआ अिद्रका वज्र अेक चबूतरे पर रखा है। भगिनी निवेदिताको अिसका आकार बहुत पसद आया था। अुन्होने सूचना की थी कि भारतवर्षके राष्ट्रध्वज पर अिसका चित्र बनाया जाय।

बाघमतीके किनारे धान, गेहू, मकअी और अुडद काफी पैदा होते है। अरहर वहा नही होती। मालूम नही, अिन लोगोने अिसे पैदा करनेकी कोशिश की है या नही। रुअी पैदा करनेके प्रयत्न अभी अभी हुअे है।

बाघमती नेपाली लोगोकी गगा-मैया है। गोरखनाथ अुनके पिता है।

१९२६–'२७

३७

बिहारकी गडकी

छुटपनमे मैने अितना ही सुना था कि गडकी नदी नेपालसे आती है और अुसमे शालिग्राम मिलते है। शालिग्राम अेक तरहके रास जैसे प्राणी होते है, अुन्हे तुलसीके पत्ते बहुत पसद आते है, पानीमे तुलसीके पत्ते डालने पर ये प्राणी धीरे-धीरे बाहर आते है और पत्ते खाने लगते है, अुन्हे पकडकर अदरके जीवको मार डालते है और काले पत्थर जैसे ये शख साफ करके पूजाके लिअे बेचे जाते है, लेकिन आजकलके कुछ लोग काले रगकी शिलाका अेक टुकडा लेकर अुनमे सुराख करके नकली शालिग्राम

वनाते है, अैसी कअी वातें सुनी थी। अिमलिअे कअी दिनोंमे मनमें था कि अैसी नदीको अेक वार देख लेना चाहिये।

मुझे याद है कि स्वामी विवेकानदने कही लिखा हे कि नर्मदाके पत्थर महादेवके वाणलिग है और विष्णुके शालिग्राम वौद्ध स्तूपोके प्रतीकके तौर पर गडकीमें से लाये हुअे पत्थर है। पेरिसकी वडी प्रदर्शनीके समय अुन्होने किसी भाषण या लेखमे जाहिर किया था कि वाणलिग और शालिग्राम वौद्ध जगतके दो छोर सूचित करते है।

गगा नदीका जहा अुद्गम है, वहीसे वह दोनो ओरसे कर-भार लेती हुअी आगे वटती है। अुमकी माडलिक नदिया अधिकाशत अुत्तरकी ओरकी यानी वायी तरफकी है। चवल और शोणको यदि छोड दे, तो महत्त्वकी कोअी नदी दक्षिणसे अुत्तरकी ओर नही जाती। गगाकी दक्षिण-वाहिनी माडलिक नदियोमें गडकी गगाके लिअे विहारका पानी लाती हे।

हम सव मुजफ्फरपुर गये थे तव अेक दिन गडकीमें नहाने गये। विहारकी भूमि है अनासक्तिके आद्य प्रवर्तक सम्राट् जनककी कर्म-भूमि, अहिसा-धर्मके महान प्रचारक महावीरकी तपोभूमि, अष्टागिक मार्गके सशोधक वुद्ध भगवानकी विहार-भूमि। ये सव धर्मसम्राट् अिस नदीके किनारे अहर्निश विचरते होगे। अुनके असख्य सहायकोने तथा अनुयायियोने जिसमें स्नान-पान किया होगा। सीतामैयाने छुटपनमें अिसमे कितना ही जल-विहार किया होगा। वही गडकी मुझे अपने शैत्य-पावनत्वसे कृतार्थ करे — अिस सकल्पके साथ मैने अुसमें स्नान किया। नदीके पानीको किसी भी प्रकारकी जल्दी नही थी। अुसमें किसी प्रकारका अुत्पात न था। वह शातिसे वहती जाती थी, मानो मारको जीतनेके वाद वुद्ध भगवानका चलाया हुआ अखड ध्यान ही हो।

१९२६–'२७

३८

गयाकी फल्गु

[illegible]

३८

गयाकी फल्गु

संस्कृतमें फल्गुके दो अर्थ होते हैं। (१) फल्गु यानी निःसार, क्षुद्र, तुच्छ, और (२) फल्गु यानी सुन्दर। गयाके समीपकी नदीका फल्गु नाम दोनों अर्थोंमें सार्थक है। पुराण कहते हैं कि अुसे सीताका शाप लगा है। सीताके शापके बारेमें जो होगा सो सही, किन्तु अुसे सिकताका शाप लगा है यह तो हम अपनी आंखोंसे देख सकते हैं। जहां भी देखें, बालू ही बालू दिखाओी देती है। बेचारा क्षीण प्रवाह जिसमें सिर अूंचा करे भी तो कैसे? यात्री लोग जहां तहां खोदकर गड्ढे तैयार करते हैं। लकड़ीके बड़े फावड़ेको लम्बी डोरी बांधकर हलकी तरह अुसे अिन गड्ढोंमें चलाते हैं, जिससे नीचेका कीचड़ निकल कर गड्ढा अधिक गहरा होता है और अधिक पानी देता है।

असंख्य श्रद्धावान यात्री फल्गुके पटमें 'सनान' करके पितरोंके लिअे चावल पकाते हैं और पिंड तैयार करते हैं। चावल, पानी, मटकी, गोबर आदिकी मात्रा पंडोंने हमेशाके लिअे तय कर रखी है। नियमके अनुसार पैसा दे दीजिये, पंडा सब सामग्री ले आता है। गोबरके थपले सुलगाकर अुस पर चावलकी मटकी रख दीजिये, अमुक विधियोंके पूरे होने तक चावल तैयार हो ही जायगा।

फल्गुके किनारे मंदिर और धर्मशालाओंका सौंदर्य बहुत है। अिनमें भी श्री गदाधरजीके मंदिरका शिखर तो अनायास हमारा ध्यान खींचता है।

फल्गुकी सच्ची शोभा देख लीजिये, गयासे बोधगयाकी ओर जाते समय। बालूका लंबा-चौड़ा पाट, आसपास ताड़के अूंचे अूंचे पेड़ और अिनके बीचमें टेढ़ा-मेढ़ा बहता हुआ फल्गुका क्षीण प्रवाह। मगर अुसे क्षुद्र या निःसार कौन कहेगा? यहां रामचंद्र और सीताजी आयी थीं। भगवान बुद्ध यहां घूमे थे। और कअी सत्पुरुष यहां श्राद्ध करने आये थे। अिस महातीर्थको निःसार तो कह ही नहीं सकते। आखिर फल्गु यानी सुन्दर — यही अर्थ सही है।

१९२६-'२७

३९

गरजता हुआ शोणभद्र

'अय शोण शुभ-जलोऽगाध पुलिन-मण्डित ।
'कतरेण पथा ब्रह्मन् सतरिष्यामहे वयम्?'॥
अेवम् अुक्तस् तु रामेण विश्वामित्रोऽब्रवीद् अिदम्।
'अेप पन्था मयोद्दिष्टो येन यान्ति महर्पय'॥

आसेतु-हिमाचल भारतवर्पके वारेमे अेक ही माथ विचार करनेवाले क्षत्रिय गुरु-शिष्यकी अिस जोडीके मनमे शोणनद पार करते समय क्या क्या विचार आये होगे? प्रकृतिके कवि वाल्मीकिने विश्वामित्र और राम, दोनोके प्रकृति-प्रेमका मुक्तकठमे वर्णन किया है। तीनो जनगण-हितकारी मूर्तिया। अुनकी भावनाओका स्रोत भी शोणभद्रकी तरह ही वहता होगा, और आसपासकी भूमिको मुखरित करता होगा।

अमरकटकके आसपासकी अुन्नत भूमि भारतवर्पके लगभग मध्यमे खडी है। वहासे तीन दिशाओकी ओर अुसने अपनी करुणाका स्तन्य छोड दिया है। भौगोलिक रचनाकी दृष्टिमे जिनके वीच काफी साम्य है, किन्तु दूसरी दृष्टिसे सपूर्ण वैपम्य है, अैसे दो प्रातोको अुमने दो नदिया दी है। नर्मदा गुजरातके हिस्मे आयी, और महानदी अुत्कलको मिली।

अमरकटकका तीसरा स्रोत है पीवरकाय शोणभद्र। नर्मदा सुदीर्घा है, महानदी अष्टावक्रा है और शोणभद्र सुघोप है। करीव पाच मौ मीलका पराक्रम पूरा करके वह पटनाके पाम गगाने मिलता है। शोणके कारण ही शोणपुरका स्थान मशहूर है। कहते है कि ग्राहके साथ गजेंद्रकी लडाओी गगा-शोणके सगमके समीपस्थ दहमे ही हुओी थी। मानो अिसी प्रसगको चिरस्मरणीय करनेके लिअे अव भी शोणपुरमे लाखो लोगोका मेला होता है, और अुममे मैकडो हाथी वेचे जाते हैं।

सिन्धु और ब्रह्मपुत्रके साथ शोणभद्रको नर नाम देकर प्राचीन ऋपियोने अुसका समुचित आदर किया हे। वनारमसे गया जाते समय अिम महाकाय और महानाद नदके दर्शन हुअे थे। गाडी वडे पुल परसे जाती है और शोणभद्रका पुलिन-मडिन महापट दिखता रहता हे।

सकरी घाटीमें अपना विकास रुकनेके कारण अधीरताके साथ जब दौडता हुआ वह यकायक विशाल क्षेत्रमें पहुचता है, तब कहा जाअू और कहा न जाअू यह भाव अुसके चेहरे पर स्पष्ट रूपसे दिखाओ देता है। 'नाल्पे सुखम् अस्ति, यो वै भूमा तत् सुखम्'— यह माननेवाले महर्षिगण शोणके किनारे अच्छा अुतार खोजने हुअे जब घूमते होंगे, तब अुनके मनमे क्या क्या विचार आते होंगे? यह तो विश्वामित्र या अुनके मखत्राता प्रभु श्री रामचद्रजी ही जानें।

१९२६–'२७

४०

तेरदालका मृगजल

मेरे विवाहके बाद कुछ ही दिनोमें हम शाहपुरसे जमखडी गये। पिताजी हमसे पहले वहा पहुच गये थे। रातको हम कुडची स्टेशन पर अुतरे। वहासे रातको ही बैलगाडीमे रवाना हुअे। दोनो बैल सफेद और मजबूत थे। रग, सीगोका आकार, मुखमुद्रा और चलनेका ढग सब बातें दोनोमे समान थी। हमारे यहा अैसी जोडीको 'खिल्लारी' कहते है। अिन बैलोने हमें चौबीस घटोमे पैंतीस मील पहुचा दिया।

जमखडी जाते हुअे रास्तेमे अितिहास-प्रसिद्ध तेरदाल आता है। हम तेरदालके पास पहुचे तब मध्याह्नका समय था। दाहिनी ओर दूर दूर तक खेत फैले हुअे थे। काफी दूर, लगभग क्षितिजके पास, अेक बडी नदी बह रही थी। पानी पर सख्त धूप पडनेके कारण वह चमचमा रहा था। और पानी कितने वेगसे बह रहा है अिसका भी कुछ कुछ खयाल होता था। अितनी सुदर नदीके किनारे पेड कम क्यो है, अिसका कारण मैं समझ न सका। मैंने गाडीवानसे पूछा 'अिस नदीका नाम क्या है? कितनी बडी दिखाओ देती है? कृष्णा नदी तो नही है?' गाडीवान हस पडा। कहने लगा, 'यहा नदी कहासे आयेगी? वह तो मृगजल है। पानीके अिस दृश्यसे बेचारे प्यासे हिरन

धोखेमे आ जाते है और धूपमे दौड-दौडकर और पानीके लिअे तडप-तडप कर मर जाते है। अिसीलिअे अुसको मृगजल कहते है।'

मृगजलके वारेमें मैंने पढा तो था। मृगजलमें अूपरके पेडका प्रतिविंव भी दिखाअी देता है, रेगिस्तानमे चलनेवाले अूटोके प्रतिविंव भी दिखाअी देते है, आदि जानकारी और अुसके चित्र मैंने पुस्तकोमे देखे थे। मगर मैं समझता था कि मृगजल तो अफ्रीकामे ही दिखाअी देते होगे। सहाराके रेगिस्तानकी अिक्कीस दिनकी यात्रामे ही यह अद्भुत दृश्य देखनेको मिलता होगा। हिन्दुस्तानमे भी मृगजल दिखाअी दे सकते है, अिसकी यदि मुझे कल्पना होती, तो मैं अितनी आसानीसे और अितनी वुरी तरहसे धोखा नही खाता।

अव मैं देख सका कि हम ज्यो ज्यो गाडीमे आगे वढते जाते थे, त्यो त्यो पानी भी आगे खिसकता जाता था। मैंने यह भी देखा कि अुस पानीके आसपास हरियाली नही थी, और पानीका पट आसपासकी जमीनसे नीचे भी नही था। जमीनकी सतह पर ही पानी वहता था! अूपरकी हवामे भी धूपका असर दिखाअी देता था। फिर तो मृगजलकी मौज देखनेमे और अुसका स्वरूप समझनेमे वहुत आनद आने लगा। वेचारे वैल अधमुदी आखोसे अपनी गतिके तालमे अेक समान चल रहे थे। कोअी वैल चलते चलते पेशाव करता, तो अुसका आलेख जमीन पर वन जाता था और थोडी ही देरमे सूख जाता था। हम आधे-आधे घटेमे सुराहीसे पानी लेकर पीते थे, फिर भी प्यास वुझती नही थी।

अैसा करते करते आखिर तेरदाल आया। धर्मशाला पत्थरकी वनी हुअी थी। देशी रियासतका गाव था, अिसलिअे धर्मशाला अच्छी वनी हुअी थी। मगर सख्त धूपके कारण वह भी अप्रिय-सी मालूम हुअी। मुकाम पर पहुचनेके वाद मैं तालावमे नहा आया। साथमे पूजाकी मूर्तिया थी। वेतकी पेटीमे से अुन्हे निकालकर पूजाके लिअे जमाया। अुनमे अेक शालिग्राम था। वह तुलसीपत्रके विना भोजन नही करता, अिसलिअे मैं गीली धोतीसे, किन्तु नगे पैरो तुलसीपत्र लानेके लिअे निकल पडा। अेक घरके आगनमे सफेद कनेरके फूल भी मिले और तुलसीपत्र भी मिले। दोपहरका समय था। पेटमे भूख थी, पैर जल रहे थे, सिर

गरम हो गया था — ऐसे त्रिविध तापमें पूजा करने बैठा। देवता कुछ कम न थे। ईश्वर एक अवश्य है, मगर सबकी ओरसे एक ही देवताकी पूजा करना तो वह चल नहीं सकता था। पूजा करते समय मेरी आंखोंके सामने अंधेरा छा गया। बड़ी मुश्किलसे मैंने पूजा पूरी की और खाना खाकर सो गया।

स्वप्नमें मैंने हिरनोंके एक बड़े झुण्डको गेंदकी तरह दौड़ते हुए मृगजलका पानी पीने जाते देखा।

ऐसा ही एक मृगजल दाडीयात्राके समय नवसारीसे दाडीके समुद्र-किनारेकी ओर जाते समय देखनेको मिला था। हमें यह विश्वास होते हुए भी कि यह मृगजल है, आंखोंका भ्रम तनिक भी कम नहीं होता था। वेदान्तका ज्ञान आंखोंको कैसे स्वीकार हो?

आजकल कलकत्तेकी कोलतारकी सड़कों पर भी दोपहरके समय ऐसा मृगजल चमकने लगता है, जिससे यह भ्रम होता है कि अभी अभी बारिश हुई है। दौड़नेवाली मोटरोंकी परछाइयां भी उनमें दिखाई देती हैं। भगवानने यह मृगजल शायद इसीलिए बनाया है कि ज्ञान होने पर भी मनुष्य मोहवश कैसे रह सकता है, इस सवालका जवाब उसे मिल जाय।

१९२५

४१
चर्मण्वती चवल

जिनके पानीका स्नान-पान मैंने किया है, उन्हीं नदियोंका यहां उपस्थान करनेका मेरा संकल्प है। फिर भी इसमें एक अपवाद किये बिना रहा नहीं जाता। मध्य देशकी चंबल नदीके दर्शन करनेका मुझे स्मरण नहीं है। किन्तु पौराणिक कालके चर्मण्वती नामके साथ यह नदी स्मरणमें हमेशाके लिए अंकित हो चुकी है। नदियोंके नाम उनके किनारेके पशु, पक्षी या वनस्पति परसे रखे गये हैं, जिसकी मिसालें बहुत हैं। दृषद्वती, सारस्वती, गोमती, वेत्रवती, कुशावती, शरावती, वाघमती,

हाथमती, सावरमती, अिरावती आदि नाम अुन अुन प्रजाओको सूचित करते हैं। नदीके नामसे ही अुनकी सस्कृति प्रकट होती है। तव चर्मण्वती नाम क्या सूचित करता है? यह नाम सुनते ही हरेक गोसेवकके रोगटे खडे हुअे विना नही रहेंगे।

प्राचीन राजा रतिदेवने अमर कीर्ति प्राप्त की। महाभारत जैसा विराट ग्रथ रतिदेवकी कीर्ति गाते थकता नही। राजाने अिस नदीके किनारे अनेक यज्ञ किये। अुनमें जो पशु मारे जाते थे, अुनके खूनसे यह नदी हमेशा लाल रहती थी। जिन पशुओके चमडे सुखानेके लिअे अिस नदीके किनारे फैलाये जाते थे, अिसीलिअे अिस नदीका नाम चर्मण्वती पडा। महाभारतमें अिस प्रसगका वर्णन वडे अुत्साहके साथ किया गया है। रतिदेवके यज्ञमें अितने ब्राह्मण आते थे कि कभी कभी रसोअियोको भूदेवोसे विनती करनी पडती कि 'भगवन्! आज मास कम पकाया गया है, आज केवल पचीस हजार पशु ही मारे गये हैं। अिसलिअे सब्जी-कचूमर अधिक लीजियेगा।'

अुस समयके हिन्दूधर्ममें और आजके हिन्दूधर्ममें कितना वडा अतर हो गया है! यूनानी लोगोके 'हैकॅटॉम' को भी फीका सिद्ध करे अितने वडे यज्ञ करके हम स्वर्गके देवताओको तथा भूदेवोको तृप्त करेंगे, अैसी अुम्मीद अुस समयके धार्मिक लोग रखते थे। वादके लोगोने सवाल अुठाया

> वृक्षान् छित्वा, पशून् हत्वा, कृत्वा रुधिर-कर्दमम्
> स्वर्गं चेत् गम्यते मर्त्यै नरक केन गम्यते?

'पेडोको काटकर, पशुओको मारकर और खूनका कीचड वनाकर यदि स्वर्गको जाया जाता हो, तो फिर नरकको जानेका साधन कौनसा है?' अिस चर्मण्वती नदीके किनारे कअी लडाअियां हुअी होगी। मनुष्यने मनुष्यका खून वहाया होगा। मगर चवलका नाम लेते ही राजा रतिदेवके समयका ही स्मरण होता है।

यदि आज भी हमें अितना अुद्वेग मालूम होता है, तो समस्त प्राणियोकी माता चर्मण्वतीको अुस समय कितनी वेदना हुअी होगी?

१९२६-'२७

नदीका सरोवर

४२

नदीका सरोवर

हमारे देशमें अितने सौंदर्य-स्थान बिखरे हुअे है कि अुनका कोअी हिसाब ही नही रखता। मानो प्रकृतिने जो अुटाअूपन दिखाया अुसके लिअे मनुष्य अुसे सजा दे रहा है। आश्रममें जिन्हे चौबीसो घंटे बापूजीके साथ रहने तथा बातें करनेका मौका मिला है, वे जैसे बापूजीका महत्त्व नही समझते और बापूजीका भाव भी नहीं पूछते, वैसा ही हमारे देशमे प्रकृतिकी भव्यताके बारेमें हुआ है।

हम माणिकपुरसे झांसी जा रहे थे। रास्तेमें हरपालपुर और रोहाके बीच हमने अचानक अेक विशाल सुंदर दृश्य देखा। पता ही नही चला कि यह नदी है या सरोवर? आसपासके पेड किनारेके अितने समीप आ गये थे कि अिसके सिवा दूसरा कोअी अनुमान ही नही हो सकता था कि यह नदी नही हो सकती। मगर सरोवरकी चारो बाजू तो कमोबेश अूची होनी चाहिये। यहा सामने अेक अूचा पहाड आसपासके जंगलको आशीर्वाद देता हुआ खडा था, और पानीमें देखनेवाले लोगोको अपना अुलटा दर्शन देता था। दाढी रखकर सिर मुडानेवाले मुसलमानोंकी तरह अिस पहाडने अपनी तलहटीमें जंगल अुगाकर अपने शिखरका मुंडन किया था।

पुलकी बाअी ओर पानीके बीचोबीच अेक छोटा-सा टापू था — दो अेक फुट लंबा और अेक हाथ चौडा, और पानीके पृष्ठभागसे अधिक नही तो छ अिंच अूचा। अुसका घमंड देखने लायक था। वह मानो पासके पहाडसे कह रहा था, 'तू तो तट पर खडा खडा तमाशा देख रहा है, मुझको देख, मैं कितना सुन्दर जल-विहार कर रहा हू।'

तब यह नदी है या सरोवर? अभी अभी बेलाताल स्टेशन गया। अिसलिअे लगा कि अिस प्रदेशमें जगह जगह तालाब होंगे। किन्तु विश्वास न हुआ। डिब्बेमें बैठे हुअे लोगोंको अवश्य पूछा जा सकता था। मगर अेक तो पैसेंजर गाडी होते हुअे भी दीपावलीके दिन होनेके कारण

अुसमे स्थानिक यात्री नही थे, और यदि होते भी तो अुनने अधिक जानकारी पा सकनेकी अुम्मीद थोडे ही रखी जा सकती थी! युगो तक जीवन-यात्रा विषम बनी रही, अिस कारण लोगोके जीवनमें से सारा काव्य सूख गया है। अिसलिअे जो भी सवाल पूछा जाय, अुनका जवाब विषादमय अुपेक्षाके साथ ही मिलता है। लोगोकी भलमनसाहत अभी कुछ बाकी है, किन्तु काव्य, अुत्साह और कल्पनाकी अुडान अब स्मृतिशेष हो गये हैं।

पर अितना सुन्दर दृश्य देखनेके बाद क्या विषादके विचारोंका सेवन किया जा सकता है? यात्रामें मैं हमेशा अेक-दो नक्शे अपने साथ रखता ही हू। बलिहारी आधुनिक समयकी कि अैसे साधन अनायास मिल जाते है। मैंने 'रोड मैप ऑफ अिन्डिया' निकाला। हरपालपुर और मअुरानीपुरके बीचमे अेक लबी नदी दक्षिणसे अुत्तरकी ओर दौडती है, बेतवामे जा मिलती है और बेतवाकी मददसे हिमतपुरके पास अपना नीर यमुनाके चरणोमे चढा देती है। 'मगर अिस नदीका नाम क्या है?' मैंने नक्शेसे पूछा। वह आलसी बोला 'देखो, कही लिखा हुआ होगा!' और सचमुच अुसी क्षण नाम मिला — धसान! अितने सुदर और शात पानीका नाम 'धसान' क्यो पडा होगा? यह तो अुसका अपमान है। मै अिस नदीका नाम प्रसन्ना रखता। मदस्रोता कहता या हिमालयसे माफी मागकर अुसे मदाकिनीके नामसे पुकारता।

मगर हमें क्या मालूम कि जिस लोककविने अिस नदीका नाम धसान रखा, अुसने अुसका दर्शन किस ऋतुमें किया होगा? वर्षा मूसलधार गिर रही होगी, आसपासके पहाड बादलोको खीचकर नीचे गिरा रहे होगे, और मस्तीमें झूमनेवाले नीर हाथीकी रफ्तारसे अुत्तर दिशाकी ओर तेजीसे दौड रहे होगे। शका पैदा हुअी होगी कि समीपकी टेकरिया कायम रहेंगी या गिर पडेंगी। अैसे समय पर लोककविने कहा होगा, 'देखो तो अिस धसान नदीको शरारत, मानो महाराज पुलकेशीकी फौज अुत्तरको जीतनेके लिअे निकल पडी है!'

किन्तु अब यह नदी अितनी शात मालूम होती है, मानो गोकुलमें शरारत करनेके बाद यशोदा माताके सामने गरीब गाय बना हुआ कन्हैया हो!

सुबह नाश्तेके समय अितनी अनमोली मेजबानी मिलने पर अुसे कौन छोडेगा ?

अघाकर खानेके बाद रिश्तेदारोंका स्मरण तो होना ही है। अब अिस वसानका मंगल दर्शन अिष्ट मित्रोंको किस प्रकार कराया जाय ? न पास कैमरा है, न ट्रेनमें फोटो खींचनेकी सुविधा है। और फोटोकी शक्ति भी कितनी होती है ? फोटोमें यदि सारा आनंद भरना संभव होता, तो घूमनेकी तकलीफ कोअी न अुठाता। मैं कवि होता तो यह दृश्य देखकर हृदयके अुद्गारोंकी अेक सरिता ही बहा देता। मगर वह भी भाग्यमें नहीं है। अिसलिअे 'दूधकी प्यास छाछसे बुझाने' के न्यायसे यह पत्र लिख रहा हूं। भारतकी भक्ति करनेवाला कोअी समानधर्मी झांसीसे करीब पचास मीलके अंदर आये हुअे अिस स्थानका दर्शन करनेके लिअे जरूर आयेगा।

स्टेशन बरवासागर, १४–११–'३९

ता० १६–११–'३९

धसानसे आगे बढे और ओरछाके पास बेतवा नदी देखी। यह नदी भी काफी सुन्दर थी। अुसके प्रवाहमें कअी पत्थर और कअी पेड थे। अुसके लावण्यमें फीका कुछ भी नहीं था। दूर दूर तक ओरछाके मंदिर और महल दिखाअी देते थे, कीचडका दर्शन कहीं भी नहीं हुआ। यह अनाविला नदी देखकर हम झांसी पहुंचे। वहां श्री मैथिलीशरणजीके भाअी — सियारामशरणजी और चारुशीलाशरणजी अपने परिवारके अन्य लोगोंके साथ भोजन लेकर आये थे। मेरे मनमें संदेह था कि काव्य पढ-पढकर काव्यका सर्जन करनेवाले हमारे कवि जिस तरह प्रकृतिका प्रत्यक्ष दर्शन हृदयसे नहीं करते, अुसी तरह अिन कवि-बन्धुओंने भी धसान और बेतवाके बारेमें शायद कुछ न लिखा होगा। अिसलिअे मैंने अुनसे साफ साफ कह दिया कि 'आपने यदि अिन दो नदियों पर कुछ भी न लिखा हो, तो आप निंदाके पात्र हैं!' सियारामशरणजीने अपने विनयसे मुझे पराजित किया। अुन्होंने कहा, 'भैयाजीने (मैथिलीशरणजीने) अिन नदियोंके बारेमें गाने हुअे

कहा है कि सौंदर्यमें बुदेलखडकी ये नदिया गगा-यमुनासे भी वढकर है। अिसलिअे मेरे वडे भाअी तो आपके अुपालभमें नही आयेंगे। हा, मैंने खुद अिन नदियोंके वारेमें कुछ नही लिखा है। मगर मैं कहा अभी बूढा हो गया हू। मुझे तो अभी वहुत लिखना है।"

अुनसे मालूम हुआ कि धसानका मूल नाम था दशार्ण। और यह तो मुझे मालूम था कि वेतवाका नाम था वेत्रवती। दशार्ण = दशाअण = दशाण = धसान। अितना ध्यानमें आनेके वाद धसान नामके वारेमें मैंने जो अूटपटाग कल्पना की थी, वह पत्तोंके महलकी तरह गिर पडी। किसी तरहके सवूतके विना केवल कल्पनाके सहारे खोज करनेवाले मेरे जैसे कअी लोग अिस देशमें होगे। अुनकी गलती वतानेके लिअे जो जानकारी चाहिये अुसके अभावमें अैसी निरी कल्पनायें भी अितिहासके नामसे रूढ हो जाती हैं, और आगे जाकर रूढियोंके अभिमानी लोग जोशके साथ अैसी कल्पनाओंसे भी चिपटे रहते हैं।

मैंने अेक दफा 'वती-मती' वाली नदियोंके नाम अिकट्ठा किये थे। अिसीलिअे वेत्रवती ध्यानमें रही थी। जिसके किनारे वेत अुगते हैं वह है वेत्रवती। दृषद्वती (पथरीली), सरस्वती, गोमती, हाथमती, वाघमती, अैरावती, सावरमती, वेगमती, माहिष्मती (?), चमण्वती (चवल), भोगवती (?), शरावती। अितनी नदिया तो आज याद आती है। और भी खोजने पर दूसरी पाच-दस नदिया मिल जायेंगी। महाभारतमें जहा तीर्थयात्राका प्रकरण आता है, वहा कअी नाम अेकसाथ वताये गये हैं। परशुराम, विश्वामित्र, वलराम, नारद, दत्तात्रेय, व्यास, वाल्मीकि, सूत, शौनक आदि प्राचीन घुमक्कड भूगोलवेत्ताओंसे यदि पूछेंगे, तो वे काफी नाम वतायेंगे या पैदा कर लेंगे। हमारी नदियोंके नामोंके पीछे रही जानकारी, कल्पना, काव्य और भक्तिके वारेमें आज तक भी किसीने खोज नही की है। फिर भारतीय जीवन भला फिरसे समृद्ध किस तरह हो?

नववर, १९३९

४३

निशीथ-यात्रा

४३

निशीथ-यात्रा

जबलपुरके समीप भेडाघाटके पास नर्मदाके प्रवाहकी रक्षा करनेवाले संगमरमरके पहाड हम रात्रिके समय देख आयेंगे, यह खयाल शायद मध्यरात्रिके स्वप्नमें भी न आता। किन्तु 'सबिन्दु-सिन्धु-सुस्खलत् तरंगभंग-रंजितम्' कहकर जिसका वर्णन हम किसी समय सन्ध्या-वंदनके साथ गाते थे, अुस शर्मदा नर्मदाके दर्शन करनेके लिअे यह अेक सुन्दर काव्यमय स्थान होगा, अैसी अस्पष्ट कल्पना मनके किसी कोनेमें पडी हुअी थी।

हिमालयकी यात्राके समय मैं रास्तेमें जबलपुर ठहरा था। किंतु अुस समय भेडाघाटकी नर्मदाका स्मरण तक नहीं हुआ था। गंगोत्री और अुसके रास्तेमें आनेवाले श्रीनगरके चिंतनके सामने नर्मदाका स्मरण कैसे होता? नर्मदा-तटकी गहनताके महादेवको छोडकर मैं गंगोत्रीकी यात्राके लिअे चल पडा था।

फैजपुर कांग्रेसके समय हमने केवल अजंता जानेका सोचा था। किन्तु रेलवे कंपनीने झोन टिकट निकाले, और हममें अिधर-अुधर अधिक घूमनेकी वृत्ति जगा दी। जबलपुरकी यात्रा यदि मुफ्तमें होती है, तो क्यों न हो आयें? — यों सोचकर हम चल पडे। यह सच था कि हम किसी खास कामके लिअे जबलपुर नहीं जा रहे थे, मगर अेक दिन सिर्फ मौज करना है, अैसी भी हमारी वृत्ति नहीं थी।

देशके अलग अलग धार्मिक स्थल, अैतिहासिक स्थान, कला-मंदिर और निसर्ग-रमणीय दृश्य देखनेको मैंने कभी निरी नयन-तृप्ति नहीं माना है। मंदिरमें जाकर जिस प्रकार हम देवताका दर्शन करते हैं, अुसी प्रकार भूमाताकी अिन विविध विभूतियोंके दर्शनके लिअे मैं आया हूं, अिसी भावनासे मैंने अब तक की अपनी सारी यात्रायें की हैं। अपने देशकी रग-रगकी जानकारी मुझको होनी चाहिये और अिस जानकारीके साथ साथ भक्तिमें भी वृद्धि होनी चाहिये, अैसी मेरी अपेक्षा रहती है।

ज्यो ज्यो मै यात्रा करता हू और अभिमान तथा प्रेमसे हृदयको भर देनेवाले दृश्य देखता हू, त्यो त्यो अेक चीज मुझे वेचैन किया ही करती है यह मेरा अितना सुन्दर और भव्य देश परतत्र है, अिसके लिअे मैं जिम्मेदार हू। पारतन्त्र्यका लाछन लेकर मै अिस अद्भुत-रम्य देशकी भक्ति भी किस प्रकार कर सकता हू? क्या मै कह सकता हू कि यह देश मेरा ही है? मै देशका हू अिसमे तो कोअी सदेह नही है, क्योकि अुसने मुझे पैदा किया है, वही मेरा पालन-पोषण अखड रूपसे कर रहा है, वही मुझे रहनेके लिअे स्थान, खानेके लिअे अन्न और आरामके लिअे आश्रय देता है, अपने वालवच्चोको मै अुसीके सहारे, निश्चित होकर छोड सकता हू, जिस अुज्ज्वल अितिहासके कारण मै ससारमे सिर अूचा करके चलता हू, वह आर्योका प्राचीन अितिहास भी अिसी देशने मुझे दिया है। अिस प्रकार मैने अपना सर्वस्व देशसे ही पाया है। किन्तु यह देश मेरा है यो कहनेके लिअे मैने देशके लिअे क्या किया है? मेरा जन्म हुआ अुसके साथ ही मै देशका वना, मगर यो कहनेके पहले कि 'यह देश मेरा है' मुझे जिदगी भर मेहनत करके अिसके लिअे खप जाना चाहिये।

मनमे अिस तरहके विचारोका आवर्त अुठने पर मै क्षण भर वेचैन हो जाता हू, किन्तु अिसी अस्वस्थतामे से धर्मनिष्ठा पैदा होकर दृढ वनती है। अिसी वेचैनीके कारण स्वराज्यका सकल्प बलवान होता है और देशके लिअे — देशमे असह्य कष्ट अुठानेवाले गरीवोके लिअे — यत्किचित् भी कष्ट सहनेका जव मौका मिलता है, तव मुझे लगता है कि मै अुपकृत हुआ हू। और ज्यो ज्यो यात्रा करता रहता हू, त्यो त्यो मनमे नयी शक्तिका सचार होने लगता है। युवकोसे मै हमेशा कहता आया हू कि 'स्वदेशमे घूमकर देशके और देशके लोगोके दर्शन करनेका तुम अेक भी मौका मत छोडना।'

अिस प्रकारकी अुत्कट भावनाका अुदय जव हृदयमे होता है, तव अैसा लगता स्वाभाविक है कि पासमे कोअी न हो तो अच्छा। अपनी नाजुक भावनाओको शब्दोमें लिखकर लोगोके सामने रखना अुतना कठिन नही है। किन्तु अिन भावनाओसे वेचैन होने पर हमारी

जो विह्वल दशा हो जाती है और हम मतवाले बन जाते हैं, उसे कोई देखे यह हमें सहन नहीं होता। अिसी कारण मैं जब जब नदि-यात्राके लिअे चल पड़ता हूँ, तब तब मुझे लगता है कि मैं अकेला ही जाअू और अेकातमें ही प्रकृतिका अनुभव करूँ तो अच्छा होगा।

किन्तु मेरी जाति है कौवेकी। अकेले अकेले सेवन किया हुआ कुछ भी मुझे हजम नहीं होता। अिसलिअे अनिच्छासे ही क्यों न हो, मैं सब लोगोंसे कह देता हूँ 'मुझसे अब रहा नहीं जाता, मैं तो यह चला।' लिहाजा कोअी न कोअी मेरे साथ हो ही लेता है। आखिर लगता है कि अिनके साथ जानेसे हमारे चर्मचक्षुओंको अिनके प्रेम-चक्षुओंकी मदद मिलेगी, और अपना देखा हम चार आँखोंसे और अधिक देख सकेंगे। मेरी अिस स्थितिका वर्णन मैंने अपने अेक मित्रसे लिख-कर कहा था कि 'मैं खोजता हूँ अेकात, किन्तु पाता हूँ लोकात।'

आखिर अिस सबका नतीजा यह होता है कि मुझे समुदायके साथ यात्रा करनी पड़ती है, और अिसलिअे अपनी अकेलेपनकी मनोवृत्तियोंको दबा देना पड़ता है। और अेक ओर मनके अन्तर्मुख बनकर चिंतन-मग्न होने पर भी दूसरी ओर मुझे बाहरके लोगोंके वायुमडलके अनुकूल बनना पडता है।

यात्रामें हो या किसी महत्त्वके काममें हो, मगलाचरणमें कोअी विघ्न न आये तो मुझे कुछ खोया-खोया-सा मालूम होता है। निर्विघ्न प्रवृत्ति यदि मैंने अपनी स्वप्नसृष्टिमें भी न देखी हो, तो जागृतिमें भला वह कहाँसे आयेगी? बड़े उत्साहके साथ हम भुसावलसे रवाना हुअे और अिटारसीमें ही पहली ठोकर खाअी। पहलेसे सूचना देने पर भी अिटारसीके स्टेशन-मास्टर गाड़ीमें हमारे लिअे कोअी प्रबन्ध नहीं कर सके थे। नया डिब्बा जोड़ दें तो उसे खींचनेकी ताकत अेंजिनमें नहीं थी, क्योंकि अिटारसीके पहले ही गाड़ीमें ज्यादा डिब्बे जोड़े गये थे और सब डिब्बे ठसाठस भरे हुअे थे।

क्या अब यहींसे वापस लौटना पड़ेगा? कितनी निराशा! सोचा मनको दूसरी दिशामें मोड़ दें और दिल्लगीके लिअे यहाँसे होशगाबाद तक मोटरसे जाकर नर्मदामाताके दर्शन कर लें और फेंगुसनी ओर
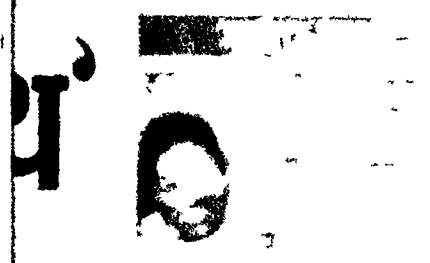
वापस लौट जाय। किन्तु अितनी हिम्मत हारनेकी भी हिम्मत न होनेसे आखिर आयी हुअी गाडीमें हम किसी न किसी तरह घुस गये।

जवलपुर जाकर अेक-दो स्थानिक सज्जनोकी मददसे हम नजदीककी धर्मशालामें जा पहुचे और मोटरकी व्यवस्था करनेकी कोशिशमे लगे।

कोअी वडा काफिला सायमें लेकर यात्रा करनेमे जिस व्यवस्था-शक्तिकी आवश्यकता रहती है, वही युद्धोमें वडी फौजके स्थानातरके समय रहती हे। किमी आश्रम, सस्था, मदिर या छोटे-वडे सस्थानको चलानेमें जिन गुणो या शक्तियोका विकास होता है, अुन्हीका अुपयोग किमी राज्य या साम्राज्यको चलानेमे होता है। कोअी होशियार किमान मौका मिलते ही अुत्तम शामक या प्रवधक हो मकता है, और वडे वडे कल-कारखाने चलानेवाला कल्पक या योजक कारखानेदार किसी साम्राज्यका सूत्र आसानीसे चला सकता है। यात्रामे मनुष्यकी सव तरहकी कुशलताकी परीक्षा होती है। और अुसमे योग्य पुरुप — और स्त्रिया भी, अपने आप आगे आ जाती हैं।

यह विचार यहा क्यो सूझा, यह वतानेके लिअे हम न रुकेंगे। हमें समय पर भेडाघाट पहुचना है, और वारिश तो मानो 'अभी आती हू' कहकर टूट पडने पर तुली हुअी है। यो तो ये वारिशके दिन नही हैं। किन्तु हिन्दुस्तानके चारो ओरके लोग फैजपुर काग्रेसके लिअे जा रहे हैं, यह देखकर वारिशको भी लगा, 'चलो हम भी अलग अलग स्थान देखते हुअे फैजपुर हो आये।' मगर जाडेके दिनोमे वारिशके पावोमें ताकत नही होती, अिसलिअे दौडते दौडते वह रास्तेमे ही गिर पडी और फैजपुर तक पहुच न मकी! अुसके हाथमें यदि 'म्वराज्यकी ज्योति' होती, तो शायद लोगोने अुसे अुठकर आगे वढनेमें मदद की होती।

खैर, हमारी दोनो मोटरें तैल-वेगमे चल पडी और मध्याके समय हम भेडाघाट जा पहुचे। सगमरमरकी शिलायें देखनेके लिअे अिमसे पहले शायद ही कोअी अैमे ममय यहा आया होगा। मगर प्रकृतिके दीवानेको ममयके साथ क्या लेना देना है?

* * *

यहा आकर हम बडी दुविधामे पडे। निकटमे ही अेक टेकरी पर महादेवजीके मदिरको घेरकर चौरासी योगिनिया तपस्या करती हुअी बैठी थी। तपस्या करते करते अहल्याकी तरह वे शिलारूप बन गअी होगी। रामके चरणोका स्पर्श होनेके बजाय मुसलमानोकी लाठियोका स्पर्श होनेके कारण अिनमे से बहुत-सी योगिनियोकी काफी दुर्दशा हुअी है। अिस टेकरीके अुस पार धुवाधार नामक अेक मशहूर प्रपात है। अुसे देखने जाये या सगमरमरकी शिलाये देखनेके लिअे नौका-विहार करे?

विहार करनेके लिअे नौकाये केवल दो ही थी। अिसलिअे हम सब किसी अेक बात पर अेकमत हो जाय अिसमे लाभ नही था। लिहाजा हमने दो टोलिया बनायी। यह स्थान सगमरमरकी शिलाओके लिअे मशहूर था, अिसलिअे बडी टोलीने अुस ओर जाना पसन्द किया। अिसमे सदेह नही कि थोडा अुजियाला जो बचा था अुसीमे यह स्थान देख लेनेमे अक्लमदी थी। हमारी दूसरी टोलीने योगिनियोका दर्शन करके धुवाधार जानेका निर्णय किया और हम सीढिया चढने लगे। सब योगिनियोके दर्शन हमने अपने हाथकी बिजलीकी अेक छोटी-सी मशालकी मददसे किये। मूर्तिया सुन्दर ढगसे बनाअी हुअी और कलापूर्ण लगी। मदिरके भीतर विराजमान महादेव तथा अुनका नदी भी देखने लायक है।

मनमे विचार आया कि जब किसी लडाअीमे हम घायल होते है, तब तुरत अिलाज करके हम अच्छे हो जाते है। गावमे रोगसे किसीकी मौत होती हे, तो हम तुरत अुसे जला देते या दफना देते है। जब जमीन पर दूध गिरता है तब हम अुसके धब्बोको अमगलकारी समझकर अुन्हें जमीन पर रहने नही देते, अुन्हे पोछ डालते है। अैसा मनुष्य-स्वभाव होने पर भी हमने खडित मूर्तिया ज्यो-की-त्यो क्यो रहने दी? क्या धर्मान्ध मुसलमानोके अत्याचारोका स्मरण करानेके लिअे? या खुद अपनी कायरता और सामाजिक गैर-जिम्मेदारीको स्वीकार करनेके लिअे? अप्रतिम कलामूर्तिया बनानेकी कला यदि देशमे से नष्ट हो गअी होती, तो अिस प्रकारके प्राचीन अवशेषोके नमूनोको सुरक्षित रखना

अुचित माना जाता। किन्तु मैंने देखा है कि आबूमें देलवाडेके मंदिरोंमें संगमरमरकी कारीगरी करनेवाले कुटुंबोंको हमेशाके लिअे नियुक्त कर लिया गया है, मंदिरके किसी हिस्सेमें जब कुछ खंडित होता है तो तुरंत अुसकी मरम्मत करके अुसको पहलेकी तरह बना दिया जाता है। अिसी तरह लाहौरके अजायबघरमें भी मैंने देखा है कि मूर्तियोंका कोअी कुशल सर्जन घायल मूर्तियोंके हाथ, पैर, नाक, ओठ आदिको सीमेन्टकी मददसे अिस ढंगसे ठीक कर देता है कि किसीको पता तक न चले। मगर हमारे मंदिर योग्य और पुरुषार्थी लोगोंके हाथमें है ही कहां? हमारे समाजकी स्थिति लावारिस ढोरों जैसी है।

योगिनियोंके आशीर्वाद लेकर हम टेकरीसे नीचे अुतरने लगे। अब भी कुछ प्रकाश बाकी था। अिसलिअे हम हंसते-खेलते किन्तु द्रुत गतिसे धुआंधारकी खोज करने निकल पड़े। जो साथी आगे दौड़ रहे थे अुनकी लगाम खींचनेका और जो पीछे पड़ रहे थे अुन्हें चाबुक लगानेका काम अेक ही जीभको करना पड़ता था। मेरा अनुभव है कि नयी आजादीमें बहकनेवाले बछड़ों या भेड़ोंको ज्यों ज्यों पास लानेकी कोशिश की जाती है, त्यों त्यों सबको छोड़कर दूर दूर भागनेमें अुन्हें बड़ी बहादुरी मालूम होती है, फिर अुन पर रुष्ट होकर अुन्हें वापस लानेमें होनेवाले कष्टके कारण संघपतिको भी अपना महत्त्व बढ़ा हुआ-सा मालूम होता है। परस्पर खींचातानीके कष्टोंका आनन्द दोनोंसे छोड़ा नहीं जाता।

जहां भी हमारी नजर जाती, सफेद पत्थर ही पत्थर नजर आते थे। जबलपुरका ही यह प्रदेश है! किन्तु अेक जगह तो हमें संग-जराहतका खेत ही मिल गया। संग-जराहत अेक अद्भुत चीज है। वह पत्थर जरूर है, मगर बिलकुल चिकना। मानो पत्थिलका सीना। छुटपनमें अेक बार मुझे संग्रहणी हो गअी थी। अुस समय अिस संग-जराहतका चूरा छानकर मावेकी बर्फीमें मिलाकर मुझे खिलाया गया था। तबसे अुस पर मेरी श्रद्धा जमी हुअी है। आंवकी वजहसे जब आंतोंमें घाव हो जाते हैं तब अुन्हें भरनेमें यह चूरा मदद करता है, और घाव भरनेके बाद वह अपने-आप पेटके बाहर निकल जाता

है। पत्थरका चूरा हजम थोडे ही हो सकता है! पेटमें रहे तो रोग हो जाय। मगर वह अपना काम पूरा होते ही अपकारके वचनोकी वसूली करनेके लिअे भी अधिक दिन रहनेकी गलती नही करता।

अब तो चारो ओर काफी अंधेरा छा गया था। सर्वत्र भयानक अेकात था। हमारी टोली अिस अेकातको चीरती हुअी आगे चल रही थी, मानो अनन्त समुद्रमे कोअी नाव चल रही हो। हवा कुछ रुंधी हुअी-सी लगती थी। कब पानी गिरेगा, कहा नही जा सकता था। अूपर आकाशमे देखा तो काले काले बादलोके बीच अेक ओर सिर्फ अेक तारका चमक रही थी। चमकती क्या थी? बेचारी बडे दु खके साथ झाक रही थी, मानो किसी बडे मकानकी खिडकीसे कोअी अेकाकी वृद्धा निर्जन रास्ते पर देख रही हो। हम आगे बढे। अब जमीन भी अच्छी खासी गीली थी। बीच-बीचमे पानी और कीचडके गड्ढे भी आते थे।

अंधेरा खूब बढ गया। गड्ढोमे से रास्ता निकालना कठिन-सा मालूम होने लगा। आगे जानेका अुत्साह बहुत कम हो गया। अैसे कठिन स्थान पर अंधेरी रातके समय हम यहा तक आये, अिसीको यात्राका आनद मानकर हमने वापस लौटनेका विचार किया। मनमे डर भी पैदा हुआ — अैसे निर्जन और भयावने स्थानमे कही चोरोसे मुलाकात न हो जाय!

कुछ लोगोको अकेले यात्रा करते समय चोर-डाकुओका डर मालूम होता है। जब समुदाय बडा होता है, तब यह डर मानो सबके बीच बट जाता है और हरेकके हिस्से बहुत कम आता है। फिर अेक-दूसरेके सहारे हरेक अपना अपना डर मन ही मनमे दबा भी सकता है। कुछ लोगोका अिसमे बिलकुल अुलटा होता है। अकेले होने पर अुन्हे अपनी कोअी परवाह नही होती। अपना कुछ भी हो जाय। मार-पीटका प्रसग आ जाये तो जी-भर लडते हुअे शानके साथ सारे बदन पर मार खानेमे विशेष नुकसान नही लगता। और यदि अहिंसक वृत्ति हो तो बिना गुस्सा किये और बिना डर कर भागे मार खाते रहनेमे अनोखा आनन्द आता है। सत्याग्रही

वृत्तिसे खायी हुअी मारका असर मारनेवाले पर ही होता हे, क्योकि अहिंसक मनुष्यको मारनेवालेकी अपने ही मनके सामने प्रतिक्षण फजीहत होती है।

मगर जब वडी टोलीके साथ होते है, तव भरोसा नही होता कि कौन किस प्रकार व्यवहार करेगा। वच्चे ओर औरते यदि साथ हो तव कुछ अलग ही ढगसे सोचना पडता है। अपने-आपको खतरेमे डालनेमे जो मजा आता है, वह अैसे असवरो पर अनुभव नही होता। सभी सत्याग्रही हो तो वात अलग है। किन्तु वडी खिचडी-टोली साथमे लेकर खतरेके स्थान पर कभी भी नही जाना चाहिये। श्रीकृष्णके कुटुम्ब-कवीलेको ले जानेवाले वीर अर्जुनकी भी क्या दशा हुअी थी, यह तो हम पुराणोमे पढते ही है।

अैसे अधेरेमे शिलाओके वीचसे कहा तक जाये और वहा क्या देखनेको मिलेगा, अिसकी कुछ कल्पना ही नही थी। अत मनमे आया, यहीसे वापस लोटना अच्छा होगा। अितनेमे दाहिनी ओर अेक छोटी-सी टूटी-फूटी कुटिया दीख पडी। अैसे निर्जन स्थानमे चोर भी चोरी काहेकी करेंगे? मगर चोरी करके थकने पर शाति और निश्चिन्तताके साथ बैठनेके लिअे यह स्थान वहुत सुन्दर है। चोरोको ढूढने निकलने-वाले लोगोको यहा तक आनेका खयाल भी नही आयेगा। तो क्या अिस कुटियामे निरजनका ध्यान करनेवाला कोअी अलख-अुपासक साधु रहता होगा? हम कुटियाके नजदीक गये। अदर कोअी नही था! तव तो यह कुटिया साधुकी नही हो सकती। फकीर दिनभर कही भी घूमता रहे, रातको अपनी मसजिदमे आना वह कभी नही भूलेगा। और वावाजी रात वाहर कही वितानेके वजाय अपनी सहचरी धूनीके सपर्कमे ही वितायेंगे।

तव यह कुटिया मछलिया मारनेवाले किसी मच्छीमारकी होगी। किसीकी भी हो, हमे अिससे क्या मतलव? आजकी रात हमे यहा थोडी वितानी है? जरा आगे जाने पर यकीन हुआ कि रास्ता ठीक न होनेसे अधेरेमे अिससे आगे जाना खतरा मोल लेना है। अत मैंने हुक्म छोडा 'चलो, अव वापस लौटे।' अितनेमें मानो सत्त्व-परीक्षा

पूरी हो गअी हो, अिस खयालसे बादल जरा हटे और ठीक हमारे सिर पर विराजित चद्रने 'पश्याश्चर्याणि भारत!' कहकर आसपासका प्रदेश प्रकाशित कर दिया। सूर्य सब कुछ प्रकट कर देता है, अिसलिअे अुसके प्रकाशमे कोअी काव्य नही होता। अधेरी रातमें आकाशके सितारोमे विचरनेवाली दृष्टिको चद्र पृथ्वी पर भेज देता है और कहता है 'थोडा आखोसे देखो और बाकीका सब कल्पनासे भर दो।'

चद्रने कुछ मदद की और दूर दूरसे धुवाधारका घोष भी सुनाअी देने लगा। मेरा हुक्म अेक ओर रह गया और सब अपने पैर तेजीसे अुठाने लगे। जरा आगे गये कि धुवाधार दीख पडा! मानो दूधका स्रोत बह रहा हो!! सर-सर बब-धब! सुलमुल धब-बब! करर्रर्र बब-धब! धब-धब, बब-धब! अुन्मत्त पानी बहता ही जा रहा था। और अुममे से निकलनेवाली सीकर-वृष्टि सर्वत्र फैल रही थी। वृष्टि काहेकी? तुषारका फव्वारा ही समझ लीजिये। कितना अतिथिशील! अिन सूक्ष्म जीवन-कणोने हमारे अिन जीवन-क्षणोको सार्थक कर दिया। चद्र प्रसन्नतासे हस रहा था, पानी खेल रहा था, तुषार अुड रहे थे, हवा झूम रही थी ओर हम मस्तीमे डोल रहे थे। अिधर देखिये, अुधर देखिये, कैसा मजा है! आदि अुद्‌गारोका प्रपात भी देखते ही देखते शुरू हो गया। भिन्न भिन्न अृतुओमे धुवाधार कैसा दिखाअी देता हे, अिसका वर्णन हमारे साथ आये हुअे स्वयसेवक पथदर्शकने शुरू किया। यहा लोग तैरने कैसे जाते हैं, कहासे कूदते हैं, गरमीके दिनोमे धुवाधारकी अूचाअी कितनी होती है, आदि बहुत-सी जानकारी अुसने हमे दी। और अपनी जानकारी तथा रसिकताके लिअे अुसने हमसे अपनी कद्र भी करवा ली। अब सब शात हो गये और अेकध्यानसे धुवाधारके साथ अेक-रूप होनेमे मग्न हो गये। कितना भव्य और पावन दर्शन था! अरणिके मथनसे प्रथम गरमी पैदा होती हे, फिर धुवा निकलता है, धुवा बढने पर अुसमें से चिनगारिया अुडती है और फिर लपटे निकलने लगती है। अिसी तरह निसर्ग-यात्रासे प्रथम कुतूहल जाग्रत होता है, कुतूहलमे से अद्‌भुतता पैदा होती हे, और अद्‌भुतताके काफी मात्रामे अेकत्र होने पर यकायक भक्तिकी अूर्मिया बाहर आती है। 'चलो, हम यहा

शिला पर वैठकर प्रार्थना करे।' प्रार्थनाके लिअे अितना पवित्र स्थान और अितना शुभ समय हमेशा नही मिलता। सव तुरन्त वैठ गये और 'य ब्रह्मा वरुणेन्द्र ' की ध्वनि धुवाधारके कानो पर पडी।

जिस प्रकार भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न राग गाये जाते है, अुसी प्रकार भिन्न भिन्न स्थलो पर मुझे भिन्न भिन्न स्तोत्र सूझते है। हिन्दुस्तानके दक्षिणमे कन्याकुमारी मै तीन वार गया, तव मुझे गीताका दसवा और ग्यारहवा अध्याय सूझा। विभूतियोग और विश्व-दर्शनयोगका अुत्कट पाठ करनेके लिअे वही अुचित स्थान था। और जव सीलोनके मध्यभागमे — अनुराधापुरके समीप — महेन्द्र पर्वतके शिखर पर सध्यास्तके समय पहुचा था, तव पाटलिपुत्रसे आकाशमार्ग द्वारा आकर अिस शिखर पर अुतरे हुअे महेन्द्रका स्मरण करके मैने अीशावास्योपनिषद् गाया था। दैव जाने अनात्मवादी वुद्ध-शिष्योकी आत्माको अीशोपनिषद् सुनकर कैसा लगा होगा! और पूनासे जव शिवनेरी गया, तव मसजिदकी अूची दीवारोकी सीढिया चढकर दूरसे श्री शिवाजी महाराजके वाल्यकालकी क्रीडाभूमिके दर्शन करते समय न मालूम क्यो माडुक्योपनिषद् गाना मुझे ठीक लगा था। यह अुपनिषद् श्रीसमर्थको प्रिय था, अैसा माननेका कोअी सवूत नही है। फिर भी 'नान्त प्रज्ञ न वहि प्रज्ञ नोऽभयत प्रज्ञ न प्रज्ञानघनम् न प्रज्ञ नाप्रज्ञम्।' यह कडिका वोलते समय मै शिव-कालीन महाराष्ट्रके साथ तथा आत्मारामकी अभेद-भक्ति करनेवाले साधु-सन्तोके साथ विलकुल अेकरूप हो गया था। अुस समय मनमे यह भाव अुठा था — 'मै नही चाहता यह अलग व्यक्तित्व, अेकरूप सर्वरूप हो जाय अिस समस्त दृश्यके साथ।' धुवाधारकी मस्ती तथा अुसके तुषारोका हास्य देखकर यहा स्थितप्रज्ञके श्लोक गाना ठीक लगा।

अुत्कट भावनाओका सेवन लम्वे समय तक करते रहना जरूरी नही है। अेक आलापमे अेक अखिल भावसृष्टिको समाया जा सकता है। अेक जलविंदुमे प्रचण्ड सूर्य भी प्रतिविम्वित हो सकता है। अेक दीक्षामत्रसे युगोका अज्ञान हटाया जा सकता है। अेक क्षणमें हमने धुवाधारके वायुमडलको अपना वना लिया। आखोकी

शक्ति कितनी-अजीब होती है! धुवाधारका पान मुहसे करना असभव था। हम कुभ-सभव अगस्ति थोडे ही थे! मगर हमारी दो नन्ही पुतलियोने अखड वहनेवाले अिस प्रपातका आ-कठ पान किया। मुझे लगता है कि अैसे दृक्-पानको 'आ-कठ' कहनेके बदले 'आ-पलक' कहना चाहिये। हम सबने अपनी अपनी आखोमे यह लूट अेक क्षणमे भर ली और वापस लौटे। हमारा यह भूतोंका सघ तरह तरहकी बाते करता हुआ तथा गर्जना करता हुआ मोटरके अड्डे पर आ पहुचा।

यहा भेडाघाटकी सगमरमरकी शिलाये देखकर लोटी हुअी टोली हमसे मिली। अेक-दूसरेके अनुभवोका आदान-प्रदान करके हमने अिस टोलीको बुजुर्गोको सलाह दी कि 'अिस समय धुवाधार जाना बेकार है। आप तैल-वाहनमे बैठकर सीधे जबलपुर चले जाअिये। आप जहा हो आये है वहा थोडा नौका-विहार करके हम तुरन्त लौट आयेगे।' मालूम नही, हमारी यह सलाह अुन्हे पसद आयी या नही। मगर अुसको माने सिवा अुनके लिअे कोअी चारा नही था।

रास्तेकी ओरसे अुतरते हुअे और अधेरेमे लडखडाते हुअे हम प्रवाहके किनारे तक पहुचे और दो टोलियोमे बटकर दो नावोमे चढ बैठे। हमारी नाव आगे बढी। सर्वत्र शातिका ही साम्राज्य था ओर अुसकी गहराअीकी मानो थाह लगानेके लिअे बीच बीचमे हमारी नावकी पतवारे तालबद्ध आवाज करती थी। चद्र अपनी टिमटिमाती मशाल सिर पर रखकर मानो यह सुझा रहा था 'आसपासकी यह शोभा दिनके समय कैसी मालूम होती होगी अिसकी कल्पना कर लीजिये।' कअी स्थानो पर बिलकुल अधेरा था। बीच बीचमे चादनीके धब्बे दिखाअी पडते थे। आकाश निरभ्र न था। अिसलिअे चादनी छाछके समान पतली बन गअी थी। आकाशके बादल बीच बीचमे मलमलके जैसे पतले दीख पडते थे, अत अुनकी ओर भी ध्यान खिच जाता था। दोनो ओर सगमरमरकी शिलाये कितनी अूची मालूम होती थी! अूची और भयावनी। मानो राक्षसोका समूह बैठा हो! और अिन
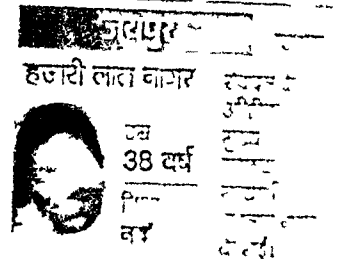
शिलाओंके बीचसे नर्मदाका प्रवाह मोड ले लेकर अपना चक्रव्यूह रच रहा था।

अूची अूची शिलाये या पहाड जहा अेक-दूसरेके बहुत पास आ जाते है, वहा 'प्राचीन कालमे अेक सरदारने अपने घोडेको अेड लगाकर अिस शिखरसे सामनेके शिखर तक कुदाया था' जैसी दतकथा चलती ही है। बदर तो सचमुच अिस प्रकार कूदते ही है। यहा भी आपको अिस प्रकारकी दतकथाये नाववालोके मुहसे सुननेको मिलेगी।

यहा अिन शिलाओके बीच कअी गुफाअे भी है। अिनमे अृषि-मुनि ध्यान करनेके लिअे अवश्य रहते होगे। और मध्ययुगमे राज-कुलोके आपद्ग्रस्त लोग तथा स्वतत्रताकी साधना करनेवाले देशभक्त भी यही आत्मरक्षाके लिअे छिपते रहे होगे। और फिर छछूदरोकी तरह नावे अिन लोगोको गुप्त रूपसे आहार, समाचार और आश्वासन पहुचाती रहती होगी। अिन गुफाओको यदि वाचा होती, तो अितिहासमे जिसका जिक्र तक नही है, अैसा कितना ही वृत्तात वे हमें बताती।

खोहके बीचोबीच नावसे जाते हुअे हम अेक अैसे स्थान पर आ पहुचे, जिसे शातिका गर्भगृह कह सकते है। यहा हमने पतवारे बद करवायी, और अिस डरसे कि कही शातिमे भग न हो जाय हमने श्वास भी मद कर दिया। प्रार्थनाके श्लोक हमने वहा गाये या नही, अिसका स्मरण नही है। किन्तु मैंने मन ही मन सोलह अृचाओका पुरुष-सूक्त बडी अुत्कटताके साथ वहा गाया। बादमे लगा कि अितनी शातिमे तो अपने-आप समाधि ही लगनी चाहिये। पता नही कितना समय नौका-विहारमे बीता। अितनेमें डब डब डब करती हुअी दूसरी नाव वहा आ पहुची। अुसमे जो टोली थी अुसने अेक मजुल गीत छेडा। आसपासकी खोहे अिसकी प्रतिध्वनि करे या न करे अिस दुविधामे सकोचसे अुत्तर दे रही थी।

नाववालेने कहा, 'अब अिससे आगे जाना असभव है, यहासे लौटना ही चाहिये।' अत दौडते मनको पीछे खीचकर हम बोले 'चलो! पुनरागमनाय च!'

अब यदि जाना हो तो वर्षाके अतमें, चादनीके दिन देखकर, दिनरात अिस मूर्तिमत काव्यमे तैरते रहनेके लिअे ही जाना चाहिये। सचमुच, यह रमणीय स्थान देखकर मनने निश्चय किया कि यदि फिर कभी यहा आना न हो, तो यहासे निकलना ही नही चाहिये।

अक्तूबर, १९३७

४४

धुवाधार

अेक, दो, तीन। धुवाधार अभी अभी मैंने तीसरी बार देख लिया। धुवाधार नाम सुन्दर है। अिस नाममे ही सारा दृश्य समा जाता है। किन्तु अबकी बार अिस प्रपातको देखते देखते मनमें आया कि अिसको धारधुवा क्यो न कहू? धार गिरती है, फव्वारे अुडते है और तुरन्त अुसके तुषार बनकर कुहरेके बादल हवामे दौडते है। अत धारधुवा नाम ही सार्थक लगता है। मगर यह नाम चल नही सकता!

जबलपुरसे गोल गोल पत्थर तथा चमकीले तालाब देखते देखते हम नर्मदाके किनारे आ पहुचते हैं। रास्तेका दृश्य कहता है कि यह काव्यभूमि है। चारो ओर छोटे-बडे पेड खेल खेलनेके लिअे खडे है। बगलमे अेक बडा टीला टूट कर गिर पडा है। किन्तु अुसके सिर पर खडे पेड अपनी आधी जडें अलग पड जाने पर भी शोकमग्न या चितातुर नही मालूम होते। अैसे पेडोसे जीवन-दीक्षा लेकर ही आगे बढा जा सकता है।

टीला टूटता तो है, किन्तु टूटा हुआ हिस्सा आसानीसे जमीदोज नही होता। अिस टीलेने अेक दो मीनार और अेक बडा शिखर बना लिया है, जो कहते है कि यदि विनाशमे से भी नयी सृष्टिकी रचना न कर पाये तो हम कल्प-कवि कैसे? टीलेके अूपरसे नीचेके पत्थरो और पानीका दृश्य दृढता और तरलताके विचार अेक ही साथ

पा 8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

मनमें पैदा कर रहा था। पुल पार करके हम आगे आये और योगिनियोंकी टेकरीके नीचेका कअी बार देखा हुआ सामान्य दृश्य देखा। यह दृश्य अितना गरीब है कि अुसके प्रति गुस्सा नही आता। यहा गरीब कारीगर पत्थरोसे छोटी-बडी चीजे बनाकर बेचनेके लिअे बैठते है। सफेद, काले, लाल, पीले, आसमानी और रगबिरगे सग-मरमरके शिवलिगोकी बगलमे सग-जराहतके डिब्बे, शिवालय, हाथी और अन्य छोटे-बडे खिलौने मानो स्वयवर रचकर खडे रहते है। जिसकी नजरमे जो जच जाता है वह अुसे अुठाकर ले जाता है। आज ये खिलौने अेक आसन पर बैठे हुअे है। कल न मालूम कौनसा खिलौना कहा चला जायगा? कुछ तो हिन्दुस्तानके बाहर भी जायगे। और वहा बरसो तक धुवाधारका धारावाहिक सगीत याद करके चुपके चुपके सुनायेगे।

यहासे धुवाधार तक पैदल जानेकी तपस्या मैंने दो बार की थी। पहली यात्रा रातके समय की थी। दूसरी सुबह स्नानके समय की थी। हरेकका काव्य अलग ही था। आज तीसरा प्रहर पसद किया था। अिस समय अधिक तपस्या नही करनी पडी। ब्यौहार राजेन्द्र-सिंहजीने अपना तैल-वाहन (मोटर) दिया था, अत हम लगभग धुवाधार तक बिना कष्टके पहुच गये। सग-जराहतके खेतके पास अुतरकर, वहाकी तीन दुकाने पार करके, पत्थरोके बीचमे होकर हम धुवाधार पहुचे। पत्थर ज्यो ज्यो अडचने पैदा करते थे, त्यो त्यो चलनेका मजा बढता जाता था। अैसा करते करते हम धुवाधारके पास पहुचे।

प्रपात यानी जीवनका अध पात। मगर यहा वैसा मालूम नही होता। पहली बार गये थे दिसबरमे और अधेरेमे। आकाशके बादल चादके खिलाफ षड्यत्र रचकर बैठे थे। अत चादनी रात होते हुअे भी वहा अमावास्याकी-सी भीषणता थी। अमावास्याकी रातमे आकाशके सितारे अिस भीषणताको हसकर अुडा देते है। मगर बादलोके सामने अिसकी भी आशा न रही। परिणामस्वरूप अुस रातको स्वय धुवाधारको अपनी भव्यतासे हमें प्रसन्न करना पडा। रातकी प्रार्थना करके हमने वह आनद हजम किया और वापस लौटे।

दूसरी वार गये ये त्रिपुरी काग्रेसके वाद करीव नो-दस वजे की वढती हुअी धूपके स्वागतका स्त्रीकार कग्ते हुअे। धुवाधारके सपूर्ण दर्शन हम अुसी समय कर पाये ये। मार्चका महीना था। अत पानीमे गरमीकी अृतुका अकाल न था। पहाडीकी कुछ टेटीमेढी खुरदरी सीढिया अुतरकर हमने नीचेसे धुवाधारको गिरते देखा था। पानीकी वह गति और फव्वारेकी वह चचलता चित्तको आश्चर्यकारक ढगसे स्थिर करती थी। पानीकी ओर अनिमेप देखते ही रहे तो अेसा अनुभव होता हे मानो नवनवोन्मेषशालिनी धाराये वेगकी समाधि लगाकर खडी है! अिसी समय मै देख सका कि वहाके काअीवाले पत्थर अूपरसे चाहे जैसे दीखते हो, लेकिन अदरसे तो वे प्रेमका रग खिलानेवाले (लाल रगके) ही है। पानीके जोरके कारण पत्थरका अेक टुकडा अुड गया था और अदरका गुलावी लाल रग साफ दिखाअी देने लगा था, मानो अुसे घाव पड गया हो।

धुवाधार देखनेका अच्छेसे अच्छा समय है दीपावलीका। बारिश न होनेसे रास्तेमे कही कीचड नही था। वर्षा अृतुमे जव आते है तव मारा प्रदेश जलसे भरा होनेके कारण प्रपातके लिअे गुजाअिश ही नही होती। जहा हृदयको हिला देनेवाला प्रपात हे, वही वर्षा अृतुमे सिरमे चक्कर लानेवाले भवर दिखाअी देते होगे। अिन भवरोका रुद्र स्वरूप देखनेके लिअे यदि यहा तक आया जा सकता हो, तो मै यहा आये विना नही रहूगा। भवर क्रान्तिका प्रतीक हे। अुमका आकर्षण कुछ अनोखा ही होता है। कभी कभी मौतको न्योता देनेवाला भी!

दीपावलीके समय जलराशि मवसे अधिक पुष्ट, प्रपातकी शोभा मवसे अधिक समृद्ध, और मीठी धूपके सेवनके वाद तुपारके वादलोकी चुटकिया सवमे अधिक आह्लादक होती है। आजका दृश्य वैमा ही था, जैसी हमने आशा रखी थी। तुपारके वादल दूरसे ही नजर आते थे। रसोडेका धुआ देखकर जिस प्रकार अतिथिको आनद होता हे, अुमी प्रकार अिम धुअेके वादलको देखकर ही मै कल्पना कर सका कि आज किस प्रकारका आतिथ्य मिलनेवाला है। धारधुवा जैसा प्रपात

पा 8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

जब देखनेके लिअे जाते है, तब वहा बनाया हुआ पटियेका कामचलाअू छोटा पुल भी कलापूर्ण और आतिथ्यशील मालूम होने लगता है। हम परिचित किनारे पर जाकर बैठे ही थे कि स्नेहार्द्र पवनने तुषारकी अेक फुहार हमारी ओर भेजकर कहा, 'स्वागतम्', 'सुस्वागतम्'! अेक क्षणके अदर हमारा सारा अध्व-खेद अुतर गया। हम ताजे हो गये और ताजी आखोसे धुवाधारको देखने लगे।

धुवाधार यानी पत्थरोके विस्तारमे बनी हुअी अर्धचद्राकार घाटी। अुसमे से जब पानीका जत्था नीचे कूदता है तब बीचमे जो काचके जैसा हरा रग दीख पडता है, वह जहरके समान डर पैदा करता है। अुसकी बाअी ओर यानी हमारी दाअी ओरकी शिला हाथीके सिरकी तरह आगे निकली हुअी है। अुस परसे जब पानी नीचे गिरता है तब मालूम होता है मानो असख्य हीरोके हार अेक अेक सीढी परसे कूदते-कूदते अेक-दूसरेके साथ होड लगा रहे है। ज्यो ज्यो वे कूदते जाते है त्यो त्यो हसते जाते है, और पानीको पीज पीजकर अुसमे से सफेद रग तैयार करते जाते है। बीचका मुख्य प्रपात घाटीमे गिरते ही अितने जोरोसे अूपर अुछलता है कि आतिशबाजीके बाणोको भी अुससे अीर्ष्या हो सकती है। अेक फव्वारा अूपर अुडकर जरा शिथिल पडता है कि अितनेमे दूसरे फव्वारे नये जोशसे अुसके पीछे पीछे आकर और धक्का देकर अुसे तोड डालते है और फिर अुसके जलकण पृथ्वीके आकर्षणको भूलकर धुअेके रूपमे व्योम-विहार शुरू कर देते है। ये तुषार जरा अूपर आते है कि पवनके झोके अुन्हे अुडाते अुडाते चारो ओर फैला देते है। धुअेकी ये तरगे जब हवामे हलके-गाढे रूपमे दौडती है, तब वायलके अत्यन्त सुन्दर बेलबूटे दिखाअी देते है।

और नीचे! नीचेके पानीकी मस्तीका वर्णन तो हो ही नही सकता। पानी मानो अद्वैतानदमे फिसल पडा। जितना नीचे गिरा, अुतना ही अूपर अुडा। अुसने हरे रगमे से सफेद फेन पैदा किया और जीमे आया वैसा विहार किया। अिस अपूर्व आनदको याद करके नीचेका पानी बार बार अुभर आता था। धोबीघाट परके साबुनके पानीकी अुपमा यदि अरसिक न होती तो नीचेके पानीके अुभारकी तुलना मै

अुसीसे करता। मगर धोबीके साबुनका पानी गदा होता है। अुसमे गति और मस्ती नही होती, वेपरवाही और ताडव भी नही होता। और न हास्य फीका पडते ही चेहरे पर फिरसे निर्मल भाव धारण करनेकी कला अुसके पास होती है। यहाका पानी देखकर धोबीघाटका स्मरण ही क्यो हुआ? अुसमे किसी प्रकारका औचित्य ही नही था।

मनुष्य यदि समाधिकी मस्ती चाहता हो, तो अुसे यहा आना चाहिये। अुसे किसी भी कारणसे निराश नही होना पडेगा।

अिस ओरके (दाये) टीलेकी दो सीढिया अबकी बार मै फिर अुतरा। अिस बार यहा अुपनिषद् सूझा। अूपर सूरज तप रहा था और मै गा रहा था — 'पूषन्नेकर्षे! यम! सूर्य! प्राजापत्य! व्यूह रश्मीन्, समूह तेजो।' जब पाठका अत करीब आया और मै बोला 'ॐ क्रतो स्मर, कृत स्मर।' तब यकायक तीन-चार सालका मेरा सारा जीवन अेकसाथ अिस जीवन-धाराके सामने खडा हुआ और मुझे लगा मानो मै अपना जीवन अिस मस्त जीवनकी कसौटी पर कस रहा हू और यह देखकर कि वह पूरी तरह खरा अुतर नही रहा है, परेशान हो रहा हू। दूसरे ही क्षण अिन तीन वर्षोकी स्मृतिके भी तुषार बनकर आकाशमे अुड गये और मै प्रपातके साथ अेकरूप हो गया। सचमुच यह प्रपात पूर्ण है। और मै भी अिस पूर्णका ही अेक अश हू, अत तत्त्वत पूर्ण हू। हम दोनो वि-सदृश नही है, अेक ही परम तत्त्वकी छोटी-बडी विभूतिया है। यह भान जाग्रत होते ही चित्त शात हुआ और मै अूपर आया।

चि० सरोजिनी भी यह सारा दृश्य अुत्कट नयनोसे अघाकर पी रही थी। अिस सारे आनदको किस तरह समझे, किस तरह हजम करे और किस तरह व्यक्त करे, अिस बातकी मीठी परेशानी अुसकी आखोमे दिखाअी दे रही थी।

यहासे तुरन्त लौटकर चौसठ योगिनियोके दर्शन करने थे, नर्मदा-प्रवाहके रक्षक सफेद, पीले, नीले पहाड देखने थे। अत वह जिस प्रकार पीहरसे ससुराल जाते समय दोनो ओरके सुख-दुखके

मिश्रित भाव अनुभव करती हुअी जाती है, अुसी प्रकार धुवाधारको हार्दिक प्रणाम करके हम वापस लौटे।

हिन्दुस्तानमे अिस प्रकारके अनेक प्रपात अखड रूपसे वहते रहते है और मनुष्यको भव्यताके तथा अुन्मत्त अवस्थाके सबक सिखाते रहते है। हजारो साल हुअे — लाखो नही हुअे अिसका विश्वास नही है — धुवाधार अिसी तरह सतत गिरता रहा है। श्रीरामचद्रजी यहा आये होगे। विश्वामित्र और वशिष्ठ यहा नहाये होगे। चद्रगुप्त और समुद्रगुप्तके सैनिकोने यहा आकर जल-विहार किया होगा। श्री शकराचार्यने यहा वैठकर अपने स्तोत्रोका सर्जन किया होगा। कलचुरि तथा वाकाटक वशके वीरोने अिसी पानीमे अपने घावोको धोया होगा और अल्हणादेवीने यही वैठकर चौसठ योगिनियोका स्मारक वनानेका सकल्प किया होगा। और भविष्यकालमे धुवाधारके किनारे क्या क्या होगा, कौन बता सकता है? खुद धुवाधारको ही यह मालूम नही है। वह तो सतत गिरता रहता है और तुषारके रूपमे अुडता रहता है।

नववर, १९३९

४५

शिवनाथ और ओब

कलकत्ता आते और जाते समय अनेक नदियोसे मुलाकात होती है। अिस प्रदेशका अितिहास मुझे मालूम नही है, अिसकी शर्म आती है। यहाके लोग कितने सरल और भले मालूम होते है! अुन्होने यदि मनुष्य-सहारकी कला हस्तगत की होती, तो अुनका नाम अितिहासमे अमर हो जाता। कुछ लोग मरकर अमर होते है। कुछ लोग मारनेवालोके रूपमे अमर होते हैं। मलिक काफूर, काला पहाड आदि दूसरी कोटिके लोग है।

अिन नदियोके किनारे लडाअिया हुअी हो तो मुझे मालूम नही। अिसलिअे मेरी दृष्टिसे अिन नदियोका जल फिलहाल तो विशेष पवित्र है।

चर्मण्वतीने यज्ञ-पशुओके खूनका लाल रग धारण किया। गोण और गगाने सम्राटोका महत्त्वाकाक्षी रक्त हजम किया। अिन नदियोने भी वैसा ही किया हो तो कोअी आश्चर्य नही। मगर जब तक मुझे मालूम नही है, तब तक अिस अनिश्चयका लाभ मै अुन्हे देता हू।

किन्तु अिन नदियोके किनारे कअी साधुओने तप अवश्य किया होगा और कृतज्ञतापूर्वक अुनके स्तोत्र भी गाये होगे। यह भी मुझे मालूम नही है। फिर भी मै अपनेको भारतवासी कहता हू!

* * *

अेक बार मै द्रुग गया था तब शिवनाथ नदीका मुझे थोडा परिचय हुआ था। गोड, भील आदि पर्वतीय जातियोकी वह माता है। मारे छत्तीसगढकी तो वह स्तन्यदायिनी है। अुसकी करुण कथा* चित्तको गमगीन करनेवाली है। पुण्य-सलिला नदीकी कहानी क्या अैसी होती है? किन्तु नदी बेचारी क्या करे? विजयी आर्योने यदि अुसकी कथा गढी होती तो अुसमे अुल्लासका तत्त्व मिल जाता। यह तो हारी हुअी, दबी हुअी और अुलझनमे पडी हुअी आदिम-निवासियोकी जातिके सस्मरणोके साथ बहनेवाली नदी है! अुसकी कहानिया तो वैसी ही गमगीनी-भरी होगी।

कलकत्तेके रास्ते पर शिवनाथ नदी बार बार मिलती है और कहती है 'राजाओके और साधुओके अितिहाससे तुम सतोष मत मानना। विजेताओके और सम्राटोके अितिहासमे तुम्हे लोक-हृदय नही मिलेगा। ब्राह्मण और श्रमण, मुल्ला और मिशनरी, किसीने भी जिनका दुःख नही जाना अैसे पहाडी लोगोके दुःख-दर्दका अध्ययन करनेकी दीक्षा मै तुम्हे दे रही हू। क्या यह दीक्षा लेनेका साहस तुममे है?'

हिन्दुस्तानकी मूक जनताको वाचाल अेकता देनेके हेतुसे मै हिन्दुस्तानीका प्रचार कर रहा हू। अिसी कामके सिलसिलेमे अभी मै पूना हो आया। अिसी कामके लिअे अब रामगढ जा रहा हू। वहाकी काग्रेसमे तमाम प्रातोके लोग आयेगे। गाधीजीके आग्रहके कारण काग्रेसके

* देखिये 'दुर्दैवी शिवनाथ'।

अधिवेशन अब देहातोमे होने लगे है। यह सब ठीक है। मगर क्या रामगढमे भी ये पर्वतीय लोग आयेंगे? विहारके 'सान्याल' और 'हो' शायद आयेंगे। किन्तु पता नही अिस शिवनाथके पुत्र आयेंगे या नही।

* * *

आज सुवहसे अनेक नदिया देखी। लवे लवे और चौडे पत्थरोवाली नदी भी देखी और कीचडवाली नदी भी देखी। जिसके किनारे अेक भी पेड नही है अैसी नदी भी देखी, और जिसने अेक ओर पेडोकी अेक मोटी दीवार खडी की है अैसी नदी भी देखी। सफेद वगुले अुसके पट पर कीचडमे अपने पैरोकी आकृतिया वना रहे थे। मगर अिस चरण-लिपिमें मै कोअी अितिहास नही पा सका, न किसी दतकथाका हल खोज सका। नदी आशासे लिखती जाती है और निराशासे अपना लिखा लेख मिटाती जाती है। और नये लेखक-पाठकोकी राह देखती रहती है।

हम झारसूगुडा जक्शनके पास जा रहे है। अेक छोटा-सा स्टेशन पास आ रहा है। अितनेमे हमारे रास्तेके नीचेसे वहती हुअी अेक सुन्दर नदी हमने देखी। सभी नदिया सुन्दर होती है, मगर अिस नदीमे असाधारण सुन्दर आकृतिया वनानेकी कला नजर आयी। पानीके स्रोतमे भवर पैदा होते होगे। काअीके कारण पानीको विशेष रूप प्राप्त होता होगा। अूपरसे यह सव देखकर मुझे रवीन्द्रनाथके चित्र याद आये। अिस नदीकी आकृतिया भी विना कुछ वोले, विना कोअी वोध दिये, हृदय तक पहुचती थी और वहा हमेशाके लिअे अपनी छाप डाल देती थी। अिसीका नाम है सच्ची कला!

मगर अिस नदीका नाम क्या है? परिचय हो और नाम न मिले, यह कितनी विचित्र स्थिति है! अितनेमे अीव स्टेशन आया। हमने लोगोसे पूछा, 'अिस नदीका नाम क्या है?' अुन्होने वताया 'अीव'। 'नदीके नाम परसे ही स्टेशनका नाम पडा है।' तव अुसमें औचित्य नही है, अैसा कौन कहेगा? मगर मनमे सदेह जरूर पैदा हुआ। यहा भेडेन नामक अेक नदी अीवसे मिलती है। स्टेशन भेडेनके किनारे है। अीव जरा वडी है, अिसी कारण भेडेनके साथ

अन्याय करके असका नाम स्टेशनको नही दिया गया। भेंडेन कोभी मामूली नदी नही है। काफी चौडी है। दूरसे आती है। मगर वह किसी तरहका गर्व न रखते हुअे अपना पानी ओवको सौप देती है और अपने नामका आग्रह भी नही रखती। मैंने ओवसे पूछा 'देखो, अुदारतामे यह भेंडेन तुझसे श्रेष्ठ है या नही?' ओवने जरा-मा आकृतियोवाला स्मित करके कहा "यह तो तुम मनुष्य जानो। भेंडेनने अपना नाम छोडकर अपना नीर मुझे दे दिया, अिस अुदारताकी तारीफ करनेके बजाय अुससे अर्पणकी दीक्षा लेकर अुसके जैसी बनना मुझे अधिक पसद है। देखो, अुसका और मेरा नीर अिकट्ठा करके महानदीको देनेके लिअे मै सबलपुर जा रही हू। वहा मै भी अपना नाम छोड दूगी। अिस प्रकार अुत्तरोत्तर नामरूपका त्याग करनेसे ही हम सबको महानदीका महत्त्व प्राप्त हुआ है, और वह भी सागरको अर्पण करनेके लिअे ही।"

और जाते जाते ओवने अनुष्टुभ् छदमे अेक पक्ति गा सुनाअी·

सर्वे महत्त्वम् अिच्छन्ति कुल तत् अवसीदति।
सर्वे यत्र विनेतार राष्ट्र तन् नाशम् आप्नुयात्॥

* * *

ओवका यह सदेश सुनकर ही मै रामगढ गया।

मार्च, १९४०

४६

दुर्दैवी शिवनाथ

['शिवनाथ ओर अीव' लेखमे जिसका जिक्र आया है, अुस लोककथाका सार वेमेतरा-द्रुगसे लिखे हुअे नीचेके पत्रमे मिलेगा।]

कल और आज शिवनाथ नदीके दर्शन किये। यो तो कलकत्ता आते और जाते समय शिवनाथको अेक दो वार पार करना ही पडता हे । यहा वडे अूचे पुल परसे शिवनाथका प्रवाह अूचे अूचे टीलोके वीचसे वहता हुआ देखनेको मिलता है। कल शामको वालोडसे वापस लौटे तव शिवनाथके किनारे खास तौर पर घूमने गये थे।

चौमासा तो वैठ गया है, किन्तु नदीमे अभी तक पानी नही आया है। परिणाम-स्वरूप शिवनाथ किसी विरहिणीके जैसी म्लान-वदना मालूम पडी। श्रावण-भादोमे जो अपने दोनो किनारोको लाघ कर मीलो तक फैल जाती है, अुसी नदीको अिस तरह अपने ही पटमे अजगरके ममान अेक कोनेमे पडी हुअी देखकर किमीके भी मनमे विपाद अुत्पन्न हुअे विना नही रहेगा।

द्रुगके लोगोसे शिवनाथके वारेमे मैने पूछा 'यह नदी कहासे आती है? कितनी लवी है? आगे अुसका क्या होता हे?' परतु कोअी मुझे ठीक जवाव नही दे सका। अिस नदीके माहात्म्यका वर्णन पुराणोमे कही है? अुसके वारेमे कोअी लोकगीत प्रचलित हे? कोअी दतकथा सुनाअी देती हे? अेक भी सवालका जवाव 'हा' मे नही मिला। नदीके वारेमे जानने जैसा होता ही क्या है? रोज सुवह अुससे सेवा लेते है, वस, अुससे अधिक अुसका हमारे जीवनसे क्या सवध हे?

अतमे मैने द्रुग तहसीलका गैझेटियर मगवाया। अुसमे अूपरके साधारण सवालोके जवाव तो दिये ही है, मगर अिसके अलावा

शिवनाथके बारेमे अेक लोककथा भी दी हुअी है। यही कथा आज मैं यहा अपनी भाषामे देना चाहता हू।

शिवा नामक अेक गोड लडकी थी। जगली गोड जातिकी होते हुअे भी वह सस्कारी और रसिक थी। अुस पर गोड जातिके ही अेक लडकेका दिल बैठ गया। लडकीके दिलको आकर्षित कर सके, अैसा अेक भी गुण अुसमे नही था। स्वच्छदतासे पेश आना और धमकिया देकर लोगोसे काम निकालना, बस अितना ही अुसे मालूम था। वह शिवाका ध्यान करता रहता था और अुसे पानेका कोअी रास्ता न देखकर परेशान होता रहता था। आखिर अपनी जातिके रिवाजके अनुसार अुसने मोका देखकर शिवाका हरण किया और राक्षस-पद्धतिसे अुसके साथ विवाह किया।

विवाह-विधि पूरी करना अुसके लिअे आसान था, मगर शिवाको अपनी बनाना आसान काम नही था।

शिवा जैसी सस्कारी और भावनाशील लडकी अुसकी ओर भला क्यो देखने लगी? ओर यह जडमूढ अनुनय जैसी चीजको क्या समझे? अुसने पतिकी हुकूमत चलानेकी कोशिश की। लडकीने अबलाका सामर्थ्य प्रकट किया। शिवाको लूटकर लानेवाला युवक शिवाके दृढ हृदयके सामने हारा। अुसका क्रोध भडक अुठा। शरीरको ही सब-कुछ समझनेवाला आदमी शरीरके बाहर जा ही नही सकता। अुसने अतमे शिवाको मार डाला और अुसके शरीरके टुकडे अेक गहरी घाटीमे फेक दिये!!

जहा शिवाका शव गिरा वहीसे तुरन्त अेक नदी बहने लगी। वही हे हमारी यह शिवनाथ, जो आगे जाकर महानदीमे अपना पानी छोड देती है।

आज सुबह हम बेमेतरा जानेके लिअे निकले। रास्तेमे अेक दुर्घटना हुअी। हमारी दौडती हुअी मोटर अेक बैलगाडीसे टकरा गअी और अेक बैलका सीग टूट गया। हम रुके ओर अुसकी मदद करनेके लिअे दोडे। मुझे बैलका लटकनेवाला सीग काटनेकी सलाह देनी पडी। ओर जहासे खून बह रहा था वहा पेट्रोलकी पट्टी बाधनी पडी।

8, निर्दलीय 1
38 वर्ष
एक जैसे नाम

सारा वायुमडल करुण तथा गमगीन बन गया। अिस हालतमे शिव-नाथका दुवारा दर्शन हुआ। यहा नदीका पट सुन्दर है। आसपासके पत्थर जामुनी लाल रगके थे। नदीका पात्र भी सुन्दर था। प्रतिबिब काव्यमय मालूम होता था। मगर शिवाकी करुण कथा मनमें रम रही थी। अत अिस दर्शनमे भी विषादकी ही छाया थी।

शायद शिवनाथकी तकदीर ही अैसी हो। आखिर मनका विषाद कम करनेके लिअे यह पत्र लिख डाला। अब दिल कुछ हलका मालूम होता है।

मअी, १९४०

४७

सूर्याका स्रोत

बारिशके होते हुअे हम कासाका सर्वोदय केंद्र देखने गये। वहा जानेके लिअे ये दिन अच्छे नही थे, अिसीलिअे तो हम गये। बारिशके दिनोमे छोटी-छोटी 'नदिया' रास्ते परसे बहने लगती है, अुनमे पानी बढने पर मोटर बसे भी घटो तक रुकी रहती हैं। हमने सोचा कि हमारे सर्वोदय-सेवक हमारे आदिम-निवासी भाअियोके बीच कैसे काम करते हें यह देखनेका यही समय है।

भारतके पश्चिम किनारेके अेक सुदर स्थानसे मेरा घनिष्ठ परिचय है। बम्बअीके अुत्तरमें करीब सौ मीलके फासले पर बोरडी-घोलवडका स्थान है। वहा मैं महीनो तक रहा था। और वहाके समुद्रकी लहरोंसे रोज खेलता था।[१] समुद्रका पानी भी जब भाटाके कारण पीछे हटता था तब मील डेढ मील तक पीछे चला जाता था। और सारा समुद्र किनारा गीले टेनिस कोर्टके जैसा हो जाता था। हम पाच-दस

[१] अिस स्थानका वर्णन मैंने अपने 'मरुस्थल या सरोवर' लेखमे विस्तारसे किया है।

लोग अिस गीली रेतीके मैदान पर होकर समुद्रकी लहरें ढूंढने चले जाते थे। जब ज्वार आता तब पानीकी लहरें हमारा पीछा करती थी और हम किनारेकी ओर दौडते आते थे। पानीकी लहरें धावा बोलें और हम अपनी जान लेकर किनारे तक दौडते आ जायें, यह खेल बड़े मजेका था। देखते देखते सारा खुला मैदान बडे सरोवरका रूप ले लेता है ओर वायु पानीके साथ खेल करती है। अैसे खारे पानीमें और रेतीमें भी अेक जगह तरवडके पेड अुगे थे। अुनके चिकने-चिकने पत्ते देखकर मैं कहता कि ये बडे 'होनहार बिरवान' हैं।

अिस विशाल सरोवर-मैदानमें अुदावरण*-प्रजाकी बहुत बडी सृष्टि बसी है। किस्म-किस्मके शंख, किस्म-किस्मके केकडे और अैसे ही छोटे-मोटे प्राणी वहा रहते थे ओर अुनके कवच और हड्डिया समुद्र किनारे देखनेको मिलती थी।

बोरडीमें मैं रहने गया, तब वहा अेक ही अच्छा हाअीस्कूल था। अब वह अेक अच्छा ओर बडा शिक्षा-केंद्र हो गया है। बाल-शिक्षण, प्रौढ-शिक्षण, नयी तालीम, आदिम-निवासियोंकी तालीम, अध्यापन-केंद्र आदि अनेक सस्थायें वहा पर स्थापित हो गयी हैं। अब तो बोरडी राजनैतिक जाग्रतिका, शिक्षा-वितरणका और समाज-सेवाका अेक प्रधान केंद्र बना हुआ है।

बोरडीके दक्षिणमें मैं अेक दफा चीचणी भी गया था। वहाके कारीगर ठप्पा बनानेकी कलामें सारे हिन्दुस्तानमें अद्वितीय गिने जाते हैं। काचकी चूडिया भी वहा अच्छी बनती हैं।

अबकी बार चीचणी ओर बोरडीके बीच डहाणू हो आया। यह स्थान भी समुद्रके किनारे है। अुसका प्राकृतिक दृश्य बोरडीसे कम सुन्दर नहीं है।

---

* वातावरण = पृथ्वीके गोलेको घेरनेवाला हवाका आवरण या वायुमडल।

अुदावरण = पृथ्वी परकी जमीनको घेरनेवाला पानीका आवरण। अुद् = पानी।

368

8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जरा नाम

पचास पौन सो वरस पहले औरानसे आये हुअे चद औरानी खानदान यहा वसे हुअे हे। घर पर औरानी भापा वोलते है। अब ये लोग औरानसे प्राचीन कालमे आये हुअे पारसी लोगोके साथ कुछ-कुछ घुलमिल रहे है, और गुजराती और मराठी अुत्तम वोलते है। अिन औरानियोके वगीचे और वाडिया खास देखने लायक है। खेतीके आनुभविक विज्ञानसे और मेहनत-मजदूरीसे अिन लोगोने लाखो रुपये कमाये है। हमारे देशमे वसकर अिन लोगोने अिस देशकी आमदनी वढायी है और यहाके किसानोको अच्छेसे अच्छा पदार्थपाठ सिखाया है। ये लोग हमारे धन्यवादके पात्र है।

* * *

डहाणूसे सोलह मीलका फासला तय करके हम कासा गये। मेरे अेक पुराने विद्यार्थी श्री मुरलीधर घाटे वारह-पन्द्रह वरससे ग्राम-सेवाका काम करते आये है। अिसी साल अुन्होने — और अुनकी सुयोग्य धर्मपत्नीने — कासाका केद्र अपने हाथमे लिया। और देखते-देखते यहाका सास्कृतिक वातावरण समृद्ध वना दिया। आचार्य श्री शकरराव भीसेकी प्रेरणासे यह सब काम चल रहा है।

डहाणूसे कासा पहुचते हुअे सामने अेक वहुत अूचा पर्वत-शिखर दीख पडता है। शिखरका आकार देखते हुअे अिस पहाडको ऋष्य-शृग कहना चाहिये। दरयाफ्त करने पर मालूम हुआ कि शिखरके शृगका पत्थर मजवूत नही है। पत्थरको पकडकर कोआी अूपर चढने जाये तो पत्थरके टुकडे हाथमे आ जाते है। मुझे डर हे कि हजार दो हजार वरसके अदर यह सारा शृग हवा, पानी और धूपसे घिस जायगा और पहाडकी अूचाअी अेकदम कम हो जायगी। अिस पहाडके शिखर पर श्री महालक्ष्मीका मदिर है। कहा जाता है कि कोआी गर्भिणी स्त्री महालक्ष्मीके दर्शनके लिअे अूपर तक गयी और थक गयी। महा-लक्ष्मीने पुजारीको स्वप्नमे आकर कहा कि अपने भक्तोके अैसे कष्ट मै वरदाश्त नही कर सकती, मुझे नीचे ले चलो। अब अुसी पहाडकी तराअीमे महालक्ष्मीका दूसरा मदिर वनाया गया हे।

कासाके नजदीक अेक अच्छी-सी नदी वहती ह, जिमका नाम है मूर्या।-अिम नदीके वारेमे भी अेक लोककथा हे।

जव पाडव अिस रास्तेने तीर्थयात्रा करने जा रह थे, तव भीमकी जिच्छा हुअी कि स्थान देवता श्री महालक्ष्मीमे शादी करे। पूछने पर महालक्ष्मीने कहा कि चद योजनके फासले पर जो सूर्या नदी वहती ह अुमके प्रवाहको अगर तुम मोडकर मेरे अिस पहाडके पावके पास ले आओगे तो मे तुमसे शादी करूगी। शर्त अितनी ही ह कि यह सारा काम अेक रातके अदर होना चाहिये। अगर सुवहका मुर्गा वोला ओर तुम्हारा काम पूरा न हुआ तो हमसे तुम्हारी शादी न होगी। भीमने वादा किया। वडे-वडे पत्थर लाकर अुमने नदीके प्रवाहको रोक दिया। थोडी-मी जगह वाकी थी, अुमके लिअे पत्थर न मिलने पर अुसने अपनी पीठ ही अटा दी। फिर तो पूछना ही क्या? नदीका पानी वढने लगा ओर धीरे-धीरे महालक्ष्मीकी पहाडीकी ओर मुडने लगा। महालक्ष्मी घवडा गयी कि अव अिस निरे मानवीके माथ शादी करनी होगी। देवोमे चालवाजी वहुत होती है। हारनेकी नोवत आती हे तव वे कुछ-न-कुछ रास्ता ढूढ ही निकालते हे।

अिधर भीम वाधके पत्थरोके वीच पीठ अडाकर राह देख रहा था कि पानी पहाडी तक कव पहुच जाता हे। अितनेमे महालक्ष्मीने मुर्गेका रूप धारण किया ओर सुवह होनेके पहले ही 'कुकूच कू' करके आवाज दी। वेचारा भोला भीम निराश हुआ कि समयके अदर अपना प्रण पूरा नही हो सका। वह अुठा। अुतनी जगह मिलते ही वढा हुआ पानी जोरोसे वहने लगा और पानीके साथ भीमकी मुराद भी वह गयी।

अिमी तरह धूर्त देवोका और वलशाली असुरोका झगडा भी अनगिनत लोककथाओमे ओर पुराणोमे पाया जाता है।

हम अनेक हरे-हरे खेतोको पारकर सूर्याके किनारे पहुचे। वारिशके दिन थे। पानी खूव वढा हुआ था ओर भीम-वाधके सिर परसे नीचे कूद पडता था। दृश्य वडा ही मनोहारी था। जहा पानी जोरसे वहता था, वहा हमने अपनी कल्पनाका भीम वैठा हुआ देखा।

हमने अुसे प्रणाम किया। अुसने विषादमे अपना सिर हिलाया। और वह फिर ध्यानमें मग्न हो गया।

हम लौटकर कासा आये। वहाका काम देखा। आदिम जीवनको प्रकट करनेवाली प्रदर्शनी देखी। कुछ खाना खा लिया, लोगोंसे बातें की और फिर बसमें बैठकर महालक्ष्मीका मंदिर देखने गये। रास्तेमें आदिम-निवासी जातिके लोगोंकी कुटिया और अुनके खेत देखे। यह जाति पिछडी हुअी जरूर है, किन्तु अुसने अपने जीवनका आनंद नहीं खोया है। महालक्ष्मीका मंदिर पहाडीके नीचे अेक रमणीय स्थान पर है। देवीके भक्त दूर-दूर तक फैले हुअे हैं। हर साल अेक बहुत बडा मेला लगता है। देखते-देखते अेक लाख लोगोंकी यात्रा भर जाती है। अैसे यात्रियोंके रहनेके लिअे चंद लोगोंने अभी यहा पर अेक अच्छी धर्मशाला बाध दी है। अुसे जाकर देखा। संगमरमरके पत्थर पर दानाओंके नाम खुदे हुअे थे। नाम पढकर मुझे बडा ही आश्चर्य हुआ। सबके सब नाम अफ्रीकाके दक्षिण रोडेशियामें बसे हुअे गुजराती धोबियोंके थे। किसीने सौ शिलिंग दिये थे। किसीने हजार दिये थे। कहा दक्षिण रोडेशिया, कहा गुजरात और कहा थाना जिलेके मराठी लोगोंके बीच यह गुजरातियोंका बनाया हुआ आराम-घर!

स्वराज्य सरकारकी मददसे अिन आदिम-निवासियोंके नवयुवक अब अुत्साहके साथ नयी-नयी बातें सीख रहे हैं और अपनी जातिके अुद्धारकी बातें सोच रहे हैं। मैंने अुनको कहा, तुम अितने पिछडे हुअे हो कि अपनी जातिके ही अुद्धारके लिअे प्रयत्न करना तुम्हारे लिअे ठीक है। लेकिन मैं तो वह दिन देखना चाहता हू कि जब तुम लोग केवल अपनी ही जातिका नहीं किन्तु सारे भारतके अुद्धारका सोचने लगोगे। केवल अपनी जातिके ही नहीं किन्तु सारे देशके नेता बनोगे। जो अपनी ही जमातका सोचते हैं, अुनका पिछडापन दूर नहीं होता। जो सारी दुनियाका सोचते हैं, सारी दुनियाकी सेवा करते हैं, वही अपनी और अपने लोगोंकी सच्ची अुन्नति करते हैं।

मैंने अपने मनमें प्रश्न पूछा, अगर अिन लोगोंमें भीमके जैसी शक्ति आयी और यहाके अिर्द-गिर्दके सवर्ण, सफेदपोश लोगोंमें स्थानीय

देवता महालक्ष्मीके जैसी चतुराओी आयी तो परिणाम क्या होगा! फिर तो केवल पानीकी सूर्या नदी नही बहेगी!

कलियुगका माहात्म्य समझकर नही, किन्तु सत्ययुगकी स्थापनाके लिओ हमे अिन आदिम-जातियोको अपनेमे पूरी तरह समा लेना चाहिये। चार वर्णोकी पुन स्थापनाकी बाते और आदिम-जातिके 'अुद्धारकी' परोपकारी भाषा अब हमे छोड देनी चाहिये। अिनमें और हममे कोओी भेद ही नही रहना चाहिये।

सितम्बर, १९५१

४८

अबरी ओब

मैं कलकत्तासे बर्मा जा रहा था। गाडीमे रातको बिना कुछ ओढे सोया था। ओढनेकी जरूरत न थी, फिर भी यदि ओढ लेता तो चल सकता था। सुबह पाच बजे जब जागा तब हवामे कुछ ठड मालूम हुओी, और चद्दरकी गर्मी न लेनेका पछतावा हुआ। आखिर 'अब क्या हो सकता है?' कहकर अुठा। कवियोको जितना भविष्यकाल दिखाओी देता है, अुतना ही बाहरका दृश्य दिखाओी देता था। सारा दृश्य प्रसन्न था, मगर पूरा स्पष्ट नही था।

अितनेमे अेक नदी आयी। पुलके दो छोरोंके बीच अुसकी धाराये अनेक पक्तियोमे बट गओी थी। हरेक नदीके बारेमे अैसा ही होता है। मगर यहा स्पष्ट मालूम होता था कि अिस नदीने कुछ विशेष सौंदर्य प्राप्त किया है। पतले अधेरेमे प्रभातके समयका आकाश यह तय नही कर पाता था कि पानीकी चादी बनाये या पुराने जमानेका चमकते लोहेका आओीना बनाये?

हम पुलके बीचमे आये। मै प्रवाहका सौदर्य निहारने लगा। अितनेमे अैसा लगा मानो किसीने पानीके अूपर सफेद रग छिडक

दिया है और धीरे धीरे अुसकी अबरी* बन गअी है। यह रूप देखकर मै खुश हो गया। अभी अभी दिल्लीमे जामिया मिलियाके छोटे बच्चोको कागज पर अबरीकी आकृतिया बनाते हुअे मैने देखा था। मुझे ये प्राकृतिक आकृतिया बहुत आकर्षक मालूम होती है।

अिस नदीका नाम क्या है? कौन बतायेगा? मैने सोचा, नाम न मिला तो मैं अुसे अबरी नदी कहूगा।

नदी गअी और वह कहाकी है यह जाननेकी मेरी अुत्कठा बढी। क्योकि अुसके बाद धुवा छोडनेवाली अेक दो चिमनिया दिखाअी दी थी। और निकटके गावमे बिजलीके दीये भी दिखाअी दिये थे। रेलवेका टाअिम टेबल निकालकर मैने अुससे पूछा 'पाच अभी ही बजे है। हम कहा है?' अुसका जवाब सुनते ही मुहसे परिचयका आनदोद्गार निकला 'ओहो! यह तो हमारी अीब है!' रामगढ जाते समय अुसने कितनी सुन्दर आकृतिया दिखलाअी थी! मैने अुसे कृतज्ञताकी अजलि भी दी थी। अीबको मै पहचान कैसे न सका? अबरीका यह कला-विलास सभी नदिया थोडे बता सकती है!

तो अिस अीब नदीने अबरीकी कला कौनसी वर्धा-शालामे सीखी होगी? या शायद दुनियाने अबरी-कला सबसे प्रथम अिसीसे सीखी होगी।

मअी, १९४१

---

* किताबकी जिल्द पर या अुसके अदर जो रगीन आकृतियोवाला कागज अिस्तेमाल किया जाता है, और जिसको अग्रेजीमे marble paper कहते है, अुसके लिअे देशी शब्द है 'अबरी'।

४९

तेदुला और सुखा

आज मै अेक अनमोचा और असाधारण आनद अनुभव कर सका।

हम वर्धासे द्रुग आये है। आसपासके दो गावोमे राष्ट्रीय ग्रामशिक्षा (बेसिक अेज्युकेशन) शुरू करनेके लिअे शिक्षक तैयार करनेवाली अेक सस्थाका अुद्घाटन करनेको हम सुबह चार बजे द्रुग आ पहुचे। नहा-धोकर नाश्ता किया और बालोडके लिअे रवाना हुअे।

द्रुगसे बालोड ठीक दक्षिणकी ओर ३७ मील पर है। रास्ता सीधा है। मानो रस्सीसे रेखाये आककर बनाया गया हो। मीलो तक सीधी रेखामे दौडते रहनेमे जिस प्रकार अेकसा-पन होता है, अुसी प्रकार अेक तरहका नशा भी मालूम होता है। बालोडके पास पहुचे और किसीने कहा कि यहासे पास ही तेदुला बद और केनाल है। मामूली-सी वस्तु भी स्थानिक लोगोकी दृष्टिमे बडे महत्त्वकी होती है। भाअी तामस्करने जब कहा कि व्याख्यानके बाद हम यह बद देखने चलेगे तब विशेष अुत्साहके बिना मैने 'हा' कह दिया था। वहा कुछ देखने योग्य होगा, अैसा मेरा खयाल ही न था। 'हा' कहा केवल स्थानिक लोगोके आतिथ्यका अुत्साह भग न होने देनेकी भलमनसाहतके कारण।

खासी ३७ मीलकी जो यात्रा की अुसमे गड्ढे आदि कुछ भी नही थे। जमीन सर्वत्र समतल थी। गुजरातकी तरह यहाकी जमीनमें वाटोकी अडचन भी नही है। अिस तरहकी समतल जमीन देखनेके बाद अेकाध नदी-नाला देखनेको मिले, अेकाध बाध नजरके सामने आये तो मनको अुतना व्यजन मिलेगा, अिस खयालसे मैने जाना कबूल किया था। जिसने पूनाके बडगार्डनसे लेकर भाटघरके प्रचड बाध तक अनेक बाध देखे है, अुसका कुतूहल यो सहज जाग्रत नही हो सकता।

बेजवाडामे कृष्णा नदीका भव्य बाध, गोकाकके पास घटप्रभाका बाल्य-परिचित बाध, लोणावलाके दो तीन आकर्षक बाध, मैसूरमे वृदा-

वनका पोपण करनेवाला वादशाही कृष्णमागर, दिल्लीके निकट यमुनाका रमणीय 'ओखला' का वाघ ओर नासिकसे मोटरके रास्ते पचास मील दूर जाकर देखा हुआ 'प्रवरा' नदीका सुन्दरतम और रोमाचकारी वाघ — अैसे अनेक जलाशय जिसने देखे है, वह सिंहगढकी तलहटीका 'खडक-वासला' जैसा वाघ देखकर सतुष्ट भले हो, मगर अुसका कुतूहल वाल्यावस्थामे तो हो ही नही सकता।
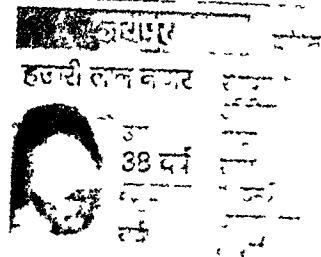
भावनगरके पासके वोर तालावका वर्णन मॅने लिखा है। वेजवाडाकी कृष्णा नदीको मैंने श्रद्धाजलि अर्पित की है। दूसरोके वारेमे अव तक कुछ लिखा नही हे, अिस वातका मुझे दु ख है। फिर भी आज किसी भव्य जलराशिके दर्शन होगे, अैसी अुम्मीद मुझे न थी। व्याख्यान, सभापण और भोजन समाप्त करके हम तेंदुला केनाल देखनेके लिअे वाहनारूढ हुअे और वाधकी ओर दौडने लगे। वाघ परसे मोटर ले जानेकी अिजाजत पानेके लिअे अेक आदमी आगे गया था। अुसकी राह देखनेका धीरज हममे न था। अिजाजत मिल ही जायगी, अिस खयालसे हम तेज रफ्तारमे आगे वढे और वाधके पास पहुचे। वाधके अूपर गये, और —

मै तो अवाक् हो गया!

कितना लवा और चौडा पानीका विस्तार! और पानी भी कितना स्वच्छ!! मानो आकाश ही आनदातिशयमे द्रवीभूत होकर नीचे अुतर आया हो! और पानीका रग? जामुनी, नीला, फीरोजी, सफेद और गुलावी!! और वह भी स्थायी नही। आकाशके वादल जैसे जैसे दौडते जाते थे, वैसे वैसे पानीका रग भी वदलता जाता था। छोटी तरगोके कारण पानीकी तरलता तो खिलती ही थी, तिस पर अूपरसे अुसमे यह रग-परिवर्तनकी चचलता आ मिली। फिर तो पूछना ही क्या था? जहा देखो वहा काव्य डोल रहा था, चमत्कार नाच रहा था। अपना महत्त्व किसके कारण है, यह दोनो ओरके किनारे जानते थे। अत वे अदवके साथ जलराशिकी खुशामद करते थे।

अिस वाधकी खूवी अुसके विस्तारके अलावा अेक दूसरी विशेपतामें है। तेंदुला और सुखा दोनो नदिया वहनें हैं। तेंदुला वडी वहन

है। वह ३०–४० मील दूरसे आती है। अुसके मुकाबलेमे सुखा केवल बालिका है। तीन मील दौडकर ही वह यहा आ पहुचती है। ये दोनो जहा अेक-दूसरेके पास आती है, वही यह प्रेममूर्ति बाध मानो यह कह कर कि 'मेरी सौगध है तुम्हे जो आगे बढी तो!' दोनोके सामने आडा सो गया है। करीब तीन मील लबा बाध अिन दो नदियोको रोकता है। और फिर अपनी मरजीके अनुसार थोडा थोडा पानी छोड देता है। कच्ची मिट्टीका अितना बडा बाध हिन्दुस्तानमे तो क्या सारे ससारमे और कही नही होगा! बाधके नीचेकी १५ मील तककी अभिमानी जमीन अैसा अुपकारका पानी लेनेमे अिनकार करती है। अत यह नहर अुसके बादके ६०–७० मील तक दोनो ओरके खेतोकी सेवा करती है। बाधकी वजहसे अूपरकी बहुत-सी जमीन पानीमे डूब गअी है अिसकी कल्पना केवल आखोसे कैसे हो? तलाश करने-पर पता चला कि करीब तीन सौ बीस वर्गमील जमीन पर गिरनेवाला पानी यहा जमा हुआ है। पानीका विस्तार सोलह वर्गमील है। १९१० मे अिस बाधका काम आरभ हुआ और पौन करोडसे अधिक रुपया खर्च होनेके बाद ही वह पूरा हुआ। बारिशमे अिन दोनो नदियोका पानी अेकत्र होता है। और फिर तो सारा जलमग्न दृश्य देखकर 'सर्वत सप्लुतोदके' का स्मरण हो आता है। जब बीचका टापू अपना सिर जरा अूचा करनेका प्रयास करता है, तब अुसकी यह परेशानी देखकर हमे हसी आती है। आज अिस टापू पर कुछ अूचे पेड 'यद् भावि तद् भवतु' वृत्तिसे अिस बाढकी प्रतीक्षामे खडे है। अुन्हे अुस लाल किनारवाली किश्तीमे बैठकर थोडे ही भाग जाना है? अैसे पेड जब तक टिक सकते है, शानके साथ रहते है। और अतमे जडे सूखी पडने पर पानीमे गिर पडते है।

गरमीमे जब दो नदियोके पात्र अलग अलग हो जाते है, तब धूप तथा विरहके कारण वे अधिक सूखने न पाये, अिस हेतुसे बीचमे अेक नहर खोदकर दोनोका पानी अेक-दूसरेमे पहुचानेका प्रबध कर दिया जाता है।
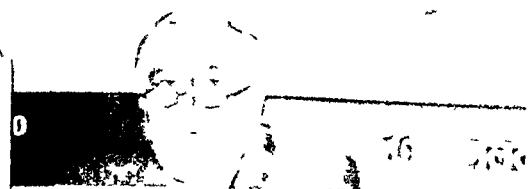
8, निर्दलीय

जाननेवाले जानते है कि नदियोका भी हृदय होता है। अुनमे वात्सल्य होता है, चारित्र्य होता है और अुन्माद तथा पश्चात्ताप भी होता है। ये दो वहने यहा जो कुछ करती है अुसमे अेक-दूसरेकी शोभाकी अीर्ष्या जरा भी नही करती। मत्सर या सापत्न-भाव अुनके चेहरे पर विलकुल नही दीख पडता। अुन्हे अिस वातका भान ह कि वाघरूपी जवरदस्त सयमके कारण अुनकी शक्ति वहुत कुछ वढी है। केवल वहते रहना ही नदीका धर्म नही हे। फैलना और आशीर्वाद-रूप वनना भी नदी-धर्म ही है, तमाम नदियोको यह नसीहत देनेके लिअे ही मानो वे यहा फैली हुअी है।

नदीके किनारे पेड खडे हो, तो वहा अेक तरहकी शोभा नजर आती है। और ये पेड जव अुसके पात्रको ढकनेका वृथा प्रयत्न करते है, तव अिस विफलतामे मे भी वे सफल शोभा अुत्पन्न करते है।

हम अुस किनारेके पेडोकी मुलाकात लेने गये। समय दोपहरका था। निद्रालु पेड नदीके साथ वाते करते करते नीदमे डूव रहे थे और चारो ओर अुष्ण-शीतल शाति फैली हुअी थी। सिर्फ तरह तरहके पक्षी मद मजुल कलरव करके अेक-दूसरेको अिस काव्यका आनद लूटनेके लिअे प्रोत्साहित कर रहे थे।

और लाल मकोडे, जिन्हे मराठीमे 'वाघमुग्या' या 'अुवील' कहते है, अेक किस्मके चिकने पदार्थसे पेडोके चौडे पत्तोको अेक-दूसरेसे चिपकाकर अिस सारे काव्यको भरकर रखनेके लिअे थैलिया वना रहे थे। मेरी आखे भी दिलकी थैली वनाकर अुसमे सामनेका दृश्य भरनेके लिअे सारे प्रदेशको चूस रही थी।

नदीको अिसमे कोअी अेतराज नही था।

मार्च, १९४०

५०

अृषिकुल्याका क्षमापन

आज महाशिवरात्रिका दिन है। रोजके सब काम अेक तरफ रखकर सरिता, सरित्पिता और सरित्पतिका ध्यान करनेके निश्चयसे मैं बैठा हू। सरितायें लोकमातायें है। अुनकी 'जीवनलीला' को अनेक प्रकारसे याद करके मैं पावन हुआ हू। पूर्वजोंने कहा है कि नदीका पूजन स्नान, दान और पानके त्रिविध रूपमें करना चाहिये। मुझे लगा केवल स्नान-दान-पान ही क्यो? भक्ति ही करनी है तो फिर वह चतुर्विधा क्यो न हो? अैसा सोचकर मैंने नदीका गान करनेका निश्चय किया। 'लोकमाता' और प्रस्तुत 'जीवनलीला' अिन दो ग्रथोमें यह गान सुननेको मिल सकता है।

अब जब कि प्रवास कम हो गया है और सरित्पति सागरका निमत्रण भी कम सुनाअी देने लगा है, मैं दिलमें सोच रहा था कि सरित्पिता पहाडोका कुछ श्राद्ध करू। अितनेमें अेक छोटीसी पवित्र नदीने आकर कानमें कहा "क्या मुझे बिलकुल भूल गये?" मैं शरमाया और तुरन्त अुसको स्मरणाजलि अर्पण करके अुसके बाद ही पहाडोकी तरफ मुडनेका निश्चय किया। यह नदी है कलिंग देशमें केवल सवा सौ मीलकी मुसाफिरी करनेवाली अृषिकुल्या।

अृषिकुल्या नदीका नाम तक मैंने पहले नही सुना था। मैं अशोकके शिलालेखोके पीछे पागल हुआ था। जूनागढके शिलालेख मैंने देखे थे। फिर अुडीसाके भी क्यो न देखू? अैसा खयाल मनमें आया। कलिंग देशका हाथीके मुहवाला धौलीका शिलालेख मैंने देखा था। फिर अितिहास-दृष्टि पूछने लगी कि थोडा दक्षिणकी ओर जाकर वहाका जौगढका विख्यात शिलालेख कैसे छोड सकते है? अुसको तृप्त करनेके लिअे गजामकी तरफ जाना पडा। वह प्रवास बहुत काव्यमय था। लेकिन अुसका वर्णन करने बैठू तो वह अृषिकुल्यासे भी लम्बा हो जायगा।

यह नदी चिलका सरोवरसे मिलनेके वजाय गजाम तक कैसे गआी और समुद्रसे ही क्यो मिली, अिसका आश्चर्य होता है। शायद सागर-पत्नीका सौभाग्य प्राप्त करनेके लिअे अुसने गजाम तक दौड लगाअी होगी। लेकिन यहाके समुद्रमे कोअी अुत्साह दिखाअी नही देना। रेतके साथ खेलते रहना ही अुसका काम है।

अृषिकुल्या वैसे छोटी नदी है, फिर भी शायद नामके कारण अुसकी प्रतिष्ठा वडी हे। क्योकि अितनी छोटीसी नदीको कर-भार देनेके लिअे पथमा और भागुवा ये दो नदिया आती है। और भी दो-तीन नदिया अुसे आकर मिलती है। लेकिन दारिद्र्यके ममेलनसे थोडे ही समृद्धि पैदा होती है? गरमीके दिन आये कि सब ठनठन गोपाल!

अृषिकुल्याके किनारे अस्का नामका अेक छोटासा गाव है। छोटासा गाव सुन्दर नही हो सकता, अैसा थोडे ही है? जहा नदियोका सगम होता है, वहा सौदर्यको अलगसे न्यौता नही देना पडता। और यहा पर तो अृपिकुल्यासे मिलनेके लिअे महानदी आअी हुअी हे! दोनो मिलकर गन्ना अुगाती है, चावल अुगाती है और लोगोको मधुर भोजन खिलाती है। और जिनको अुन्मत्त ही हो जाना है, अैसे लोगोके लिअे यहा शराबकी भी सुविधा है। अिस 'देवभूमि' मे लोगोके सुरा-पानको अुचित कहे या अनुचित? जो सुरा पीते है सो सुर यानी देव, और जो नही पीते मो असुर — औरानी लोगोकी सुर-असुरकी व्याख्या अिस प्रकार है।

अृषिकुल्या नाम किसने रखा होगा? अिसके पडोसकी दो नदियोके नाम भी अैसे ही काव्यमय और सस्कृत है। 'वशधारा' और 'लागुल्या' जैसे नाम वहाके आदिवासियोके दिये हुअे नही प्रतीत होते।

यह सारा प्रदेश कलिगके गजपति, आध्रके वेगी तथा दक्षिणके चोल राजाओकी महत्त्वाकाक्षाओकी युद्धभूमि था। तब ये सब नाम चोलके राजेन्द्रने रखे या कलिगके गजपतियोने, यह कौन कह सकेगा?

जौगढका अितिहास-प्रसिद्ध शिलालेख देखकर वापस लौटते हुअे शामके समय अृपिकुल्याका दर्शन हुआ। सस्कृत साहित्यमे दधिकुल्या, घृतकुल्या, मधुकुल्या जैसे नाम पढकर मुहमे पानी भर आता था।

अृषिकुल्याका नाम सुनकर मैं भक्तिनम्र हो गया और अुसके तट पर हमने शामकी प्रार्थना की।

छोटीसी नदी पार करनेके लिअे नाव भी छोटीसी ही होगी। अुस दिनका हमारा दैव भी कुछ जैसा विचित्र था कि यह छोटीसी नाव भी आधी-परधी पानीसे भरी हुअी थी। अदरका पानी बाहर निकालनेके लिअे पाससे कोअी लोटा-कटोरा भी नहीं था। अिसलिअे जूते हाथमें लेकर हमने नावमें खुले पाँव प्रवेश किया। अिच्छा थी कि नदीमें पाँव गीले न हो जायें। लेकिन आखिर नावमें जो पानी था अुसने हमारा पद-प्रक्षालन कर ही दिया। खड़े रहते हैं तो नाव लुढ़क जाती है। बैठते हैं तो धोती गीली होती है। अिस द्विविध संकटमें से रास्ता निकालनेके लिअे नावके दोनों सिरे पकड़कर हमने कुक्कुटासनका आश्रय लिया और अुसी स्थितिमें बैठकर वेद-कालीन और पुराण-कालीन अृषियोंका स्मरण करते करते अुनकी यह कुल्या पार की। तबसे अिस अृषिकुल्या नदीके बारेमें मनमें प्रगाढ भक्ति दृढ हुअी है। कुक्कुटासनका 'स्थिर-सुख' जब तक याद रहेगा, तब तक निशीथ-कालका वह प्रसंग भी कभी भूला नहीं जायगा।

वहाँके अेक शिक्षकके पाससे अृषिकुल्याके बारेमें जानकारी प्राप्त करनेकी कोशिश की। अुन्होंने अुड़िया भाषामें लिखा हुआ अेक दीर्घ-काव्य परिश्रमपूर्वक लिखकर मेरे पास भेज दिया। अब तक अुस काव्यका आस्वाद मैं नहीं ले सका हूँ। अृषिकुल्याके प्रति भक्तिभाव दृढ करनेके लिअे आधुनिक काव्यकी जरूरत भी नहीं है। मेरे खयालसे महा-शिवरात्रिके दिन किया हुआ अृषिकुल्याका यह क्षमापन-स्तोत्र अुसको मंजूर होगा और वह मुझे अचलोंका अुपस्थान करनेके लिअे हार्दिक और सुदीर्घ आशीर्वाद देगी।

महाशिवरात्रि,
२७ फरवरी, १९५७

५१

सहस्रधारा

पुराना अृण शायद मिट भी सकता ह, किन्तु पुराने मकल्प नही मिट सकते । पचीम वर्प पहले मै देहरादूनमे था, तव सहस्रवारा देखनेका मकल्प किया था। अुत्कठा वहुत थी, फिर भी अुस समय जा नही सका था। कुछ दिनो तक अिसका दु ख मनमे रहा, किंतु वादमे वह मिट गया । महस्रधारा नामक कोअी स्थान मसारमें कही है, अिसकी स्मृति भी लुप्त हो गअी। मगर सकल्प कही मिट मकता है ?

आचार्य रामदेवजीने वहुत आग्रह किया कि मुझे अुनका कन्या-गुरुकुल अेक वार देख लेना चाहिये। मुझ भी यह विकसित हो रही सस्था देखनी थी। पिछले माल नही जा मका था। अत अिस माल वचन-वद्ध होकर मैं वहा गया। अव प्रकृतिके पीछे पागल नही वनना है, अव तो मनुष्योसे मिलना है, मस्थाये देखनी है, राष्ट्रीय सवालोकी चर्चा करनी है, अच्छे अच्छे आदमी ढूढकर अुन्हे काममे लगाना है, सेवकोके साथ विचारोका और अनुभवोका आदान-प्रदान करना है — आदि विविध धाराये मनमे चल रही थी । तव सहस्र-धाराका स्मरण भला कहासे होता ? मै तो हिन्दी-हिन्दुस्तानीकी चर्चामे ही मशगूल था। अितनेमे युवक रणवीर मुझसे मिलने आये। किसीने अुनकी पहचान कराअी। अुन्होने अपने आप कहा, देहरादूनमे देखने लायक स्थानोमे फॉरेस्ट कॉलेज है, फौजी पाठशाला है, और प्राकृतिक दृश्योमे गुच्छुपानी और सहस्रधारा है। आखिरका नाम सुनना था कि पचीम वर्पकी विस्मृतिके पत्थरोकी कब्रको तोडकर पुरानी स्मृति और पुराना मकल्प भूतकी तरह आखोके सामने खडे हो गये । अव अिस मकल्पको गति दिये सिवा कोअी चारा ही न था।

तैल-वाहन (मोटर)का प्रवध हुआ और अुत्तरकी ओर पाच-मात मीलका रास्ता तय करके हम राजपुर पहुचे। यहीसे अूपर मसूरी जानेका रास्ता है। हम राजपुरसे करीव ढाअी मील पूर्वकी ओर जगलमे पैदल

चले। ठीक पैंसठ मिनट चलकर हम सहस्रधारा पहुचे। शामका समय था। पीछेकी ओर सूर्य अस्त होनेकी तैयारी कर रहा था और अुसकी लंबी होती किरणे हमारे सामनेके मार्गको अधिकाधिक लंबा बना रही थी। पाच-दस मिनटमे हमने मानव-संस्कृतिको छोडकर जगलमे प्रवेश किया। पानीके बहावके कारण जमीनमे गहरे खड्डे पड गये थे। अुनमे होकर हमे जाना था। हम चार आदमी थे। बाते करते जाते, आसपासका सौंदर्य निहारते जाते और समयका हिसाब लगाते जाते। अमरनाथ, तुगनाथ, बदरीनाथ विशाल जैसे स्थान जिसने देखे है, अुसके सामने मसूरीके पहाड क्या चीज है? फिर भी काफी वर्षोंके पश्चात् फिरसे हिमालयकी तलहटीमे जाना हुआ, असमे यह दृश्य भी आखोको भव्य मालूम हुआ।

मसूरीके पहाडोमे कअी बार टेकरिया गिर पडती है, जिसे अग्रेजीमे 'लैण्ड-स्लिप' या 'लेण्ड-स्लाअिड' कहते है। यह दृश्य अैसा दिखाअी देता है मानो किसी सूरमा योद्धाको जबरदस्त चोट लगी हो। बडे बडे पर्वत छोटे-बडे वृक्षोसे ढके हो और बीचमे ही अुनका अेक बडा हिस्सा टूट जानेसे खुला पड गया हो, तो वह दृश्य देखकर हृदयमे कुछ अजीब भाव पैदा होते है। अैसे असाधारण प्राकृतिक दृश्य बहुत बडे होते है। और अिस दुर्घटनाका कोअी अिलाज नही होता। अत अैसे घाव विषम नही मालूम होते, बल्कि पर्वतका आदरपात्र वैभव ही दिखाते है।

हम नीचे अुतरे, फिर चढे। फिर अुतरे। खूब चढे। वहासे चक्कर आये अैसा अुतार आया।

हम स्वेच्छासे चतुष्पाद बनकर आहिस्ता-आहिस्ता नीचे अुतरे। रास्तेमे हर जगह जहा भी अुतरे वहा पत्थरोकी अेक फैली हुअी सूखी नदी थी ही। वर्षाऋतुमे ये दृशद्वती नदिया अितना कोलाहल करती है कि सारी घाटी सहस्र-निनादसे गरज अुठती है, मगर आज तो चारो ओर भीषण शाति थी। छोटे छोटे पक्षी अेक-दूसरेको दूर दूरसे यदि अिशारा न करते, तो यहा खडे रहनेमे भी दिलमे डर घुस जाता। आखिर अुतार आया और चारो ओर स्लेटवाले पत्थर

8, निर्दलीय

नजर आये। जान वचानेके लिअे जव अेकाध तख्तीको पकडने जाते, तो अुसका चूरा ही हाथमे आ जाता था!

ज्यो त्यो करके हम नीचे अुतरे। करीव अेक घटे तक हम चलते रहे। जिनकी मोटरमे आये थे वे भाअी कहने लगे, 'मै तो यही बैठता हू, आप आगे हो आअिये।' मैने कहा, 'आपसे हमने वादा किया था कि अेक घटेमे वापस लौट आयेगे। मगर सहस्रधारा पहुचनेके लिअे अेक घटेसे अधिक समय लगेगा। अत आप वापस जाअिये और मोटरके साथ समय पर देहरादून पहुच जाअिये। हम किरायेकी वसमे आ जायेगे।' रणवीर कहने लगे, 'अव तो दस मिनटमे हम पहुच जायेगे। सामनेकी टेकरी पर वह जो सफेद कुटिया दिखाअी देती है अुसके पास ही सहस्रधारा है।'

अितनी दूर आये है, तो पाच मिनट और सही, अैसा विचार करके हम आगे बढे। पीछे मुडकर देखनेकी अिच्छा हुअी तो सूरज आकाशमे लटक रहा था और तलहटीकी घाटीके पहाड अपने दो हाथ अूचे करके अुसका स्वागत कर रहे थे, मानो गेद पकडनेकी तैयारी कर रहे हो। अूपर अुछाला हुआ वच्चा माके हाथोमे पडते ही हसने लगता है और मा प्रसन्न होती है, अैसा ही वह दृश्य था। अैसे समय पर माके प्रेमके अुभारका मनमे सेवन करे, या वच्चेका विश्वासपूर्ण हास्य विकसित करे, दोमे से किस आनदके साथ तादात्म्यका अनुभव करे, अिसका निश्चय न होनेमे मन परेशान होता है। अितना ही अेक दृश्य देखनेके लिअे यहा तक आया जा सकता है! मगर सकल्प तो किया था सहस्रधाराका। अत लवी सूर्य-किरणोकी ओरसे हमने मुह फेरा और आगे बढे।

अितनेमे यकायक अेक वडा प्रपात धवधवाता हुआ नजर आया। अूचाअीसे स्वच्छ पानी मजवूत मिट्टीकी प्राकृतिक दीवारसे लुडकता है, आवाज करता है और अनोखी मस्तीभरी अेकतानतासे नीचे अुतरता है। पासमे कोअी है या नही, यह देखनेकी अुसे फुरसत कहा है? क्या होता है अिसकी अुसे कोअी परवाह नहीं है। वह तो धव-धव, धव-धव आवाज करता ही रहता है। पत्थरके

अूपरसे जव पानी गिरता हे तव अुतना आश्चर्य नही होता। मगर यहा तो अपनी जिद न छोडनेवाली मिट्टी परसे पानी गिरता है। मैं तो देखता ही रहा। पानीके भव्य दृश्यमे अितना नशा होता है, यह शराबियोको यदि मालूम हो जाय, तो वे शरावका नशा छोडकर अहर्निश यही आकर बैठे रहे। अेक क्षणके लिअे तो मैं भूल ही गया कि हमे वापस लोटना हे। भले अेक क्षणके लिअे, मगर जव हम प्रकृतिके साथ अेकरूप हो जाते है तव वह सचमुच अद्वैतानद होता है। अपना होश भूल जानेके वाद आनदके सिवा और कुछ रह ही नही सकता।

तव क्या जिसे हम जड सृष्टि कहते है वह जड नही हे, वल्कि अद्वैतानदकी समाधिमे अेकतान होकर पडी हे? अिसका जवाव भला कौन दे सकता हे? ओर कोन सुन भी सकता है?

रणबीर कहने लगे, 'अव हम जरा आगे चलेगे।' अव देरी करनेकी मेरी अिच्छा न थी। मगर थोडा वाकी रह गया अैसा विषाद मनमे न रहे अिसलिअे मै आगे वढा। नीचे पानी वह रहा था। धीरे धीरे हम नीचे अुतरे ही थे कि सुराखारकी महक आने लगी। नीचे अुतरकर थोडासा पानी पिया। कहते है कि तमाम चर्म-रोगोके लिअे यह पानी वहुत मुफीद हे। अिस पानी और अुसके अद्भुत गुणोके वारेमे मै सोच रहा था, किन्तु दिल तो अभी देखे हुअे प्रपातकी धव-धव आवाजके साथ ही ताल साध रहा था। अितनेमे दाहिनी ओर अूपर अेक झुकी हुअी खोहके छतमे पानीकी वूदे गिरती देखी। अुनकी आवाज अैसी हो रही थी मानो अत्यत सौम्य और मूक-प्राय जलतरग या वृद-गायन हो।

यही है सच्ची सहस्रधारा। हजारो वूदे अिस गुफाके अूपरसे ओर अदरसे टप टप गिरती हैं। मगर अुनकी आवाज नही होती। शातिके साथ ये वूदे सतत गिरती रहती हे। अेक ओरसे हम अूपर चढे। वहा अेक गहरी गुफा थी। वीचमे स्तभके समान पत्थरका भाग था। हम अुसके अिर्दगिर्द घूमे। चारो ओर सहस्रधाराकी वरसात हो रही थी। मालूम होता था मानो सारा पहाड पिघल रहा हे। हम काफी
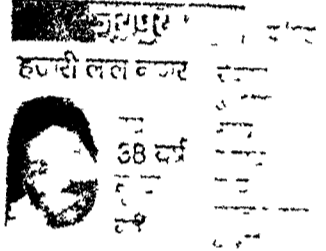
भीग गये। अेक घटा तेजीसे चलकर आनेसे शरीरमे गरमी खूब थी। अिसलिअे भीगते समय विशेष आनद महसूस हुआ। कितना ठडा है यहाका दृश्य! यहा रहनेके लिअे मनुष्यका जन्म कामका नही। यहा तो वेदमत्रोका चातुर्मास्यमे रटन करनेवाले मेढकोका अवतार लेकर रहना चाहिये। जो हृदय कुछ समय पहले शक्तिशाली प्रपातके साथ अेकरूप हो गया था, वही यहा अेक क्षणमें अिस रिमझिम रिमझिम सहस्रधाराके बालनृत्यके साथ तन्मय हो गया। मैने रणवीरको जी भरकर धन्यवाद दिया और कहा, 'अितना हिस्सा यदि देखना बाकी रह जाता, तो सचमुच मै बहुत पछताता।' बारिशमे रक्षा करनेवाली असख्य गुफाअे मैने देखी है। मगर ग्रीष्मकालमे भी अपने पेटमे बारिशका सग्रह रखनेवाली गुफा तो पहले-पहल यही देखी। सीलोनके मध्यभागमे अेक स्थान पर चित्रोवाली अेक बडी गुफा है, अुसमे से अेक नन्हा-सा झरना झरता है। मगर अिस प्रकारकी अखड बारिश तो यही पहले-पहल देखी। हमे वापस लौटनेकी जल्दी थी। मगर अिस बारिशको जल्दी नही थी। अुसको अपना जीवन-कार्य मिल चुका था। पत्थरो पर जमी हुअी काअीके कारण पाव फिसलते थे, और यहाके सौंदर्य, पावित्र्य और शातिके कारण पाव यहा चिपकते थे। जीमे आता था कि जितना अधिक समय अिस स्थितिमे बीते अुतना ही लाभ है।

आखिर वहासे लौटना ही पडा। अब तो दुगुनी रफ्तारसे जाना था। रास्ते पर चद मजदूर और ग्वाले जल्दी जल्दी चलते हुअे नजर आये। बेचारे गरीब लोग! वे बडी कठिनाअीसे अैसे स्थान पर जीवन बिताते है। मगर हमे तो अिसी बातकी अीर्ष्या हुअी कि जिन्हे सहस्रधाराकी अमृतमयी दृष्टिके नीचे रहनेको मिलता है।

अुतरते समय तो अुतर गये थे, मगर अब अधरेमे चढेगे कैसे, यह सवाल था। मनमे आया, अेकाध लाठी मिल जाय तो अच्छा हो। वहा अेक देहाती दुकान थी। दुकानदारसे हमने पूछा, 'भैया, अेक अच्छीसी लकडी दे दोगे?' मै अेक कानसे नही सुनता, तो दुकानदार दोनो कानोसे बहरा था! मेरी बात अुसकी समझमें नही आती थी। मै

अधीर बन गया था। आखिर अेक साथीने अिशारेसे अुसको समझाया। अुसने तुरन्त अन्दरसे अपनी बासकी लकडी ला दी। पैसे दिये तो अुसने लेनेसे अिनकार कर दिया। और लकडी लेकर मानो मैंने ही अुस पर अहसान किया हो, अैसी धन्यता अपनी आखोमें दिखाकर वह कहने लगा, 'ले जाअिये, आप ले जाअिये।' रणवीरने अुसके कानोमें जोरसे कहा, 'ये मेहमान तो महात्मा गाधीके आश्रमसे आते हैं।' तब अुसकी धन्यता और मेरे सकोचका कोअी पार न रहा। लकडी लेकर मैं तो भागा।

अब हमारा बोलना बन्द हो गया। पैर दौडते जा रहे थे और मैं मनमें प्रार्थना करता जा रहा था। आकाशमें गुरु और शुक्र चद्रकी कुछ टीका कर रहे थे।

मोटरवाले भाअी पहाडके शिखर पर बैठकर हमारी राह देख रहे थे। जब हम मिले तब वे कहने लगे, 'आप दौडते गये और दौडते आये, और मैं अुतने समय शातिसे अिस घाटीके भव्य विस्तारका, डूबते हुअे प्रकाशका और पलटते हुअे रगोका आनद लूटता रहा। अब आप बताअिये, अधिक आनद किसने लूटा?'

मैंने प्रतिध्वनिकी तरह पूछा 'सचमुच, किसने लूटा?'

दिसबर, १९३६

५२
गुच्छुपानी *

गुच्छुपानी कुदरतका अेक सुन्दर खेल है। मैं सन् १९३७ में देहरादून गया था, तब अेक दिनकी फुरसत थी। कओी साथियोंने कहा, "चलो हम 'गुच्छुपानी' देखनेके लिअे चले।" अन्य साथियोंने 'सहस्र-धारा' देखनेका आग्रह किया। गुच्छुपानी नाम तो अच्छा लगा, लेकिन विस्मृतिके आवरणके नीचे दबे हुअे पुराने संकल्पने अपना मत सहस्र-धाराके पक्षमें दिया। अिसलिअे अुस समय गुच्छुपानी देखना रह गया।

१९३९ में कन्या-गुरुकुलके अुत्सवके निमित्तसे देहरादून जाना पडा। अिस वक्त गुच्छपानी मुझे बुलाये बगैर थोडा ही रहनेवाला था? देहरादूनसे गुच्छुपानी आरामसे जानेके लिअे दो-तीन घंटे काफी है। मोटर तो क्या, पैदल आने-जानेमें भी तीन साढे-तीन घंटेसे ज्यादा समय नही लगता। पहले तो, करीब डेढ मील तक मोटरके लिअे बनाया हुआ आस्फाल्टका वज्रलेप रास्ता हमें धीरे-धीरे अूचे-अूचे पेडोंके बीचमें होकर अूचे चढाता है, और सामनेके पहाड पर चमकती मसूरीकी गंधर्व-नगरीका दर्शन करवाता है। वहाके बंगलोंकी टेढी-मेढी कतार जब सन्ध्या-किरणोंमें चमकने लगती है तो अैसा आभास होता है मानो चकमकके चोरस टुकडे बिखरे पडे हों।

रास्ता छोडकर हम बायीं ओरके खेतमें अुतरे, तो सामने सालके बाल-वृक्षोंकी अेक घटा दिखाओी देने लगी। अिस घटाके बीचसे होकर पहाडकी अेक लडकी पत्थरोंके साथ खेलती दक्षिणकी ओर दौडती जाती है अुसका दर्शन हुआ। अिस समय अुसके पात्रमें पानी नहीं था। सिर्फ टेढे-मेढे लेकिन चमकीले सफेद पत्थर ही वहा बिखरे हुअे थे। आम तौर पर बिना पानीकी नदी हम पसन्द नहीं करते। लेकिन जब दोनों ओर अूची-अूची टेकरियां होती हैं और सारा प्रदेश निर्जन-रम्य

* अर्थात् पहाडको चीरकर बहता झरना।

होता है, तो सूखी हुआी नदी भी भीषण-रमणीय रूप धारण करती है। पानीका प्रवाह भले न हो, लेकिन हरे-हरे जंगलमें से होकर सफेद धवल पत्थरोंकी पट्टी जब पहाड़ोंके बीचसे अपना रास्ता निकालती आगे बढ़ती है, तो मनमें सहज ही खयाल आता है कि ये पत्थर स्कूलके बच्चोंकी तरह खेलमें दौड़ते-दौड़ते यकायक रुक गये हैं।

हम आगे बढ़े, फिर चढ़े, फिर अुतरे। खाअियोंमें होकर गुजरना था, अिसलिअे दूर-दूर देखनेके बजाय आसमानकी ओर देखकर ही संतोष मानना पड़ता था। बीच-बीचमें पीले और सफेद फूलोंका अुडाअू-पन देखकर लगता था कि यहां किसीका बंगला होगा, लेकिन दूसरे ही क्षण यकीन हो जाता था कि अैसे दृश्य देखकर ही शहरके बंगले-वालोंको अपने बंगलेके अिर्द-गिर्द फूलके पौधे लगानेका खयाल आया होगा। बंगलेकी चार दीवारें तो कुदरतकी गोदमें बिछुड़े हुअे मानवके लिअे ही हैं। यहां तो कुदरतका विशाल महल है। चार दिशाअें अुसकी चार दीवारें हैं और आसमानका कटाह अुसका गुंबद। रात होनेके पहले ही अिस गुंबदमें चांद-तारोंका चंदोवा नियमपूर्वक ताना जाता है। हवाके बिगड़ने पर चंदोवा मैला न हो अिस दृष्टिसे कभी-कभी अुसके अूपर बादलका पर्दा ढक दिया जाता है।

फूल खुशीसे हंस रहे थे। क्या मालूम किसको देखकर हंस रहे थे! अपने आनेकी सूचना तो हमने दी नहीं थी और दी भी होती तो अपने शिकारियोंका आगमन अुनको भाता या नहीं यह भी अेक सवाल है।

बीच-बीचमें छोटी झोंपड़ियां और अिन झोंपड़ियोंको अपमानित करनेवाले चूने-मिट्टीके घर भी आते रहते थे। रास्ते और म्युनिसिपैलिटीकी सुविधासे महरूम घर वनश्रीके साथ अच्छी तरहसे हिलमिल गये थे और वहांके देहाती जीवनकी शान बढ़ाते थे। गोरोंकी फौजी नौकरीसे निवृत्त हुअे गुरखे सैनिक यहां कुदरतकी गोदमें निवृत्तिका आनंद महसूस करते हैं और अपनी वृद्ध पहाड़ी हड्डियोंको आराम देते हैं।

हम आगे बढ़े। आगे यानी सीधा आगे नहीं। पहाड़ी पग-डंडियोंके चक्रव्यूहमें तो जैसा रास्ता मिलता जाता है, वैसे आगे बढ़ना
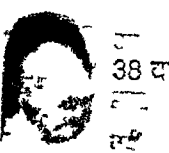
पड़ता है। बाजी ओर जाना हो तो भी कभी-कभी दाहिनी ओरका रास्ता लेकर अुनकी खुशामद करते-करते आगे बढना पड़ता है। चि० चदनने कहा, "आसपासका सुन्दर दृश्य और आसमानके पल-पलमे बदलते दृश्य हमारा ध्यान अपनी ओर खीचते हैं, लेकिन अेक पलके लिअे भी पैरकी ओरसे असावधान हुअे तो अिस पहाडी नदीके पत्थरोकी तरह लुढकना पडेगा।" अुसकी बात सच थी। बडे-बडे पत्थरो पर पैर रखकर चलनेमें खास मजा आता है। लेकिन वे समानान्तर थोडे ही होते हैं? अिसलिअे कौनसा पत्थर कहा है, मनुष्यके पावका बोझ सिर पर आने पर भी अपने स्थानसे डिगे नही अैसा धीरोदात्त पत्थर कौन है? — अिस तरह रास्तेका 'सर्वे' करते-करते जहा आगे बढना होता है, वहा हरेक कदममे अपना चित्त लगाना पडता है। हाथमे पूनी लेकर सूत कातते समय जैसे तसु-तसुमे हमारा ध्यान भी कतता है, वैसे ही अिस तरहकी पहाडी यात्रामें कदम-कदम पर हमारा चित्त यात्राके साथ ओतप्रोत होता है और अिससे ही यात्राका आनद गहरा होता है।

अब तो अेक लबी-चौडी नदी नीचे दिखाअी देने लगी। दाहिनी ओरकी दरीमे आकर बाजी ओर दो शाखाओमे वह विभक्त हो जाती थी। सामनेकी टेकरी परसे तारघरके खभोने पाच-सात तारोकी कतारे शुरु करके अिस पार दूर तलहटीमें अिस तरह झेली थी, मानो किसी बच्चेने अपने हाथ और अपनी आखे यथासभव तान कर नदीकी चौडाअी बतानेकी कोशिश की हो।

अुस नदीके पट पर होकर दो छोटे प्रवाह, किसी राजाके अस्त हुअे वैभवकी तरह धीमे-धीमे जा रहे थे। पानी तो बच्चोके हास्य और रिस जैसा ही निर्मल था। अिच्छा हुअी कि थोडा पानी पेटमें पहुचा दू। लेकिन धर्मदेवजीकी रसिकता बीचमें आयी। अुन्होने कहा, "देखिये, सामने झरना दिखाअी देता है। अेक समय था जब मैं अुसका पानी यहा आकर रोज पीता था। चलिये वही चले।"

हम गये। वहा अेक छोटी पहाडीकी कमर पर अेक छोटा-सा ताक था। अमृत जैसे झरनेको अुसमे से निकलनेका सूझा। किसी परोपकारी

आदमीको अुस ताकके नजदीक अेक लकडीकी परनाली लगानेकी अिच्छा हुअी, अिसलिअे हम लोगोको जलदान स्वीकारनेमे आसानी हुअी। पानी पीनेके पहले पश्चिमकी ओर ढलते सूर्यको अेक मनोमय अर्घ्य देना मै न भूला।

अब तो जिस दिशामे सूर्य-किरणे फैल रही थी, अुस ओर धीरे-धीरे नदीके पटमे हम चढने लगे। आगे क्या दिखाअी देगा अुसकी निश्चित कल्पना नही हो सकती थी। नदीका मूल होगा? या अूपरसे पानी गिरता होगा? या सहस्रधाराकी तरह पानीमे गधक होगा? अैसी अनेक कल्पनाअे मनमे अुठती थी। अिस झरनेके नामके मुताबिक अुसका रहस्य भी हमारे लिअे गुह्य था। माना जाता है कि गुच्छु शब्द गुह्य परसे आया है।

सुदूर अेक कोटर दिखाअी देता था। वहा पहुचे तो कुछ और ही निकला। वहा हमे मालूम हुआ कि गुच्छुपानीके मानी क्या है।

रेलवे लाअिन डालनेके लिअे जिस तरह पहाड तोडकर सुरग या टनल खोदी जाती है, अुसी तरह अेक आग्रही झरनेने सारी टेकरीको आरपार बीधकर अपना रास्ता निकाला था। नही, नही, यह तो गलत अुपमा दे दी। जिस तरह फौलादकी करवत लकडी या 'पोरबदरी' पत्थरको काटती-काटती नीचे अुतरती जाती है, अुसी तरह अिस झरनेने अेक टेकरी सीधी काट डाली है। अिसमे किसी तरकीबसे काम नही लिया गया। वज्रकाय पाषाणोको बीधकर पानी जब आरपार निकल जाता है, तो आश्चर्यचकित मन सवाल पूछ बैठता है कि समर्थ कौन है? अडिग पहाड और अुसके प्राचीन पत्थरोकी अभेद्य दीवारे या पल भरका भी विचार किये बगैर अपना बलिदान देनेको तैयार चचल और तरल नीर?

अुस विवर या गुफामे घुसनेकी कोशिश करते-करते दिल थोडा-सा काप अुठे तो अुसमे कोअी आश्चर्यकी बात नही, अितना अद्भुत था वह दृश्य। वह मौतके मुहमे प्रवेश करने जैसा साहस था। अदर दाखिल होते ही मुझे तो गीताके ग्यारहवे अध्यायके श्लोक याद आने लगे। फिर भी पहाड और जलकी शक्तिके द्वारा

अपना सामर्थ्य व्यक्त करनेवाली प्रकृतिमाताके स्वभाव पर विश्वास रखकर हम लोग अदर दाखिल हुअे।

अुस टेकरीके कुदरती वज्रलेपमे चुने हुअे काले, धौले और लाल गोल पत्थर अैसे दिखाअी देते ये मानो सीमेन्टसे चुने गये हो। और जलका नम्र प्रवाह पैरके नीचे छोटे-छोटे पत्थरो परसे अपनी विजय-गाथा गाता हुआ दोडता चला जा रहा था। सिर अूचा करके देखा तो पानी द्वारा टेकरीको काटकर वनाअी हुअी खामी वीस-तीस फुटकी दो दीवारे अपने लाखो वरसोके अितिहासकी गवाही दे रही थी। मेरे वजाय कोअी भूस्तरशास्त्री यहा आया होता तो पहले वह यह देखता कि यह पत्थर ग्रेनाअीटके है या सेडस्टोनके? फिर दीवारकी अूचाअी क्या है, पानीका ढाल कितना है, हर दसवे साल पानी कितना गहरा जाता है, अिन सवका हिसाव लगाकर वह अिस कुदरती सुरगकी अुम्र निश्चित करके कहता, "अिस पहाडी प्रवाहका खेल पचास हजार या दो लाख सालोसे चला आ रहा है।" पासकी दीवारमे फसे हुअे रग-विरगे पत्थरोको देखकर वह अुनकी अुम्र पूछता और अुनको जकडकर वैठी हुअी मिट्टीको वज्रलेप सीमेन्ट होते कितने साल वीते होगे अुसका हिसाव लगाकर टेकरीकी अुम्र भी (हमारे लिअे) निश्चित कर देता। और यदि अुसको यहा हुअे भूकपका अितिहास किसीसे मालूम हो जाता तो अपने गणितमे अुसके मुताविक परिवर्तन करके अुसने नये निर्णय भी दिये होते। अिस वज्रलेप सीमेन्टके वीचमे चमडे या वारीक जाल जैसी डिजाअिन कैसे वनी और अुसमे से पानीके वारीक फुहारे क्यो निकलते है, यह भी वताया होता। सचमुच नक्षत्र-विद्याके समान यह भूस्तर-विद्या भी अद्भुत-रम्य है। मनोविज्ञानमे अुनकी खोज कम अटपटी नही है। ये तीन विद्याये मानव-वुद्धि-वलका अद्भुत-रम्य विलास है।

हम अुस गुफामे दूर तक चले गये। अेक जगह अूचे भी चढना पडा। पासमे ही पानीका छोटा-सा प्रपात गिर रहा था। थोडा आगे वढे तो पत्थर और चूनेसे वधी हुअी दो दीवारे देखकर कोशिश करने पर भी मै अपना हसना रोक न सका। मानवने सोचा कि पहाडका हृदय वीधकर आरपार निकलनेवाले पानीको हम दो दीवारोसे रोक सकेगे!

मेरी भावनाको समझते ही वह विजयी प्रपात मुझसे कहने लगा, "और मैं भी अुसी कारण हसता हू।" पहाडका चीरा हुआ हृदय भग्न होने पर भी भव्य दिखायी देता था। लेकिन मानवकी टूटी हुअी दीवारे अुसके मनोरथकी तरह तिरस्कार और हास्यके भाव पैदा करती थी। किसी अुद्दाम आदमीको तमाचा पडे और अुसका मुह मुरझाया हुआ दिखाअी दे, अिस तरह अिन दीवारोको अधिक समय तक देखनेकी अिच्छा भी नही होती थी। लबे अर्से तक किसीकी फजीहतके साक्षी भी हम कैसे रह सकते है?

अदर आगे बढनेके साथ अुस विवरकी शोभा बढती ही जाती थी। अितनेमे अुन दो दीवारोके बीच अेक बडा पत्थर गिरता गिरता अटका हुआ दिखाअी दिया। अूपरसे वह कूदा होगा। और पासकी स्नेहमयी दीवारोने अुससे कहा होगा, "अरे भाअी ठहर जा, पानीके खेलमे खलल न पहुचा।" बेचारा क्या करे! लटका हुआ वही खडा है। अुलटे सिर लटकते हुअे पानीका खेल मजबूरन देखना अुसकी किस्मतमे लिखा था। अुस पर तरस खाते हुअे हम आगे बढे तो अेक दूसरा पत्थर अुसी तरह लटकता हुआ और अपनी पीठ पर अपनेसे तीन गुने बडे पत्थरका बोझ लादे रुका हुआ दिखाअी दिया। हम अुसके नीचेसे भी गुजरे। अगर पासकी दीवारे जरा (धसकर) चौडी हो जाती, तो हमारी हड्डिया चकनाचूर हो जाती और दो-चार क्षणके लिअे पानीका रग लाल-लाल हो जाता। फिर कुदरत कहती कि मुझे कुछ भी मालूम नही है। दो-चार मानव यहा आये होगे और अुन्होने अपनी निरर्थक जिज्ञासाकी कीमत चुकाअी होगी। यह बात ध्यानमे रखनेके योग्य थोडी ही है! अुनके जैसे दूसरे मानव जब कभी यहा आ पहुचेगे तब पत्थरोमे दबे हुअे कअी अवशेष अुनको मिलेगे। और वे सच्ची-झूठी कल्पनाओ पर सवार होकर अेकाध प्रकरण खडा करेगे। बस और क्या?

चलते-चलते हम थके तो नही, लेकिन ठडे पानीमे नुकीले पत्थरो पर नगे पैर चलते-चलते पैर दुखने लगे अिसका अिनकार नही हो सकता। लेकिन अुस गुफा-प्रवेशकी अद्भुतताका अनुभव करते करते

हम अघा गये। अदर आगे वढते-वढते भला कितना वढ सकते थे ? आखिर आगे वढनेका हौसला मद हो गया। लेकिन मन कहने लगा, हारकर वापस कैसे जाय ? यहा तक आये है तो आरपार जाना ही चाहिये। जो दूसरा सिरा न देखे वह मानवी मन नही है।

आगे वढते ही पाट थोडा चौडा हुआ और पानीकी भीषणता कम हो गअी। अिसलिअे सयाने वनकर हमने मान लिया कि अव आगेका दृश्य नीरस ही होगा। वहा न गये तो चलेगा। हम वापस लौटे। फिर वही दृश्य, वही डर ! वही जिज्ञासा और वही भावनाये ! !

अुस गुफासे वाहर निकलते निकलते पूरे सोलह मिनट लगे ! ! ! मैंने अपनी आदतके मुताविक अिस यात्राके स्मारकके तौर पर दो सुन्दर मुलायम पत्थर ले लिये। और अधेरेमे तेज कदम वढाते-वढाते घर लौटे। मनमें अेक ही सवाल अुठ रहा था कौन समर्थ है ? ये वज्रकाय पुराने पहाड या यह नम्र किन्तु आग्रही जीवनधर्मी सत्याग्रही नीर ?

५३
नागिनी नदी तीस्ता

जव मै कुछ साल पहले दार्जिलिंग और कालिंगपागकी ओर गया था, तव मैंने तीस्ता नदीका प्रथम दर्शन किया था। प्रथम दर्शनसे ही तीस्ताके प्रति असाधारण प्रेम वध गया। अगर तीस्ताके वारेमे कुछ पौराणिक कथा या माहात्म्य मै जानता होता तो अुसके प्रति मनमें भक्ति पैदा हो जाती। लेकिन यह तूफानी नदी हिमालयके पहाडोके वीचसे अपना रास्ता निकालती, चट्टानोसे टकराती, प्रवाहके वीच पडे हुअे छोटे-वडे पत्थरोका मथन करती और तरह-तरहकी गर्जना करती हुअी जव दौडती आती है, तव अुसका अुत्साह, अुसका दृढ निश्चय और अुसका अमर्ष देखकर अुसके प्रति प्रेम और आदर वध जाते हैं, भक्ति नही।

जब तीस्ताका प्रथम दर्शन हुआ, तब मनमें संकल्प अुठा कि अिस नदीका पहाडी जीवन कुछ तो देखना ही चाहिये। जोरोंसे बहनेवाली पहाडी नदीके अूपर जो बेंतके या रस्सीके खतरनाक पुल बांधे जाते हैं, अुन पर खडे होकर प्रवाहकी ओर देखनेमें अेक विचित्र अनुभव होता है। अैसा लगता है कि यह पुल नदीके प्रवाहका मुकाबला करते हुअे अूपरकी ओर जोरोंसे दौड रहा है। जितने ज्यादा समय तक हम ध्यानसे देखते हैं, अुतनी ही यह प्रतीप-गामी भ्रांति बढती जाती है।

अेक दिन मैंने मनमें कहा कि अिसे भ्रांति क्यों मानें? यह अेक तरहकी दीक्षा है। अिस अनुभवके द्वारा निसर्ग हमें कहता है, 'जितनी बेपरवाहीसे यह पानी पहाडसे आकर मैदानकी ओर दौड रहा है और सागरको ढूंढ रहा है, अुतनी ही बेपरवाहीसे और अदम्य कुतूहलसे अिस प्रवाहके किनारे-किनारे पूरा खतरा मोल लेकर अूपरको ओर चले जाओ और अिस नदीका अुद्गम-स्थान ढूंढ लो।'

जब पहाडकी कोअी नदी सरोवरसे निकलकर आती है, तब अुसे सर-यू या सरो-जा कहते हैं। जब वह पर्वत-शिखरोंकी गोदमें अिकट्ठी हुअी हिमराशिसे निकलती है, तब अुसे हैमवती कहना चाहिये। यों तो पर्वतमें निकलनेवाली सब नदियोंका सामान्य नाम पार्वती है ही। हिमालय-पिताकी अिन सब लडकियोंके नाम अगर अेकत्र किये जायं तो अुनकी संख्या कअी सहस्र हो जायगी।

तीस्ताका असली नाम त्रिस्रोता है। अुत्तर-पूर्व अफ्रीकामें नील नदीके दो अलग-अलग अुद्गम हैं और दोनों स्रोत दूर दूरके दो सरोवरोंसे ही निकलते हैं — सफेदरंगी नील और नीलरंगी नील। दोनोंके संगमसे मिश्र देशकी माता बडी नील बनती है। अुसी तरह तीस्ता भी तीन स्रोतोंके संगमसे बनी हुअी है। अेक स्रोतका नाम है 'लाचुंग चू' (चू यानी नदी)। यह नदी 'कान् चेन् झौंगा' शिखरके दक्षिणसे निकलती है। दूसरे स्रोतका नाम है 'लाचेन् चू'। यह नदी पाव हुन् री शिखरके अुत्तरसे निकलकर तथा चो ल्हामो और गोरडामा दो सरोवरोंका जल लेकर रास्ता निकालती-निकालती प्रथम पश्चिमकी ओर बहती है, फिर धीमे-धीमे दक्षिणकी ओर मुडती है।

अिन दोनोका सगम जहा होता हे, वहा चुग थागका वौद्ध-मदिर है। लाचून् चू और लाचेन् चू अिन दो नदियोके सगमसे जो नदी वनती है, अुसे पचहिमाकर (कान् चेन् झौगा), मीम् व्हो और सिर्नो लो चू अिन तीन गगनभेदी शिखरोकी गोदमे जो हिमराशिया है अुनक पानी लानेवाली तालूग चू मिलती है, तव अिन तीन स्रोतोमे तीस्ता वनती है। और फिर वह सीवी दक्षिणकी ओर वहने लगती हे। कुछ आगे जाने पर अुसे दाहिनी और वाअी ओरसे छोटी-मोटी अनेक नदिया मिलती हैं। अिनमें महत्त्वकी है दिक् चू, रोरो चू, रोगनी चू, रगपो चू, और वडी रगीत चू।

जहा-जहा दो नदियोके सगम होते है, वहा-वहा अेक वौद्ध मदिर पाया ही जाता हे, जिसे यहाके लोग गोम्या कहते है।

जव मैंने तीस्ताके आकर्पणसे सवसे पहले अिन पहाडोमे प्रवेश किया था, तव मैंने रगीत नदीका सगम और रगपो नदीका सगम देखा था। मगमके दोनो स्रोतोके रग यहा अलग-अलग होते है। अवकी वार अिन दो सगमोको तो आख भरके देखा ही, लेकिन मिक्कीमकी राजवानी गगतोकके पूर्वकी नदी रोरो च् और रोगनी नदीका सगम भी मैंने सिंगटगमे देखा। मगम यानी जीवित काव्य।

महाविजय पानेके लिअे अनेक राजाओकी सेनाअे जैसे अेकत्र होती है और अुनकी सकल्प-शक्ति वढती हे, वैसे ही अिन सव नदियोका जल-भार पाकर तीस्ता नदी जलवती, वेगवती और सकल्पशालिनी वनती हे और पहाडोसे लडते-लडते मैदानमे आ पहुचती है। यहा वह शिलीगुडी तक न जाकर जल्पायगुडीके रास्ते पाकिस्तानमे प्रवेश करती हे और रगपुरका दर्शन करते हुअे आखिरमें ब्रह्मपुत्रमे जा मिलती है।

हमारे पुरखोने नदियोके दो विभाग वनाये हे। जव कोअी नदी अनेक नदियोका पानी लेकर पुष्ट होती है, तव अुमे युक्तवेणी कहते है। मफेद गगा, श्याम यमुना और 'मध्ये गुप्ता' मरस्वती मिलकर प्रयागराजके पास त्रिवेणी वनती हे। पजावमे सिंवु सात नदियोका पानी पाकर युक्तवेणी वनती है। वादमे जाकर जव वह नदी स्वय अनेक विभागोमें वट जाती है और अनेक मुखोमे समुद्रमे मिलती है,

तब अुसे मुक्तवेणी कहते हैं। नदियोंके जीवनके हम दूसरी तरहसे भी दो विभाग बना सकते हैं। पहाडोंका बद्ध जीवन और खुले मैदानका मुक्त जीवन। गंगानदीका पार्वत जीवन हरद्वारके पास खतम होता है। फिर तो जहां जमीन मजबूत है, वहां वह अेक धारा बना लेती है। लेकिन जहां भूमि बंगालके जैसी बिना पत्थरवाली और समतल होती है, वहां अुसकी अनेक धाराअें भी बनती हैं। हम कह सकते हैं कि नदीका पार्वत जीवन कुमारीके जीवनके जैसा अल्हड होता है। मैदानमें जाते ही अनेक खेतोंको स्तन्यपान कराते-कराते वह प्रजाओंकी माता बनती है। दार्जिलिंग और कालिंगपांगके पहाडोंसे निकलनेके बाद तीस्ताको सिर्फ अेक-दो बंधन सहन करने पडते हैं और वे हैं — असमकी ओर जानेवाली रेलोंके पुलोंके। अेक है भारतवर्षका नया बनाया हुआ असमलिंकका पुल और दूसरा है हमारा ही बनाया हुआ लेकिन पाकिस्तानके हाथमें गया हुआ रंगपुरके नजदीकका दूसरा पुल।

तीस्ता नदीका मैदानी जीवन कुछ विचित्र-सा है। तिब्बतकी बहुपति-प्रथाका शायद अुसे स्मरण है। अेक समय था जब तीस्ता गंगा नदीसे मिलती थी। अिन सौ-दो-सौ बरसके अन्दर अुसने अनेक पराक्रम किये हैं और वहांके लोगोंसे 'पागला' नाम भी प्राप्त किया है। आज भी अुसका अेक प्रवाह छोटी तीस्ताके नामसे पहचाना जाता है, दूसरा प्रवाह है बूढी तीस्ता और तीसरा है मरा तीस्ता। अुसने अपना जलभार करतोया नदीको देकर देखा, घाघातको भी दिया। मैदानमें तो वह युक्तवेणी भी बनती है और मुक्तवेणी भी। तीस्ताके चंचल स्वभावको पहचानना और अुसका अनुनय करना मनुष्यके लिअे आसान नहीं है। वह अितना स्थलान्तर करती है कि अुसके अनेक प्रवाहोंको स्थायी नाम देना और अुनको याद करना भी मुश्किल है। कहते हैं कि 'कालिकापुराण' में तीस्ताका जिक्र है। वहां कथा अैसी है कि देवी पार्वती किसी असुरसे लडती थीं। वह मत्त असुर कहता था कि मैं शिवजीकी अुपासना करूंगा, लेकिन पार्वतीकी नहीं। पार्वतीका और अुस असुरका घोर युद्ध हुआ। लडते-लडते असुरको बडी प्यास लगी। अुसने शिवजीसे प्रार्थना की कि 'प्रभु, मेरी प्यास बुझा
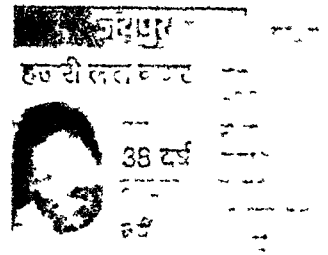
दो ! ' और कैसा आश्चर्य ! प्रार्थना शिवजीके चरणो तक पहुचते ही पार्वतीके स्तनोसे स्तन्यधारा वहने लगी। वही है हमारी तीस्ता। कहते हैं असुरेश्वरकी तृष्णा वुझानेका काम अिस नदीने किया, अिसलिअे अिसका नाम हुआ तृष्णा और तृष्णाका ही प्राकृत रूप है तीस्ता। हमारे ध्यानमें नही आता कि नदीको कोअी तृष्णा कैसे कह सकता है। 'तृष्णा' का 'तण्हा' हो सकता है। लेकिन णकारका लोप ही हो जाना ठीक नही लगता है।

कुछ भी हो, तीस्ताका जीवन-क्रम शुरूसे आखिर तक आकर्षक और सस्मरणीय है। पहाडोमे जहा ये नदिया वहती हैं, वहा गरमी वहुत रहती है। अिसलिअे मलेरियाके जन्तु, दश-मशक भी वहुत होते हैं। शायद यही कारण होगा कि तीस्ताके नाम कोअी लोकगीत नही पाये जाते हैं।

लेकिन अव तो हम लोगोने विज्ञान-युगमे प्रवेश किया है। मलेरियाके मच्छरोका अिलाज हो सकता है। जहा नदी जोरोसे वहती है, वहा अुस पर यत्रका जीन कसकर अुससे काफी काम लिया जा सकता है। तीस्ताका अुद्‌गम शायद पाच-सात हजार फुटकी अूचाअी पर है। जव वह पहाडी मुल्क छोडती हे, तव अुसकी अूचाअी समुद्रकी सतहसे सिर्फ सात सौ फुटकी होती है। देखते-देखते जो नदी छ हजार फुटकी अूचाअी खोती है, अुसके पाससे चाहे-सो काम लिये जा सकते हैं। आरेसे लकडी चीरनेका और आटा पीसनेका काम तो ये नदिया करती ही हैं। अव अिनसे विजली पैदा करनेका वडा काम लिया जायगा। फिर तो सारे सिक्कीम राज्यका रूप ही वदल जायगा।

हमारे धर्मप्राण पूर्वजोकी यत्रवुद्धि भी धर्मकार्यमें ही लगती थी। अेक जगह पर हमने देखा कि पहाडके स्रोतके सामने अेक चक्र रखकर अुसके जरिये 'ओम् मणिपद्मे हु' के जापका लकडीका वल्ला या जाठ घुमाया जाता है। और अिस तरह जो यात्रिक जाप होता है अुसका पुण्य यत्रके मालिकको मिलता है।

अैसे पुण्यका वडा हिस्सा नदीको ही मिलना चाहिये।

७-१०-'५६

Our Outstanding Publications

परशुराम कुंड

भारतकी करीब करीब अुत्तर-पूर्व सीमाके पास लोहित-ब्रह्मपुत्रके किनारे ब्रह्मकुड या परशुराम कुड नामका अेक तीर्थस्थान है। तिब्बत, चीन और ब्रह्मदेशकी सरहदके पास, वन्य जातियोंके बीच, भारतीय सस्कृतिका यह प्राचीन शिविर था। पश्चिम समुद्रके किनारे सह्याद्रिकी तराअीमें जिसने ब्राह्मणोको बसाया अैसे भार्गव परशुरामने सारे भारतकी यात्रा करते करते अुत्तर-पूर्व सीमा तक पहुचकर ब्रह्मकुडके पास शाति पायी। यह है अिस स्थानका माहात्म्य।

जबसे मैं असम प्रान्तमे जाने लगा तबसे परशुराम कुड जाकर स्नान-पान-दानका सुख पानेकी मेरी अिच्छा थी। राजनैतिक, भौगोलिक और सामयिक कठिनाअियोके कारण आज तक वहा न जा सका था। लेकिन जब सुना कि महात्माजीकी चिता-भस्मका विसर्जन अन्यान्य तीर्थोके जैसा परशुराम कुडमें भी हुआ है, तब वहा जानेकी अुत्कठा बढी। अिस साल सुना कि असम प्रान्तके कअी लोकसेवक १२ फरवरीको सर्वोदय मेलेके निमित्त वहा जानेवाले है, तब तो मनका निश्चय ही हो गया कि अिस मौकेको छोडना नही चाहिये। पलाश-बाडीके पास कअी बरसोसे चलनेवाले मोमान आश्रमके श्री भुवनचन्द्र दासको मुझे बुलानेमें कुछ भी तकलीफ न पडी।

बार बार भू-भ्रमण करके भूगोल-विद्याको बढानेवाले हमारे जो प्रधान भूगोलविद् पुराणोमे पाये जाते है, अुनमें नारद, व्यास, दत्तात्रेय, परशुराम और बलरामके नाम सब जानते हैं। अिनमे भी व्यास और परशुराम अपनी-अपनी विभूतिकी विशेषताके कारण चिरजीवी हो गये है। भारतीय सस्कृतिके सगठन और प्रचारका कार्य महर्षि व्यासने जैसा किया वैसा और किसीने नही किया होगा। अिसीलिअे तो अुनको वेद-व्यास (organiser) का अुपनाम मिला। अुनका असली नाम था कृष्ण द्वैपायन।

8, निर्दलीय

और परशुराम थे अगस्त्य ऋषिके जैसे सस्कृति-विस्तारक (pioneer of culture)। प्राचीन कालमे मनुष्य-जातिको जीनेके लिअे दारुण युद्ध करना पडता था — जगलोके साथ और जगलोके पशुओके साथ। जगलोने आक्रमण करके मानव-सस्कृतिको कअी वार हजम किया है। अिसका सबूत आज भी कम्बोडियामे आन्कोर वाट और आन्कोर थॉममे मिलता है। अूचे-अूचे राजप्रासाद और वडे वडे मदिरोके शिखरो तक मिट्टीके ढेर लग गये, और जगलके महा-वृक्षोने अपनी पताका अुन पर लगा दी। हमारे यहा भी असख्य छोटे-वडे मदिर अश्वत्थ और पीपलकी जडोके जालमे फसकर टेढे-मेढे हो गये पाये जाते है।

अैसे युगमे परशु (कुल्हाडी) लेकर मानव-सस्कृतिका रक्षण और विस्तार करनेका काम किया था भगवान परशुरामने। पुराणकी कथा कहती हे कि जन्मके साथ परशुरामके हाथमे परशु था। धनी मा-वापके घर जिसका जन्म हुआ है अुसके वारेमे अग्रेजीमे कहते है कि 'He is born with a silver spoon in his mouth' — चादीका चम्मच मुहमे लेकर ही यह लडका जन्मा है। अैसी ही वात परशुरामकी थी।

परशुराम जातिका ब्राह्मण था, लेकिन अुसके सब सस्कार क्षत्रियके थे। जगलोका नाश करनेके लिअे कुल्हाडी चलाते चलाते अुसने सम्राट् सहस्रार्जुनके हजार हाथो पर भी कुल्हाडी चलायी। और क्षत्रियोके आतकसे चिढकर अुसने अुनके विरुद्ध २१ वार युद्ध किया। क्षात्र पद्धतिसे क्षत्रियोका नाश करनेकी कोशिश अिस क्षत्रिय ब्राह्मणने २१ वार की। अुसीका अनुभव अुसके अनुगामी ब्राह्मण क्षत्रिय गोतम बुद्धने अेक गाथामे ग्रथित किया है

नहि वेरेन वेरानि समतीध कुदाचन ।

अिस परशुरामके क्रोधी पिताने अपने अन्य पुत्रोको आज्ञा दी कि 'तुम्हारी माता कुलटा है, अुसे मार डालो।' अुन्होने अिनकार किया। जमदग्निकी क्रोधाग्नि और भी वढ गयी। अुसने परशुरामकी

ओर मुडकर कहा, 'वेटा, तुम मेरा काम करो। अिस रेणुकाको मार डालो।' कुल्हाडी चलानेकी आदतवाले आज्ञाधारी पुत्रको सोचना नही पडा। अुसने माताका सिर तुरन्त अुडा दिया। पिता प्रसन्न हुअे और कहा, 'चाहे जितने वर माग। तूने मेरा प्रिय काम किया है।' पुत्रको अब मौका मिल गया। पिताकी सारी तपस्या चार वरमे अुसने निचो ली। 'मेरी माता फिरसे जीवित हो। मेरे भाअियोको आपने शाप देकर जड पापाण वनाया है वे भी जीवित हो, अपनी हत्या और सजाकी बात वे भूल जाय। मै मातृहत्याके पापसे मुक्त हो जाअू, और चिरजीवी वनू।' पिताने कहा, 'और तो सब दे दूगा, लेकिन मातृ-हत्याका पाप धो डालनेकी शक्ति मेरी तपस्यामे भी नही है।' मायूस होकर परशुराम वहासे चला गया। आगे जाकर परशुधर रामको धनुर्धर रामने परास्त किया, क्योकि युद्धशास्त्र वढ गया था। परशुकी अपेक्षा धनुप-वाणकी शक्ति अधिक थी, और दूर तक पहुचती थी। परशुरामने भारत-भ्रमणमे सारी आयु वितायी। अनेक तीर्थोका और मतोका दर्शन किया। चित्तवृत्तिमे अुपशमका अुदय हुआ और लोहित-ब्रह्मपुत्रके किनारे ब्रह्म-कुडमे अुसके हाथकी कुल्हाडी छूट गयी। यही शस्त्र-सन्यासके अिस तीर्थस्थानका माहात्म्य है। परशु-रामकी जीवन-कथामे पश्चिम किनारेसे लेकर अुत्तर-पूर्व सिरे तकका भारतका, किसी जमानेका, सारा अितिहास आ जाता है। परशुराम कुडकी यात्रा करके कअी साधु-सतोने यहाकी वन्य जातियोको भारतकी सस्कृतिके सस्कार दिये है। अिस प्रदेशका लोक-मानस कहता है कि रुक्मिणी हमारे यहाकी ही राजकन्या थी, अिसलिअे श्रीकृष्ण हमारे दामाद होते है।

जिस तरह प्राचीन कालके सास्कृतिक अग्रदूत यहा आये, वैसे 'अवेर' का अुपदेश करनेवाले वुद्ध भगवानके शिष्य भी यहा आये होगे। वौद्ध भिक्षु हिमालय लाघकर तिब्बत भी गये थे, और जहाजके रास्ते चीन भी गये थे। अुसके वाद असम प्रान्तमे अहिसा धर्मकी नयी वाढ आयी श्री शकरदेवके जमानेमे। श्री शकरदेव असली शाक्त थे। अुस पथके दुराचारसे अूवकर वे वैष्णव हुअे और अुन्होने सारे
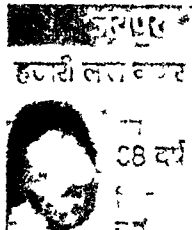
असम प्रान्तमें धर्मोपदेश, नाटच, सगीत, चित्रकारी आदि द्वारा समाज-शुद्धिका ओर सस्कृति-विस्तारका काम दीर्घकाल तक किया। अिसी तरह चैतन्य महाप्रभुके वैष्णव धर्मका प्रचार मणिपुरकी तरफ हुआ। शकरदेवका प्रभाव असम प्रान्तके पर्वतीय लोगोमे पडना अभी बाकी है।

अहिंसा-धर्मकी ताजी और सबसे बडी बाढ महात्मा गाधीजीके सत्याग्रह-स्वराज्य-आन्दोलनसे असम प्रान्तमे पहुची। अुसका अधिकसे अधिक असर पडना चाहिये खासी, नागा, मिशमी, अबोर, डफला आदि पहाडी जातियो पर। अिसके लिअे शिलाग, कोहीमा, मणिपुर, सादिया आदि प्रधान केन्द्रोके अिर्दगिर्द अनेक आश्रमोकी स्थापना करना जरूरी है।

अिनमे सादिया अेक अैसा स्थान है जिसके आसपास ब्रह्मपुत्रको मिलनेवाली अनेक नदियो और अुपनदियोका पखा बनता है। नोआ डिहग, टेगापानी, लोहित, डिगारू, देवपाणी, कुण्डिल, डिबग, सेसेरी, डिहग, लाली आदि अनेक नदिया अपना पानी दे देकर ब्रह्मपुत्रको जलपुष्ट बनाती है। सादियासे अनेक रास्ते अनेक दिशामे जाकर अनेक वन्य जातियोकी सेवा करते है। खुद सादियाके अिर्दगिर्द जो चुलेकाटा मिशमी लोग रहते है वे स्वभावके सौम्य है। अिसीलिअे शायद अुनके अदर सभ्य समाजके कअी दुर्गुण और रोग फैल गये है। मूल ब्रह्मपुत्रका अुत्तरी नाम दिहग है। अुसके भी अूपर जब वह मानस सरोवरसे निकलकर हिमालयके समानातर पूरबकी ओर बहती आती है, तब अुसे सानपो कहते है।

अिन सब नदियोके किनारे हमारे जो पहाडी भाअी रहते है अुनको अपनाना हमारा परम कर्तव्य है। यह काम सरकारके जरिये पूरी तरह नही होगा। अुसके लिअे परशुराम और बुद्धके जैसे सस्कृति-धुरीण महापुरुषोकी आवश्यकता है। अर्थात् अुनके पास नयी दृष्टि, नयी शक्ति और नया आदर्श होना चाहिये।

यह सारा काम कौन करेगा ? भारतके नवयुवकोका और युवतियोका यह काम है। अीसाअी मिशनरियोंने अपनी दृष्टिसे भला-बुरा

वहुत कुछ काम किया है। अुनकी नीयत हमेशा साफ रही है, अैसा भी हम नही कह सकते। अैसी हालतमे देशके नेताओको चाहिये कि वे दीर्घ दृष्टिसे अिन सव स्थानोका निरीक्षण करे और नवयुवकोको मानवताके नामसे शुद्ध सस्कृतिकी प्रेरणा देनेके लिअे अिस प्रदेशमें भेजें।

वर्धा, २१-३-'५०

५५

दो मद्रासी वहनें

अिन दो वहनोके प्रति मेरी असीम सहानुभूति है। मद्रास शहरने जैसा अिनका महत्त्व वढाया है, वैसी ही अिनकी अुपेक्षा भी की है।

यो तो मद्रास शहरका महत्त्व भी कृत्रिम है। न अुसके पास कोअी सुन्दर पर्वत है, न कोअी महानदीकी खाडी है। तिजारतकी दृष्टिसे या फौजी दृष्टिसे मद्रासका कोअी असली महत्त्व नही है। लेकिन अितिहास-क्रमके कारण अग्रेजोको यही स्थान पसन्द करना पडा। यहाके स्थानिक लोगोका प्रेम अिस शहरके प्रति कम था अैसा तो कोअी नही कह सकते। जिन भारतीयोने या धीवर आदिवासियोने अिस शहरका नामकरण 'चन्नपट्टनम्' यानी सुवर्णनगरी किया होगा, क्या अुन्होने अिस शहरके भाग्यके वारेमे पहलेसे सोचा होगा?

कुछ भी हो, जवसे अग्रेजोने यहा अपनी कोठी डाली तवसे अिस शहरका भाग्य और वैभव वढता ही गया है और अैसे शहरकी सेवा करनेवाली अिन दो वहनोका भाग्य भी वदलता गया है। अेकका नाम है 'कूवम्' और दूसरीका नाम है 'अड्यार'। ये दोनो नदिया पूर्वगामी होकर वगालके अुपसागरसे यानी पूर्व-समुद्रसे मिलती हैं।
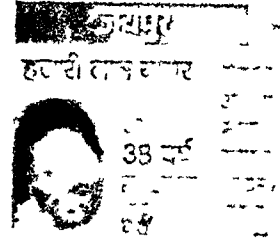
मद्राम और अुसके अिर्दगिर्दकी भूमि बिलकुल समतल है। यहा छोटे-बडे अनेक तालाव व सरोवर है। लेकिन अब अुनकी कोअी शोभा नही रही।

तर्क-बुद्धि कहती है कि जमीन अगर समतल हो और पथरीली न हो, तो नदीको अपना पात्र सीधा खोदनेमे या चलानेमें कोअी बाधा नही होनी चाहिये। लेकिन नदियोका अैसा नही है। कुछ हद तक नदी अेक ओर झुकेगी, वहासे थककर मोड लेगी और दूसरी ओर पहुच जायगी। फिर आगे बढते हुअे दिशा बदल देगी। और अिस तरह नागमोडी वक्रगतिसे आगे बढती जायगी।

पहाडी नदियोकी तो लाचारी होती है। पर्वत और टेकरियोके बीच जहासे मार्ग मिले, अुसी मार्गसे जानेके लिअे वे बाध्य होती है। तीस्ता कहेगी, "मै स्वभावसे नागिनी नही हू। वक्रगति मेरा स्वभाव नही, किन्तु वह मेरा भाग्य है।" काश्मीरमे बहनेवाली वितस्ता या झेलम अपना अैसा बचाव नही कर सकेगी। करीब करीब चक्राकार घूमते जाना और आगे बढनेका तनिक भी अुत्साह नही रखना, यह है काश्मीर-तल-वाहिनी वितस्ताका स्वभाव। बिहारमे बहनेवाली असख्य नदियोके बारेमें भी यही कहा जा सकता है। किसी समय मुझे बिहार प्रातमे अनेक जगह हवाअी जहाजसे मुसाफिरी करनी पडी थी। पता नही कितनी बार बिहारके आकाशको मैंने अनेक दिशाओमे बीध दिया होगा। हवाअी-जहाजकी दूर दूरकी लम्बी मुसाफिरीमे भी काफी अूचाअीसे मैंने बगाल और बिहारकी नदिया देखी है और अुनका वक्र-मार्ग-नैपुण्य देखकर अुनका आदर किया है।

भारत-भूमिका अेक बडा मानचित्र बनाकर अुस पर अगर केवल नदियोके मार्गकी रेखाअे खीची जाये तो वह वक्र-रेखाओका महोत्सव बडा ही चित्ताकर्षक होगा। नदीको दाहिनी ओर और बायी ओर मुडे बिना सतोष ही नही होता। अेक ओरके अूचे किनारेको घिसते जाना और दूसरी ओरके निम्न किनारेको हर साल डुबोकर कुछ समयके लिअे वहा जल-प्रलयका दृश्य खडा करना यह नदियोकी वार्षिकी क्रीडा ही है।

लेकिन जब नदिया बडे-बडे शहरोकी बस्तीमे फस जाती है अथवा दयालु होकर अपने दोनो ओर मनुष्यको बसने देती है, तब अुनका यह स्वच्छद विहार सदाके लिअे बद हो जाता हे और तबमे अुनका जीवन तागा खीचनेवाले घोडेके जैसा हो जाता है। अैसी हालतमे नदिया अगर अपना मोड कायम रखे तो भी अुनकी शोभा तो नष्ट हो ही जाती हे।

लदनमे टेम्स नदी, पेरिसमे सीन नदी और लिस्बनमे टेगस नदी अिन तीनोकी बधन-दुर्दशा देखकर मेरा हृदय कअी बार रोया है। और जब मानिनी और स्वच्छद विहारिणी नील-नदी लाचार होकर अल्काहेरा (कायरो) शहरके बीचमे जाती है, तब तो दु खके साथ क्रोध भी जाग्रत होता है। और नदीका अपमान करनेवाली मानव-जातिका शासन कैसे किया जाय अैसे विचार भी मनमे अुठते हे।

अड्यार ओर कूवम् अिन दोमे मे कूवम्को बधनका दु ख ज्यादा सहन करना पडा है, क्योकि वह शहरके बीचमे घमती हे। अड्यार शहरके दक्षिण किनारे पर होनेसे अुसे कुछ अवकाश मिला है।

लेकिन — यहा पर भी लेकिन आ गया है — जहा मनुष्यने अपमान नही किया, वहा अिस सरिताका सरित्पतिने अपमान किया है। बिचारी अुत्साहके साथ समुद्रको मिलने जाती है और बेकदर समुद्र अूची-अूची लहरोके साथ रेत ला-लाकर अुसके सामने अेक बहुत बडा बाध या सेतु खडा कर देता हे।

देवी वासतीका ब्रह्मविद्या-आश्रम जब सबसे पहले मै देखने गया था, तब सागर-सरिता-सगमकी भव्यता देखनेके हेतु नदीके मुख तक पहुच गया था। और क्या देखता हू — खडिता अड्यार अपना पानी ला-लाकर मार्ग-प्रतीक्षा कर रही है और समुद्र अपने खडे किये हुअे बाधके अुस ओर लहरोका विकट हास्य हस रहा है। समुद्रके प्रति मनमे क्रोध तो आया ही। क्या अिसमे तनिक भी दाक्षिण्य नही है? थोडा-सा तो मार्ग देता। लेकिन सरिता और सरित्पतिके बीच फैले हुअे सेतु परसे चलते चलते मनमे यही विचार आया कि अड्यारके अपमानमे मै भी शरीक हू। सेतु परसे अुस पार जानेके
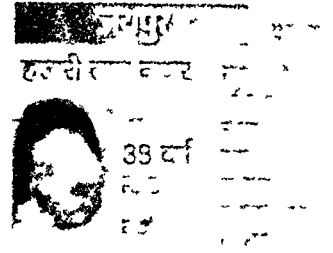
बाद वापस तो आना ही पडा। अुसके बाद आज तक कअी बार मद्रास गया हू, भगवती अड्यारका दर्शन भी किया है, लेकिन अुस बाघ परसे जानेका जी ही नही हुआ।

कूवम्‌के पानीसे अड्यारका पानी ज्यादा स्वच्छ मालूम होता है। वहाकी हवा स्वच्छ होनेसे पानी चमकीला भी दीख पडता है। अिस नदीके बीच अुत्तरकी ओर अेक लक्ष्मीपुत्रका सफेद प्रासाद है। वह नदीकी शोभाको भ्रष्ट नही करता। नदीके कारण वह ज्यादा अुठाव-दार हो गया है।

मैं जब जब अड्यार गया हू, अुसके किनारेके नारियलका मीठा पानी मैंने पिया है और अुसीको अुस लोकमाताका प्रसाद माना है। अड्यारके साथ कूवम्‌का दर्शन भी होता ही है। लेकिन अुसके लिअे तो आज तक मनमें दया ही दया पैदा हुअी है, हालाकि मद्रासके सेंट जॉर्ज फोर्टके कारण अुसकी शोभा साधारण कोटिकी नही है।

अंग्रेजोंने अड्यारसे लेकर कूवम् तक अेक छोटी नहर दौडायी है, जिसे अुन्होंने 'बकिंगहेम केनाल' का नाम दिया है। अिस केनालसे क्या लाभ हुआ है सो तो मैं नही जानता। लेकिन अुसका नाम जितनी दफा मैंने सुना अुतनी दफा वह मुझे अखरा ही है।

ये नदिया मद्रास शहरके बीच न होती तो शायद अिन्हें मैं श्रद्धांजलि भी नही दे पाता। लेकिन अिनका माहात्म्य और सौन्दर्य बढानेका काम मद्रासके हाथों नही हो सका। मद्रासने अिनसे सेवा ली, लेकिन अिनकी सेवा नही की, यह विषाद तो मद्रासके बारेमें मनमें रह ही जाता है।

२ जून, १९५७

Our Outstanding Publications

५६
प्रथम समुद्र-दर्शन

पिताजीका तबादला सातारासे कारवार हो गया और हम लोगोने सातारासे हमेशाके लिये विदा ली। घर पर नरशा नामका अेक बैल था। अुसे हमने मामाके घर बेलगुदी भेज दिया। महादूको छुट्टी देनी ही पडी। बेचारेने रो-रो कर आखे सुर्ख कर ली। नौकरानी मथुराको छोडते समय माने अुसको अपनी अेक पुरानी किन्तु अच्छी साडी दे दी और अुसने हम सबको बहुत दुआये दी। घरके बहुत सारे सामान-असबाबको ठिकाने लगाकर हम पहले शाहपुर गये और वहा कुछ रोज रहकर वेस्टर्न अिण्डिया पेनिनशुलर रेलवेसे मुरगाव गये। रास्तेमें गुजीके स्टेशन पर पानीके फव्वारे छूट रहे थे, जिन्हे देखनेमें हमे बडा मजा आया। लोंडे पर गाडी बदल कर हम डब्ल्यू० आओ० पी० रेलवेके डिब्बेमे बैठ गये।

गोवा और भारतकी सरहद पर कैसल रॉक स्टेशन है। वहा पर कस्टमवालोने हम सबकी तलाशी ली। हमारे पास चुगीके लायक भला क्या हो सकता था? लेकिन सफरमे बच्चोके खानेके लिये डिब्बे भर-भरकर छोटे-बडे लड्डू लिये थे। अुन्हे देखकर कस्टम्सके सिपाहीके मुहमें पानी भर आया। अुसने निसकोच लड्डू हमसे माग ही लिये। वह बोला, "आपके ये लड्डू हमे खानेको दे दीजिये।" मैंने सोचा कि हमारे लड्डू अब यही पर खतम हो जायेगे। माका दिल पिघल गया और वह बोली, "ले भैया, अिसमे क्या बडी बात है?" लेकिन पिताजीने बीचमे दखल देते हुअे कहा, "दूसरे किसीको भी दे दो, लेकिन अिस सिपाहीको देना तो रिश्वत देने जैसा है।"

सिपाही बोला, "हम किसीसे कहने थोडे ही जायेगे? आपके पास चुगीके लायक चीजे मिली होती और हमने आपसे चुगी वसूल न की होती, तो आपका लड्डू देना रिश्वतमे शुमार हो जाता।"

पिताजीका कहना न मानकर माने अुन तीनोको अेक-अेक बडा लड्डू दिया। घीमे तले हुअे और चीनीकी चाशनीमे पगे हुअे लड्डू अुन बेचारोने शायद अुससे पहले कभी खाये न होंगे। अुन्होने लड्डूओंके टुकडे अपने मुहमे ठूसकर अपने गालोके लड्डू बना लिये।

पिताजीकी ओर देखकर मा बोली, "क्या मै घरके चपरासियोको खानेको नही देती थी? ये तो मेरे लडकोके समान है। अिन्हे खानेको देनेमे शर्म किस बातकी? आज तक अैसा कभी नही हुआ कि किसीने मुझसे कुछ मागा हो और मैने देनेसे अिनकार किया हो। आज ही आपकी रिश्वत कहासे टपक पडी?"

कैसल रॉकसे लेकर तिनअी घाट तककी शोभा देखकर आखे तृप्त हो गयी। यह कहना कठिन है कि अुसमे देखनेका आनन्द अधिक था या अेक-दूसरेको बतानेका। हमने दाहिनी तरफकी खिडकियोसे बायी तरफकी खिडकियो तक और फिर बायी तरफकी खिडकियोसे दाहिनी तरफकी खिडकियो तक नाच-कूदकर डिब्बेमे बैठे हुअे मुसाफिरोके नाको-दम कर दिया।

फिर आया दूध-सागरका प्रपात। वह तो हमसे भी जोरशोरसे कूद रहा था। हमने अिससे पहले कोअी जल-प्रपात नही देखा था। अितना दूध बहता देखकर हमको बडा मजा आया। हमारी रेलगाडी भी बडी रसिक थी। प्रपातके बिलकुल सामनेवाले पुल पर आकर वह खडी हुअी और पानीकी ठडी-ठडी फुहार खिडकीमे से हमारे डिब्बेमें आकर हमको गुदगुदाने लगी। अुस दिन हम सोनेके समय तक जल-प्रपातकी ही बातें करते रहे।

हम मुरगाव पहुच गये। आजकल मुरगावको लोग मार्मागोवा कहते है। हम स्टेशन पर अुतरे और रेलकी बहुतसी पटरियोको लाघकर अेक होटलमे गये। वहा भोजन करनेके बाद मै अिधर-अुधर पडी हुअी सीपिया लेकर खेलने लगा। अितनेमे केशू दौडता हुआ मेरे पास आया। अुसकी विस्फारित आखे और हाफना देखकर मुझे लगा कि अुसके पीछे कोअी बैल पडा होगा।

अुसने चिल्लाकर कहा, 'दत्तू, दत्तू जल्दी आ! जल्दी आ! देख, वहां कितना पानी है! अरे फेंक दे वे सीपियां। समुद्र है समुद्र! चल मैं तुझे दिखा दूं।' बचपनमें अेकका जोश दूसरेमें आ जानेके लिअे अुसके कारणको जान लेनेकी जरूरत नहीं हुआ करती। मुझमें भी केशू जैसा जोश भर गया और हम दोनों दौड़ने लगे। गोदूने दूरसे हमको दौड़ते देखा तो वह भी दौड़ने लगा, और हम तीनों पागल जोर-जोरसे दौड़ने लगे।

हमने क्या देखा! सामने अितना पानी अुछल रहा था जितना आज तक हमने कभी नहीं देखा था। मैं आश्चर्यसे आंखें फाड़कर बोला, 'अबबबब ! कितना पानी!' और अपने दोनों हाथोंको अितना फैलाया कि छातीमें तनाव पैदा हो गया। केशू और गोदूने भी अपने अपने हाथोंको फैला दिया। अगर अुस हालतमें पिताजीने हमको देख लिया होता, तो अुन्होंने कैमेरा लाकर हमारी तस्वीरें खींच ली होतीं। 'कितना पानी है! अितना सारा पानी कहांसे आया? देखो तो, धूपमें कैसा चमकता है!' हम अेक-दूसरेसे कहने लगे। बड़ी देर तक हम समुद्रकी तरफ देखते रहे फिर भी जी नहीं भरा। अब अिस पानीका किया क्या जाय? बिलकुल क्षितिज तक पानी ही पानी फैला हुआ था और अुससे चुप भी न रहा जाता था। अुसके साथ हम भी नाचने लगे और जोर-जोरसे चिल्लाने लगे, "समुद् द्र! समुद् द्र!! समुद् द्र!!!" हर बार 'समुद्र' शब्दके 'मुद्र' को अधिकसे अधिक फुलाकर हम बोलते थे। समुद्रकी विशालता, लहरोंके खेल और दिगन्तकी रेखाका दृश्य पहली ही बार देखनेको मिला। अिससे हमें जो अत्यधिक आनन्द हुआ अुसे प्रकट करनेके लिअे हमारे पास अन्य कोअी साधन ही न था। जिस तरह समुद्रकी लहर अुभरकर, फूलकर फट जाती है, अुस तरह हम समुद्रकी रट लगाकर तालके साथ नाचने लगे, लेकिन हम लहरें तो थे नहीं, अिसलिअे अन्तमें थककर अिधर-अुधर देखने लगे तो अेक तरफ अेक अेक कमरे जितनी बड़ी औंटें चुनी हुअी हमने देखीं। अुनमें से कुछ टेढ़ी थीं तो कुछ सीधी। अुस समय मुझे दुकानमें रखी हुअी साबुनकी बट्टियों और

दियासलाओकी डिब्बियोकी अूपमा सूझी। वास्तवमे वह मुरगावका चह था, जो वडी वडी अीटोसे वनाया गया था। शिवजीके साडकी तरह समुद्रकी लहरे आ आकर अुस चहके साथ टक्कर ले रही थी।

हम घर लौटे और समुद्र कैसा दिखता है अुसके वारेमे घरके अन्य लोगोको जानकारी देने लगे। समुद्रके नक्कारखानेमे वेचारे दूध-सागरकी तूतीकी आवाज अव कौन सुनता?

सूर्य समुद्रमे डूव गया। सव जगह अधेरा फैल गया। हम खाना खाकर चहके साथ लगे हुअे जहाज पर चढ गये। लोहेके तारोका जो कठडा जहाजमे होता है, अुसके पासकी वेच पर वैठकर गोदू और मै यह देखने लगे कि अूट जैसी गर्दनवाले भारी वोझ अुठानेके यत्र (क्रेन) वडे-वडे वोरोको रस्सोसे वाधकर कैसे अूपर अुठाते है और अेक तरफ रख देते है। हमारे सामनेके क्रेनने अेक वडे ढेरमे से वोरे निकालकर हमारे जहाजके पेटको भर दिया। यत्रोकी घर्र घर्र आवाजके साथ मल्लाह जोर जोरसे चिल्लाते, 'आवेस! आवेस! —आन्या! आन्या!' जव वे 'आवेस' कहते तव क्रेनकी जजीर कस जाती और 'आन्या' कहते तव वह ढीली पड जाती। कहते है कि ये अरवी शब्द है।

हम यह दृश्य देखनेमे मशगूल थे कि अितनेमे हमारे पीछेसे, मानो कानमे ही भो ओ ओ 'की वडे जोरकी आवाज आयी। हम दोनो डरके मारे वेचसे झट कूद पडे और पागलकी तरह अिधर-अुधर देखने लगे। हमारे कानोके परदे गोया फटे जा रहे थे। अितने नजदीक अितने जोरकी आवाज वर्दाश्त भी कैसे हो? कहा तो दूरसे सुनाअी देने-वाली रेलकी 'कू अू अू 'वाली सीटी और कहा यह भैसकी तरह रेकनेवाली 'भो ओ 'की आवाज! आखिरकार वह आवाज रुक गअी, लकडीका पुल पीछे खीच लिया गया, आने-जानेके रास्ते परसे निकाला हुआ कटीला कठडा फिरसे लगा दिया गया और 'धस धस' करते हुअे हमारे जहाजने किनारा छोड दिया। देखते देखते अतर वढने लगा। किसीने रुमालको हवामे फहराकर तो किसीने सिर्फ हाथ हिलाकर अेक-दूसरेसे विदा ली। अैसे मौको पर चद लोगोको

कुछ न कुछ भूली हुअी बात जरूर याद आ जाती है। वे जोर-जोरसे चिल्लाकर अेक-दूसरेको वह बताते हैं और दूसरा आदमी अुसकी तसल्लीके लिअे 'हा हा' कहता रहता है, फिर भले अुसकी समझमें खाक भी न आया हो।

जमीनसे हमारा सबंध कट गया। और हम समुद्रके पृष्ठ पर जहाजके जरिये आगे बढने लगे। यह सब मजा देखकर हम अपनी अपनी जगहों पर बैठ गये। जहाजमें सब जगह बिजलीकी बत्तियां थीं। रेलमें अलग ढंगके दीये थे। वहां खोपरेके और मिट्टीके मिले हुअे तेलमें जलनेवाली बत्तियां काचकी हंडियोंमें लटकती रहती थीं। यहां दीवारोंमें छोटे छोटे काचके गोलोंके अंदर बिजलीके तार जलकर धीमी रोशनी दे रहे थे।

समुद्रका और समुद्र-यात्राका वह हमारा प्रथम अनुभव था।

५७

छप्पन सालकी भूख

सन् १८९३ के करीब मैं पहली बार कारवार गया था। मार्मागोवा बंदरगाह परसे जब मैंने पहली बार चमकता समुद्र देखा, तब मैं अवाक् हो गया था। रातको नौ बजे हम स्टीमरमें बैठे। स्टीमरने किनारा छोडकर समुद्रमें चलना शुरू किया, और मेरा दिमाग भी अपना हमेशाका किनारा छोडकर कल्पना पर तैरने लगा। सुबह हुअी और हम कारवार पहुंचे। स्टीमरसे नावमें अुतरना आसान न था। प्रत्येक नावके साथ अुलाडिया (outriggers) बंधी हुअी थीं। मेरे मनमें सवाल अुठा कि जान-बूझकर जिस तरहकी असुविधा क्यों की होगी? बादमें मैं अुलाडियोंकी अुपयोगिताको समझ सका।

सफरकी थकान अुतरते ही हम समुद्रके किनारे फिरने जाने लगे। किनारे परसे समुद्रमें तीन पहाड दिखाअी देते थे। अुनमें से अेक देवगढका था, दूसरा मधलिंग-गढका और तीसरा था कूर्मगढका। देवगढ
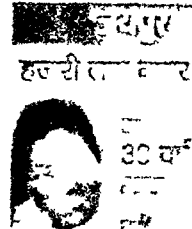
पर दीप-स्तभ था। यह अुसकी विशेपता थी। अिस दीप-मीनारके पास अेक पतली ध्वज-डडी मुश्किलसे दीख पडती थी। समुद्र-किनारे खेलते-खेलते थक जानेके वाद दीप-मीनारका जलता दीया सर्व प्रथम देखनेकी हमारे बीच होड लगती थी। कभी-कभी मनमे यह विचार अुठता था कि पानीके अिसी विशाल पट परमे जब हम कारवार आये तब रातको स्टीमरमे से देवगढ क्यो न देखा?

किसी स्टीमरके आनेके वक्त देवगढकी ध्वज-डडी पर लाल ध्वज चढाया जाता था। अुसे देखकर कारवार बदरगाहके नजदीककी ध्वज-डडी पर भी ध्वज चढाया जाता था। यहाका आदमी दूरवीन लेकर देवगढकी ओर ताकता रहता था। वहा ध्वज दिखाअी देने पर वह यहा भी ध्वज चढाता था। कभी-कभी मैं दूर देवगढ पर चढा हुआ ध्वज देख सकता था और भाअू गोंदूको आश्चर्यचकित कर देता था।

अेक दफा मैंने पिताजीसे पूछा, "देवगढ पर दीया कौन जलाता है? ध्वज कौन फहराता है?" अुन्होंने जवाब दिया, "वहा अेक खास आदमी रखा गया है। शाम होते ही वह दीया जलाता है। दूरसे आती हुअी आगबोटको देखकर वह ध्वज चढाता है। देवगढका दीया देखकर नाविकोंको पता चलता है कि कारवारका बदरगाह आ गया। वे जानते है कि दीयेके नीचे चट्टान है। अिसलिअे वे दीयेके पास नही जाते।"

"दीप-मीनारकी सभाल करनेवाले मनुष्यके लिअे खानेकी क्या सुविधा होगी? वह मीठा पानी कहासे लाता होगा?" मैंने सवाल किया।

"नावमे बैठकर खाने-पीनेकी सब चीजे वह कारवारसे ले जाता है। देवगढ पर शायद टाका या कुआ होगा, जिसमे बारिशका पानी जमा कर रखते होगे।"

"क्या हम वहा नही जा सकते? चले, हम भी अेक दफा वहा हो आये। वहा हमेशा रहनेमे तो कैसा मजा आता होगा। शाम होते ही दीया जलाना, और आगबोटकी सीटी बजते ही ध्वज चढाना। बस,

Our Outstanding Publications

अितना ही काम? बाकीका सारा समय अपना! हम जिस तरह चाहें व्यतीत कर सकते हैं। न कोअी हमसे मिलने आवेगा, न हम किसीसे मिलने जायेंगे। चलें, अेक दफा हम वहां हो आयें।"

पिताजीने हमारे घरके मालिक रामजीसेठ तेलीसे पूछा। अुन्होंने अपने जहाजके कप्तानसे बातचीत की। और दूसरे ही दिन देवगढ जाना तय हुआ। हम सब गाडीमें बैठकर बंदरगाह पर गये। वहां किश्तीमें बैठने पर खूब मजा आया। पाल फले और डोलते डोलते हम चले। जहाज सुन्दर डोलता था, लेकिन जल्दी आगे बढनेका नाम न लेता था। बहुत समय लगा तो पिताजीने रामजीसेठसे कारण पूछा। रामजीसेठने कप्तानसे पूछा। अुसने कहा, "पवन अनुकूल नहीं है, टेढा है। पवनकी दिशाका खयाल करके पाल चढाये गये हैं। जहाज आगे बढता है, लेकिन देवगढ पहुंचते-पहुंचते शाम हो जायेगी।" मुझे तो कोअी आपत्ति न थी। सारा दिन डोलनेका आनन्द मिलेगा और शाम होते ही दीप-मीनारका दीया नजदीकसे देखनेको मिलेगा। लेकिन अितनी अच्छी बात पिताजीके ध्यानमें न आयी। अुन्होंने कहा "यह तो ठीक नहीं है।" कप्तानने कहा, "पवन प्रतिकूल है। अिसके सामने हम क्या करें? थोडी दूर जानेके बाद यदि यही पवन जोरसे बहने लगा तो अितना अंतर काटना भी मुश्किल है।" रामजीसेठने पिताजीसे पूछा, "अब क्या करें?" पिताजीने कहा, "और कोअी अुपाय ही नहीं है। वापस जायेंगे।"

हुक्म हुआ, "वापस चलो।" पालोंकी व्यवस्था बदल दी गयी। किस तरह यह सब फेरफार किया जाता है, यह देखनेमें मैं मशगूल था। अितनेमें हमारा जहाज धक्के तक वापस आ पहुंचा। अितनी दूर जानेमें अेक घंटा लगा था। लेकिन वापस आनेमें पांच मिनट भी न लगे! घर लौटते वक्त सिर्फ तांगेके घोडे ही जल्दी नहीं करते।

हम जैसे गये वैसे ही खाली हाथ लौट आये। फीके मुंह मैं घर आया, मानो अपनी फजीहत हुअी हो। सहपाठियोंसे मैंने अितना भी न कहा कि हम देवगढ जानेको निकले थे।

अिमके वाद करीव पाच साल तक मै कारवार रहा। लेकिन फिर कभी मैने देवगढ जानेकी कोशिश न की। सूर्यास्तके समय देवगढका दीया दिखने पर मै अपने मनसे यह सवाल पूछता था कि अुम परीके देशमे क्या होगा? चालीस वर्पके वाद, यानी आजसे दस वर्प पहले फिर अेक दफा मै कारवार गया था। लेकिन तव भी देवगढ न जा सका।

अिस वार यह निश्चय करके ही कारवार गया कि देवगढ देखे विना नही लौटूगा। वहाके मित्रोसे मैने कह दिया था कि देवगढके लिअे अेक दिन जरूर रखे।

देवगढमे देखने लायक खास तो कुछ नही हे। लेकिन छप्पन सालका वचपनका मेरा सकल्प देवगढके साथ सलग्न था। अुसको मुक्त करनेकी जरूरत थी।

देवगढ कारवारके किनारेसे लगभग तीन मील दूर समुद्रमे आया हुआ अेक वेट हे। कारवार वदरगाहकी यह सवसे वडी शोभा है। समुद्रकी सतहमे पहाडीकी अूचाअी २१० फुट है और अुस परकी दीप-मीनार ७२ फुट अूची है।

शरावववदीके कारण कस्टम्सवालोको समुद्रका पहरा देना पडता है। अुसके लिअे अुनके पास अेक वाफर* होती है। अुसके द्वारा हमे ले जानेकी व्यवस्था की गअी थी। हमारा यह सैरका कार्यक्रम दूसरे कर्तव्यरूप कार्यक्रमोके आडे न आवे अिसलिअे हम सुवह जल्दी अुठे ओर वदरगाह पर पहुच गये। हम अितने अरसिक नही थे कि सुवहकी प्रार्थना ओर जलपान घर पर करते। खलासी लोग जरा देरसे आये, अत घोडेकी तरह दोडती हुअी हमारी वाफरके तालके साथ चल रही हमारी प्रार्थना सुननेके लिअे कारवारके पहाडके पीछेसे सविता नारायण भी आ पहुचे। सविता नारायणको जन्म देकर कृतार्थ प्राची कितनी खिल अुठी थी! समुद्रके पानी भी प्राचीकी प्रसन्नताके कारण चमकती लहरोके साथ आये थे। मैने जमीनकी ओर देखा। दाहिनी ओर कारवारका वदरगाह

* भापके अेजिनसे चलनेवाली नाव – स्टीमलॉच।

Our Outstanding Publications

छोटी-बडी नौकाओंको जगाता था और खेलाता था। अुसके पासकी घाटीके नारियलके पेड पवनकी राह देखते खडे थे। शनिवारकी तोप, जो आजकल छूटती नही हे, ध्वजदड परसे मुह फाडकर नाहक डराती थी। अुसके बाद सरोके पेड कारवारकी चौडाजीको नापते हुअे काळी नदी तक फैले थे। जिस तरह भारतीय युद्धके राजा विश्वरूपके मुहमे दौडे, अुसी तरह तीन-चार जहाज काळी नदीके मुहमे घुस रहे थे। ओर सदाशिव-गढका पहाड सहज भ्रूसकोच करके सारे प्रदेशकी रक्षा करता था।

प्रार्थना पूरी होने पर हमारी बाफरने समुद्रकी पीठ पर जो रास्ता आका था और अुस पर जो डिजाअिन शीघ्रतासे अदृश्य हो रही थी अुस ओर मेरा ध्यान गया, अुस डिजाअिनमे मुक्तवेणीकी हरेक खूबी प्रकट हुअी थी।

तुझे देवगढ दिखाये वगैर रहूगा ही नही, जैसा निश्चय करके व्यवस्थाके सब ब्योरोकी ओर सावधानीसे ध्यान रखनेवाले भाअी पद्मनाथ कामतने मुझे दक्षिणकी ओरके पहाडकी तराअीके नीचे फैला हुआ चद्रभागी किनारा दिखाया। किसी समय युरोपियन स्त्रिया वहा नहाती होगी। अिसलिअे अुसका नाम Ladies Beach (युवती-तट) पडा हे।

गोवाकी सस्कृतिसे ओतप्रोत कवि बोरकर भी हमारे साथ सफरमे आये थे। हमारे आनदकी वृद्धि करनेके लिअे भाअी कामत अपने साथ चित्रकार श्री रमानदको लाये थे। रमानदने पिताकी और बडे मेहमानोकी सन्निधिमे शोभा दे जैसी नम्रता धारण करके ठीक-ठीक आत्म-विलोपन किया था। लेकिन बीच समुद्रमे आते ही पहाड, बादल, सूरज, पक्षी, जहाजके पाल और समुद्रकी अूर्मिया अिन सबके प्रभावके नीचे अुनकी कलाधर आत्मा हमारी हस्तीका भान भूल गयी और वे अनेक दिनोके भूखे किसी खाअूकी तरह आसपासके काव्यका अनिमेष दृष्टिसे भक्षण करने लगे। हमने अगुलि-निर्देश करके अुनकी ओर दूसरोका ध्यान खीचा। लेकिन अिससे अुनका ध्यान नही बटा। सिर्फ नन्ही कुन्दाकी चचल आखे सब ओर घूमती थी।

8, निर्दलीय

हमारे कवि तो शास्त्रोक्त भक्तिसे हमारी प्रार्थना पूरी होनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। प्रार्थना पूरी होते ही अुन्होंने सागरकी लहरीका अेक खलासी गीत छेडा। गीतका प्रकार चाहे खलासी ढगका हो, लेकिन अदरके भाव खलासी हृदयके न थे। अुस गीतके द्वारा भोले खलासी नही वोलते थे, वल्कि मस्तीमे आये हुअे कवि अपनी अभिजात भावनाके फव्वारे छोड रहे थे। यह सच है कि अुस दिन हमारी टोलीमे कोअी स्व-स्थ (Sober) न था। हिन्दू स्कूलके आचार्य श्री कुलकर्णी भी आनदमे आ गये थे। चि० सरोजने तो अपना स्थान छोडकर बॉयलरके आगे खडा रहना पसद किया था। अपने स्वभावके प्रतिकूल जाकर अुसने अग्रगामित्व स्वीकार किया था। यह देखकर मुझे आनन्द हुआ। मैंने अुसको मचर सरोवरमे काव्यका पान किये हुअे नारायण मलकानीकी याद दिलाअी। अितने सकेतसे ही हम दोनो सारी वस्तुस्थितिका मूल्याकन कर सके!

समुद्रके पानी परसे आने-जानेके अनेक प्रकार है और हरेक प्रकारमे अलग-अलग रस होता है। लहरोके थपेडे खाते हुअे बाहुबलसे तैरते-तैरते दूर अदर तक जानेमे अेक प्रकारका आनद है। छातीके नीचे अुछलती लहरो पर सवार होनेका लुत्फ जिसने अुठाया है वह कभी अुसको भूल नही सकता। नदीके पानीकी तरह समुद्रका पानी हमे डुबा देनेके अितजारमे नही रहता। समुद्रका पानी किसीका भोग लेगा तो निरुपाय होकर ही। नही तो अुसकी नीयत हमेशा तैराकोको तारनेकी ही रहती है।

सकरी ओर लम्बी नावमे वैठकर अेक ही डाडसे हरेक लहरके सामने चढ-अुतर करना अेक दूसरा आनद है। दो लहरोके बीच नाव टेढी हो जाय तो मुसीवतमे आ जायेगे। अितना अगर सभाल लिया तो समुद्रके आनदके साथ अेकरूप होनेके लिअे अिससे अधिक अच्छा साधन मिलना मुश्किल है।

वडी नावमे दो-दोकी टुकडीमे वैठकर वल्ले मारनेका साधिक आनद आनदका तीसरा प्रकार है। हम मौन धारण करके यह आनद

Our Outstanding Publications

नही लूट सकते। ताल्का नशा अितना मादक होता है कि अुसमे गायन अचूक फूट निकलता है।

वाफरमें बैठनेका आनद अिन तीनोंमे कुछ कम है। वह अिसलिये कि अुसको चलानेमे मानवका बाहुबल बिलकुल खर्च नही होता। नियत्रण-चक्र हाथमे पकडनेवालेकी भुजाको कसरत होती है। अुतने ही पुरुषार्थका अवकाश वाफरमे मिलता है। लेकिन वाफरके द्वारा पानीको चीरते हुअे जानेका आनद सारे शरीरको मिलता है। वाफर जब सीधी दौडती जाती है तब अुसकी गति हमारी रग-रगमें पहुचती है। मोटर चलानेके आनदमे वाफर चलानेका आनद अनेक गुना बढकर है।

अिस आनदको लूटते-लूटते और यह विचार करते-करते कि समुद्रका पानी यहा कितना गहरा होगा, हम देवगढकी ओर चले। मुझे अेक विचार आया, जो पानी सबसे नीचे है वह अूपरके पानीके भारसे कुचल नही जाता होगा? अूपरके पानीमे नीचेका पानी अधिक गाढा और घना होना ही चाहिये। अमुक मछलिया तो अुस गाढे पानीको चीरकर नीचे अुतर ही नही सकती होगी। पारेके सरोवरमें अगर हम पडे तो लकडीके टुकडेकी तरह अुसके अूपर ही तैरते रहेंगे। अमुक प्रकारकी मछलियोका भी नीचेके गाढे पानीमे यही हाल होता होगा।

ज्यो-ज्यो देवगढका बेट नजदीक आता गया, त्यो-त्यो आस-पासके छोटे-छोटे बेट और चट्टाने स्पष्ट दीखने लगी। आकाश और समुद्र जहा मिलते हैं वह क्षितिज-रेखा भी आज बहुत ही स्पष्ट थी। मानो कोअी सूअीसे दिखा रहा है कि यहा पृथ्वी पूरी होती है और स्वर्ग शुरू होता है।

दो जहाज अपने पालमे पवन भरकर सफरको रवाना हुअे थे। अुन पालोके पेटमे पवनके साथ अुगते सूर्यकी किरणे भी घुस गअी थीं। अैसा महसूस होता था कि अिस भारसे पाल फट जायेंगे। पाल अितने चमकते थे कि वे रेशमके है या हाथी-दातके, यह तय करना मुश्किल था। जब पवन पालमे घूमता है तब केलेके पानकी डिजाअिन अुसमें अधिक शोभती है।

अब हम देवगढके बिलकुल नजदीक आ गये थे। सारी पहाडी टेकरी छोटे-बडे पेडोसे ढकी हुअी थी। अूपरकी दीप-मीनार अपना दरजा सभालकर आकाशकी ओर अगुलि-निर्देश कर रही थी। अब वाफरके लिअे आगे जाना असभव था। बाकीका थोडा और छिछला अतर काटनेके लिअे हमारी वाफरने अपने साथ अेक नन्हा-सा किकर बाध लिया था। अुस छोटीसी नावमे हम अुतरे और बेटके किनारे पहुचे। अुतरते ही पके बेरके लाल-लाल फलोने हमारा स्वागत किया। हम अूपर चढते-चढते बडे-बडे वृक्षोकी शाखाये तथा बरगदकी जडे निहारते-निहारते दीप-मीनारकी तलहटी तक पहुचे। दीप-मीनारके दीप-कार अेक भले मुसलमान थे। अुन्होने हमारा स्वागत किया। बेट पर दीप-मीनारके कारण कुछ लोग रहते थे। अुनके कारण थोडे बकरे और मुरगे भी रहते थे (और समय समय पर बा-कायदा मरते भी थे)। समुद्र किनारेसे अुडते-अुडते आकर यहाके पेडो पर आराम करनेवाले और प्राकृतिक काव्यके फव्वारे छोडनेवाले पक्षी तो अृषि-मुनियो जैसे ही पवित्र माने जाने चाहिये।

वाफरमे बैठकर हमने सुबह आत्माकी अुपासना की थी, यहा अेक चट्टान पर बैठ कर सबोने पेटकी अुपासना की। आसपासकी शोभा अघाकर देखनेके बाद दीप-मीनारके पेटमे होकर हम अूपर गये।

दीयेमे से 'विश्वतो' निकलती किरणोको खूबीसे मोडकर पानीके पृष्ठभागके समानातर अुनका बडा प्रवाह दौडानेके लिअे अनेक प्रकारके बिल्लोरी काचसे बनायी हुअी दो ढालोको हमने सर्वप्रथम देखा। पेराबोला और हाअीपरबोलाके गणितका अुसमे पूरा अुपयोग किया जाता है। शकुछेदका* रहस्य जो जानता हे वही अिसका रहस्य समझ सकेगा। अुसके बाद अुस दीयेका बुरका अेक ओर खिसकाकर हमने दूर तक सामुद्रीय शोभा निहारी और अितनेसे सतोष न पाकर हम दीयेके आसपासकी गैलरीमे जाकर स्वतत्रतासे दसो दिशाअे देखने लगे।

---

* Conic sections

जिस दृश्यको देखनेकी अभिलाषा मैं छप्पन सालसे सेता आया था, वह दृश्य आज देखा। आंखोंको पारण मिला। असा लगता था मानो सारा बेट अेक बडा जहाज है, दीप-मीनार अुसका मस्तूल (mast) है, और हम अुस पर चढकर चारों ओर पहरा देनेवाले खलासी हैं। यह सच है कि जहाजके मस्तूलकी तरह यह दीप-मीनार डोलती न थी, लेकिन अभी-अभी वाफरका सफर किये हुअे हमारे 'पियक्कड' दिमाग अिस त्रुटिको दूर कर रहे थे।

अितनी अूंचाअीसे चारों ओर देखनेमें अेक अनोखा आनंद आता है। कुतुबमीनार परसे हिन्दुस्तानकी अनेक राजधानियोंका स्मशान देखने-से मनमें जो विषाद पैदा होता है सो यहां नहीं होता। यहांसे दिखनेवाले समुद्रमें प्राचीन कालसे आजतक अनेक जहाज डूब गये होंगे, लेकिन अुनकी गमगीनी यहांके वातावरणमें बिलकुल नहीं दीख पडती। समुद्रमें भूत और भविष्यके लिअे स्थान ही नहीं होता। वहां वर्त-मानकाल और सनातन अनंतकाल, अिन दोनोंका ही साम्राज्य चलता है। जब तूफान होता है तब लगता है कि यही समुद्रका सच्चा और स्थायी रूप है। और जब आजकी तरह सर्वत्र शांति होती है तब लगता है कि तूफान तो माया है। सचमुच समुद्रका मुंह बुद्ध भगवानकी शांति और अुनके अुपशमको व्यक्त करनेके लिअे ही सिरजा गया है।

अितने बडे समुद्रको आशीर्वाद देनेकी शक्ति पितामह आकाशमें ही हो सकती है। आकाश शांत चित्तसे चारों ओर फैल गया था और समुद्र पर रक्षणका ढक्कन ढांकता था। ढक्कन पर कुछ भी डिजाअिन न थी, यह पक्षियोंसे सहन न होता था। अतः वे अुस पर तरह तरहकी रेखाअें खींचनेका अस्थायी प्रयत्न करते थे। जिस तरह बच्चे किसी गंभीर आदमीको हंसानेके लिअे अुसके सामने डरते डरते थोडी वानर-चेष्टाअें करके देखते हैं, अुसी तरह समुद्रका नीला रंग आकाशकी नीलिमाको हंसानेका प्रयत्न कर रहा था।

भगवानका अैसा विराट दर्शन होते ही भगवद्गीताका ग्यारहवां अध्याय याद आना चाहिये था, लेकिन अितने प्राचीन कालमें जानेके

पहले अुत्तेजित चित्तने आरामके लिअे अेक नजदीकका ही प्रसग पसद किया। बीस साल पहले मै लकाके दक्खिनी छोर पर देवेन्द्रसे भी आगे मातारा गया था, तब वहाकी दीप-मीनार पर चढकर दोपहरकी धूपमें अैसा ही, बल्कि अिससे भी अनेक गुना विशाल, दृश्य देखा था। वहा नजरकी त्रिज्या बनाकर मनुष्य जितना चाहे अुतना बडा वर्तुल खीच सकता था। अुस वर्तुलका दक्षिणार्ध हिन्द महासागरको दिया गया था ओर अुत्तरार्ध नारियलके पत्तोकी लहरे अुछालते और दोपहरकी धूपमें चमकते वनसागरको अर्पण हुआ था। यहा देवगढ परसे पूर्वकी ओर सूर्यनारायणके पादपीठकी तरह शोभायमान पर्वत दिखाअी देता था। अुसके नीचे फैला हुआ कारवारका समुद्र शातिसे चमकता था। अुस परकी नावोकी डिजाअिन बिलकुल हलकी हलकी थी। और पश्चिमकी ओर तो अरबस्तानकी याद दिलाता अेक अखड महासागर ही था। यह दृश्य हृदयको व्याकुल करनेवाला था।

'नमोऽस्तु ते सर्वत अेव सर्व'—अितने ही शब्द मुहसे निकल सके।

* * *

अिस बीच हमारे लज्जाशील चित्रकारने अेक कोनेमे बैठकर पासकी अेक बडी चट्टानका और आसपासके समुद्रका अेक चित्र खीचा। घर आते ही अुन्होने मुझे वह भेट कर दिया। आज मेरी छप्पन सालकी भूख तृप्त हुअी थी। अिस प्रसगके स्मारकके तौर पर मैने अुसको प्रसन्नतासे स्वीकार किया।

दीप-मीनारका काव्य आखिर पूर्णताको पहुचा।

मअी, १९४७

५८

मरुस्थल या सरोवर

किसी घटनाके नियमित हो जानेसे क्या अुसकी अद्‌भुतता मिट जाती है?

छ घंटे पहले पानी कहीं भी नजर नहीं आता था। अुत्तरसे लेकर दक्षिण तक सीधा समुद्र-तट फैला हुआ है। पश्चिमकी ओर जहां आकाश नम्र होकर धरतीको छूता है वहां तक — क्षितिज तक — पानीका नामोनिशान नहीं है, अेक भी लहर नहीं दीखती। यह स्थान पहली बार देखनेवालेको लगेगा कि यह कोअी मरुस्थल है। बारिशके कारण केवल भीग गया है। या यों लगेगा कि यह काअी दलदल है, जिस पर केवल घास नहीं है। जहां तक दृष्टि पहुंच सकती है वहां तक सीधी समतल जमीन देखकर कितना आनंद मालूम होता है। अैसी समतल जमीन तैयार करनेका काम किसी अिजीनि-नियरको सौंपा जाय, तो अुसे बेहद मेहनत करनी पडेगी। मगर यह है कुदरतकी कारीगरी। अूंचे अूंचे पहाडोंमें भव्यता होती है, जब कि अैसे समतत* प्रदेशोंमें विशालता, विस्तीर्णता होती है। हम जिस विशालताका पान करनेमें मग्न थे, अितनेमें दूर क्षितिज पर जहाजके जैसा कुछ नजर आया। जमीन पर जहाज? क्या बात है? अितनेमें दक्षिणसे लेकर अुत्तर तक फैली हुअी अेक भूरी रेखा गहरी होने लगी। बीच बीचमें अुस पर सफेद लहरें दिखाअी देने लगीं। पानीका कटक आया। सेनापतिके हुक्मके अनुसार 'अेक-कतार' में लहरें आगे बढ़ने लगीं। आया, आया, पानी आगे आया! वह आगे पट पर फैल गया! सूरज आकाशमें चढ़ता जाता था, धूप बढ़ती जाती थी और लहरोंका अुन्माद भी बढ़ता जाता था। क्या ये लहरें अीश्वरका गाया

* सम-तत = stretched evenly अुदाहरणके लिअे, गंगामुखके पासका सुन्दरवनका प्रदेश समतत कहलाता था।
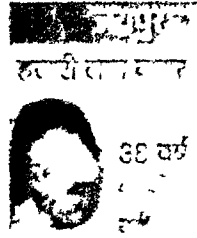
हुआ कोअी असाधारण कार्य करनेके लिअे चली आ रही है? वे यमदूत जैसी नही, वल्कि देवदूतके जैसी मालूम होती है। जगलमे जैसे भेडियोकी टोलिया छलाग मारती, कूदती-फादती आती है, वैसे ही लहरे आगे वढने लगी। जहा नीरव भीगा हुआ मरुस्थल था, वहा अुछलती गरजती लहरोका सागर फैल गया। ज्वार पूरे जोशमे आ गया। लहरे आती है और किनारेसे टकराती है। जरा ताककर अुनकी ओर घटे आधे घटे तक देखते रहिये, तुरन्त मनमे स्फुरित होगा कि लहरे जड नही वल्कि सचेतन है। अुनका भी स्वभाव-धर्म है। चारो ओर पानी ही पानी दिखाअी देता था। वायी ओरके ताड-वृक्ष पानीमे डोलने लगे। मालूम होता था मानो अभी डूव जायेंगे। भानजेको लम्बे अर्सेके वाद मिलने आया हुआ देखकर समुद्रकी मौसी मरजाद-वेल स्नेहसे तर हो गअी है। और लहरोका मद तो अुतरता ही नही है। हाथीके समान दौड रही है, और किनारे पर वप्र-क्रीडाका अनुभव कर रही है। कितना अद्भुत दृश्य है! जमीन ढालू हो, अुतार हो, और पानी नदीकी तरह वहता हो, तव कोअी आश्चर्य नही मालूम होता। नीचेकी ओर वहते रहना तो पानीका स्वभाव-धर्म है। मगर समतल भूमि पर, जहा पानी नही था वहा वारिश या वाढके विना पानी दौडता हुआ आये और जमीन पर फैलता जाये, यह कितने अचरजकी वात है! जहा अभी अभी हम दौडते और घूमते थे वहा पाव न जम सके अैसी जलाकार स्थिति कैसे हुअी होगी? अितने थोडे समयमे अितना वडा विपर्यास! जहा हवामे हाथ हिलाते हुअे हम घूम रहे थे, वहा अव अुछलती हुअी लहरोके वीच हाथकी पतवारे चलाकर तैरनेका आनद लूट रहे है। मानो घोडे पर वैठकर सैर करने निकले हो। अिस ज्वारके समय यदि कोअी यहा आकर देखे तो अुसे लगेगा कि खारे पानीका यह छलकता हुआ सरोवर हजारो वर्षोसे यहा अिसी तरह फैला हुआ होगा। किन्तु थोडी देर खडे रहकर देखनेकी तकलीफ कोअी अुठाये तो अुसे मालूम होगा कि अितने वडे महायुद्धके जैसे आक्रमणका भी अत आता है। लहरोने अपनी लीला जिस तरह फैलाअी, अुसी तरह अुसे समेटनेका भी समय आया। अीश्वरका कार्य मानो

समाप्त हुआ। अीश्वरने मानो अपनी प्राणशक्ति वापस खीच ली। अब अेक अेक लहर किनारेकी ओर दौडती आती है, फिर भी यह साफ दिखाअी दे रहा है कि पानी पीछे हट रहा है।

चला, पानी हटने लगा। क्या समुद्रके अुस पार बडा गड्ढा है, जिसे भर देनेके लिअे यह सारा पानी दौडता जा रहा है? आगेकी लहरोको वापस लौटते देखकर बादमे आयी हुअी लहरे बीचमे ही विरम हो जाती है, और दौडते दौडते ही हम पडती हैं। सागरके पानीका अदाज भला कौन लगाये? अुसे किस तरह नापे? अितना पानी आया क्यो और जा क्यो रहा है? क्या अुसे कोअी पूछनेवाला नही है? या कोअी पूछनेवाला है अिसीलिअे वह अितना नियमित रूपमे आता है और जाता है? ज्यो-ज्यो सोचने लगते है, त्यो-त्यो अिस घटनाकी अद्भुतताका असर मन पर होने लगता है। ज्वार और भाटा क्या चीज है? समुद्रका श्वासोच्छ्वास? अुनका अुपयोग क्या है? ज्वार और भाटा यदि न होते तो समुद्रका क्या हाल होता? समुद्र-जीवी प्राणियोके जीवनमे क्या क्या परिवर्तन होता? चद्र और सूर्यका आकर्षण और पृथ्वीकी सतहसे सागरका विभाजन आदि चर्चाअे तो ठीक है, मगर अिनके पीछे अुद्देश्य क्या है यह जाननेकी ओर ही मन अधिक दौडता है। पर यह जिज्ञासा अभी तक तृप्त नही हुअी है।

जितनी बार हम ज्वार और भाटा देखते है, अुतनी ही बार वे समान रूपसे अद्भुत लगते है। और अिस बातकी प्रतीति होती है कि अीश्वरकी सृष्टिमे चारो ओर वह ज्ञानमय प्रभु सनातन रूपसे विराजमान है।

'सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्व' कहकर हृदय अुसे प्रणाम करता है। सृष्टि महान है तो अुसका सिरजनहार विभु कैसा होगा? अुसे कौन पहचानेगा? क्या खुद अुसे अिस बातकी परवाह होगी कि कोअी अुसे पहचाने?

बोरडी, १ मअी, १९२७

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

५९
चांदीपुर

मुझे डर था कि पिछली वार चादीपुरमे जो दृश्य मैंने देखा था वह अवकी वार देखनको नही मिलेगा। अत मनको समझाकर कि विशेष आशा नही रखनी चाहिये, चादीपुरके लिअे हम चल पडे। फिर भी चादीपुर तो चादीपुर ही हे! अुसकी सामान्य शोभा भी असामान्य मानी जायगी।

कलकत्ता-कटकके रास्ते पर बालासोर या बालेश्वर नामका अेक कस्वा है। चादीपुर वहासे आठ मील पूर्वकी ओर समुद्र-किनारे बसा हुआ है। सरकारके फौजी विभागने अिस स्थानका कुछ अुपयोग किया है। मगर अिससे अुमका महत्त्व वढा नही है। यहासे तीन मीलकी दूरी पर जहा वूढी-वलग नदी समुद्रसे मिलती है, वहा सुन्दर वन्दरगाह वनाया जा सकता है। हवा खानेका सुन्दर स्थान भी वह वन सकता है। मगर अभी तक वैसा वन नही पाया है। आज चादीपुरका महत्त्व अुसकी सनातन प्राकृतिक शोभाके कारण ही हे। अिसीलिअे मैंने अुसे पूर्व दिशाकी वोरडीका नाम दिया हे।

वम्बअीके अुत्तरमे घोलवड स्टेशनसे डेढ मील पर वोरडी नामक जो स्थान है, वहाका समुद्र जव भाटेके समय पीछे हटता है, तव डेढ दो मीलका पट खुला छोड देता है और अुसका पानी लगभग क्षितिजके पास पहुच जाता है। सारा समुद्र-तट मानो देवताओका या दानवोका भीगा हुआ टेनिस-कोर्ट हो, अितना सीधा और समतल मालूम होता है। और जव ज्वारके समय पानी वढने लगता है तव देखते ही देखते सारा तट पानीसे भरकर सरोवरकी तरह छलकने लगता है। मुहूर्तमे गीला मरुस्थल और मुहूर्तमे छिछला सरोवर, अैसी यह प्रकृतिकी लीला देखकर मुझे विस्मय हुआ था। अुसका वर्णन जब मैंने लिखा तव स्वप्नमे भी यह खयाल नही हुआ

कि ठीक अिसी प्रकारके अेक स्थानका सर्जन प्रकृतिने पूर्वकी ओर भी कर रखा है।

राष्ट्रभाषा-प्रचारके मिलसिलेमे जब मैं अिसके पहले कलकत्तासे अुत्कल आया था, तब बालासोरका काम पूरा करके चादीपुर देखनेके लिअे खास तौर पर यहा आया था। रास्तेमें जगह-जगह पानीके गड्ढोमे अुगे हुअे नील-कमल देखकर मेरे हर्षका पार नही रहा था। कमल यानी प्रसन्नताका प्रतीक। सुन्दरता, कोमलता, ताजगी और पवित्रता जब अेकत्र हुअी तब अुन्होंने कमलका रूप धारण किया। कमल जब सफेद होता है तब वह तपस्विनी महाश्वेताका स्मरण कराता है। वही कमल जब लाल होता है तब गधर्व-नगरी पर राज्य करनेवाली कादबरीकी शोभा दिखलाता है। किन्तु नील-कमल तो प्रत्यक्ष कुजविहारी श्रीकृष्णकी ही भूमिका अदा करता मालूम होता है। सभव है हमारे देशमे नील-कमल अधिक देखनेको नहीं मिलते, अिसलिअे मुझे अैसा लगा हो। मगर अिस मार्ग पर नील-कमलोको देखकर मुझे अपार आनद हुआ अिसमे कोअी सदेह नहीं।

बालासोरसे चादीपुरका रास्ता लगभग सीधा है। किनारेके डाक-बगलेके दरवाजे तक पहुच जाते हैं तब तक भी समुद्रका दर्शन नही होता। मगर जब होता है तब वह अपनी विशालतासे चित्तको हर लेता है। पिछली बार जब हम गये थे तब ज्वार धीरे धीरे बढ रहा था, और नाजुक लहरे क्षितिजके साथ समानान्तर रेखा बनाकर धीमे धीमे आगे बढ रही थी। क्षितिजसे किनारे तक आते समय लहरें अितनी सीधी और समानान्तर आती थी, मानो कोअी दो-तीन मील लम्बी तनी हुअी रस्सीको खीचकर आगे ला रहा हो। मेरे साथ यदि कोअी विद्यार्थी होता तो मै अुसे समझा देता कि नोटबुकमे जो रेखायें खीचते हैं, वे अिसी तरह सुन्दर और समानान्तर खीचनी चाहिये। जमीन जब सब ओरसे समतल होती है तब अग्रेज लेखक अुसे टेनिस-कोर्टकी अुपमा देते हैं। मगर कहा टेनिस-कोर्ट और कहा मीलो तक फैली हुअी लम्बी और चौडी सिकता-स्थली !

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र

8, निर्दलीय 1

जयपुर

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जरा नाम

यह सारा दृश्य जी भरकर देखा। मन तृप्त होने पर भी देखा। सामनेसे देखा, वाजूसे देखा। हम कितने पुण्यशाली है, अिस धन्यताके भानके साथ देखा। और फिर मनमे विचार आया अव अिसका क्या करना चाहिये? अुसके वारेमे लिखना तो था ही। राजाको जव रत्न मिलता है तव वह अुसे अपने खजानेमे पहुचा ही देता हे। रमणियोके हाथमे जव फूल आते है तव वे अपने जूडेमे जव तक अुन्हे लगा नही लेती तव तक अुन्हे सतोष नही होता। प्रकृतिके अुपासक लेखकको जव कोअी दृश्य पान करनेके लिअे मिलता है, तव वह जव तक अुसे लेख-वद्ध या कविता-वद्ध नही करता तव तक अुसे चैन नही पडता। मगर यह तो घर जानेके वाद ही हो सकता है। अभी यहा क्या करना चाहिये? प्रकृतिका विस्तार चौडा हो या अूचा, अुसका आस्वाद केवल आखोसे नही लिया जा सकता। पावोको भी अुनका हिस्सा देना ही पडता है।

हम डाक-वगलेकी अूचाअीसे खिसकती और हसती हुअी वालू पर दौडते हुअे नीचे अुतरे। अितनेमे अिधर-अुधर दौडते और पृथ्वीके अुदरमे लुप्त होते हुअे वडे वडे माणिक हमने देखे। कैसा सुन्दर अुनका लाल चमकीला तरल रग था! मखमलमे जैसी फीकी और गहरी लाली होती है, वैसी ही छटा प्रकाशके कारण माणिकमें भी दिखाअी देती हे। यही लावण्य हमने अिन दौडनेवाले रत्नोमे देखा। ये केकडे जितने आकर्षक थे, अुतने ही भयावने भी थे। डर लगता था कि आकर कही काट लेंगे तो अुनके जैसा ही लाल खून पावोमे से निकलने लगेगा। मगर वे जितने डरावने थे अुतने ही डरपोक भी थे। मनुष्योको देखकर झट अपने घरोमे छिप जाते थे। हम अुनके पीछे दोडे और अुनकी दौडधूप देखनेका आनद प्राप्त किया।

दौडते-दौडते हमने डिब्बियोके जैसी छोटी-वडी सीपे देखी। अुनके अूपरकी आकृतिया देखकर मुझे विश्वास हो गया कि अिनके आकार देखकर ही यहाके मदिरोके कलश तैयार किये गये होगे। सुपारीके आकारकी अपेक्षा यह आकार कलाकी दृष्टिसे कही ज्यादा सुन्दर है।

चि० मदालसाने अैसी कअी डिब्बिया चुन ली। अुनके आरपार सुराख होनेसे अुनकी माला बनानेकी कल्पना सहज सूझ सकती थी।

समुद्रका तट, अुसकी लहरे, लाल केकडे और ये सीपें अिन सबकी बाते करते करते हम वापस लौटे। कुछ नील-कमल भी हमने साथ ले लिये और भारतवर्षके दर्शनमे अेक और कीमती वृद्धि हुअी अैसे सतोषके साथ घर लौटे।

अबकी जब फिरसे बालासोर आये, तब अिस सारे दृश्यका प्रत्यक्ष स्मरण हो आया और अुसे श्रद्धाकी अजलि अर्पण करनेके लिअे फिर चादीपुर जानेका कार्यक्रम हमने तय किया।

आकाशमे बादल घिरे हुअे थे। फिर भी हमने यह आशा रखी थी कि चादीपुर पहुचने पर पानीमे से निकलते हुअे सूर्यके दर्शन करेगे। अत साढे तीन बजे अुठकर नित्यविधि पूरी की, चार बजे डॉ० भुवनचद्रजीकी मोटर गगवाअी और मोटर-वेगसे आठ मीलका अतर तय किया। रास्तेमे न तो खड्डे थे, न श्रीकृष्णकी आखोंमे होड करनेवाले नील-कमल थे। मुझे लगभग यही विश्वास था कि वे लहरे भी हमे देखनेको नही मिलेगी। अष्टमीका चाद आकाशमे फीका चमक रहा था। अत मैंने माना था कि यहा सिर्फ छलकता हुआ शात सरोवर ही दिखाअी देगा। हम अपने परिचित डाक-बगलेके आगनमे आये और मैंने देखा कि पानी तो कबका वापस लौट चुका है। दूर मटियाला पानी बालूके ढेरके समान मालूम होता था। सिर्फ बालूका पट अधिकाधिक खुलता जा रहा था। यदि हम चार-छह ही मिनट पहले पहुचे होते, तो सूर्यको पानीमे पाव रखते हुअे देख पाते। आसमानमें बादल थे, पर सूर्यके पासका क्षितिज स्वच्छ और सुन्दर था। बादलोके धब्बे सूर्यकी शोभाको बढा रहे थे। सूर्यको देखकर अपना हमेशाका श्लोक भी बोलना मुझे नही सूझा। मैंने केवल अजलि बनाकर अर्घ्य अर्पण किया और दूर समुद्रसे निकले हुअे सूर्यनारायणका अुपस्थान किया। मनमे मनुका श्लोक प्रकट हुआ

> आपो नारा अिति प्रोक्ता आपो वै नर-सूनव ।
> ता यदस्य अयन जातम् अिति नारायण स्मृत ॥

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

अितनेमें चि० अमृतलालने गीत गाया

'प्रथम प्रभात अुदित तव गगने।'

नीचे वालू पर पहुचते हमे देर न लगी। गरमीले केकडोने अपने-अपने विलोमे घुसकर हमारा स्वागत किया।

समुद्रके लौटनेवाले पानीने दूरसे ही हमे अिशारेसे पूछा 'यहा तक आना है?' पानीके निमत्रणका अिनकार भला कैसे किया जाय?

हम आगे वढे। वीच वीचमे दो-चार अगुल गहरा पानी देखकर पैर छपछपाते हुअे चलने लगे। कभी सूर्यको देखनेका मन हो जाता, तो कभी पीछे मुडकर किनारेकी ओर देखनेका जी हो जाता। थोडे सरोके पेड, अेक-दो कुटिया और जकात-विभागका झडा चटानेका अूचा स्तभ—अिनसे अधिक आकर्षक वहा कुछ नही था। अिससे तो पावतलेके पानीमें प्रतिविवित वादलोकी शोभा ही अधिक आनद देती थी। पीछे हटनेवाले पानीकी मोहिनीके पीछे पीछे हम कितने ही दूर चले जाते। किन्तु हम यह वात भूले नही थे कि हमारे सामने दूसरा भी कार्यक्रम है, और समयके वजटके वाहर यहा अधिक मौज नही की जा सकती। किनारेसे कितनी दूर आ गये, अिसका हिसाव लगानेके लिअे कदम गिनते गिनते हम वापस लौटे। दो दो फुटके कदम भरते हुअे हमने अेक हजार कदम गिने और दौडते हुअे माणिकोकी रत्नभूमि तक पहुचे। अूपर चढकर देखते है तो नटखट पानी धीरे-धीरे हमारे पीछे आ रहा है और पानीको आता हुआ देखकर कुछ मछुअे वालूके पटमे अपना जाल खभोके सहारे फैला रहे है।

पुरानी कहानिया समाप्त होती है, 'खाया, पिया और राज किया' वाक्यसे। हमारे वर्णन ज्यादातर पूरे होते है अिन शब्दोके साथ 'प्रार्थना की और वादमे नाश्ता किया।' अेक भाअीने वताया कि आजकल यहा जव फौजी आदमी तोपे छोडते है तव भूकपकी तरह सारी वस्ती काप अुठती है। तैयार हुआ जानलेवा माल अच्छी तरह अुतर गया है या नही, यह जाचनेका स्थान यही है। आवाज चाहे जितनी वडी हो, क्रातिके वाद जिस प्रकार शातिकी स्थापना होती

है, अुसी प्रकार आवाज आकाशमे विलीन हो जाती है और अतमें नीरवता ही वाकी रहती हे।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ।

मअी, १९४१

६०

सार्वभौम ज्वार-भाटा

हरेक लहर किनारे तक आती हे और वापस लौट जाती है। यह अेक प्रकारका ज्वार-भाटा ही हे। वह क्षणजीवी हे। वडा ज्वार-भाटा वारह वारह घटोके अतरसे आता ह। वह भी अेक तरहकी वडी लहर ही है। वारह घटोका ज्वार-भाटा जिसकी लहर हे, वह ज्वार-भाटा कौनसा हे? अक्षय-तृतीयाका ज्वार यदि वर्षका सबसे वडा ज्वार हो, तो सबसे छोटा ज्वार कव आता हे?

हम जो श्वास लेते हे और छोडते है वह भी अेक तरहका ज्वार-भाटा ही है। हृदयमे धडकन होती हे और अुसके साथ सारे शरीरमे खून घूमता हे, वह भी अेक तरहका ज्वार-भाटा ही हे। वाल्यकाल, जवानी और वुढापा भी वडा ज्वार-भाटा हे। अिस प्रकार ज्वार-भाटेका क्रम विशालसे विशालतर होकर सारे विश्व तक पहुच सकता है। जहा देखे वहा ज्वार-भाटा ही ज्वार-भाटा हे। राष्ट्रोका ज्वार-भाटा होता हे। सस्कृतियोका ज्वार-भाटा होता है। धार्मिकतामे भी ज्वार-भाटा होता हे। हरेक भाटेके वाद ज्वारको प्रेरणा देनेवाले तो है रामचद्र और कृष्णचद्र जैसे अवतारी पुरुष। समुद्रके ज्वार-भाटेको प्रेरणा देनेवाले चद्र परसे ही क्या राम और कृष्णको चद्रकी अुपमा दी गअी होगी? कवि कहते है कि दोनोका रूप-लावण्य आल्हादक था, अिसी परसे अुन्हे चद्रकी अुपमा दी गअी है। और कवि जो कहते है वह ठीक ही होना चाहिये। मगर अैसा क्यो न कहा जाय कि

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक उभरे नाम

धर्मके भाटेको रोकनेवाले और नये ज्वारको गति देनेवाले वे दोनो धर्मचद्र थे, अिसीलिअे अुन्हे चद्रकी अुपमा दी गअी है? यह कारण अब तक भले न बताया गया हो, मगर आजसे तो हम यही मानेगे कि धर्म-सागरके चद्रके नाते ही अुनका नाम रामचद्र और कृष्णचद्र रखा गया है।

जलके स्थान पर स्थल और स्थलके स्थान पर जल जो कर सकती है, वह 'अघटित-घटना-पटीयसी' अीश्वरकी माया कहलाती है। अिस मायाका यहा हमे रोज दर्शन होता है। फिर भी हम भक्ति-नम्र क्यो नही होते? अद्भुत वस्तु रोज होती है, अिसलिअे क्या वह नि सार हो गअी? मेरे जीवन पर तीन चीजोने अपने गाभीर्यसे अधिकसे अधिक असर डाला है हिमालयके अुत्तुग पहाड, कृष्ण-रात्रिका रत्नजटित गहरा आकाश और विश्वात्माका अखड-स्तोत्र गानेवाला महार्णव। तीन हजार साल पहले या दो हजार साल पहले (हजारका यहा हिसाब ही नही) भगवान बुद्धके भिक्षु तथागतका सदेश देश-विदेशमे पहुचाकर अिसी समुद्र-तट पर आये होगे। सोपारासे लेकर कान्हेरी तक, वहासे घारापुरी तक और थाना जिले व पूना जिलेकी सीमा पर स्थित नानाघाट, लेण्याद्रि, जुन्नर आदि स्थानो तक, कार्ला और भाजाके प्राचीन पहाडो तक और अिस तरफ नासिककी पाडव-गुफाओ तक शाति-सागर जैसे बौद्ध भिक्षु जिस समय विहार करते थे, अुस समयका भारतीय समाज आजसे भिन्न था। अुस समयके प्रश्न आजसे भिन्न थे। अुस समयकी कार्य-प्रणाली आजसे भिन्न थी। किन्तु अुस समयका सागर तो यही था। अुन दिनो भी यह अिसी प्रकार गरजता होगा। होगा क्या, गरजता था। ओर 'दृश्यमात्र नश्वर है, कर्म ही अेक सत्य है, जिसका सयोग होता है अुसका वियोग निश्चित है, जो सयोग-वियोगसे परे हो जाते है, अुन्हीको शाश्वत निर्वाण-सुख मिलता है।'—यह सदेश आजकी तरह अुस समय भी महासागर देता था। आज वह जमाना नही रहा। महासागरका नाम भी बदल गया। मगर अुसका सदेश नही बदला। ज्वार-भाटेसे जो परे हो गये, अुन्हीको शाश्वत शाति

मिलनेवाली है। वे ही बुद्ध हैं। वे ही सु-गत हैं। वे सदाके लिअे चले गये। ज्वार फिरसे आयेगा। भाटा फिरसे आयेगा। परन्तु वे वापस नहीं आयेंगे। तथागत सचमुच सु-गत हैं।

बोरडी, ७ मअी, १९२७

६१

अर्णवका आमंत्रण

समुद्र या सागर जैसा परिचित शब्द छोडकर मैंने अर्णव शब्द केवल आमंत्रणके साथ अनुप्रासके लोभसे ही नहीं पसन्द किया। अर्णव शब्दके पीछे अूची-अूची लहरोंका अखंड तांडव सूचित है। तूफान, अस्वस्थता, अशांति, वेग, प्रवाह और हर तरहके बंधनके प्रति अमर्ष आदि सारे भाव अर्णव शब्दमें आ जाते हैं। अर्णव शब्दका वाच्यार्थ और अुसका अुच्चारण, दोनों अिन भावोंमें मदद करते हैं। अिसीलिअे वेदोंमें कअी बार अर्णव शब्दका अुपयोग समुद्रके विशेषणके तौर पर किया गया है। खास तौरसे वेदके विख्यात अघमर्षण सूत्रमें जो अर्णव-समुद्रका जिक्र है, वह अुसकी भव्यताको सूचित करता है।

अैसे अर्णवका संदेश आजके हमारे संसारके सामने पेश करनेकी शक्ति मुझे प्राप्त हो, अिसलिअे वैदिक देवता सागर-सम्राट् वरुणकी मैं वंदना करता हूं।

जहां रास्ता नहीं है वहां रास्ता बनानेवाला देव है वरुण। प्रभंजनके तांडवमें जब रेगिस्तानमें बालूकी लहरें अुछलती हैं, तब वहां भी यात्रियोंको दिशा-दर्शन करानेवाला वरुण ही है। और अनंत आकाशमें अपने पंखोंकी शक्ति आजमानेवाले त्रिखंडके यात्री पक्षियोंको व्योममार्ग दिखानेवाला भी वरुण ही है। और वेदकालके भुज्युसे लेकर कल ही जिसकी मूछें अुगी हैं अैसे खलासी तक हरेकको समुद्रका रास्ता दिखानेवाला जैसे वरुण है, वैसे ही नये नये अज्ञात क्षेत्रोंमें

प्रवेश करके नये नये रास्ते वनानेवाले यमराज या अगस्तिको हिम्मत और प्रेरणा देनेवाला दीक्षागुरु भी वरुण ही है।

वरुण जिस प्रकार यात्रियोका पथ-प्रदर्शक है, अुसी प्रकार वह मनुष्य-जातिके लिअे न्याय और व्यवस्थाका देवता है। 'ऋतम्' और 'सत्यम्' का पूर्ण साक्षात्कार अुसे हुआ है, अिसलिअे वह हरेक आत्माको सत्यके रास्ते पर जानेकी प्रेरणा देता हे। न्यायके अनुसार चलनेमे जो सोदर्य है, समाधान है और जो अतिम सफलता है, वह वरुणसे सीख लीजिये। और यदि कोअी लोभी, अदूरदृष्टि मनुष्य वरुणकी अिस न्यायनिष्टाका अनादर करता है, तो वरुण अुसको जलोदरसे सताता है, जिससे मनुष्य यह समझ ले कि लोभका फल कभी भी अच्छा नही होता।

अपना मूल्य घट न जाये अिस खयालसे जिस प्रकार परम-मगल, कल्याणकारी, सदाशिव रुद्ररूप धारण करते है, अुसी प्रकार रत्नाकर समुद्र भी डरपोक मनुष्यको अट्टहास्य करनेवाली लहरोसे दूर रखता हे। कोमल वनस्पति और गृह-लपट मनुष्य अपने किनारे पर आकर स्थिर न हो जाये, अिसलिअे ज्वार-भाटा चलाकर वह सब लोगोको समझाता है कि तुम लोगोको मुझसे अमुक अन्तर पर ही रहना चाहिये।

समुद्रके किनारे खडे रहकर जव लहरोको आते और जाते देखा, अमावस्या और पूर्णिमाके ज्वारको आते और जाते देखा, और वुद्धि कोअी जवाव नही दे सकी तव दिल वोल अुठा, 'क्या अितना भी समझमे नही आता? तुम्हारे श्वासोच्छ्वासकी वजहसे जिस प्रकार तुम्हारी छाती फूलती हे और वैठती हे, अुसी प्रकार विराट सागरके श्वासोच्छ्वासकी यह धडकन है, अुसका यह आवेग है। जमीन पर रहनेवाले मनुष्यने जो पाप किये और अुत्पात मचाये है, अुनको क्षमा करनेकी शक्ति प्राप्त हो अिमीलिअे महासागरको अितना हृदयका व्यायाम करना पडता है!

जो लहरे दुर्वल लोगोको डराकर दूर रखती है, वही लहरे विक्रमके रसियोको स्नेहपूर्ण और फेनिल निमत्रण देती है और कहती

है 'चलिये! अिस स्थिर जमीन पर क्यो खडे हैं? अिस तरह खडे रहेंगे तो आप पर जग चढने लगेगा। लीजिये, अेक नाव, हो जाअिये अुस पर सवार, फैला दीजिये अुसके पाल और चलिये वहा जहा पवनका प्राण आपको ले जाय। हम सव है तो सागरके वच्चे, किन्तु हमारा शिक्षागुरु है पवन। वह जैसे नचाये वैसे हम नाचते हैं। आप भी यही व्रत लीजिये, आर चलिये हमारे साथ।' जिस दिलमे अुमग होती है, वह अैसे निमत्रणको अस्वीकार नही कर सकता।

वचपनमे सिदवादकी कहानी आपने नही पढी? सिंदवादके पास विपुल धन था, जमीन-जागीर आदि सव कुछ था। अपने प्रेमसे अुसका जीवन भर देनेवाले स्वजन भी अुसके आसपास वहुत थे। फिर भी जव समुद्रकी गर्जना वह सुनता था तव अुससे घरमे रहा नही जाता था। लहरोंके झूलेको छोडकर पलग पर सोनेवाला पामर है। दिलने कहा 'चलो!' और सिंदवाद समुद्रकी यात्राके लिअे चल पडा। अुसमे काफी हैरान हुआ। अुसे मीठे अनुभवोकी अपेक्षा कडवे अनुभव अधिक हुअे। अत सही-सलामत वापस लोटने पर अुसने सौगद खाअी कि अव मै समुद्र-यात्राका नाम तक नही लूगा।

किन्तु अतमे यह था तो मानवी सकल्प। अिस सकल्पको सम्राट् वरुणका आशीर्वाद थोडे ही मिला था! कुछ दिन वीते। गृहस्थी जीवन अुसे फीका मालूम होने लगा। रातको वह सोता था, किन्तु नीद नही आती थी। लहरें अुसके साथ लगातार वाते किया करती थी। अुत्तर-रात्रिमे जरा नीदका झोका आ जाता तो स्वप्नमे भी लहरें ही अुछलती और अपनी अगुलिया हिलाकर अुसे पुकारती। वेचारा कहा तक जिद पकडकर रहे? अनमना होकर जरा-सा घूमने जाता, तो अुसके पैर अुसे वगीचेका रास्ता छोडकर समुद्रकी सफेद और चमकीली वालूकी ओर ही ले जाते। अतमे अुसने अच्छे अच्छे जहाज खरीदे, मजवूत दिलवाले खलासियोको नौकरी पर रखा, तरह तरहका माल साथमे लिया और 'जय दरिया पीर' कहकर सव जहाज समुद्रमे आगे वढा दिये।

यह तो हुअी काल्पनिक सिंदवादकी कहानी। किन्तु हमारे यहाका सिंहपुत्र विजय तो अैतिहासिक पुरुष था। पिता अुसे कही जाने नही देता था। अुसने वहुत आजिजी की, किन्तु सफल नही हुआ। अतमे अूवकर अुसने शरारत शुरु की। प्रजा त्रस्त हुअी और राजाके पास जाकर कहने लगी 'राजन्, या तो आपके लडकेको देशनिकाला दे दीजिये या हम आपका देश छोडकर वाहर चले जाते है।' पिता वडे वडे जहाज लाया। अुनमे अपने लडकेको और अुसके शरारती साथियोको विठा दिया और कहा, 'अव जहा जा सकते हो, जाओ। फिर यहा अपना मुह नही दिखाना।' वे चले। अुन्होने सौराष्ट्रका किनारा छोडा, भृगुकच्छ छोडा, सोपारा छोडा, दाभोळ छोडा, ठेठ मगलापुरी तक गये। वहा पर भी वे रह नही सके। अत हिम्मतके साथ आगे वढे और ताम्रद्वीपमे जाकर वसे। वहाके राजा वने। विजयके पिताने अपने लडकेको वापस आनेके लिअे मना किया था, किन्तु अुसके पीछे कोअी न जाये, अैसा हुक्म नही निकाला था। अत अनेक समुद्र-वीर विजयके रास्ते जाकर नयी नयी विजय प्राप्त करने लगे। वे जावा और वालिद्वीप तक गये। वहाकी समृद्धि, वहाकी आवहवा और वहाका प्राकृतिक सौंदर्य देखनेके वाद वापस लौटनेकी अिच्छा भला किसे होती? फिर तो घाघाका लडका सारा पश्चिम किनारा पार करके लकाकी कन्यासे विवाह करे यह लगभग नियम-सा वन गया।

अिधर वगालके नदीपुत्र नदी-मुखेन समुद्रमे प्रवेश करने लगे। जिस वदरगाहसे निकलकर ताम्रद्वीप जाया जा सकता था, अुस वदरगाहका नाम ही अुन लोगोने ताम्रलिप्ति रख दिया। अिस प्रकार ताम्रद्वीप — लकामे अग-वगके वगाली, अुडीसाके कलिग और पश्चिमके गुजराती अेकत्र हुअे। मद्रासकी ओरके द्रविड तो वहा कवके पहुच चुके थे। अिस प्रकार पूर्व, पश्चिम और दक्षिण भारत अव अपने-अपने अर्णवोके आमत्रणके कारण लकामे अेक हुआ।

भगवान वुद्धने निर्वाणका रास्ता ढूढ निकाला और अपने शिष्योको आदेश दिया कि 'अिस अष्टागिक धर्मतत्त्वका प्रचार दसो दिशाओमे

करो।' खुद अुन्होने अुत्तर भारतमे चालीस साल तक प्रचार-कार्य किया। अपना राज्य आसेतु-हिमाचल फैलानेके लिअे निकले हुअे सम्राट् अशोकको दिग्विजय छोडकर धर्म-विजय करनेकी सूझी। धर्म-विजयका मतलब आजकी तरह धर्मके नाम पर देश-देशातरकी प्रजाको लूटकर, गुलाम वनाकर, भ्रष्ट करना नही था, वल्कि लोगोको कल्याणका मार्ग दिखाकर अपना जीवन कृतार्थ करनेका अष्टागिक मार्ग दिखाना था। जो भगवान वुद्ध खुद गैंडेकी तरह अकुतोभय होकर जगलमे घूमते थे, अुनके साहसिक शिष्य अर्णवका आमत्रण सुनकर देश-विदेशमे जाने लगे। कुछ पूर्वकी ओर गये, कुछ पश्चिमकी ओर। आज भी पूर्व और पश्चिम समुद्रके किनारो पर अिन भिक्षुओके विहार पहाडोमे खुदे हुअे मिलते है। सोपारा, कान्हेरी, घारापुरी आदि स्थल वौद्ध मिश-नरियोकी विदेश-यात्राके सूचक है। अुडीसाकी खड-गिरि और अुदय-गिरिकी गुफाये भी अिसी वातका सवूत दे रही है।

अिन्ही वौद्ध-धर्मी प्रचारकोसे प्रेरणा पाकर प्राचीन कालके अीसाअी भी अर्णव-मार्गसे चले और अुन्होने अनेक देशोमे भगवद्-भक्त ब्रह्मचारी अीशुका सदेश फैलाया।

जो स्वार्थवश समुद्र-यात्रा करते हैं, अुन्हे भी अर्णव सहायता देता है। किन्तु वरुण कहता है, "स्वार्थी लोगोको मेरी मनाही है, निषेध है। किन्तु जो केवल शुद्ध धर्म-प्रचारके लिअे निकलेंगे, अुन्हें तो मेरे आशीर्वाद ही मिलेंगे। फिर वे महिन्द या सघमित्ता हो या विवेकानद हो। सेट फ्रान्सिस जेवियर हो या अुनके गुरु अिग्नेशियस लोयला हो।"

अव अर्णवकी मदद लेनेवाले स्वार्थी लोगोके हाल देखे। मक-रानी लोग वलूचिस्तानके दक्षिणमे रहकर पश्चिम सागरके तटकी यात्रा करते थे। अिसलिअे हिन्दुस्तानकी तिजारत अुन्हीके हाथमे थी। आग्रहके साथ वे अुसको अपने ही हाथोमे रखना चाहते थे। अत अेक वरुणपुत्रको लगा कि हमे दूसरा दरियाअी रास्ता ढूट निकालना चाहिये। वरुणने अुससे कहा कि अमुक महीनेमे अरवस्तानसे तुम्हारा जहाज भर-समुद्रमे छोडोगे तो सीधे कालीकट तक पहुच जाओगे। अेक-दो

महीनों तक तुम हिन्दुस्तानमे व्यापार करना और वापस लौटनेके लिअे तैयार रहना, अितनेमे मैं अपने पवनको अुलटा वहाकर जिस रास्ते तुम आये अुसी रास्तेसे तुम्हे वापस स्वदेशमे पहुचा दूगा। यह किस्सा अी० स० पूर्व ५० सालका है।

प्राचीन कालमे दूर दूर पश्चिममे वाअिकिंग नामक समुद्री डाकू रहते थे। वे वरुणके प्यारे थे। ग्रीनलैंड, आअिसलैंड, ब्रिटेन और स्कैन्डिनेवियाके बीचके ठडे और शरारती समुद्रमे वे यात्रा करते थे। आजके अग्रेज लोग अुन्हींके वशज है। समुद्र किनारे पर स्थित नार्वे, ब्रिटेन, फ्रास, स्पेन और पुर्तगाल देशोंने वारी वारीसे समुद्रकी यात्रा की। अिन सब लोगोको हिन्दुस्तान आना था। बीचमे पूरकी ओर मुसलमानोके राज्य थे। अुन्हे पारकर या टालकर हिन्दुस्तानका रास्ता ढूढना था। सबने वरुणकी अुपासना शुरू की और अर्णवके रास्तेसे चले। कोअी गये अुत्तर ध्रुवकी ओर, कोअी गये अमरीकाकी ओर। चद लोगोने अफ्रीकाकी अुलटी प्रदक्षिणा की और अतमे सब हिन्दुस्तान पहुचे। समुद्र यानी लक्ष्मीका पिता। अुसमे जो यात्रा करे वह लक्ष्मीका कृपापात्र अवश्य होगा। अिन सब लोगोने नये नये देश जीत लिये, धन-दौलत जमा की। किन्तु वरुणदेवका न्यायासन वे भूल गये। वरुणदेव न्यायका देवता है। अुसके पास धीरज भी है, पुण्यप्रकोप भी है। जब अुसने देखा कि मैंने अिनको समुद्रका राज्य दिया, किन्तु अिन लोगोने राजाके अुचित न्याय-धर्मका पालन नहीं किया, तब वरुणराजाने अपना आशीर्वाद वापिस ले लिया और अिन सब लोगोको जलोदरकी सजा दी। अब ये देश हिन्दुस्तान और अफ्रीकासे जो सपत्ति लाये थे, अुसका अुपयोग आपसमे लडनेके लिअे करने लगे है और अपने प्राणोके साथ वह सारी सपत्ति जलके अुदरमे पहुचा रहे है। समुद्र-यान हो या आकाश-यान हो, अतमे अुसे समुद्रके जलके अुदरमे पहुचना ही है। अब वरुणराजा क्रुद्ध हुअे है। अुन्हे अब विश्वास हो गया है कि सागरमे सेवा लेनेवालोमे यदि सात्विकता न हो तो वे ससारमे अुत्पात मचानेवाले हो जाते है। अब तक अुन्होने विज्ञान-शास्त्रियो और ज्योतिषशास्त्रियोको, विद्यार्थियो और लोकसेवकोको

समुद्र-यात्राकी प्रेरणा दी थी। अब वे हिन्दुस्तानको नये ही किस्मकी प्रेरणा देना चाहते हैं हिन्दुस्तानके सामने अेक नया 'मिशन' रखना चाहते हैं। क्या अुसे सुननेके लिअे हम तैयार हैं?

हम पश्चिम समुद्रके किनारे पर रहते हैं। दिन-रात पश्चिम सागर*का निमत्रण सुनते हैं। अब तक हम बहरे थे। यह सदेश हमारे कानो पर जरूर पडता था, किन्तु अदर तक नही पहुच पाता था। अब यह हालत नही रही है। युरोपकी गहाप्रजाने हमारे अूपर राज्य जमाकर हमे मोहिनीमे डाल रखा था। अब यह मोहिनी अुतर गयी है। अब हमारे कान खुल गये हैं। ससारके नक्शेकी ओर हम नयी दृष्टिसे देखने लगे हैं। अब हम समझने लगे हैं कि महासागर भूखडोको तोडते नही, बल्कि जोडते हैं। अफ्रीकाका सारा पूर्व किनारा और कलकत्तासे लेकर सिगापुर आल्बनी (ऑस्ट्रेलिया) तकका पूर्वकी ओरका पश्चिम किनारा हमे निमत्रण देता है कि "अीश्वरने तुम्हे जो ज्ञान, चारित्र्य और वैभव दिया है, अुसका लाभ यहाके लोगोको भी पहुचाओ।" अेक ओर अफ्रीका है, दूसरी ओर जावा है, बाली है, ऑस्ट्रेलिया है, टास्मानिया है ओर प्रशात महासागरके असख्य टापू हैं। ये सब अर्णवकी वाणीसे हमे पुकार रहे हैं। अिन सब स्थानोमे सागरसे प्रेरणा लेकर अनेक मिशनरी गये थे। किन्तु वे अपने साथ सब जगह शराब ले गये, वश-वशके बीचका अूच-नीच भाव ले गये। अीसा मसीहको भूलकर सिर्फ अुनका बायबल ले गये। और अिस बायबलके साथ अुन्होने अपने अपने देशका व्यापार चलाया। अर्णव अुन्हे जरूर ले गया था। किन्तु वरुण अुन पर नाराज हुआ है। हम भारतवासी प्राचीन कालमे चीन गये, यवनोके देश ग्रीस तक गये, जावा और बालीकी ओर गये। हमने 'सर्वे सन्तु निरामया' की

* हमारे अिस पडोसीको हम 'अरबी समुद्र' के नामसे पहचानते हैं, यह विचित्र बात है! बिलायतसे आनेवाले गोरे लोग अुसे 'अरबी समुद्र' भले कहे। हमारे लिअे तो वह बम्बअी समुद्र या पश्चिम सागर है। यही नाम हमे चलाना चाहिये।

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

सस्कृतिका विस्तार किया। किन्तु हमने अुन स्थानोमे अपने साम्राज्यकी स्थापना करनेकी दुर्वुद्धि नही रखी। दूसरोके मुकावलेमे हमारे हाथ साफ है। अत वरुणका हमे आदेश हुआ है—अर्णव हमे आमत्रण दे रहा है और कह रहा है, "दूसरे लोग विजय-पताका लेकर गये, तुम अहिसा धर्मकी तिरगी अभय-पताका लेकर जाओ और जहा जाओ वहा सेवाकी सुगध फैलाते रहो। शोषणके लिअे नही, वल्कि पिछडे हुअे लोगोके पोषण और शिक्षणके लिअे जाओ। अफ्रीकाके शालिग्राम वर्णके तुम्हारे भाअी तुम्हे पुकार रहे है। पूर्वकी ओरके केतकी सुवर्ण वर्णके तुम्हारे भाअी तुम्हारी राह देख रहे है। अिन सव लोगोकी सेवा करनेके लिअे जाओ और सव लोगोसे कहो कि अहिसा ही परम धर्म है। अुच्चनीच भाव, अभिमान, अहकार जैसी हीन वृत्तियोको अिस धर्ममे स्थान नही हो सकता। भोग और अैश्वर्य, दोनो जीवनके जग है (जीवनको दूषित करनेवाले है)। सयम और सेवा, त्याग और वलिदान, यही जीवनकी कृतार्थता है। यह धर्म जिन लोगोने समझा है, वे सव निकल पडो। पूर्व सागर और पश्चिम सागरके वीचमे दक्षिणकी ओर घुसनेवाला हजारो मीलका किनारा तैयार करके हिन्दुस्तानको हिन्द महासागरमे जो स्थान दिया गया है, वह समुद्र-विमुख होनेके लिअे हरगिज नही है। वह तो अहिसाके विश्वधर्मका परिचय सारे विश्वको करानेके लिअे है।"

युरोपके महायुद्धके अतमे दुनियाका रूप जैसा वदलनेवाला होगा वैसा वदलेगा। किन्तु असख्य भारतीय प्रवास-वीर अर्णवका आमत्रण सुनकर, वरुणसे दीक्षा लेकर, धीरे-धीरे देश-विदेशमे फैलेगे, अिसमे कोअी सदेह नही है। सागरके पृष्ठ पर हमारे अनेकानेक जहाज डोलते हुअे देख रहा हू। अुनकी अभय-पताकाओको आकाशमे लहराते देख रहा हू और मेरा दिल अुछल रहा है। अर्णवके आमत्रणको अव मै खुद शायद स्वीकार नही कर सकता, फिर भी नौजवानोके दिलो तक अुसे पहुचा सकता हू, यही मेरा अहोभाग्य है। वरुण-राजाको मेरा नस्मकार है! जय वरुणराजकी जय!!

अक्तूबर, १९४०

Our Outstanding Public

६२
दक्षिणके छोर पर

१

धनुष्कोटीमें मैं पहले-पहल आया अुसको अब करीब बीस साल हो चुके है। जहा तक मुझे स्मरण है, श्री राजाजीने मेरे साथ श्री वरदाचारीजीको भेजा था। वरदाचारी ठहरे रामायणके भक्त। रास्ते भर रामायणकी ही रसिक बाते चली। हम धनुष्कोटी पहुचे और वरदाचारीजीकी सनातनी आत्मा श्राद्ध करनेके लिअे तडपने लगी। अेक योग्य ब्राह्मणका पता लगाकर वे अिस विधिमें मशगूल हो गये और हम लोग आमने-सामने गरजनेवाले रत्नाकर और महोदधिकी भव्य शोभा देखनेके लिअे स्वतत्र हो गये।

दो नदियोका सगम या प्रयाग अनेक स्थानो पर देखनेको मिलता है। सगमका काव्य आर्यके हृदय या मस्तिष्क तक पहुचा कि तुरन्त अुन्हे वहा यज्ञ-याग करनेकी सूझी ही है। यज्ञ-यागके लिअे अैसे प्रकृष्ट या प्रशस्त स्थानको वे प्र-याग कहते है।

जब दो नदिया मिलती हैं तब अधिकतर अग्रेजी Y के जैसी आकृति बनती है। महाराष्ट्रमे कहाडके पास दो नदिया आमने-सामने आकर मिलती है और बादको समकोणमे अेक ओर बहती है। अुनकी अग्रेजी T जैसी पाच किनारोकी आकृति बनती है। दो नदिया आमने-सामने आकर अेक-दूसरेको गले लगाती है, अिसलिअे अुसे प्रीति-सगम कहते है।

गगामे जहा यमुना मिलती है वहा पर भी लगभग T के जैसी ही आकृति बनती है। सिर्फ अुसमे गगा सीधी जाती है और यमुना किसी आग्रहके बिना और कुछ सभ्रम (घुमाव)के साथ गगामे मिलती है।

यमुना प्रथम तो 'आत्मनि अप्रत्यय' दिखाओ देती है। किन्तु गगासे मिलते ही दोनो बहने अुल्लासके अुन्मादमे आ जाती है, और

अिस डरसे कि यदि अेक-दूसरेमे झट ओतप्रोत हो गअी तो मिलनेका आनद मिट जायगा, दूर दूर तक दोनो कम-ज्यादा मिला ही करती है। धर्मकवियोने अिस स्थानको 'प्रयाग-राज' जैसा गौरवभरा नाम यो ही नही दिया है।

किन्तु जव कोअी नदी सागरसे मिलती हे तव यह सागर-सरिता-सगमका अुन्माद शिव-पार्वतीके मिलनके समान अद्‌भुत-रम्य होता है। अिसका वर्णन भक्तवृत्तिसे या सतानकी भापामे हो ही नही सकता। मनुष्यको यह भूल कर कि वह मनुष्य हे, और अपनी शक्तिसे भी अधिक अूचे अुडकर सागर-सरिताके अिस अ-समान सगमका वर्णन करना होगा।

मगर धनुष्कोटीमे तो विष्णु और महादेवके मिलनके समान दो समुद्रोका सागर-सगम है। रत्नाकर मानार (Manar)की ओरसे आता हे। महोदधि पाल्क (Palk) की सामुद्रधुनीका प्रतिनिधि है। अिन दोनोको झट कैसे मिलने दिया जाय? पृथ्वीने मानो राम-धनुपकी कमानदार कोटि वीचमे आडी डालकर अेक कोस तक अिन दोनोको मिलनेसे रोका है। अिधर रत्नाकर अुछलता है तो अुधर महोदधि गरजता है और पवनकी सूचनाके अनुसार वे अपने-अपने प्रवाहको दौडाते हैं।

और अिन दोनोका सलाह-मशविरा कैसा अनोखा होता है! महोदधि यदि हरा रग धारण करता है तो रत्नाकर पूरा नीला हो जाता है, ओर जव रत्नाकर पर हरा रग चढता हे तव महोदधि आकाशको भी दीक्षा दे सके अैसा गहरा नीला रग वहाने लगता है।

जव तक अुन्हे लगता है कि मिलनेकी अिच्छा होने पर भी मिला नही जा सकता, तव तक दोनो क्रोधमे तमतमाते रहते है। क्षण क्षणमे नया क्रोध जताते है। और अेक वार मिलनेकी छूट मिली कि अैसी शाति और सहजता चेहरे पर दिखाकर दोनो मिलते है, मानो मिलनेकी दोनोको कोअी अुत्सुकता ही नही थी। मिलना था अिसलिअे मिल लिये! व्याकुलताको मानो दूर ही छोड दिया।

Our Outstanding Publications

जहा दोनोका प्रत्यक्ष मिलन होता है, वहा तो सरोवरकी शाति ही फैली रहती है। और अिसमे आश्चर्य क्या है? अद्वैतमे आनदकी परिसीमा ही हो सकती है, अुन्मादको स्थान कैसे हो सकता है?

धनुष्कोटीके छोर पर खडे खडे अेक बार गोल चक्कर लगाकर देख लेना चाहिये। जहासे चलकर आते है अुतनी जमीनकी जीभको छोड दे तो सब ओर महासागरकी विशाल जलराशिका क्षितिजके साथ बनता वलय ही देखनेको मिलता है।

रगून या कराची जाते समय बीच समुद्रमे चारो ओर समुद्र-वलय और क्षितिज-वलय मिलकर अेक हो जाते है, अुसकी मस्ती कुछ कम नही होती। मनमे यह कल्पना आये बिना नही रहती कि पानीके अिस क्षितिज-विस्तार पर आकाशका अुतना ही बडा किन्तु अनत गुना अूचा ढक्कन रखा हुआ है, और अिस बडे भारी डिब्बेमे अेक छोटे जहाज पर बैठे हुअे 'तुच्छ' हम मोतियोकी तरह सगृहीत किये गये है। ज्यो-ज्यो अिस परिस्थिति पर हम अधिक सोचते है, त्यो-त्यो मनमे अपनी तुच्छताका अधिकाधिक भान हमे होने लगता है।

धनुष्कोटीकी बात अिससे अलग है। पृथ्वीके साथ हम अनुबद्ध है, पैर तले मजबूत जमीन है और यह जमीन धीरे धीरे फैलकर अेक विशाल देश और खडकी ओर ले जा सकती है — यह खयाल हमे न सिर्फ आश्वासन देता है, बल्कि प्रचड आत्म-विश्वासके अधिकारी बनाता है। धनुष्कोटीके छोर पर मै जितनी बार पहुचा हू, अुतनी बार मुझे मनुष्यके आत्म-गौरवका भान विशेष रूपसे हुआ है। अिसीलिअे वहा अपनी 'भूमिका' पर स्थिर रहकर मै सागरकी अुपासना कर सका हू।

जब जब मै मडपम् छोडकर पुल परसे पामबन गया हू, तब तब अिस प्रदेशका 'रघुवश' मे लिखा हुआ कालिदासका वर्णन मुझे याद आया है। कालिदासकी वर्णन-शक्ति मुझमे भले न हो,
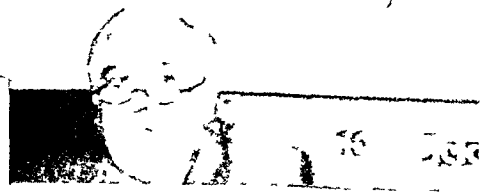
किन्तु अिस वारेमे मेरे मनमें तनिक भी सदेह नही कि मै अुनका समान-धर्मा हू। मै 'कवियश प्रार्थी' थोडे ही हू कि कालिदासके साथ अपना नाम देनेमे सकोच करू? मुझ पर हसनेवाले टीकाकारोको मै अेक टीकाकार कविका ही वचन सुना दूगा 'पर्वते परमाणौ च पदार्थत्व प्रतिष्ठितम्।'

मगर मैं जव धनुष्कोटीके पास आता हू, तव कालिदासको भूल जाता हू और लकामें किस तरह पहुचा जाय अिस अुधेडवुनमे पडे हुअे हनुमानकी दृष्टिसे दक्षिणकी ओर देखने लगता हू। जिन जिन वानर-यूथ-मुख्योने सेतुकी कल्पना की और अुसे कार्यरूपमें परिणत किया, अुनकी दृष्टिसे तलाअीमानारकी दिशामे देखने लगता हू। और अिस प्रकार कल्पनाको दोडाते दौडाते जव थक जाता हू, तव चारो धामकी यात्रा पूरी करके रामेश्वर पहुचे हुअे वृद्ध यात्रियोका हृदय धारण करके कल्पना करता हू "अेक पूर्ण जीवन लगभग पूरा करके मैने भारत-वर्षके जितने ही विशाल जीवन-प्रदेशकी यात्रा कर ली। अव वापस लौटकर क्या करना है? अिहलोकका काम ज्यो त्यो पूरा कर लिया। सफलता मिली हो या विफलता, वही जीवन फिरसे नही विताना है। अव तो यह सारा जीवन पीठके पीछे रहे यही अच्छा है। मुडकर अुसकी ओर देखनेका स्मरण-रस भी अव नही रहा हे। अव तो साम्प-रायका, परजीवनका परमार्थकी दृष्टिसे विचार करनेमें ही श्रेय है।" जव अिस प्रकारकी विचार-परपरा मनमे अुठती है, तव मन अेक प्रकारसे वेचैन हो अुठता है, और दूसरे प्रकारसे परम शातिका अनुभव करता है।

अवकी वार जव मैं धनुष्कोटी आया, तो परपराके अनुसार मैंने महोदधिमे स्नान किया। महासागरसे क्षमा भी मागी। किन्तु मनमे तो अेक ही विचार आया कि यहा अव फिरसे नही आना होगा। सीलोन कभी जाना है। मगर धनुष्कोटीके जो दर्शन किये, वे अतिम है। यह विचार मनमें क्यो आया, कहना मुश्किल है। किन्तु अिसमें संदेह नही कि मनमें तृप्तिका विचार अिसी वार अुत्पन्न हुआ।

Our Outstanding Publications

२

रामेश्वर-धनुष्कोटीके बाद कन्याकुमारी। अेक स्थान यदि भव्य हे तो दूसरा भव्यतर है। यहा दो नही वल्कि तीन सागरोका सगम हे। सगमका यह वायुमडल अभेद-भक्तिके आनदके समान है। 'यहा हिन्द महासागर पूरा होता हे,' 'यहा वम्बअीका यानी पश्चिम समुद्र शुरू होता है' और 'यहा वगालका पूर्व समुद्र शुरु होता हे'—यो न तो यहा कह सकते हैं, न मान सकते हैं। यहा भारतवर्षका दक्षिणका छोर है और तीनो सागर अुसको तीनो ओरमे लिपटे हुअे पडे हैं। सगम तो हम कहते हैं। सागरोके लिअे यहा सगमके जैसा कुछ भी नही है। सगमकी कल्पना हमारी है। सागरोसे यदि पूछेगे तो वे कहेगे कि जिस भेदका अस्तित्व ही नही है, अुसके मिट जानेकी वात भी भला कैसे करे? 'स-गम' की कल्पना ही विलकुल गलत हे। कहना ही हो तो अुसको 'स-भवन' कहिये। जहा पूर्ण अेकता है वहा किसी भी हिस्सेको चाहे जो नाम दे सकते हैं। नाम और रूपका द्वैत यहा फीका पड जाता हे, धुल जाता हे, और फिर शुद्ध अद्वैत ही अपनी अखड मस्तीमें गर्जना करता है।

कन्याकुमारीमे मैंने जिस भव्यताका अनुभव किया है, वैसी भव्यता हिमालयको छोडकर और गाधीजीके जीवनको छोडकर अन्यत्र कही भी अनुभव नही की है।

कन्याकुमारीका महत्त्व मैंने पहले-पहल गाधीजीके ही मुहसे सुना था। वे शायद ही किसी दृश्यका वर्णन करते है। किन्तु कन्याकुमारीसे आश्रममे लौटनेके वाद अुन्होने मेरे सामने अिस स्थानका अुत्साहपूर्वक वर्णन किया था।

सन् १९२७ मे जव मैंने अुनके साथ दक्षिण हिन्दुस्तानकी यात्रा की थी, तव नागर-कोविल पहुचते ही अुन्होने अपने मेजवानसे खास तौर पर सिफारिश की कि 'काकाको कन्याकुमारी जाना है, मोटरका वदोवस्त कर दीजिये।' अुस दिन अुन्होने दो वार पूछताछ की कि काकाके कन्याकुमारी जानेका प्रवध हुआ या नही।

8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नगर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम
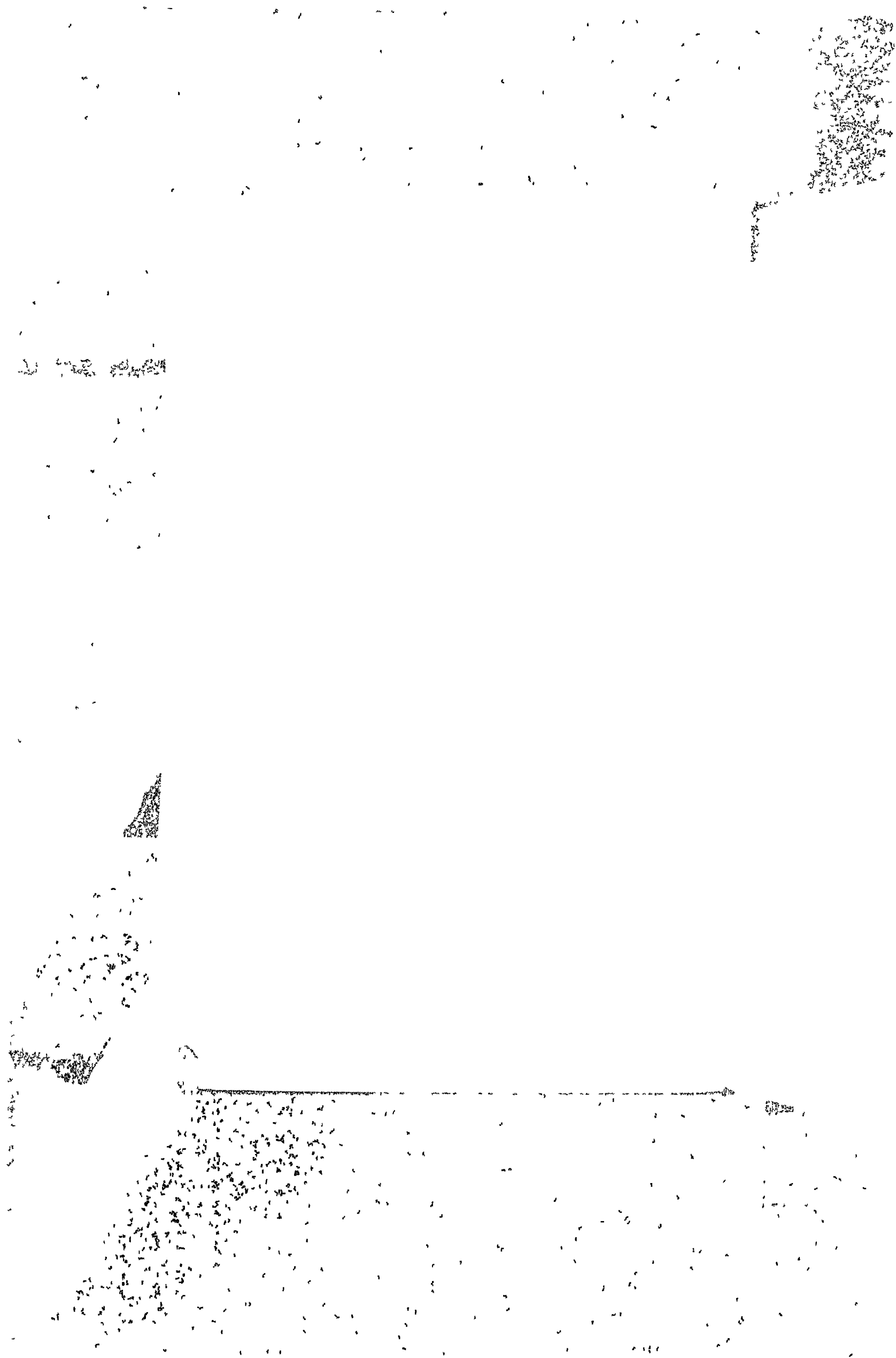
Our Outstanding Publications

सूर्यको देखनेके बदले अुदय या अस्तके अवसरो पर वह जो अेक-रूपता धारण करता है अुसके रगको ही क्यो नही देख लेते?'

अुदये सविता रक्तो रक्तश्चास्तमने तथा।
सपत्तौ च विपत्तौ च महताम् अेक-रूपता॥

यह श्लोक बादलोने भी बचपनमे कठस्थ कर लिया होगा!

सूर्य जब क्षितिजके नीचे गया, तब बादलोके गवाक्षोमें से सूर्य-प्रकाशकी लाल किरणें अूपर तक फैली। और अूपर फैली अुससे भी अधिक दक्षिण तथा अुत्तरकी ओर फैल गअी। गवाक्ष अधिक नही थे, किन्तु जो थे वे बहुत बडे थे। अत किरणें अैसी दीखती थी मानो लाल रगके पट्टे खीचे गये हो। और आकाश अपने वैभवमे प्रतिष्ठित मालूम होता था। मैने माना था अुससे कुछ अधिक समय तक यह शोभा कायम रही, जिससे अुसीको देखते रहनेकी अभिलाषा रखने-वाला मन कुछ तृप्त-सा हुआ।

जहा कुमारीके न-हुअे-विवाह-के अक्षत बिखरे हुअे है, अुस ओरकी शिला पर हम लहरोका ताडव देखनेके लिअे जा बैठे। देखते ही देखते सध्या पश्चिममे विलीन हो गअी और चद्रका राज्य आरम्भ हुआ। बादलोने आकाशको घेर लेनेका मनसूबा अभी पूरा नही किया था, अितनेमे दक्षिणकी ओरके बादलोमे से अेक बडा सितारा चमकने लगा। वह दूसरा कौन हो सकता था? स्वय अगस्ति महाराज दक्षिण-पूर्व दिशा पर आरूढ हो रहे थे। सौभाग्यसे यमुना और याममत्स्य भी तिरछी रेखामे आकाशमे दिखाअी दिये। दक्षिण दिशाका ध्यान करनेका फल मिला। सतुष्ट हुअी आखोने हमने अुत्तरकी ओर दृष्टि डाली। वहा आकाशमे देवयानी (कैसियोपिया) का M अूपर तक चढा हुआ था। अुसके नीचे लगभग क्षितिजके पास अेक ताडके जितनी अूचाअी पर अुसी ताडके पत्तेका आसन बनाकर ध्रुवकुमारने हमे अपना सुभग दर्शन दिया। देवयानी और ध्रुवको देखते देखते दृष्टि पश्चिमकी ओर मुडी, वहा हसने बताया कि श्रवण तो कबके अस्त हो गये है। अत पूर्वकी ओर देखा। ब्रह्महृदयने कहा कि ब्रह्मडलका विस्तार अितनेमे ही कहीं होना चाहिये।

हजारी लाल नागर
38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक और नाम

हमने फिर दक्षिणकी ओर मुह किया। अगस्ति अितना अूचा नही आया था कि हम अुसकी कुटियाकी कल्पना कर सके। किन्तु व्याध तो दिखना ही चाहिये। व्याध चाहे जितना तेजस्वी हो, तो भी वादलोके मोटे स्तरको वह किस तरह बीध सकता है? फिर हमने अपनी दृष्टिसे वादलोका स्तर भेदनेका प्रयत्न किया। सदेह हुआ कि वादलोका जो हिस्सा कुछ विशेष अुजला मालूम होता है अुनीके पीछे व्याध होना चाहिये। वादलोके अुस पार व्याधका प्रकाश और अिस पार हमारी दृष्टि — दोनोके हमलेसे वादल पतले हुअे, और जिस प्रकार पतले परदेके पीछेसे नाटकके पात्र दिखाअी देते हैं, अुसी प्रकार व्याध दिखाअी देने लगा। देखते ही देखते व्याध पूर्ण रूपमे सामने आया और अुसके वाद व्याध, अगस्ति, यमुना और याममत्स्यकी शोभा तेलुगु अक्षरोकी शिरोरेखा जैसी दिखाअी देने लगी।

अभी मृग दिखाअी देगा, रोहिणी चमकेगी, प्रश्वन झाकेगा, अैसी आशासे हम आकाशकी ओर ताक रहे थे, अितनेमे रजनीनाथने अपने आसपास कुडल फैलाया और अिस सुवर्ण-वलयके साथ आकाशमे वादल भी वढे। आकाशमे चद्रिका फैली हो तो भी क्या? रातके वादल हमारा ध्यान वहुत आकर्षित नही कर सकते थे। अत हमने अत्यन्त काले समुद्रके गभीर जल पर नाचते सफेद फेनकी चमकती हुअी रेखाओकी पक्तिया देखकर ही आखोको तृप्त किया।

समुद्रके जल पर और आकाशके वादलो पर विविध रगोके नाच जी भरकर देखनेके वाद यह गभीरता अितनी तृप्तिदायक मालूम हुअी कि अिस तृप्तिके साथ स्थितप्रज्ञका आदर्श गानेमे और सध्याकी अुपासना करनेमे अनोखा आनद आया। यह सागर पूर्ण है। अुस पर फैला हुआ आकाश पूर्ण है। अिन दोनोके दर्शनमे जीवनकी सध्याके समय हृदयमे अुद्भूत हमारा शाति-प्रधान आनद भी पूर्ण है। अव अिस त्रिविध पूर्णतामे से कुछ भी निकाल लीजिये या कुछ भी अुसमें जोड दीजिये, पूर्णत्वमे कोअी कमी नही होगी। पायी हुअी पूर्णता कम हो सकती है, क्योकि वह सच्ची पूर्णता नही है। साधी हुअी पूर्णता स्थायी है, क्योकि अिस विरासतके साथ ही

Our Outstanding Publications

हम पैदा हुअे थे। वहा तक पहुचनेमें विलव हुआ यही दोप है। जो पूर्णता साधी वह आत्मसात् हो गअी। अव वहासे चढने-अुतरनेका प्रश्न ही नही हे।

जो विराट् है, अनन्त है, वृहत्तम हे, अुसके साथ अेकरूप होनेके वाद जो जीवन स्वाभाविक रूपमे जिया जा सकता है, वही सच्चा व्रह्मचर्य है। वासनाको दवा देने पर वह फिर कभी अुछल सकती हे। वासनाको मार डालने पर वह भूतकी तरह हेरान कर सकती हे। वासनाको तृप्त करनेके अुपाय किये जाय तो व्यसनकी तरह वह सदाके लिअे चिपक जायगी और वढेगी। वासनाका स्वागत किया जाय तो दिमागमे वह मडराने लगेगी। वासनाका तो मुकावला करके अुससे पूछना चाहिये कि तू कौन है? मित्रके रूपमे शत्रुता करने आयी है या जीवनको समृद्ध करनेकी साधनाके रूपमें आयी है? वासना जव तक स्पष्ट और खुली नही होती, तव तक ही वह मोहक मालूम होती है। मोह अस्पष्टताका होता है, अेकागी दर्शनका होता हे। वासनाके वश होनेमे मुख्य मदद अधेपनकी ही होती हे। वासनाका अधा विरोध भी अुसको मजवूत ही वनाता है। दो आखोसे देखकर हम वासनाको पहचान नही सकते। अुसकी ओर महादेवजीकी तरह तीन आखोसे देखना चाहिये। फिर अुसकी शत्रुता अपने-आप खतम हो जाती हे।

वासनाका सामना केवल तपस्यासे नही हो सकता, सच तो यह है कि प्रज्ञाके स्थिर होनेके वाद वासनाका विरोध ही नही करना पडता।

जीवनमे जव तक हमे अपूर्णताका भान है, तव तक हम यह नही कह सकते कि व्रह्मचर्य सिद्ध हुआ हे। अपूर्णता स्वय वाधक नही है। वालकमे अपूर्णता कम नही होती। वह निर्मल भावसे जीवन जीता रहता है और अुसकी अपूर्णता स्वाभाविक क्रमसे कम होती जाती है। अपूर्णताका भान हुआ कि तुरत मनुष्य पामर वन जाता ह। सागरकी तरह पूर्ण होनेके वाद लहरे चाहे अुतनी अुछलती-कूदती रहें, पानीका जत्था चाहे वहा दौडता रहे, किन्तु सागरको वहनेकी आवश्यकता नही रहती। वह 'आत्मनि तृप्त' हे, अिसीलिअे अुसको अपनी मर्यादा

8, निर्दलीय 1

हजारी लाल ...

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आंकड़े

एक नज़र में

भारत का ...

छोडनेकी जरूरत नही होती। अुसको अपनी मर्यादाका भान ही नही है, अिसीलिअे अनायास, अभावित रूपमे मर्यादाका पालन अुसके द्वारा होता रहता है। यही सच्चा ब्रह्मचर्य है।

प्रार्थना पूरी की और पिछले चार दिनके सस्मरण लिखनेकी अूर्मि जागी। कुछ लिखनेके बाद ही नीद आ सकी।

दूसरे दिन ब्राह्म-मुहूर्तमे भूतकी तरह मै समुद्र-तट पर जा बैठता, किन्तु बारिशने रोक दिया। प्रार्थनाके समय समुद्र-तट पर जाते-जाते फिरसे आकाशकी ओर देखा। दक्षिण दिशा अितनी साफ, सुन्दर और पारदर्शक थी कि पूर्वकी ओर जमे हुअे बादलो पर मनमे गुस्सा आया। अुन्होने यदि दक्षिणका अनुकरण किया होता तो अुनका क्या बिगड जाता?

दक्षिण दिशामे त्रिशकु बराबर खडा था। जय-विजय अुसके द्वारपालोका काम कर रहे थे। 'कैरीना' या झूठा क्रास अेक ओर जाकर पडा था। अुन दोनोके बीच कुछ अैसे सुन्दर तारे चमक रहे थे, जो वर्धा या बबअीके लोगोको जीवनमे कभी भी देखनेको नही मिलते।

अुत्तरकी ओर सप्तर्षि पूर्ण नम्रताके साथ फैले हुअे थे। ध्रुव रातकी तरह करीब करीब जमीनको छूने जा रहा था। स्वाति और चित्रा सिर पर चमक रहे थे। हस्त कुछ टेढा हो गया था। पश्चिमकी ओर चद्र अस्त हो चुका था, किन्तु चद्रिका अभी अपना अस्तित्व बता रही थी। पुनर्वसुकी नावमे से केवल प्रश्वन ही बादलोको भेदकर झाक रहा था। अकेला तारा अेकाकी अपने स्वभावके अनुसार प्रश्वन और मघासे किट्टी करके दूर जा कर खडा हो गया था। मघाका हसिया फाल्गुनीके चौकोनको सभाल रहा था। पूर्वकी ओर विशाखाके नीचे गुरु और शुक्र शोभायमान थे। और ये दोनो काफी अूचे चढ आये थे, अिसलिअे पतली अनुराधा, टेढी ज्येष्ठा और नुकीला मूल अुनको सहारा दे रहा था। गुरु और शुक्र जब पारिजातके पास आते है, तब अिन तीनोकी तुलना सुन्दर होती है। और मगलके अुनके पास न होनेका दु ख नही होता।

Our Outstanding Publications

मुझे हिन्दुस्तानकी अेक ज्योतिर्मयी व्याख्या सूझी है। कन्या-कुमारीके दक्षिणमें यदि हम जायें तो ध्रुव दिखाओ नहीं देता, और कश्मीरके अुत्तरकी ओर जायें तो दक्षिण दिशामें अगस्ति दिखाओ नहीं देता। अतः मैंने यह व्याख्या बनाओ है कि जिस प्रदेशमें ध्रुव और अगस्ति दोनों दिखाओ पड़ते हैं वही हमारा भारत देश है।

प्रार्थनाके बाद, सब प्राणियोंको जो अुदर-भरण नामक यज्ञकर्म करना पड़ता है अुसे हमने भी पूर्ण किया और नहानेके लिअे तैयार किये हुअे कुंडमें अुतरे। नये ढंगसे बनाये हुअे अिस कुंडमें समुद्रका पानी निरन्तर आता रहता है। आधा कुंड चार फुट गहरा है। बाकीका आठ फुट गहरा है। कपड़े बदलनेके लिअे दो कमरे भी बनाये गये हैं। अिस तरहकी सुघड़ व्यवस्था धार्मिक पुण्यको कम करती है, अैसा नहीं मानना चाहिये। नहाकर हम कन्याकुमारीके दर्शन करने गये। यह मंदिर त्रावणकोरके हिन्दू राज्यमें है, अतः हरिजनोंके लिअे वह बहुत समयसे खुला कर दिया गया है। मंदिरके द्वार पर सरकारका घोषणापत्र लगा है कि जो जन्म या धर्मसे हिन्दू हैं, वे ही अिस मंदिरमें प्रवेश कर सकते हैं।

मंदिरका स्थापत्य सादा किन्तु प्रगल्भ है। पत्थरके खंभों पर छतके तौर पर पत्थर ही आड़े रखनेके कारण अन्दरसे सारा मंदिर तह-खानेकी तरह मालूम होता है। देवीकी मूर्ति पूर्व दिशाकी ओर देखती है। किन्तु अुस ओरका बाहरका दरवाजा बंद होनेसे देवीको समुद्रका दर्शन नहीं होता, न समुद्रको देवीका दर्शन होता है! बेचारे बंगाल-सागरने कभी यह दावा नहीं किया होगा कि वह जन्म या धर्मसे हिन्दू है! और समुद्र होनेके कारण मर्यादाका अुल्लंघन करके भी वह मंदिरमें प्रवेश कर नहीं सकता!!

कन्याकुमारीकी कथा बड़ी करुण है। यहांके किनारे पर बिखरी हुअी अक्षतके जैसी सफेद मोटी रेत, माणिकके चूर्ण जैसी लाल रेतका गुलाल और स्याहीचूसके तौर पर अुपयोगमें लाओ जानेवाली काली रेत — ये सब प्राकृतिक चीजें अुस करुण कहानीको और भी करुण बनानेमें मदद करती हैं। संसारके सभी महाकाव्य यदि करुणान्त होते हैं,

8, निर्दलीय 1
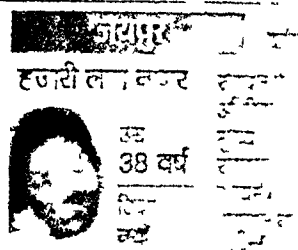
हजारी लाल नागर

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक नज़र

तो हिन्द महासागरकी अधिष्ठात्री देवी कन्याकुमारीकी कथा भी करुणान्त हो यही अुपपन्न है। करुण रसमें जो गहराअी होती है, अुसीके द्वारा जीवनकी प्रतीति हो सकती है।

दुःख सत्य सुख माया, दुःख जन्तोः परं धनम्।
दुःखं जीवन-हृद्‌गतम्‌॥

छिछला जीवन मानता है कि सुख ही जीवनकी अनुभूति है, जीवनका सार-सर्वस्व है। अिस भ्रमको मिटानेका काम दुःखको सौंपा गया है। दुःखसे परास्त न होकर जो मनुष्य जीवनकी साधनाके तौर पर दुःखको स्वीकार करता है, वही सुख-दुःखसे परे होकर जीवन-समृद्धिका आनंद भोग सकता है। यह आनंद सुख-दुःखातीत होनेके कारण सागरके जैसा गंभीर और आकाशके जैसा अनंत होता है।

अिस आनंदके भाग्यमें किसीके साथ विवाह-बद्ध होना नहीं लिखा है!

दिसम्बर, १९४७

६३

कराची जाते समय

[अेक पत्रसे]

बम्बअीके जागरणका अृण अदा करनेके लिअे मैं जल्दी सो गया था। सुबह चार बजे अुठा। स्टीमर डोलती हुअी आगे बढ रही थी। यहां कहीं भी जमीन दिखाअी नहीं देती। अूपर आकाश और नीचे पानी। पानी पर मनुष्यका कितना विश्वास है! जमीनके नजरसे ओझल रहते हुअे भी दिनरात वह समुद्र पर यात्रा कर सकता है। संस्कृतमें पानीको जीवन कहते हैं। 'प्यासके समय जो पेटमें अुतरता है वह है जीवन, और तूफानके समय जिसके पेटमें हमें अुतरना पड़ता है वह है मरण।' अैसे पानीके लिअे हमारे पूर्वजोंने दो भिन्न शब्दोंकी कल्पना नहीं की।

Our Outstanding Publications

प्रार्थनाके लिअे साथियोको जगाअू या नही, अिसका विचार थोडी देर मनमे चला। फिर मनके साथ तय किया कि जहाजके हिडोलेमे सोये हुअे अिन बच्चोको जगानेके बजाय सबकी ओरसे अकेले ही धीमी आवाजमे प्रार्थना कर लेना अच्छा है। लेकिन अिसको सामुदायिक प्रार्थना कैसे कहे? मनमे आया, चलो समीपके केनवासके मोटे परदे हटाकर देख लू कि प्रार्थनामे साथ देनेके लिअे कोअी तारे जागते है या नही? अनुराधाने कहा कि 'हम अभी अभी जागे है। कृष्णचद्रके आनेकी तैयारी हे।'

अितनेमे अपने दो सीग अूचे करके चद्र बोला, 'तैयारीको कोअी सीग अुगने बाकी नही हे। मे आ ही गया हू।' अुसने बाये हाथमे पारिजात धारण किया था, अिससे वह विशेष सुदर मालूम होता था। देखते ही देखते अभिजितने क्षितिज परसे सिर अूचा किया और बादमे स्वाति, अभिजित और पारिजातके त्रिकोणका अेक बडा पिरामिड पूर्व-क्षितिज पर खडा हो गया। अिन सबको साथमे लेकर मैने अपनी प्रार्थना पूरी की।

अितनेमे चद्र कुछ अूपर आया और हमारे जहाजसे लेकर चद्रके पावो तक अेक सुनहरी पट्टी पानी पर चमकने लगी। मुझे लगा, चद्रलोक जानेके लिअे यह कितना आसान और सीधा रास्ता है! जहाजसे अुतरकर चलनेकी ही देर हे। किन्तु पाश्चात्य लोग कहते है कि चद्रलोकमे पागल लोग ही रहते है। अत फिर सोचा कि अितनी मेहनतके बाद यदि वहा अपने समान-धर्मा और जाति-भाअी ही मिलनेवाले हो, तो यह तकलीफ क्यो अुठाअी जाय?

* * *

मुझे आकाशके बादल बहुत पसद है। छोटा हो या बडा, सफेद हो या काला, पूरा हो या टूटा-फूटा, बादल मुझे आनद ही देता है। मगर रातके बादल मुझे बिलकुल पसद नही। अुनका आकार और रग आकर्षक भले ही हो, मगर तारोके बीच वे भूतोकी तरह—या हत्यारोकी तरह—लुकते-छिपते जाते है, यही मुझे पसद नही है।

अुप कालके पहले आकाश कितना सात्त्विक रमणीय मालूम होता था! चादनीमे समुद्रकी लहरे—लहरे काहेकी? नाजुक वीचिमाला

Our Outstanding Publications

अैसा कोअी दृश्य न था। अिस तरहकी बडी नदिया जहा समुद्रसे मिलने जाती है, वहाके किनारे बहुत गदे होते है। ज्वार-भाटेके कारण भीगे हुअे कीचडमे दोडधूप करनेवाले केकडोके सिवा ओर कुछ दिखायी ही नही देता।

ज्यो ज्यो हम आगे बढते गये, नदी चौडी होती गअी। दूरके किनारे पर जब सफेद बालू दिखाअी दी, तभी जाकर मनको कुछ शाति महसूस हुअी। सुन्दरवनका प्रदेश पार किया, रात होनेसे पहले हम डायमड हार्बरके पास आ पहुचे। हमारा जहाज अब लहरोके साथ डोलने लगा। जरा देर तक जहाजके डेक पर खडे रहकर हमने हिन्दुस्तानके किनारेको लुप्त होते देखा। किन्तु बादमे तो चक्कर आने लगे। अत खाना खाकर हम सो गये। सोनेके पहले प्रार्थनाके अतमें गिरधारीने रवीन्द्रनाथका 'आगुनेर परशमणि छोआओ प्राणे' यह सुन्दर गीत गाया। अुसे सुननेके लिअे कअी लोग जमा हो गये। और अुस गीतके प्रतापसे हमारे विस्तर अच्छी तरह फैलानेमे किसीको अीर्ष्या नही हुअी।

सुबह सबसे पहले मै जागा। अरुणोदय भी नही हुआ था। आकाशमे जिस प्रकार चाद चलता है, अुसी प्रकार जहाज अकेला अकेला पानी काटता हुआ चला जा रहा था। अुस समयकी शाति कैसी अनोखी थी! जहाजके पेटमे यत्ररूपी हृदय यदि अपनी धडकन न सुनाता, तो बाहरकी शाति अितनी सुन्दर न मालूम होती। चारो ओर समुद्र मानो लोहे या सीसेके ठडे रसके समान फैला हुआ था। मै जहाजके छत पर जा खडा हुआ। ज्यो ज्यो जहाज डोलता था, त्यो त्यो पानी अूपर चढता या नीचे जाता था। चारो ओर लहरे ही लहरे! लहरे जब अेक-दूसरेसे टकराती है तब अुनमे से फेन निकलता है। अधेरेमे भी यह फेन चमकता है, और अिस चमककी टेढी-मेढी रेखाओसे विचित्र प्रकारकी आकृतिया तैयार होती है। जहाज जब डोलता है, तब अुसका असर हमारे दिमाग पर होता है। अुसमे यदि हम लहरोके अखड और सनातन नृत्यकी लीला निहारने लगे तब तो अुसका नशा ही चढने लगता है।

आगे जाकर लहरें अुठनी बद हो गअी। सागरका हृदय जगह जगह अूपर अुठता और नीचे बैठता था। सामान्यत लहरोको अूपर अुठते ओर फूटते हुअे देखनेमे अेक तरहका आनन्द मालूम होता है। किन्तु अुसमे अुतना गाभीर्य नही होता। ध्वनिकाव्यका रहस्य जिस प्रकार शब्दोमे स्पष्ट करनेसे कम हो जाता हे, अुसी प्रकार लहरोके फूटनेसे होता है। किन्तु जब लहरे अदर ही अदर अुछलती है और समा जाती है, तब अुनका सूचन विविध, अनत और अस्पष्ट या अव्यक्त रहता है। अधेरा होते हुअे भी हवा जब साफ होती है तब व्योम और सागरका मिलन-वर्तुल हमारा ध्यान खीचे विना नही रहता। क्षितिजके पास लहरोका सवाल ही नही होता। समुद्रके कालेपनकी तुलनामे अधेरा आकाश भी अुजला मालूम होता है। वेदकालके ऋषियोको जिस प्रकार जीवन-रहस्य दिखाअी दिया होगा, अुसी प्रकार क्षितिज रातके समय दिखाअी देता है। ऋषियोको अनत कालके आध्यात्मिक तत्त्व अनत आकाशमे चमकनेवाले तारोके समान स्पष्ट मालूम होते है, जब कि पार्थिव जीवनका भविष्यकाल अुनकी आर्ष दृष्टिके सामने भी सागरकी वारि-राशिके समान अज्ञात और अव्यक्त ही रहता है।

अिस प्रकार ध्यान और कल्पनाका खेल चल रहा था, अितनेमें

'आधारेर गाये गाये परश तव
सारा रात फोटाक तारा नव नव।'

यह शोभा कम होने लगी और अरुणोदयने पूर्व दिशा निश्चित कर दी। मैंने यह काव्य देखनेके लिअे जीवतराम (कृपालानी) को जगाया। किन्तु अुनके अुठनेके पहले ही गिरधारी जागा और कहने लगा, 'मुझे बताअिये, क्या हे, मुझे बताअिये।' मै भला अुनको क्या बताता? वहा कोअी पक्षी या जहाज थोडे ही था जो अुगली दिखाकर कुछ बताता? मैंने अुससे कहा, 'वह जो लाल आकाश दिखाअी पडता है अुसे देखो। थोडी देरमे वहा सूरज अुगेगा।'

अब समुद्रने अपना रग बदला। पूर्वकी ओरसे मानो लाल जामुनी रगका प्रपात बहता चला आ रहा था। और आश्चर्य तो

Our Outstanding Publications

यह था कि पश्चिमकी ओर भी अुसी रगकी प्रतिक्रिया हुअी थी। हा, पश्चिमकी ओर समुद्रसे अधिक आकाशने ही अुस रगको ग्रहण कर लिया था। पूर्वकी प्रसन्नता बढने लगी। लाल रगमें चमक आ गअी। कुकुमका सिंदूर बना, और सिंदूरसे सुवर्ण बना। बम्बअीकी ओर रहनेवाले हम लोग पश्चिम किनारेके समुद्रमे होनेवाले सूर्यास्तकी शोभा कअी बार देख सकते है, किन्तु सागर-मथनसे निकली हुअी लक्ष्मीके समान अुदय हो रही अुषाकी वर्धमान शोभा देखनेका आनद अनोखा ही होता है। आकाश ज्यो ज्यो हसने लगा, समुद्रके मुख पर आनद और लज्जाकी रेखाअे बढने लगी, मानो दो हमअुम्र नौजवानोके बीच विनोद चल रहा हो।

अेक ओर प्रभातका यह विकास देखनेके लिअे दिल ललचाता था, तो दूसरी ओर जहाजके डोलनेसे सिरमे चक्कर आने लगे थे। मनमे आया, थोडी देरके लिअे लहरे रुक जाय और जहाज स्थिर हो जाय तो कितना अच्छा हो। मगर समुद्रकी लहरे और मनुष्यके मनोरथ कभी रुके है? अूबकर आरामकुर्सी पर लेटनेका मैं सोच रहा था, अितनेमे बालसूर्यका बिम्ब पानीमें नहाकर बाहर निकला। अुगते हुअे सूर्यके बिब पर अेक विशिष्ट तरलता होती है मानो सूर्य ठडे पानीमे से कापता हुआ बाहर निकल रहा हो। ओर पानीमें जो प्रकाश बिखरा होता है वह अैसा दीखता है मानो सूर्यका धुला हुआ अगराग हो। सूर्यका बिब पूरा बाहर निकला कि मैंने सविता-नारायणका ध्यानमत्र गाया 'ध्येय सदा सवितृ-मडल-मध्यवर्ती' अित्यादि।

जीवतरामसे अिस प्रकारकी गभीरता जरा भी सहन नही होती। वे यकायक बोल अुठे, 'बस कीजिये। कैसी बानर-भाषा बोल रहे है!' मैंने अुनसे कहा, 'आप गलती कर रहे है। यह आपकी भाषा नही है, यह तो सस्कृत है।' विनोदमें भक्तिका अुभार नष्ट हो गया। प्रार्थना ज्यो त्यो पूरी की। और जहाजमें रोज जिसमे से पार होना पडता है अुस भयकर दिव्यकी चिन्ता करने लगे। शौचके लिअे जहाजके डेक परसे नीचे जाना होता है। नीचेका हिस्सा वैसे भी हमेशा गदा रहता है। किन्तु सुबहके समय तो वह मानो नरकके

8, निर्दलीय 1

हजारी लाल नागर

38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

साथ मुकावला करता है। वहाकी हवा गदी और खारी होती है। जगह जगह लोग कै कर देते है। अेजिनकी भापसे निकलनेवाली अेक तरहकी दुर्गंध और खलासियोके रसोडेसे ठीक अुसी समय निकली हुअी प्याज और मछलीकी वदवू — दोनोके मिश्रणमे से पार होकर शौचकूपमे प्रवेश करनेकी अपेक्षा समुद्रमे कूदना मुझे कम कष्टदायी मालूम होता। हमारे वसकी वात होती तो तीन दिन तक हम शौच जाना ही छोड देते। किन्तु —

जा तो आये, पर हम तीनोके चेहरे अैसे हो गये थे कि अेक-दूसरेकी ओर देखनेकी भी अिच्छा नही होती थी। कोअी टोली झगडा करनेके लिअे जाये और काफी मार खाकर वापस लौटे, तव जिस प्रकार अपने सर्वसाधारण अनुभवका कोअी जिक्र तक नही करता, अुसी प्रकार हमने अिस दिव्यका नाम तक नही लिया।

मैंने गिरधारीसे कहा, 'चलो, खाने वैठो।' अुसने कहा, 'मुझे भूख नही है।' जीवतरामने भी खानेसे अिनकार कर दिया। मैने कहा, 'भले आदमी, धूप वढेगी तव चक्कर आने लगेगे। फिर खाना असभव हो जायगा। अभी ठडा पहर है। पेट भरकर खा लो। धूपके पहले सव हजम हो जायगा।' गिरधारी पूछने लगा, 'कसरत किये विना हजम हो जायगा?' मैने जवाव दिया, 'हम सव लोगोकी ओरसे यह जहाज ही कसरत कर रहा है। अत तुम अुसकी फिक्र मत करो।' गिरधारी मेरी वात समझ नही पाया। वह मेरा मुह ताकता रहा। हम तीनोने पेटभर खा लिया। तीनोमे जीवतराम पक्के थे। अुन्होने केवल रसवाले फल ही खाये। मैने अपनी पसदकी चीजे खायी और अूपरसे अेक पूरा नीवू चूस लिया। वेचारे गिरधारीको अुत्तम केलोका स्वाद लग गया। अुनने पेट भर कर केले ही खाये। लेकिन अेक दो घटोके भीतर ही वह अितना पछताया कि वादमें सारी यात्रामे अुसने केलेका कभी नाम तक नही लिया।

दोपहर हुअी। मै अपनी कमजोरी जानता था। मैने अपना विस्तर विछाकर हाथ-पाव फैला दिये। हाथमे दूसरा नीवू लिया और आखे मदकर लेट गया। मद्रासकी ओरका कोअी जहाज

Our Outstanding Publications

कलकत्ता जा रहा होगा। अुसे दूरसे देखकर लोग कहने लगे, 'वह देखो जहाज, वह देखो जहाज।' अितनेमें दोनो जहाजोंने 'भो ओ ' करके अेक-दूसरेका अभिवादन किया। किन्तु मैंने तो आखें मूदकर कल्पनाके द्वारा ही यह सारा दृश्य देख लिया। गिरधारीसे रहा नही गया। वह चटसे अुठकर खडा हो गया। ज्यो ही वह खडा हुआ, अुसके केलोंने पेटमें रहनेसे अिनकार कर दिया। वह घबडा गया। मैंने लेटे लेटे ही अुसे पानी दिया। अदरकका टुकडा दिया। थोडा शात होनेके बाद वह मेरे बिस्तर पर आकर लेट गया। किन्तु अेक बार बिलोया हुआ पेट क्या तुरन्त शात हो सकता है?

हम डेक पर लेटे थे। वहा अेक ओर अूपरकी कैबिनमें दो देशी अीसाअी बैठे थे। अुनमें से अेकको कै होने लगी। वह ज्यो-ज्यो जोरसे कै करता था, त्यो-त्यो अुसका मित्र अुसका मजाक अुडाता था। 'वन हिगिन्स, अुलटी करोअिंग' आदि मित्रके अुद्गार अुसकी कै से भी अधिक जोरोसे निकलने लगे। गिरधारी घडीभर हसता था और फिर पछताता था।

अैसा करते करते शाम हो गअी। शामको मुझमें कुछ जान आयी। हमने फिरसे कुछ खा लिया, किन्तु वह किसीको अनुकूल नही आया। शामकी शोभा मैंने बैठे बैठे ही निहारी। लोग कहते थे, 'अब हम काले पानीमें आये है।' और सचमुच पानीका रग डर पैदा करे अितना काला था। लोग कहते, 'अब अदमान दिखाअी देगा।' कोअी कहता, 'नही, हमारा जहाज अुससे काफी दूर है। वह टापू नही दिखाअी देगा।'

सध्याकी शोभा कुछ निराली ही थी। प्रात कालके रग और सध्याके रग समान नही होते। अुदय और अस्त समान हो ही कैसे सकते है? अुदय वर्धमान बाल्यकाल है, जब कि अस्त विजयी वीरके निधनके समान शोकपूर्ण होता है। अुषाके मुख पर मुग्ध हास्य होता है, जब कि सध्याकी मुखमुद्रा पर क्षणजीवी अुल्लास और विलास होता है। समुद्रके रग फिर बदलने लगे। सूर्य अस्त हुआ और देखते ही देखते धीरे धीरे तारोका पारिजात खिलने लगा।

जहाज पर बिजलीके सौम्य दीये तो कभीके चमकने लगे थे। मुझे ये दीये बचपनसे ही बहुत पसद है। वे अितने साम्य होते है कि समीपका सब कुछ दिखाओी देता है, फिर भी वे आखोको चौंधिया नही पाते। अधेरेको नष्ट करके अपना साम्राज्य जमानेकी महत्त्वाकाक्षा अुनमे नही होती। अधेरेके साथ मीठा समझौता करके 'तुम भी रहो, हम भी रहेगे' की जीवन-नीति वे पसद करते है। शहरोंके बिजलीके दीये नये अध्यापककी तरह अपना सारा प्रकाश अुडेल देना चाहते है, जहाजके दीये योगियोंके समान 'आत्मन्येव सतुष्ट' होते है।

बिस्तर पर लेटे लेटे हम अिन दीयोकी बाते कर रहे थे। अितनेमे हमारा जहाज 'भो ओ ' करके रभाया। मै तुरत समझ गया कि अुसने कही दूसरी भैस देखी है। अितनेमे दूरसे रभानेकी आवाज आओी। मै अुठकर बैठ गया। रातके समय समुद्रमे जहाज देखना मुझे बहुत पसद है। बिजलीकी बत्तियोकी अेक लम्बी पक्ति और अूचे मस्तूल पर लगे दो लाल बडे दीये भनकी तरह जब अधेरेमें दौडते है, तब अैसा लगता है मानो हमने परियोंके ससारमें प्रवेश किया है। जहाज ज्यो-ज्यो अपना रुख बदलता जाता है त्यो त्यो सामनेका दृश्य भी नये नये ढगसे खिलता जाता है। और जहाज जब दूर चला जाता है और लुप्त होने लगता है, तब तो यह दृश्य नींदके कारण चलनेवाली स्मृति-विस्मतिके बीचकी आखमिचानीके समान ही मालूम होता है। आकाशके तारोकी ओर देखता देखता मै सो गया।

तीसरे दिन सुबह पानी बरसने लगा। जहाजके अेक औसाओी कारकुनने आकर हम सबको नीचे जानेको कहा। लोग अिसका कारण तुरन्त न समझ पाये। अुसने कहा, 'अेक बडा बवडर आग्नेय दिशासे अिस ओर आता मालूम हो रहा है।' अिसको साअिक्लोन कहते है। साअिक्लोनमे यदि जहाज फस जाय तो वह बहुत बडी आफत मानी जाती है। बहुतसे जहाज साअिक्लोनमे फसकर डूब गये है। अुस कारकुनने कहा, 'यदि यही डेक पर आप लोग बैठे रहेगे तो शायद आधीसे अुड भी जाय।' लोग डरके मारे अेकके बाद अेक नीचे चले गये। हमने नीचे जानेसे साफ अिनकार कर दिया। अुसने हमे समझानेकी

Our Outstanding Publications

कोशिश की। हमने कहा, 'आंधी आयेगी तो अिन बडे बडे रस्सोंको पकडकर पडे रहेंगे।'

'किन्तु बारिशमें आप भीग जायेंगे।'

'भीग जायेंगे तो सूख भी जायेंगे।'

हमारी जिद देखकर वह चला गया। पानी आया। अच्छा खासा आया। आंधीका घेरा तीन चार मीलका होता है। सौभाग्यसे वह हमारे जहाज तक नहीं आयी। धूमकेतुकी तरह अुसके चारों ओर पूंछे होती हैं। असी अेक पूंछका तमाचा हमारे जहाजको भी कुछ लगा। हम काफी भीग गये। अतः नीचे जानेके बदले अूपर केबिनमें जा बैठे।

आखिर रंगून आया। बंदरगाह पर अुतरनेवाले लोगोंकी ओर अुन्हें लेने आये हुअे अिष्टमित्रोंकी भीडका पार नहीं था। डॉ० प्राणजीवन मेहता खुद हमें लेनेके लिअे बंदरगाह पर आये थे। हमने देखा कि रंगूनमें जगह जगह रबरके रास्ते हैं। अतः गाडियां दौडती हैं तब सिर्फ घोडोंके टापोंकी ही आवाज सुनाअी देती है।

अुस दिन हमें अैसा लगता रहा, मानो हमारे पांवोंके नीचेकी जमीन डोल रही है। अेक दिनके आरामके बाद ही दिमागमें तीन दिनका समुद्र अुतर सका।

मार्च, १९२७

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक औरे नाम

६५
सरोविहार

हमे रगूनके समीपका प्रख्यात सरोवर देखना था। युरोप खडकी आकृतिके जैसा अिस सरोवरका आकार भी टेढा-मेढा है। अुममे कअी खाडिया, अतरीप तथा जलडमरूमध्य है। रगून कोकणके ही अक्षाश पर है तथा समुद्रके पास है, अिसलिअे वहाकी वनश्री भी मुझे कोकणके जितनी ही खुशनुमा मालूम हुअी। चारो ओर वडे बडे वृक्ष। सृष्टिने मानो अपना सारा ही वैभव दिखानेके लिअे वाहर निकाला हो। वनश्री और जलदेवताका जहा मिलन होता है, वहा लक्ष्मी बिना वुलाये आ ही जाती हे। हम तीमरे पहर अुस सरोवरके पास जा पहुचे। काफी समय तक अुसके किनारे किनारे घूमे। सरोवरका सौदर्य हर कोनेसे भिन्न भिन्न प्रकारका मालूम होता था। कुछ रूप-गर्वित वृक्ष सारे समय सरोवरके दर्पणमे अपना दर्शन किया करते थे।

घूमते-घूमते हमारा धीरज खतम हुआ। सरोवर तो अीश्वरने नौका-विहारके लिअे ही बनाया है। हवसी जॉनको वुलाकर हम अुसकी नावमे जा वैठे और बिना किसी अुद्देश्यके अनेक दिशाओमे घूमते रहे। वीचमे अेक टापू था। अुससे मुलाकात किये विना भला वापस कैसे लौटा जा सकता था? टापू पर अेक सुदर आराम-गृह बना हुआ था। अुसकी सीढियोकी दोनो दीवारो पर सीमेंटके वनाये हुअे दो भयानक अजगर लम्बे होकर पडे थे। नाव चलाते चलाते अेक मोड लेते ही श्वेडेगॉन पॅगोडा अपने अूचे शिखरके साथ दर्शन देता हे। आगरेके किलेसे ताजमहल देखनेमे जो मजा आता है, वैसा ही मजा यहा माल्म होता था। वस्तुके समीप जाने पर अुसका सम्पूर्ण सौदर्य प्रकट होता हे, किन्तु अुसका काव्य तो दूरसे ही खिलता है। यह खूवी जाननेसे ही क्या चाद, सूरज तथा अगणित सितारे हमसे अितने दूर दूर विचरते होगे?

शाम हुअी अिसलिअे हमे मजबूरन वापस लौटना पडा। सरोवरने शकुतलाकी तरह हमे वापस आनेका निमत्रण तो दिया ही था। अत दूसरे

Our Outstanding Publications

दिन नहानेका कार्यक्रम तय करके हमारी अेक बडी टोली वहा जानेके लिअे रवाना हुअी। वहा पहुचने पर हमारे साथके लोगोने बताया, 'गोरे लोगोके बोटिंग क्लबके कारण सरोवरमे नहानेकी मनाही है।' सुबह होते ही जिस प्रकार कुमुद बद हो जाता है, अुसी प्रकार मेरा अुत्साह मिट गया। अितनी मेहनतके बाद रसपूर्ण सरोवरमे तैरनेके आनदसे वचित रहना भला किसको पसद होगा? मगर हमारे साथी सत्याग्रही थोडे ही थे! वे खुलेआम कानूनका विरोध करनेके बजाय चुपचाप कानून तोडना ही अधिक पसद करनेवाले थे। अुन्होने अेक अेसा अेकान्त स्थान बहुत पहलेसे ढूढ लिया था, जहा न तो गोरे लोगोकी नावे पहुच सकती थी, न अुनकी दृष्टि। मैने यहा आते ही देखा कि अिस स्थानका सादर्य अन्य स्थानोसे कतअी कम नही है। अेकातमे चोरीसे नहानेमे कुछ अनोखा ही आनन्द आया। गिरधारीको तैरना नही आता था, अुसका श्रीगणेश भी यही हुआ। पानीमे तैरते रहनेका अनुभव पहले-पहल होने पर मनुष्यको जो आनद होता है, अुसको यदि कोअी अुपमा देनी हो तो अडा तोडकर बाहर आये हुअे पक्षीके आनदकी ही दी जा सकती है। धूप तेज हो गअी फिर भी गिरधारी बाहर आनेका नाम नही लेता था। आधा घटा और पानीमे रहने देनेके लिअे वह मुझसे अग्रेजीमे विनती करने लगा। अुसे न मानता तो वह बगलामे विनती करता, मानो भाषा बदलनेसे विनतीमे अधिक जोर आता हो। अुनको मै नाराज कैसे करता? हमने मनमोक्त जल-विहार किया।

यदि ययातिको भी जीवनका आनद छोडना पडा, तो फिर हमारे तैरनेके आनदका अत हुआ अिसमे आश्चर्य ही क्या? थके हुअे किन्तु हल्के बदन हम वापस लौटे। रास्तेमे अनन्नासके बगीचे थे। जैसा मालूम होता था मानो दूर दूर तक कटीले अनन्नासोके फव्वारे ही जमीनमे से अूपर अुड रहे हो। अनन्नासका अितना बडा बगीचा मैने पहले कभी नही देखा था। अत पेटमे भूख होते हुअे भी और यहा अनन्नासकी प्राप्तिकी कोअी अुम्मीद न होते हुअे भी काफी देर तक हम वहा देखते खडे रहे।

मार्च, १९२७

8, निर्दलीय

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक और नाम

६६

सुवर्णदेशकी माता अैरावती

औरावती कहे या अैरावती? मै समझता हू कि औरा नामकी घास परसे ही नदीका नाम औरावती पडा होगा। अिसके किनारेकी पौष्टिक घास खाकर मदमत्त बने हुअे हाथीको अैरावत कहते होगे, या फिर अिद्रके अैरावत जैसी महाकाय और गजगतिसे चलनेवाली अिस नदीको देखकर किसी बौद्ध भिक्षुको लगा होगा, 'चलो, अिसीको हम अैरावती कहे।'

परन्तु अैतिहासिक कल्पना-तरगोमे वहना वैठे-ठाले लोगोका काम है। मुसाफिरको यह नही पुसाता।

अैरावती नदी हिन्दुस्तानमे होती तो सस्कृत कवियोने अुसके बारेमें अैरावती जितना ही लबा-चौडा काव्य-प्रवाह वहा दिया होता। ब्रह्मदेशके कवियोने अपनी अिस माताके विषयमे अनेक काव्य यदि लिखे हो तो हमे पता नही। ब्रह्मी भाषा न तो हमारी जन्मभाषा है, न शास्त्रभाषा या राजभाषा है। अपने पडौसीकी भाषा सीखनेकी प्रवृत्ति हममे है ही कहा? वरसो तक परदेशमे रहे तो हम वहाकी भाषा बोल सकते है, किन्तु अुस भाषाके साहित्यका आस्वाद लेनेका श्रम हम कभी नही करते। कोअी अग्रेज ब्रह्मी भाषा सीखकर ब्रह्मी कविताका अग्रेजी अनुवाद हमे दे दे तो ही शायद हम अुसे पढेगे।

कोअी भी देश अैरावती जैसी नदी पर गर्व कर सकता है या अुसका कृतज्ञ हो सकता है। ब्रह्मदेशमे रगूनसे अुत्तरकी ओर ठेठ मडाले तक हम ट्रेनमे यात्रा कर चुके थे। वहासे नजदीकके अमरापुरा जाकर हमने अैरावतीके प्रथम दर्शन किये। यदि पहलेसे हमे मालूम हो जाता कि अमरापुराके समीप प्रचड बौद्ध मूर्तिया है, तो हमने भगवान बुद्धके दर्शनमे ही अैरावतीके विहारका आरभ किया होता।

Our Outstanding Publications

यहा पर भी नदीका पाट खूब चौडा हे। नदीका प्रवाह धीरोदात्त गजगतिमे चलता है। अैसी नदीकी पीठ पर नाव या 'वाफर' (स्टीमर) मे वैठकर यात्रा करना जीवनका अेक वडा सोभाग्य ही हे।

अमरापुरासे मडाले वापस जाकर हम 'वाफर' मे वैठे। समुद्रकी यात्रा अलग है और नदीकी यात्रा अलग। नदीमे लहरे नही होती। दोनो ओरका किनारा हमारा साथ देता रहता हे। और हमे अैसा नही मालूम होता कि जीवनका नाम धारण किये हुअे किन्तु जान लेनेवाले अेक महाभूतके शिकजेमे हम फसे हुअे है। पृथ्वीके गोलेकी हवामे चलनेवाली सनातन यात्राके समान ही नदीकी यात्रा शात और आह्लादक होती है। आज भी जव अिस अैरावतीकी यात्राका मै स्मरण करता हू, तव मुझे द्रोपदीके जॅसी मानिनी नर्मदाकी चाणोद-कर्नाली तरफकी यात्रा, सीताके जॅसी ताप्तीकी सागर-सगम तककी यात्रा, काशी-तल-वाहिनी भारतमाता गगाकी यात्रा, मथुरा-वृदावनकी कृष्णसखी कालिंदीकी यात्रा, कश्मीरके नदनवनमे पार्वती वितस्ताकी यात्रा और वनश्रीके पीहर-सदृश गोमतक प्रदेशकी और केरलकी जलयात्रा, सभी अेकसाथ याद आ जाती है। अिनमे भी मन तृप्त हो जाय अितनी लवी यात्रा तो वितस्ता और अैरावतीकी ही हे। अैरावती नदी सिधु, गगा, ब्रह्मपुत्रा ओर नर्मदाकी वरावरी करनेवाली है। अैरावतीका पाट और प्रवाह देखते ही मनमे अैसा भाव अुठता हे, मानो यह किसी महान साम्राज्य पर राज्य करनेवाली कोअी सम्राज्ञी हो! आराकान और पेगुयोमा अैरावतीकी रक्षा अवश्य करते है, किन्तु अुसकी प्रतिष्ठा वनाये रखनेके लिअे वे आदरपूर्वक दूर ही खडे रहते है।

हमारा जहाज चला। शाम होते ही जिस प्रकार कामधेनुके वत्स माके पास दौडे आते है, अुसी प्रकार आसपासके विस्तीर्ण प्रदेशके श्रमजीवी कृषीवलोके ठटके ठट अैरावतीके किनारे अिकट्ठा होते है। हमारा जहाज मानो अेक चलता-फिरता वाजार ही था। कोअी छोटा-मोटा वदरगाह आने पर वह लोगोको न्यौता देनेके लिअे सीटी वजाता। वस, अुमडती हुअी चीटियोकी तरह लोग दौडते दौडते आते और तरह तरहकी खाने-पीनेकी चीजे, कपडे, वेतके वर्तन, कारीगरीकी वस्तुअे तथा अन्य चीजे जहाज पर फैल जाती। जहाजमे

8, निर्दलीय 1
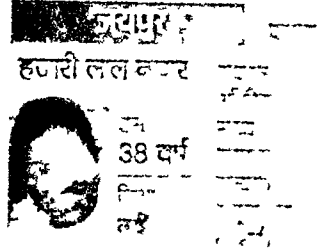
तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक उसे नाम

भी चद व्यापारी अपना अपना माल लिये हुअे तैयार ही रहते। पक्षियोके कलरवकी तरह लेन-देनका शोरगुल शुरू हो जाता। भाषा यदि हम समझते तो अिस शोरगुलसे अूब जाते। किन्तु यहा तो लोग लडे-झगडे या रोये-चिल्लाये, हमारे लिअे सब अेक-सा ही था। मानो अेक बडा नाटक खेला जा रहा हो। विनिमय पूरा होने ही जहाज छूटता था। ब्यानेकी तैयारीमे हो अैसी भैसकी तरह हमारा जहाज डोलता डोलता चलता था। जहाजके अेक कमीने गोरे अधिकारीके साथ हमारा कुछ झगडा हो जानेसे यात्राके आरभमे ही सारा मजा किरकिरा हो गया था। किन्तु मद मद पवनमे यह सब अुड गया, और हम कुदरतकी तरह प्रसन्न हो गये।

फिर अेक बदरगाह आया। यहा कुछ विशेष व्यापार चलता होगा। छोटी-बडी असख्य नावे नदीके किनारे कीचडमे लोट रही थी। ढोरोकी पीठ पर जिस प्रकार मक्खिया भिनभिनाती है, अुसी प्रकार देहाती बच्चे अिन नावोके बीच कूद और खेल रहे थे। ब्रह्मी लोग गोदना गुदानेके बडे शौकीन होते है। अुनके केवडेके रग जैसे चमडे पर लाल और हरे गोदने बडे ही सुन्दर मालूम होते है। महाराष्ट्रके गावोमे लोगोका यह विश्वास है कि अिस जन्ममे शरीर पर जेवरोकी आकृति गोदनेसे अगले जन्ममे सोनेके जेवर मिलते है और ललाट पर टीका या चद्रमा गोदनेसे स्त्रीको अखड सौभाग्य मिलता है। कुछ अिसी तरहका विश्वास शायद यहाके लोगोमे भी होगा, क्योकि यहाके बहुतसे देहाती कमरसे घुटनो तक सारे शरीरमे तरह तरहकी आकृतियोवाली लुगी गुदाते है। अिसीलिअे जब वे नहानेके लिअे नदीमे नगे घुस पडते है, तब बगैर कपडोके भी नगे नही मालूम होते है। जहाज कही अधिक समय तक ठहरता, तब हम किनारे पर अुतरकर आसपासके गावोमे घूम आते थे। ब्रह्मी घरो और मोहल्लोसे हमारी आखे अच्छी तरह परिचित हो चुकी थी। अुनकी भाषा यद्यपि हम समझ नही पाते थे, फिर भी अिन निर्व्याज देहातियोका जीवन हमारे लिअे परिचित-सा हो गया था। राजनीतिज्ञ और व्यापारी लोगोके राग-द्वेषोको यदि हम अलग कर दे और धार्मिक तथा अधार्मिक लोगोकी कल्पना-सृष्टिको अेक ओर रख

दे, तो मनुष्य-जाति सर्वत्र समान ही है। मैं समझता हू कि दुनियाभरमें सारे गाव रूप और स्वभावमें समान ही होंगे।

प्रवाहके साथ मानो ताल देनेवाले स्तूप और मदिर भी बीच बीचमें मिल जाते थे। अूची अूची टेकरिया और शिखर मनुष्यको हमेशा ही प्रिय लगते हैं। अुसमें भी नील नदी जैसी अैरावती जब चारो दिशाओंमें अपनी कृपाका अुत्पात फैलाती है, तब ये अूचे अूचे स्थान ही मनुष्यके लिअे आश्रय-स्थान बन जाते हैं। मनुष्य अुनके प्रति अपनी कृतज्ञता यदि मदिर बनवाकर प्रकट न करे तो भला किस प्रकार करे? प्रकृतिने हमें सिखाया है कि हरे पत्तोंमें पीले परिपक्व फल अपनी सारी मस्ती दिखा सकते हैं। अिस सबकसे सीख कर यहाके लोगोंने पेडोंके बीचमें मदिर बनवाकर अुन पर आकाशकी अनतताका दर्शन करानेवाली सोनेकी अुगलिया अूची अुठा रखी हैं। जो लोग यह मानते हैं कि प्रकृतिकी शोभाको मनुष्य बढा नही सकता, अुन्हें अेक बार यहा आकर ये शिखर जरूर देखने चाहिये।

दोपहरका समय था। अग्रेजी जाननेवाले अेक ब्रह्मी कॉलेजियनके साथ हम बातें कर रहे थे। अितनेमें अेक शात आवाज सुनाअी दी। छिदवीन नदी अपना कर-भार लेकर अैरावतीमें मिलने आयी थी। कितना भव्य था दोनोंका प्रेम-सगम! वह दृश्य अैसा था मानो रामदास और तुकाराम अेक-दूसरेसे मिल रहे हो अथवा भवभूति शतरज खेलनेवाले कालिदासको अपना 'अुत्तर-रामचरित' सुना रहे हो।

कल्पना द्वारा तो मैं छिदवीनके अज्ञात पदेशमें शान-राज्यो तककी सैर कर आया। हाथमें तीर-कमान या कुल्हाडी लेकर घूमनेवाले कअी निश्चित और निर्भय वनवासी मुझे वहा मिले। जरा-सा सदेह होने पर जान लेनेवाले और विश्वास बैठ जाने पर जान न्योछावर करनेवाले अिन प्रकृतिके बालकोका दर्शन सभ्यताके कीचडको धो डालनेवाले मगल-स्नान जैसा था। जहाजका पक्षी कितना ही क्यो न अुडे, अतमें जिस प्रकार वह जहाज पर ही लौट आता है, अुसी प्रकार कल्पना भी जगलकी सैर करके फिर जहाज पर आ गयी। क्योंकि हम पकोकु बदरगाह पर आ पहुचे थे।

पकोकुके पास कीचडवाली नदीमे नहाकर और ब्रह्मी आतिथ्य स्वीकार करके हम फिर जहाज पर सवार हुअे और मिट्टीके तेलके कुअे खनेके लिअे येननजाव तक गये। कहा जा सकता हे कि यहा पर अमेरिकन मजदूरोका राज चलता हे। आसपास वनश्री नहीके वरावर हे। यहा अेक ओर अिन मिट्टीके तेलके कुओका आधुनिक क्षेत्र और दूसरी ओर टेकरी पर स्थित छोटेसे प्राचीन बौद्ध मदिरका तीर्थक्षेत्र, दोनोको देखकर मनमे कअी विचार अुठे। मदिरकी कारीगरीमे हाथीके मुहवाला अेक पक्षी खुदा हुआ था। वैसे ही अन्य अनेक मिश्रण यहा दिखाअी दिये। निकटके मठमे कुछ वौद्ध साधु आलापके साथ सायकालकी प्रार्थना या अैसी ही कोअी दूसरी विधि कर रहे थे। अैरावती मानो विना किसी पक्षपातके मिट्टीके तेलके कुओके पपोका शोरगुल भी अपने हृदय पर वहन करती है और 'अनिच्चा वत सखारा अुप्पादव्यय-धम्मिणो' का श्वात या चिरतन सदेश भी वहन करती है। अमेरिकाका सामर्थ्य भले वेजोड हो, लेकिन वह भूखड अभी वच्चा ही कहा जायगा न? अुसको जीवनका रहस्य अितनी जल्दी कैसे हाथ लगेगा? अुमे तो नदीके किनारे तीन तीन हजार फुट गहरे कुअे खोदकर मिट्टीका तेल निकालनेकी ही सूझेगी। ससारके सव सृष्ट पदार्थ पैदा होते है और मिट जाते है। सभी नश्वर और व्यर्थ है, असार हे। सार तो केवल अिससे वचकर निर्वाण पाप्त करनेमे है — अिम बातको कौनसा अमेरिकन मान सकता है? किन्तु अैरावती नदी नव-अुत्साहके कारण कभी ज्ञानसे अिनकार नही करेगी, और न ज्ञानके भारसे अुत्साहको खो वेठेगी। अुसे तो महासागरमे विलीन होना है और अिस विलीनताके आनदको सदा जाग्रत और वहता रखना है।

येननजावसे हम प्रोम तक गये और वहा अैरावतीसे विदा हुअे। यहासे आगे चलकर यह महानदी अनेक मुखोसे सागरको मिलती है। अैरावती सचमुच सुवर्णदेशकी माता है।

मार्च, १९२७

Our Outstanding Publications

६७

समुद्रके सहवासमें

[अफ्रीका जाते समय]

बम्बअीमे मार्मागोवा तक हिन्दुस्तानका पश्चिमी किनारा दिखाअी देता था। मा जब तक आखोसे ओझल नही होती तब तक बच्चेको जिस प्रकार यह विश्वास रहता है कि मै माके साथ ही हू, अुसी प्रकार हिन्दुस्तानका किनारा दिखता रहा तब तक अैसा नही लगा कि हमने हिन्दुस्तान छोड दिया है। मार्मागोवा छोडकर हमारे जहाज 'कपाला' ने स्वदेशके साथ समकोण बनाते हुअे सीधे विशाल समुद्रमें प्रवेश किया। देखते देखते हिन्दुस्तानका किनारा आखोसे ओझल हो गया और चारो ओर केवल पानी ही पानी दिखाअी देने लगा। रात हुअी और आकाशकी आबादी बढी। परिणामस्वरूप अकेलापन बहुत कम महसूस होने लगा। किन्तु जैसे जैसे हम भूमध्य-रेखाकी ओर बढने लगे, वैसे वैसे हवा और बादलोकी चचलता बढने लगी। मौसम अच्छा होनेसे समुद्र शात था। लहरे जरा जरा-सी हसकर बैठ जाती थी। कुछ लहरे कच्ची छीककी तरह अुठते-अुठते ही शात हो जाती थी। समुद्रका रग कभी आसमानी स्याहीकी तरह नीला हो जाता, तो कभी कालास्याह। और जहाज पानी काटता हुआ जब आगे बढता, तब दोनो ओर अुसका जो सफेद फेन फैलता, अुसके अनेक अबरी बेलबूटे बन जाते। नीले रगके साथ अुनकी शोभा अेक किस्मकी मालूम होती, काले रगके साथ दूसरे किस्मकी। शुरु शुरूमे समुद्रके चेहरे पर लहरोके अलावा चमडे पर पडी हुअी झुर्रियोकी-सी स्पष्ट छाप दिखाअी देती। कभी कभी ये झुर्रिया लुप्त हो जाती और पानी चमकते हुअे बर्तनोकी तरह सुन्दर दिखाअी देता। जहाज आहिस्ता आहिस्ता डोलता हुआ चल रहा था। जहाज जब कदमे छोटे होते है, तब अधिक डोलते है। बडे जहाज अपनी धीरगतिको आसानीसे नही छोडते। सामनेसे जब लहरे आती है, तब जहाज डोलनेके

अलावा घुडसवारकी तरह आगे-पीछे भी हिलना है, जिसे अंग्रेजीमे 'पिचिंग' कहते है। यह 'पिचिंग' लम्बे समय तक जारी रहे तो मनुष्यको अच्छा नही लगता, वह अनुकूल भी नहीं आता। किन्तु अुसे रोका कैसे जाय? झूलते-झूलते अुकता जाने पर झूला बद करके अुस परसे अुतर जा सकता है। किन्तु यहा तो अेक बार जहाजमे बैठे कि आठ दिन तक अुसका हिलना और डुलना स्वीकार किये सिवा कोअी चारा ही नही रहता। कभी कभी मनमे सदेह पैदा होता है कि दोनो गतियोके मिश्रणसे कही चक्कर तो न आने लगेगे? मनमे यह डर भी पैठ जाता है कि चक्करकी शका मनमे अुठी अिसीलिअे अब चक्कर भी आने लगेगे। खाते समय स्वादपूर्वक खाते हो, तो भी मनमे यह सदेह बना रहता है कि खाया हुआ पेटमे रहेगा या नही? अिस सदेहको मिटाना आसान बात नही है। खैर जो हो, हमने तो अपने आठो दिन खूब आनदमे बिताये। लोगोने हमे डरा दिया था कि अन्तके चार दिन बडे कठिन जायगे, किन्तु वैसा कुछ भी नही हुआ। हा, भूमध्य-रेखा जिस दिन पार की अुस दिन कुछ समय तक हवा खूब तेज चली। किन्तु अुससे हम गमगीन नही हुअे।

चारो ओर जब पानी ही पानी होता है तब कुछ समय तक मजा आता है। बादमे सारा वायुमडल गभीर बन जाता है। यह गभीरता जब कम हो जाती है तब आखोको अकुलाहट मालूम होती है। हमारी पूरी सृष्टि मानो अेक जहाजमे ही समा जाती है। विशाल समुद्रकी तुलनामे वह कितनी छोटी और तुच्छ लगती है! समुद्रकी दया पर जीनेवाली! अुसे छोडकर चारो ओर पानी ही पानी होता है। अितने सारे पानीका आखिर अुद्देश्य क्या है? जमीन पर होते है तब हम चाहे अुतना विशाल खड क्यो न देखे, मनमे कभी यह खयाल नही आता कि अितनी सारी जमीन किसलिअे बनाअी गयी है? विशाल और अनत आकाशको देखकर भी अैसा नही लगता कि अितने बडे आकाशका निर्माण किसलिअे हुआ है? किन्तु समुद्रका पानी देखकर यह विचार मनमे अवश्य अुठता है। जमीनकी अभ्यस्त आखें पानीका अखड विस्तार देखते देखते अकुला जाती है, और

Our Outstanding Publications

अतमे थककर क्षितिजमे छाये हुअे वादलोको देखकर विश्राम पाती है। मगर ये वादल तो अक्सर विना आकारके और अर्थहीन होते है। आकाश जब मेघाच्छन्न हो जाता हे तब अुसकी अुदासी असह्य हो अुठती हे। अीश्वरकी कृपा है कि अिस अकुलाहटका भी अतमे अत आता हे और खुली आखे भी अतर्मुख हो जाती है तथा मन गहरे विचारमें डूव जाता है।

रातके समय और खास कर वडे तडके तारे देखनेमे वडा आनद आता था। किन्तु 'पूरा आकाश तो नही ही देखने देगे' अैसा कहकर वादल वच्चोकी तरह आकाशके चेहरे पर अपने हाथ घुमाते रहते थे। अुनकी दयामे जिस समय आकाशका जितना हिस्सा दिखाओी देता, अुसीको पढ लेना हमारा काम रहता था। गुरुवारका प्रात काल होगा। जहाज सीधा चल रहा था। अुसके मुख्य स्तभके ठीक पीछे शर्मिष्ठा थी। स्तभकी आडमे भाद्रपदाकी चौकोन आकृति जैसे वैसे जम गयी थी। नीचे अुतरते हुअे ध्रुवकी वगलमे देवयानी निकल रही थी। पौने पाच वजे और त्रिकाण्ड श्रवण सिर पर खस्वस्तिककी जगह लटकने लगा। हस, अभिजित और पारिजात, तीनोका मिलकर अेक सुन्दर चदोवा वन गया था। वाओी ओर गुरु, चद्र और शुक्र अेक कतारमे आ गये थे। चद्रकी चादनी अितनी मद थी कि अुसे छाछकी अुपमा भी नही दी जा सकती थी। सामने देखा तो वाओी ओर वृश्चिक अपने अनुराधा, ज्येष्ठा और मूलके साथ लटक रहा था, जब कि दाओी ओर स्वाति अस्त हो रही थी। वेचारा ध्रुवमत्स्य लगभग क्षितिजमे मिल गया था।

दूसरे दिन चद्रका पक्षपात ध्रुवकी ओर हो गया। सप्तर्षिके दर्शन करके हम सोने जा रहे थे, अुस समय आकाशमे पुनर्वसुकी नावको हमारे साथ दक्षिणकी यात्रा पर रवाना हुअी देखकर वडी खुशी हुअी। पुनर्वसुकी नावमे वैठनेकी चित्राकी अभिलापा अभी तक अतृप्त ही रही हे। शायद मघा नक्षत्रकी अीर्ष्या अिसमे रुकावट डालती होगी। शनिवारके दिन चद्र और शुक्रकी युति सुन्दर मालूम हुअी। आखिर आखिरमे अिन दोनोने कुछ नीला-सा रग धारण कर

368
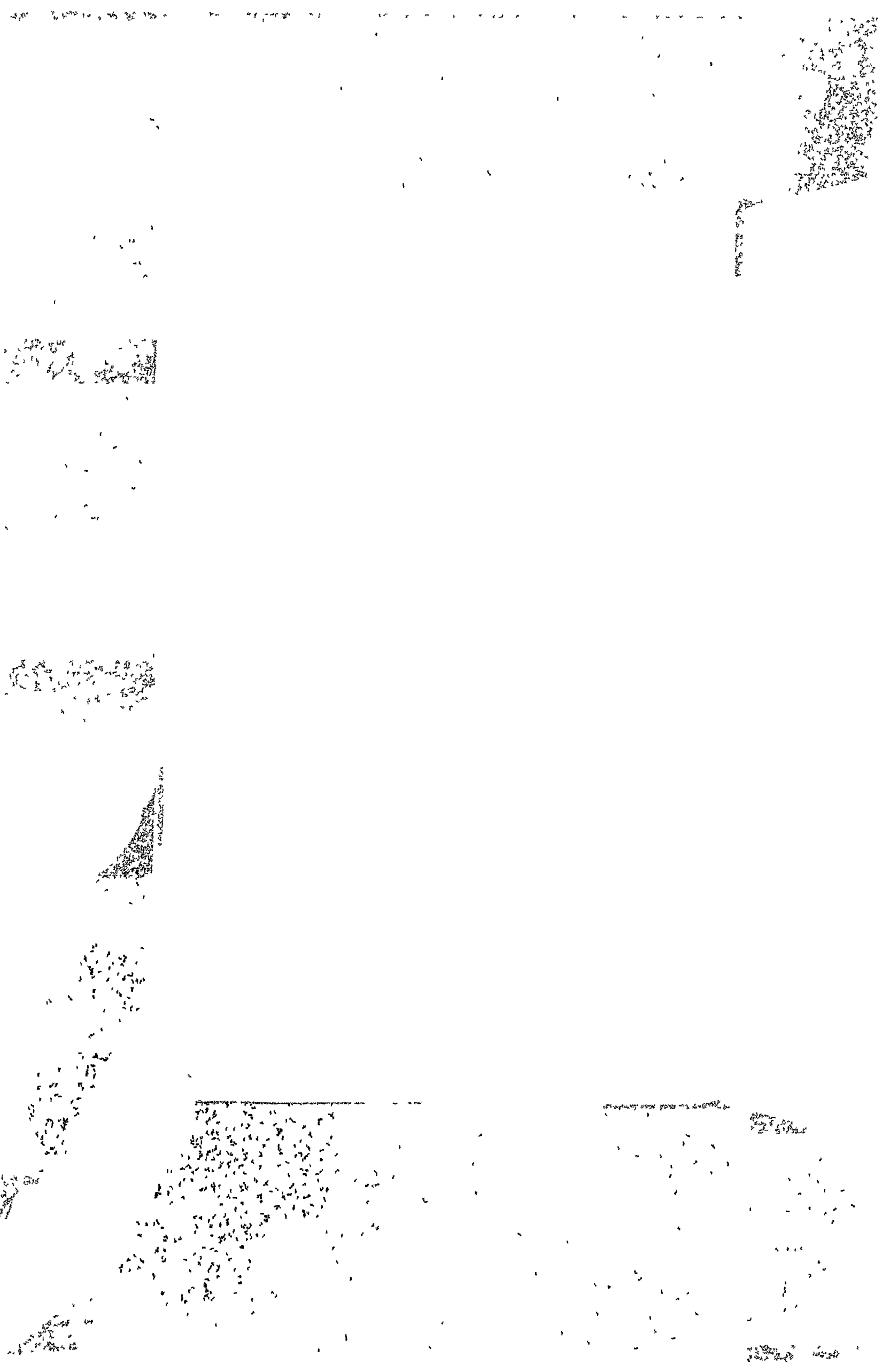
और अब दूसरे ओर तीसरे वर्गके बीचमें अेक 'अिन्टर' का वर्ग बनाया गया है। वह पशु और मनुष्यके बीचका वानर-वर्ग कहा जा सकता है। अुसमें काफी भीड होते हुअे भी अितनी गनीमत है कि यात्री मनुष्यकी तरह सो सकते हैं।

हम जहाज पर हैं, यह मालूम होते ही अनेक लोग हमसे बातें करनेके लिअे आने लगे। अुसमें भी हमारे सुबह-शाम प्रार्थना करनेके समाचार जब जहाजके खलासियो तक पहुंचे, तब अुन्होंने हमें नीचेके डेक पर शामकी प्रार्थना करनेके लिअे बुलाया। करीब सभी खलासी सूरत जिलेके थे। भजनके पूरे रसिया। वे अनेक भजन जानते और ताल-स्वरके साथ गा सकते थे। अुनकी भजन-मंडली जब जमती तब वे सारे दिनकी थकावट ओर जीवनकी सारी चिन्तायें भूल जाते थे। यह जानते हुअे भी कि नीले रंगकी पोशाक पहनकर सारे दिन यंत्रकी तरह काम करनेवाले लोग यही है, यह सच नही मालूम होता था। अुनके समक्ष मैंने अनेक प्रवचन किये। मैंने अुन्हें यह समझानेकी कोशिश की कि अुनका जीवन अेक तरहकी साधना ही है। मैंने यह भी बताया कि जमीन पर ही दीवारे खडी की जा सकती हैं, समुद्र पर नहीं। अत खलासियोके समाजमें जात-पातकी दीवारें नहीं होनी चाहिये। अुन्हें तो दरिया-दिल बनना चाहिये।

हम लोग अिस प्रकार भजनमें तल्लीन रहते थे, अुसी बीच जहाज परके कअी गोवानी लोगोंने अेक रातको स्त्री-पुरुषोंके अेक नाचका आयोजन किया। अिसके लिअे अुन्होंने जो चंदा अिकट्ठा किया, अुसमें हमको भी शरीक किया। अिसलिअे हम हकदार प्रेक्षक बने।

गोवाके अीसाअी लोगोंमें युरेशियन नहींके बराबर है। धर्मसे अीसाअी किन्तु रक्तसे शुद्ध हिन्दुस्तानी लोगोंने पश्चिमके जो संस्कार अपनाये हैं, अुनका असर देखने लायक होता है। कुछ युगल नृत्य-कलाका संयमपूर्वक आनंद ले रहे थे, कुछ अैसे गंभीर, अलिप्त और यांत्रिक ढंगसे नाच रहे थे, मानो कोअी सामाजिक रस्म अदा कर रहे हो, जब कि कुछ युगल नृत्यके नियम मंजूर करें अुतनी पूरी छूट लेकर नृत्यमें तथा अेक-दूसरेमें लीन हो रहे थे। अेक दो युगलोंकी

अुम्र और अुचाअी अितनी असमान थी कि मनमें यही विचार आता कि अितनी बडी विडंबनाका भोग अुन्हें कैसे बनना पडा। सकरी जगहमें अितने सारे लोगोंका नृत्य जैसे तैसे पूरा हुआ। अंत तक जागनेकी अिच्छा न होनेसे ग्यारह बजनेसे पहले ही हम लोग सो गये।

हमारा जहाज पश्चिमकी ओर यानी पृथ्वीकी दैनंदिन गतिसे अुलटी दिशामें चल रहा था। अतः लगभग हररोज हमें घडीके कांटे घुमाने पडते थे। जहाजकी ओरसे हमें सूचना मिलती थी कि 'मध्यरात्रिमें आधा घंटा कम करो' या 'अेक घंटा कम करो।' सृष्टिके नियमको समझकर हम अितना नुकसान अुठानेको तैयार हो जाते थे। अफ्रीका पहुंचने तक हमने कुल मिलाकर ढाअी घंटे खोये थे। (बेल्जियन कांगो जाने पर अेक घंटा ओर खोना पडा था।)

भूगोलके तथ्य न जाननेवाले पाठकोंको अितना कह देना आवश्यक है कि रेखांशकी हर पंद्रह डिग्री पर अेक घंटा बढाना या खोना पडता है। और प्रशांत महासागरमें जब जहाज अेशिया और अमेरिकाके बीच १८० रेखांश पर होते हैं, तब अुन्हें आने या जाते अेक पूरा दिन बढाना या घटाना पडता है। अिस रेखांशको अंग्रेजीमें 'डेट लाअिन' कहते हैं। हमारे यहां जिस तरह अधिक मास आता है, अुसी तरह 'डेट लाअिन' पर जाते हुअे अेक अधिक दिन आता है, जब कि आते हुअे अेक दिनका क्षय होता है।

आठ दिनसे न तो कोअी अखबार देखनेको मिला, न डाक, न मुलाकाती, न कोअी शहर या गांव — यहां तक कि मौगद खानेके लिअे कोअी पहाड या टापू भी देखनेको नहीं मिला! अैसी स्थितिमें जब घंटेके घंटे ओर दिनके दिन चुपचाप चले आते हैं, तब वार और तारीखका भी ठिकाना नहीं रहता। हमारे जहाजकी अूंचाअीका हिसाब करते हुअे जब मैंने अिस बातकी जांच की कि हमारे अिर्दगिर्द क्षितिज तक कितना समुद्र फैला हुआ है, तब जहाजवालोंसे मालूम हुआ कि हमारी आंखें २५० वर्गमीलका समुद्र अेक चक्करमें पी सकती थीं।

Our Outstanding Publications

कैसी महाशांति थी! वह भी डोलती, झूलती, वहती किन्तु स्थिर शांति आकाशके आशीर्वादके नीचे अुमड रही थी। Swelling and rolling peace — abiding and abounding पता नही किस तरह, अिस शांतिके सेवनके साथ मुझमे मानव-प्रेम अुमड रहा था और सारी मनुष्य-जातिसे स्वस्ति, स्वस्ति, स्वस्ति कह रहा था। मानव-जातिका अितिहास आज भी कुल मिलाकर सुन्दर नही वन पाया है। अिसी समुद्रने कितने ही अन्याय और अत्याचार देखे होंगे। कितने ही गुलामोकी आहे यहाकी हवामे मिली होगी। और कितनी ही प्रार्थनाअें सूर्य, चद्र और तारो तक पहुच कर भी व्यर्थ गअी होंगी। अितना होते हुअे भी यदि मनुष्य-रक्तके कारण समुद्रमें लाली नही आअी, दु खियोंकी आहोसे यहाकी हवा कलुषित नही हुअी और लोगोकी निराशामे आकाशकी ज्योतिया मद नही पडी, तो मनुष्य-जातिका थोडासा अितिहास पढकर मेरा मानव-प्रेम किसलिअे सकुचित या कम हो? यदि मै अपने असख्य दोषोको भूलकर अपने आप पर प्रेम कर सकता हू, और अपने विषयमे अनेक तरहकी आशायें बाध सकता हू, तो मेरे ही अनत प्रतिबिंबरूप मानव-जातिको मेरा प्रेम कम क्यों मिले?

अैसी भावनाके साथ अफ्रीकाकी भूमि पर विषम रूपसे चलने-वाले मनुष्य-जातिके त्रिखड सहकारको देखनेके लिअे मैं मोम्बासा पहुचा।

अिन आठ दिनोमे खूब पढने-लिखनेकी जो अुम्मीद मैंने रखी थी, वह पूरी नही हुअी। किन्तु ये आठ दिन जीवनके दर्शन, चिंतन और मननसे भरपूर थे।

नववर, १९५०

B, निर्दलीय 1

तीन प्रमुख लगातार दूसरी

पिछले चुनाव के अर्जीने
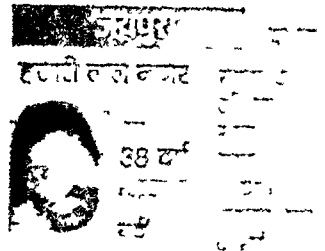
एक जैसे नाम

६८

रेखोल्लंघन

भूमध्य-रेखा (equator) पृथ्वीकी कटि-मेखला है। सीलोनके दक्षिणमें पहुंचा था तब यह सोचकर मन कितना अस्वस्थ हुआ था कि यहां तक आये फिर भी भूमध्य-रेखा तक नहीं पहुंच सके! सीलोनके दक्षिणमें गाल, देवेन्द्र और मातारा तक गये तब भी छठी डिग्रीसे ज्यादा दक्षिणमें नहीं जा सके। कन्याकुमारी गया तब मुश्किलसे आठवीं डिग्री तक ही पहुंचा था। चि० सतीश सिंगापुर था तब वहां जानेकी अेक बार अिच्छा हुअी थी — अुसे मिलनेके लिअे नहीं, परंतु भूमध्य-रेखा लांघ सकूंगा अिस लोभसे। फिर जब नक्शेमें देखा कि सिंगापुर भी भूमध्य-रेखाके अिस ओर ही है तब वह अुत्साह नहीं रहा।

लेकिन भूमध्य-रेखामें अैसा क्या है? जमीन पर या पानी पर सफेद, काली या पीली लकीर नहीं खींची गअी है। फिर भी भूमध्य-रेखाका प्रदेश काव्यमय है अिसमें कोअी शक नहीं।

अुस प्रदेशका स्मरण करता हूं और मुझे शान्तादुर्गा और अर्ध-नारी नटेश्वरका स्मरण होता है। शान्तादुर्गा अेक ओर शुभंकरी शान्ता है, तो दूसरी ओर भयंकरी दुर्गा है। महादेवका भी अैसा ही है। अुनका दक्षिण मुख सौम्य शिव है और वाम मुख अुग्र रुद्र है। अर्ध-नारी नटेश्वर अेक ओर स्त्रीरूप है, तो दूसरी ओर पुरुषरूप है। हमारे समन्वयवादी पूर्वजोंने हरि-हरेश्वरकी कल्पना अिसी तरह की है। शिव और विष्णु दोनोंके मिलनेसे हरि-हरेश्वर बने हैं।

भूमध्य-रेखा पर अिसी तरह परस्पर विरोधी ऋतुओंका मिलन है। अुत्तर गोलार्धमें जब गर्मीका मौसम होता है तब दक्षिण गोलार्धमें जाड़ेका। अेकमें जब वसंत होता है तब दूसरेमें शरद्। भूमध्य-रेखा

अेक अैसा प्रदेश है जहा गर्मी और जाडेके मौसम हस्तादोलन कर सकते है। और प्रौढा शरद् भी बाल वसतको खेला सकती है।

अैसी जगह अगर अखड शान्ति ही रहे तो वहाका जीवन अलोना हो जाय! खिलाडी कुदरतसे यह कैसे सहा जाय? गगा-यमुनाके धवल-श्यामल पानीका सगम तो हमेशा नाचा करे, और अुत्तर-दक्षिणका मिलन नृत्य न करे, यह कैसे चले?

आज भूमध्य-रेखा पर आये है। यहा पवन अखड रूपसे नाचता है। चचलता कही स्थिर हुअी हो तो यही। यहाकी कुदरत अेक हाथसे गर्मीकी पीठ पर थपकिया देती है, तो दूसरा हाथ जाडेकी पीठ पर फेरती है।

भूमध्य-रेखा यानी तराजूमे तौला हुआ पक्षपात-रहित न्याय। अुत्तर-ध्रुव दीख पडे और दक्षिण-ध्रुव नही, अैसा यहा नही चल सकता। यहाके आकाशमें मृग नक्षत्रके पेटमे पहुचा हुआ बाण अिधर या अुधर झुक या ढल नही सकता। सीधा पूर्वमें अुग कर खस्वस्तिक (Zenith) को छूकर वह पश्चिममे डूबेगा। यही अेक धन्य प्रदेश है जहा खस्वस्तिक विषुववृत्त पर विराजमान हो सकता है। जैसे भूमि पर भूमध्य-रेखा होती है, वैसे आकाशमे विषुववृत्त (celestial equator) होता है। अितना लिखते है वहा हमारा रगीन अभिनदन करनेके लिअे अेक अिन्द्र-धनुष आगे दाहिनी ओर निकल आया है। अब तृप्ति हुअी। लेकिन समस्त मानव तृप्तियोकी तरह वह अगर अल्पजीवी न हो तो पेट फूट जाय। और पेट नही तो आखे फूट जायें। यह कैसे पुसा सकता है? अब दक्षिण गोलार्धमें क्या क्या देखने-जाननेको मिलेगा, क्या क्या अनुभव होगा, अैसी अुत्सुकता जाग्रत होने लगी है। भूमध्य-रेखा पहली बार लाघ सके अुसकी धन्यता सदा साथ रहेगी।

मअी, १९५०

६९
नीलोत्री

(१)

अफ्रीकाकी यात्रा करनेमे अेक अुद्देश्य था अुत्तर-पूर्व अफ्रीकाकी माताके समान अुत्तर-वाहिनी नील नदीके अुद्‌गम-स्थान नीलोत्रीके दर्शनका। गगोत्री और जमनोत्रीकी यात्रा करनेके बाद अभी अभी अैसा लगने लगा था कि नीलोत्रीकी यात्रा करनी ही चाहिये। वह दिन अब निकट आ गया था। जुलाअीकी पहली तारीखको सुबह ही हमने कपाला छोडकर जिजाके लिअे प्रस्थान किया। अपने जरूरी कामके कारण श्री अप्पासाहब आज नैरोबी वापस चले गये और हम मोटर लेकर अपने रास्ते चल पडे।

कपालासे जिजा तकका रास्ता सुन्दर है। अनेक छोटी-छोटी और चौडी पहाडिया चढती-अुतरती हमारी मोटर हमारे और नीलोत्रीके बीचका बावन मीलका फासला काटती गअी और हमारी अुत्कठा बढाती गअी। यह कितने बडे सौभाग्यकी बात थी कि जिजा तक पहुचनेके पहले ही हमारा सकल्प पूरा हुआ और हमे नीलोत्रीके दर्शन हो गये! दाअी ओर विक्टोरिया या अमरसरका सरोवर दूर तक फैला हुआ है। अुसमे से सहज-लीलासे छलाग मारकर नील नदी जन्म लेती है! हम नदीके पुल पर पहुचे। मोटरसे अुतरे और दाअी ओर मुडकर रिपन फॉल्सके नामसे मशहूर अेक छोटे-से प्रपातमें हमने नील नदीके दर्शन किये।

प्रपातके तुषारोसे पैर ढक गये है। सिर पर मुकुट चमक रहा है। और पीछे अेक हरा-भरा वृक्ष मुकुटको अधिक सुशोभित कर रहा है। देवीके दोनो हाथोमें दानकी पूलिया है और मुह पर प्रसन्न वात्सल्य खिल रहा है — अैसी मूर्ति कल्पनाकी नजरमे आअी। मूर्ति नीले रगकी नही थी, बल्कि श्यामवर्णकी और जरा झुकती हुअी गोरी ही थी। सारे बदन पर पानीकी धारायें बह रही थी। अिससे देवीके मुख परका हास्य अधिक सुन्दर मालूम हो रहा था।

Our Outstanding Publications

जी भरकर दर्शन करनेके बाद हमने बाओी ओर देखा। दाओी ओरका पानी हमारी दिशामें दौडा चला आ रहा था। बाओी ओरका पानी हमसे दूर दूर दौडा जा रहा था। दोनोका असर बिलकुल भिन्न था। हमें मालूम था कि दाओी ओर रिपन प्रपात है, और बाओी ओर जरा दूर ओवेन प्रपात है। हमारे देशमें अुसे कोओी प्रपात हरगिज नही कहेगा। पानीकी सतहमें कुछ फुटका अतर पैदा हो जानेसे ही क्या प्रपात बन जाता है? प्रपात तो तभी कहा जा सकता है जब पानी धब-धब गिरता हो, जितना गिरे अुतना ही फिर अुछलता हो और फेन तथा तुषारके बादल अिर्दगिर्द नाचते हो।

यात्राके अतमे लोग तुरन्त जाकर मदिरोमें जो देवताका दर्शन करते है, अुमे यात्रियोकी परिभाषामे 'धूल-भेंट' कहते हैं। यात्रा पैदल की हो, सारे शरीर पर धूल छाओी हो और अुत्कठाके कारण अुसी स्थितिमें दौडकर अिष्ट देवताके चरणोमें गिर रहे हो या मिल रहे हो, तो अुसे धूल-भेंट कहते हैं। हम तो मोटरकी रफ्तारसे आये थे। सुबह थोडा-सा पानी गिरा था, अिससे रास्ते पर भी धूल नही थी। अत अिस प्रथम दर्शनको 'भीनी-भेंट' ही कह सकते थे। यदि 'भाव-भीनी' कहे तो वह और अधिक यथार्थ वर्णन होगा। मति गीली, जमीन गीली, आखे गीली और अनेक मिश्र-भावोसे ओतप्रोत हृदय भी गीला। 'अद्य मे सफल जन्म, अद्य मे सफला क्रिया' यह पक्ति जिसने प्रथम गाओी होगी, वह मेरे जैसे असख्य यात्रियोका प्रतिनिधि ही होगा।

नीलमाताके अिस प्रथम दर्शनको हृदयमे सग्रह करके हमने जिजामें प्रवेश किया। गुजरात विद्यापीठके किसी समयके विद्यार्थी अेडवोकेट श्री चदुभाओी पटेलके यहा हमारा डेरा था। पुराने विद्यार्थियोके यहा आतिथ्य अनुभव करना जितना आनद-दायक होता है, अुतना ही कडा और कठिन भी होता है। घरकी अच्छीसे अच्छी सुविधाये हमें देकर खुद अडचन भोगनेमें वे आनद मानते होगे, किन्तु हमें सकोच अनुभव हुओे बिना कैसे रह सकता है?
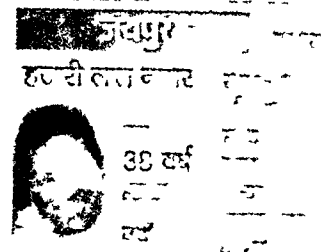
अव हम नीलोत्रीके विधिवत् दर्शनके लिअे निकल पडे। हम वहा पहुचे जहा अमरसरका जल शिलाओकी किनार परसे नीचे अुतरता है और नील नदीको जन्म देता है। जल्दी जल्दी पानीके पास जाकर पहले पैर ठडे किये। आचमन करके हृदय ठडा किया और क्षणभरके लिअे अुस स्थानका ध्यान किया। मेरी आदतके अनुसार अीशोपनिषद्, माडुक्य अुपनिषद् या अघमर्षण सूक्त मुहसे निकलना चाहिये था। किन्तु अेकाअेक यह श्लोक निकला

ध्येय सदा सवितृ-मडल-मध्यवर्ती
नारायण सरसिजासन-मन्निविष्ट ।
केयूरवान् मकर-कुडलवान् किरीटी
हारी हिरण्मय-वपुर् धृत-शख-चक्र ।।

नील नदीके तट पर भिन्न भिन्न समय पर और भिन्न भिन्न स्थान पर तीन वार नीलाम्बाका ध्यान किया और हर वार मुहसे अचूक रूपमे यही श्लोक निकला। अव मुझे मिश्र देशकी सस्कृतिके पुराणोमे यह खोज करनी है कि क्या नील नदीका भगवान् सूर्य-नारायणके साथ कोअी खास मवध है?

मै यदि सस्कृतका कवि होता तो अिस नदीके पानीमे रहने-वाली मछलियो, पानी पर अुडनेवाले वाचाल पक्षियो और अुसके किनारे लोटनेवाले किवोका (हिपोपोटेमस) की धन्यताके स्तोत्र गाता। नील नदीके किनारे जो वॉटर वर्क्स है, अुसकी देखभाल करनेके लिअे नियुक्त अेक गुजराती सज्जनके भाग्यमे अुन्हीकी भापामे अीर्ष्या प्रकट करके मैंने सतोप माना "आप कितने धन्य है कि आपको अहोरात्र नीलोत्रीके दर्शन होते रहते है, और यहासे न हटनेके लिअे आपको तनख्वाह दी जाती है!" यह देखने या पूछनेके लिअे मै वहा रुका नही कि अुनको अिस तरहकी धन्यता महसूस होती है या नही।

मेरी दृष्टिसे नदिया दो प्रकारकी होती है। पहाडसे निकलनेवाली और सरोवरमे निकलनेवाली। पहलीको मै शैलजा या पार्वती कहूगा, और दूसरीको सरोजा। (आशा है ससार भरके कमल मुझे क्षमा

करेंगे।) शैलजा नदियोंका अुद्‌गम बहुत छोटा, पतला और लगभग तुच्छ जैसा होता है। अत अुनके प्रति आदर अुत्पन्न करनेके लिअे बडे-बडे माहात्म्य लिखने पडते हैं। गंगोत्रीके पास गंगाका प्रवाह कभी-कभी अितना छोटा हो जाता है कि सामान्य मनुष्य भी अुसके अेक किनारे अेक पैर और दूसरे किनारे दूसरा पैर रख कर खडा हो सकता है। सरोजा नदियोंकी बात अलग है। विशाल और स्वच्छ वारि-राशिमें से जीमें आये अुतना पानी खींचकर वे बहने लगती हैं। और अुनके चलने-बोलनेमें जन्मसे ही धनी श्रीमन्त होनेका आत्मभान होता है।

नीलोत्रीकी यात्रा करनेका अेक और भी अदम्य आकर्षण था। महात्मा गांधीके पार्थिव शरीरको दिल्लीके राजघाट पर अग्निसात् करनेके पश्चात् अुनकी अस्थि और चिता-भस्मका विसर्जन हिन्दुस्तान तथा संसारके अनेकानेक पुण्य-स्थानोंमें किया गया था। अुनमें से अेक स्थान नीलोत्री है।

हम जिंजा नगरीके सार्वजनिक मेहमान थे। अत यहांके लोगोंने हमारी अुपस्थितिसे 'लाभ अुठाने' की ठानी और जहां चिता-भस्मका विसर्जन किया गया था, अुसके पास अेक कीर्तिस्तंभ खडा करनेकी बात तय हो चुकनेसे अुसका शिलान्यास मेरे हाथों करानेका प्रबंध किया।

२ जुलाअी, १९५० को अधिक आषाढ कृष्ण तृतीयाके दिन सुबह सैकडों लोगोंकी अुपस्थितिमें मैंने यह विधि पूरी की। अिस अुत्सवके लिअे गांधीजीका अेक बडा चित्र सामने रखा गया था। अुनकी नजर मुझ पर पडते ही मैं बेचैन हो अुठा। वैदिक विधि पूरी होनेके पश्चात् मैंने गांधीजीके जीवनके बारेमें थोडासा प्रवचन किया और बताया कि अफ्रीका ही अुनकी तपोभूमि है। फोटो वगैरा खींचनेकी आधुनिक विधिसे मुक्त होते ही किनारेके अेक पत्थर पर बैठकर नील-माताके सुभग जल-प्रवाह पर मैंने टकटकी लगाअी और अंतर्मुख होकर ध्यान किया। अुस समय मनमें विचार आया कि युरोप, अफ्रीका और अेशिया, अिन तीनों महाखंडोंके बल्कि अमेरिकाके भी महान और सामान्य आबालवृद्ध स्त्री-पुरुष यहां आयेंगे, सर्वोदयके ऋषि महात्मा

माबीके जीवन, जीवन-कार्य और अतिम बलिदानका यहा चिन्तन करेंगे और मनुष्य मनुष्यके बीचका भेदभाव भूलकर विश्व-कुटुंबकी स्थापना करनेका व्रत लेंगे। भविष्यके अिन सारे प्रवासियोको मैंने वहासे अपने प्रणाम भेजे।

(२)

नील नदीकी दो शाखाये है। श्वेत और नील। जिजाके समीप जिसका अुद्गम होता है वह श्वेत शाखा है। नीलशाखा भी सरोजा ही है। अीथियोपिया (जिसे हम हब्शियाना (अेबिसीनिया) कहते हैं) देशमें ताना 'नामक अेक सरोवर है। अिस सरोवरमे से नील शाखा निकलती है। ये शाखाये लाखो बरससे बहती रही हैं और अपने किनारे रहनेवाले पशु-पक्षी और मनुष्योको जलदान देती रही है। मगर युरोपियन लोगोको जिस चीजका पता न हो वह अज्ञात ही कही जायगी। अेक दृष्टिसे अुनका कहना सही भी है। दूसरे लोग नदीके किनारे रहते हुअे भी यदि अिसकी खोज न करे कि यह नदी असलमें आती कहासे है और आगे कहा तक जाती है, तो यह नही कहा जा सकता कि अुन लोगोको सारी नदीका ज्ञान है। मसलन्, तिब्बतके लोग मानसरोवरसे निकलनेवाली सानपो (विशाल प्रवाह) नदीको जानते है। वे लोग अधिकसे अधिक अितना ही जानते हैं कि यह नदी पूर्वकी ओर बहती बहती जगलमे लुप्त हो जाती है। अिधरसे हमारे लोग ब्रह्मपुत्रका अुद्गम खोजते खोजते अुसी जगलके अिस ओरके सिरे तक पहुचे। आगेका वे कुछ नही जानते। जब कअी अंग्रेजोने प्रतिकूल परिस्थिति होते हुअे भी अिन जगलोको पार किया, तभी वे यह स्थापित कर सके कि तिब्बतकी सानपो नदी ही अिस ओर आअी है और अन्य कअी छोटी-बडी नदियोका पानी लेकर ब्रह्मपुत्र बनी है।

नील नदीका अुद्गम खोजनेवालोमे मि० स्पीक अतमें सफल हुअे और अुन्होने यह सिद्ध किया कि जिजाके पास सरोवरसे जो नदी निकलती है वही मिश्र-माता नील है।

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU

3, निर्दलीय

तीन प्रमुख दावेदार

पिछले चुनाव के

एक और नाम

ये स्पीक साहब हिन्दुस्तान सरकारकी नौकरीमें थे। अुन्हे पता चला कि प्राचीन हिन्दू लोग मिश्र यानी आजके अिजिप्तके बारेमें काफी जानकारी रखते थे। अुन्होने जाच करके यह मालूम किया कि सस्कृत पुराणोमें कहा गया है कि नील नदीका अुद्गम मीठे पानीके अमरसरसे हुआ है, अिसी प्रदेशमें चद्रगिरि है, ठेठ दक्षिणमें मेरु पर्वत स्थित है, आदि। पुराणोमे से कुछ सस्कृत श्लोकोका अुन्होने अनुवाद करवा लिया और अुसके सहारे नीलके अुद्गमकी खोज करनेका निश्चय किया।

वे पहले झाझीवार गये और वहासे सब तैयारी करके केनिया प्रदेश पार करके युगान्डा गये। वहा अुन्हे अमरसरवाला 'अच्छोद' सरोवर मिला। (अच्छ – सुअच्छ = स्वच्छ। अुद – अुदक = पानी। मीठे पानीके सरोवरको अच्छोद कह सकते है।) और वहासे निकलनेवाली नील नदी भी मिली। अुन्होने यह सिद्ध किया कि सुदान और अिजिप्तमें बहनेवाली नदी यही है। अिस बातको अभी पूरे सौ साल भी नही हुअे हैं।

अफ्रीका खड सचमुच वहा रहनेवाली अनेक अफ्रीकन जातियोका देश है। अिस प्रदेशके बारेमे युरोपियन लोगोको पूरी जानकारी नही थी, यह कोअी वहाके लोगोका दोष नही है। युरोपके और खास करके अरबस्तानके लोग अफ्रीकाके किनारे जाकर वहाके लोगोको पकड लेते थे और अपने अपने देशमें ले जाकर अुन्हें गुलामके तौर पर बेचते थे। पकडे हुअे लोगोमे स्त्रिया भी होती थीं और बच्चे भी होते थे। किन्तु लुटेरे अुनका मनुष्यके नाते खयाल क्यो करने लगे?

कुछ मिशनरी लोगोको सूझा कि अैसे जगली लोगोकी आत्माके अुद्धारके लिअे अुन्हे अीसाअी बनाना चाहिये। जिस गहन प्रदेशमें लोभी व्यापारी भी जानेकी हिम्मत नही कर पाते, वहा ये अुत्साही धर्म-प्रचारक पहुच जाते और वहाकी भाषा सीखकर लोगोको अीसा मसीहका 'शुभ-सदेश' सुनाते।

आगे चलकर युरोपके राजाओने अफ्रीका खडको आपसमें बाट लिया। अिसमें नियम यह रखा कि जिस देशके मिशनरियोने जितना

प्रदेश ढूढ निकाला (!) हो अुतना प्रदेश अुस देशके राजाकी मिलकियत माना जाय। अिसमे अेक वार अैसा हुआ कि स्टेन्ली नामक किसी मिशनरीने अिग्लैडके राजासे कागो नदीके विस्तारका प्रदेश 'ढूढने' के लिअे मदद मागी। अिग्लैण्डके गजाने यानी पार्लियामेन्टने यह मदद नही दी। अत वह वेल्जियमके राजाके पास गया। राजा लिओपोल्ड लोभी और अुत्साही था। अुसने अुसे सव तरहकी मदद दी। परिणाम-स्वरूप जव अफ्रीका खडका वटवारा हुआ तव कागो नदीके विस्तारका प्रदेश वेल्जियमके हिस्सेमे गया! वेल्जियम कागोका यह प्रदेश करीव हिन्दुस्तान जितना वडा है। वहासे रवड प्राप्त करनेके लिअे गोरे लोगोने वहाके वाशिदो पर जो जुल्म गुजारे , अुनका वर्णन पटकर रोगटे खडे हो जाते है, अैसा कहना अल्पोक्ति ही होगी। भावनाशील मनुष्य यदि ये वर्णन पढे तो अुसका खून जम जायगा। फिर भी गोरे लोगोने यहाके वाशिदोको धीरे धीरे 'सुधारा' अवश्य है। अव ये लोग कपडे पहनते है, वालोमे तरह तरहकी मागें निकालते है और शराव भी पीते है। अिस प्रकार अुनमें से वहुतसे अीसाअी वन गये है!

हमारे यहाके लोगोने युगान्डामे जाकर कपासकी खेती वढाअी। राज्यकर्ताओकी मददसे वहा वडी वडी 'अेस्टेटे' वनाअी और करोडो रुपये कमाये। हमने भी वहाके लोगोको सुधारा है, दरजी-काम, वढअीगीरी, राजकाम, रसोअी-काम आदि धधोमे हमने अुनकी मदद ली, अिसलिअे वे लोग धीरे धीरे अिसमे प्रवीण हो गये। हिन्दुस्तानके कपडो और विलायतसे आनेवाली शराव आदि अनेक प्रकारकी चीजे वेचनेकी दुकाने खोली और अुन लोगोको जीवनका आनद भोगना सिखाया!

गोरे और गेहुअे रगके लोगोके अिस पुरुषार्थकी साक्षी नील नदी यहा चुपचाप वहती रहती हे और अपना परोपकार अपने दोनो तटो पर दूर दूर तक फैलाती रहती है।

हमारे देशमें गगा नदीका जो महत्त्व है, वही महत्त्व अधिक अुत्कट रूपमे अुत्तर-पूर्व अफ्रीकामे नील नदीका है। अिजिप्तकी मिश्र या मिसर सस्कृतिका स्थान दुनियाकी सवसे महत्त्वपूर्ण पाच-छ प्राचीन

सस्कृतियोमे हे। अुसका असर युरोपके अितिहास पर ही नही, बल्कि अुसके धर्म पर भी पडा हे। हमारे यहा जैसी चार वर्णोवाली सस्कृति विकसित हुअी, वैसी ही सस्कृति प्राचीन मिश्र देशमे भी देखनेको मिलती है और अुसका प्रतिबिंब यूनानी दार्शनिक अफलातूनकी 'समाज-रचना' पर पडा हुआ मिलता है। चार वर्णोवाली सस्कृति अुस कालके लिअे चाहे जितनी अनुकूल और भव्य मानी गअी हो, फिर भी तूफानी युरोप अुसे हजम नही कर सका। युरोपमे जो अीसाअी धर्म फैला है, अुसका पालन-पोषण अिजिप्तमे कुछ कम नही हुआ हे। किन्तु वहा विकसित हुअे वैराग्य, तपस्या तथा देह-दमनको काफी आजमानेके बाद युरोपने अुसे छोड दिया। फिर भी युरोपकी सस्कृतिकी जडे ढूटनी हो तो अिजिप्तके अितिहासमे प्रवेश करना ही पडता है और अिस अितिहासका निर्माण कुछ हद तक नील नदीका अृणी हे।

जिस तरह नदीका पानी आगे ही आगे बहता है, पीछे नही जा सकता, अुसी तरह अिजिप्तकी सस्कृति नील नदीके अुद्गमकी ओर युगान्डा प्रदेशमे नही पहुच सकी, यह बात हमारा ध्यान आकर्षित किये बिना नही रहती। अिजिप्तके लोग यदि अमरसरके आसपास जाकर बसे होते, तो अफ्रीकाका ही नही बल्कि दुनियाका अितिहास भिन्न प्रकारसे लिखा जाता।

हमारे देशमे नदियोके जितने अुद्गम हम देखते है, वे सब जगलोमे या दुर्गम प्रदेशोमे होते हैं। और ये अुद्गम छोटे भी होते हैं। नील नदीका अुद्गम विशाल है, अिसकी तो कोअी बात नही। किन्तु अुद्गमके काव्यमे कमी अिस बातमे आ गअी है कि वहा अेक शहर बसा हुआ हे। हमारे यहा कृष्णा और अुसकी चार सहेलिया सह्याद्रिके जिस प्रदेशसे निकलती है, वह प्रदेश दुर्गम और पवित्र था। सतोने वहा शिवजी महाबलेश्वरकी स्थापना की थी। किन्तु अग्रेजोने अुसको अपना ग्रीष्म-नगर बनाकर अुस तपोभूमिको विहार-भूमि या विलास-भूमि बना डाला, अिस बातका स्मरण मुझे जिआमे हुअे बिना नही रहा।

और अब तो वहा ओवेन फॉल्सके सामने अेक बडा बाध बाधकर बिजली पैदा की जायगी। ससारका यह अेक अद्भुत बाध होगा। अुसकी शक्ति युगाडामे ही नही, सुदान और अिजिप्त तक पहुचनेवाली है। अिससे अनाज बढेगा। अकाल दूर होगा। असख्य अश्वत्थामाओ (हॉर्स-पावर) जितनी शक्ति मनुष्यकी सेवाके लिअे मिलेगी। अत अैसी प्रवृत्तिको तो आशीर्वाद ही देना चाहिये। फिर भी हृदय कहता है कि मनुष्य-जाति अिसके बदले कुछ अैसी चीज खोनेवाली है, जिसकी पूर्ति बडेसे बडे वैभवसे भी नही हो सकेगी।

नील नदी माता थी, देवी थी। अब वह वर्तमानकालकी लोकधात्री दाअी बननेवाली है!

नवबर, १९५०

७०

वर्षा-गान

कालिदासका अेक श्लोक मुझे बहुत ही प्रिय है। अुर्वशीके अतर्धान होने पर वियोग-विह्वल राजा पुरूरवा वर्षा-ऋतुके प्रारभमे आकाशकी ओर देखता है। अुसको भ्राति हो जाती है कि अेक राक्षस अुर्वशीका अपहरण कर रहा है। कविने अिस भ्रमका वर्णन नही किया, किन्तु वह भ्रम महज भ्रम ही है, अिस बातको पहचाननेके बाद, अुस भ्रमकी जडमे असली स्थिति कौनसी थी, अुसका वर्णन किया है। पुरुरवा कहता है — "आकाशमे जो भीमकाय काला-कलूटा दिखाअी देता है, वह कोअी अुन्मत्त राक्षस नही किन्तु वर्षाके पानीसे लबालब भरा हुआ अेक बादल ही है। और यह जो सामने दिखाअी देता है वह अुस राक्षसका धनुष नही, प्रकृतिका अिन्द्र-धनुष ही है। यह जो बौछार है, वह बाणोकी वर्षा नही, अपितु जलकी धाराअें हैं और बीचमें यह जो अपने तेजसे चमकती हुअी नजर आती है, वह

Our Outstanding Publications

मेरी प्रिया अुर्वशी नही, किन्तु कसौटीके पत्थर पर सोनेकी लकीरके समान विद्युल्लता है।"

कल्पनाकी अुडानके साथ आकाशमें अुडना तो कवियोंका स्वभाव ही है। किन्तु आकाशमे स्वच्छन्द विहार करनेके बाद पछी जब नीचे अपने घोसलेमे आकर अितमीनानके साथ बैठता है, तब अुसकी अुस अनुभूतिकी मधुरिमा कुछ और ही होती है। दुनियाभरके अनेकानेक प्रदेश घूमकर स्वदेश वापस लौटनेके बाद मनको जो अनेक प्रकारका सतोष मिलता है, स्थैर्यका जो लाभ होता है और निश्चिन्तताका जो आनन्द मिलता है, वह अेक चिर-प्रवासी ही बता सकता है। मुझे अिस बातका भी सतोष है कि कल्पनाकी अुडानके बाद जल-धाराओंके समान नीचे अुतरनेका सतोष व्यक्त करनेके लिअे कालिदासने वर्षा-ऋतुको ही पसन्द किया।

* * *

आजकल जैसे यात्राके साधन जब नही थे और प्रकृतिको परास्त करके अुस पर विजय पानेका आनन्द भी मनुष्य नही मनाते थे, तब लोग जाडेके आखिरमे यात्राको निकल पडते थे और देश-देशान्तरकी सस्कृतियोंका निरीक्षण करके और सभी प्रकारके पुरुषार्थ साधकर वर्षा-ऋतुके पहले ही घर लौट आते थे।

अुस युगमे सस्कृति-समन्वयका 'मिशन' (जीवन-कार्य) अपने हृदय पर वहन करनेवाले रास्ते अनेक खण्डोंको अेक-दूसरेसे मिलाते थे। जीवन-प्रवाहको परास्त करनेवाले पुलोंकी सख्या बहुत कम थी —जो थे, वे सेतु ही थे। अुन सेतुओंका काम था, जीवन-प्रवाहको रोक लेना और मनुष्योंके लिअे रास्ता कर देना। लेकिन जब जीवनको यह बधन असह्य-सा मालूम होने लगता था, तब सेतुओंको तोड डालना और पानीके बहावके लिअे रास्ता मुक्त कर देना प्रवाहका काम होता था। यह था पुराना क्रम। यही कारण था कि नदी-नालोंका बढा हुआ पानी रास्तों और सेतुओंको तोडे, अुसके पहले ही मुसाफिर अपने-अपने घर लौट आते थे। अिसीलिअे वर्षा-ऋतुको वर्षकी 'महिमामयी ऋतु' माना है।

असलमें 'वर्ष' नाम ही वर्षासे पडा है। 'हमने कुछ नही तो पचास वरसाते देखी हैं!' अिन शब्दोसे ही हमारे बुजुर्ग प्राय अपने अनुभवोका दम भरते हैं।

*　　*　　*

बचपनसे ही वर्षा-ऋतुके प्रति मुझे असाधारण आकर्षण रहा है। गरमीके दिनोमे ठण्डे-ठण्डे ओले बरसानेवाली वर्षा सबको प्रिय होती है। लेकिन बादलोके ढेरोंसे लदी हुआी हवाअे जब बहने लगती है, बिजलिया कडकती हैं और यह महसूस होने लगता है कि अब आकाश तडक कर नीचे गिर पडेगा, तबकी वर्षाकी चढाअी मुझे बच-पनसे ही अत्यन्त प्रिय है। वर्षाके अिस आनन्दसे हृदय आकण्ठ भरा हुआ होने पर भी अुसे वाणीके द्वारा व्यक्त न कर पाअूगा और व्यक्त करने जाअूगा तो भी अुसकी तरफ हमदर्दीसे कोअी ध्यान नही देगा, अिस खयालसे मेरा दम घुटता था।

*　　*　　*

आसपासकी टेकरियो परसे हनुमानके समान आकाशमे दौडने-वाले बादल जब आकाशको घेर लेते थे, तब अुसे देखकर मेरा सीना मानो भारसे दब जाता था। लेकिन सीने परका यह बोझ भी सुखद मालूम होता था। देखते-देखते विशाल आकाश सकुचित हो गया, दिशाअे भी दौडती-दौडती पास आकर खडी हो गअी और आसपासकी सृष्टिने अेक छोटेसे घोसलेका रूप धारण किया। अिस अनुभूतिसे मुझे वह खुशी होती थी जो पक्षी अपने घोसलेका आश्रय लेने पर अनुभव करता है।

लेकिन जब हम कारवार गये और पहली बार ही समुद्र-तट परकी वर्षाका मैंने अनुभव किया, तबके आनन्दकी तुलना तो नयी सृष्टिमें पहुचनेके आनन्दके साथ ही हो सकती है।

*　　*　　*

बरसातकी बौछारोंको मैंने जमीनको पीटते बचपनसे देखा था। लेकिन अुसी वर्षाको मानो बेतसे समुद्रको पीटते देखकर और

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—

समुद्र पर अुसके साट अुठे देखकर अितने बडे समुद्रके बारेमें भी मेरा दिल दया और सहानुभूतिसे भर जाता था। बादल और वर्षाकी धाराअें जब भीड करके आकाशकी हस्तीको मिटाना चाहती थीं तो अुसका मुझे विशेष कुछ नहीं लगता था, क्योंकि बचपनसे ही मैं अिसका अनुभव करता आया था। लेकिन वर्षाकी धाराअें और अुनके सहायक बादल जब समुद्रको काटने लगते थे तब मैं बेचैन हो जाता था। रोना नहीं आता था, लेकिन जो-कुछ अनुभव करता था अुसे व्यक्त करनेके लिअे 'फूट-फूटकर' यह शब्द काममें लेनेकी अिच्छा होती है। वर्षा चाहे तो पहाडों पर धावा बोल सकती है, चाहे खेतोंको तालाब और रास्तोंको नाले बना सकती है, लेकिन समुद्रको अपनी दरी समेटनेके लिअे बाध्य करना मर्यादाका अतिक्रमण-सा मालूम होता था। अवज्ञाके अिस दृश्यको देखनेमें भी मुझे कुछ अनुचित-सा प्रतीत होता था।

* * *

मेरी यह वेदना मैंने भूगोल-विज्ञानसे दूर की। मैं समझने लगा कि सूर्यनारायण समुद्रसे लगान लेते हैं और अिसीलिअे तप्त हवामें पानीकी नमी छिपकर बैठती है। यही नमी भापके रूपमें अूपर जाकर ठण्डी हुअी कि अुसके बादल बनते हैं, और अन्तमें अिन्हीं बादलोंसे कृतज्ञताकी धाराअें बहने लगती हैं, और समुद्रको फिरसे मिलती हैं।

गीतामें कहा गया है कि यह जीवन-चक्र प्रवर्तित है अिसीलिअे जीवसृष्टि भी कायम है। अिसी जीवन-चक्रको गीताने 'यज्ञ' कहा है। यह यज्ञ-चक्र यदि न होता तो सृष्टिका बोझ भगवानके लिअे भी असह्य हो जाता। यज्ञ-चक्रके मानी ही हैं परस्परावलम्बन द्वारा सधा हुआ स्वाश्रय। पहाडों परसे नदियोंका बहना, अुनके द्वारा समुद्रका भर जाना, फिर समुद्रके द्वारा हवाका आर्द्र होना, सूखी हवाके तृप्त होते ही अुसका अपनी समृद्धिको बादलोंके रूपमें प्रवाहित करना और फिर अुनका अपने जीवनका अवतार-कृत्य प्रारंभ करना — अिस

भव्य रचनाका ज्ञान होने पर जो सतोप हुआ वह अिस विशाल पृथ्वीसे तनिक भी कम नही था।

तवसे हर वारिश मेरे लिअे जीवन-धर्मकी पुनर्दीक्षा वन चुकी है।

* * *

वर्षा-ऋतु जिस तरह सृष्टिका रूप वदल देती है, अुसी तरह मेरे हृदय पर भी अेक नया मुलम्मा चढाती है। वर्षाके वाद मै नया आदमी वनता हू। दूसरोके हृदय पर वसन्त-ऋतुका जो असर होता है, वह असर मुझ पर वर्षासे होता हे। (यह लिखते-लिखते स्मरण हुआ कि सावरमती जेलमे था तव वर्षाके अन्तमे कोकिलाको गाते हुअे सुनकर 'वर्षान्ते वसत' शीर्षकसे अेक लेख मैने गुजरातीमे लिखा था।)

* * *

गरमीकी ऋतु भूमाताकी तपस्या है। जमीनके फटने तक पृथ्वी गरमीकी तपस्या करती है और आकाशसे जीवन-दानकी प्रार्थना करती है। वैदिक ऋषियोने आकाशको 'पिता' और पृथ्वीको 'माता' कहा है। पृथ्वीकी तपश्चर्याको देखकर आकाश-पिताका दिल पिघलता है। वह अुसे कृतार्थ करता है। पृथ्वी वालतृणोसे सिहर अुठती है और लक्षावधि जीवसृष्टि चारो ओर कूदने-विचरने लगती है। पहलेसे ही सृष्टिके अिस आविर्भावके साथ मेरा हृदय अेकरूप होता आया है। दीमकके पख फूटते है और दूसरे दिन सुवह होनेसे पहले ही सवकी-सव मर जाती हैं। अुनके जमीन पर विखरे हुअे पख देखकर मुझे कुरुक्षेत्र याद आता है। मखमलके कीडे जमीनसे पैदा होकर अपने लाल रगकी दोहरी शोभा दिखाकर लुप्त हुअे कि मुझे अुनकी जीवन-श्रद्धाका कौतुक होता है। फूलोकी विविधताको लजानेवाले तितलियोके परोको देखकर मैं प्रकृतिसे कलाकी दीक्षा लेता हू। प्रेमल लताअे जमीन पर विचरने लगी, पेड पर चढने लगी और कुअेकी थाह लेने लगी कि मेरा मन भी अुनके जैसा ही कोमल और 'लागूती' (लगौहा) वन जाता है। अिसलिअे वरसातमे जिस

तरह बाह्य सृष्टिमें जीवन-समृद्धि दिखाओी देती है, अुसी तरहकी हृदय-समृद्धि मुझे भी मिलती है। और बारिश शेष होकर आकाशके स्वच्छ होने तक मुझे अेक प्रकारकी हृदय-सिद्धिका भी लाभ होता है। यही कारण है कि मेरे लिअे वर्षा-ऋतु सब ऋतुओंमें अुत्तम ऋतु है। अिन चार महीनोंमें आकाशके देव भले ही सो जाय, मेरा हृदय तो सतर्क होकर जीता है, जागता है और अिन चार महीनोंके साथ मैं तन्मय हो जाता हूं।

'मधुरेण समापयेत्' के न्यायसे वसन्त-ऋतुका अन्तमें वर्णन करनेके लिअे कालिदासने 'ऋतुसंहार' का प्रारंभ ग्रीष्म-ऋतुसे किया। मैं यदि 'ऋतुस्य' की दीक्षा लूं और अपनी जीवन-निष्ठा व्यक्त करने लगूं, तो वर्षा-ऋतुसे अेक प्रकारसे प्रारंभ करके फिर और ढंगसे वर्षा-ऋतुमें ही समाप्ति करूंगा।
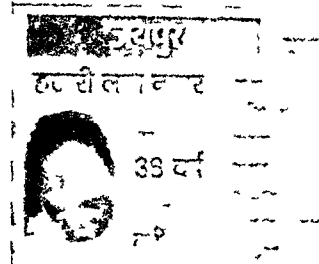
जुलाओी, १९५२

अनुबन्ध

[सामाजिक जीवनके लिअे अत्यत अुपयोगी अुद्योग-हुनर सीखते या चलाते हुअे कदम-कदम पर जिस ज्ञानकी या जानकारीकी जितनी जरूरत हो, अुतना पूरा ज्ञान अुस वक्त ढूढ लेना और अुसे अपनाना यह जीवनको समृद्ध करनेका स्वाभाविक तरीका है। जीनेके लिअे जो भी प्रवृत्ति करनी पडे, अुसके साथ सम्बन्ध रखनेवाली अिधर-अुधरकी सब जानकारी हासिल करनेसे बडा सतोष होता है और वा-मौके हासिल की हुअी जानकारी आसानीसे हजम होती है और जीवनमे घुलमिल जाती है।

यह सब देखकर शिक्षाशास्त्रियोने पढाअीका यह नया तरीका चलाया है कि जीवन जीते हुअे अेव जीविकाका हुनर सीखते और चलाते हुअे जो भी जरूरी ज्ञान लेना या देना पडे, अुसीको शिक्षाका जरिया बनाया जाय। अिस पद्धतिको अनुबध या 'को-रिलेशन' कहते है।

सस्कृत ग्रथोके प्राचीन टीकाकार अिसी शैलीका सहारा लेकर किसी भी ग्रथको समझाते समझाते अनेक विषयोकी जानकारी दे देते है। और अगर मूल लेखक अनेक विद्या-विशारद रहा और अुसके ग्रथमें अुन विद्याओके तत्त्वोका जिक्र आया, तो टीकाकार अुन सब विद्याओका जरूरी ज्ञान अपनी टीकामे भर ही देते है।

आजकलकी पढाअीकी पाठ्य-पुस्तकोके साथ नोट्स या टिप्पणिया दी जाती है। किताबे अग्रेजीमे और टिप्पणिया भी अग्रेजीमे। अिस तरह परभाषा द्वारा पढनेकी कृत्रिम स्थितिके कारण विद्यार्थी लोग नोट्स रटने लगे और रटी हुअी चीज अिम्तहानमे लिखकर परीक्षा पास करने लगे। अिस परिस्थितिके कारण नोट्स देनेकी प्रथा काफी बदनाम हो चुकी है और अच्छे-अच्छे शिक्षाशास्त्री दर्सी किताबो पर नोट्स देना अपनी शानके खिलाफ मानते है। और कभी-कभी अैसे नोट्स निन्दाके पात्र भी होते है।

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—I

लेकिन अगर अनुवन्धकी दृष्टिसे टिप्पणी लिखी जाय और मौका पाकर जरूरी विविध ज्ञान देनेकी कोशिश की जाय, तो यह पद्धति हर तरहसे अिष्ट और लाभदायी ही है।

मेरे कअी अध्यापक-मित्रोने मेरी चद किताबें अपनी टिप्पणियो द्वारा विभूषित की हैं। अिसमें मैंने अुन्हे अपना सहयोग भी दिया है। जहा विद्यार्थियोको और अध्यापकोको बडे पुस्तकालयकी सहूलियत नही मिलती, वहा तो अिन टिप्पणियोके द्वारा ही किताबकी पढाअी सन्तोषकारक हो सकती है। किताबोंके अूपर स्वभाषामें लिखी टिप्पणिया देनेसे अनुवन्धका बहुतसा काम हो जाता है। अिसलिअे शिक्षा-कलाके प्रवीण अध्यापकोंके द्वारा दी हुअी टिप्पणियोको मैंने 'अनुवध' के जैसा ही माना है। मुझे आशा है कि अगर किसी अध्यापकको यह किताब पढानेका मौका आ जाय, तो वे अिन टिप्पणियोका अनुवन्धके खयालसे ही अुपयोग करेंगे। अध्यापककी मददके विना जो नवयुवक अिस किताबको टिप्पणियोके साथ पढेंगे, अुन्हे अिनके द्वारा अनुवन्धका कुछ खयाल आ जायगा। का० का०]

मुखपृष्ठका श्लोक

विश्वस्य मातर ० 'अिस प्रकार जितनी नदियोका स्मरण हुआ अुनके नाम मैंने सुना दिये। ये सब विश्वकी माताअें हैं, और सभी शक्तिशाली हैं तथा महान फल देनेवाली हैं।'

धृतराष्ट्रके प्रश्नके अुत्तरमें सजय जब भारतवर्षका वर्णन करता है, तब भारतकी नदियोके नाम सुनानेके बाद अुपसहारमें वह अुक्त वचन कहता है। महाभारतके भीष्मपर्वके नवें अध्यायके ३७वें तथा ३८वें श्लोकोके पहले दो-दो चरण लेकर यह श्लोक बनाया गया है।

यथास्मृति भाव यह है कि नदिया है तो अनेक, किन्तु जितनी मुझे याद आयी अुतनोंके नाम मैंने सुना दिये। ३७वें श्लोकके अतके दो चरणोंमें यह स्पष्ट कहा गया है

तथा नद्यस्त्वप्रकाशा शतशोऽथ सहस्रश।

अिसी तरह जो ज्ञात नही हैं अैसी तो सैकडो और सहस्रो नदिया है।

निर्दलीय

तीन प्रमुख लगातार
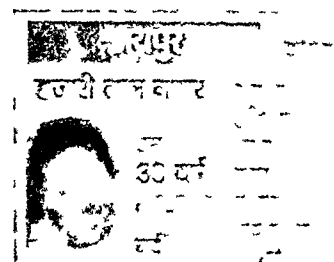
पिछले चुनाव के

एक और नाम

[अिसमें सजयकी (और लेखककी भी ?) अपने देशके प्रति भक्ति दिखाअी देती है। 'सुजला सुफला' माताओकी विपुलता कोअी कम न समझ बैठे, अैसी अतिस्नेहसे पैदा होनेवाली पापशका भी क्या अिसमें होगी ?]

जीवनलीला

पृ० ३ ग्राम्य: गावमें रहनेवाले। ऋग्वेदमें अिस शब्दका अिस अर्थमें प्रयोग किया गया है।

पृ० ५ डल्यो. सावर्ण्यम्. ड तथा ल समान वर्ण है। '**डलयोर-भेद:**' भी कहते है।

पृ० ७ लिम्पतीव ० अवेरा मानो अगोको लीपता है और नभ मानो अजनकी वर्पा करता है।

पृ० ९ देशका मतलव भी है · अपभ्रश भाषाके निम्न पद्यसे तुलना कीजिये

> सरिहि न सरेहि न सरवरेहि नहि अुज्जाणवर्णेहि।
> देस रवण्णा होन्ति वढ निवसन्तेहि सुअर्णेहि ॥

[हे मूढ, देश न सरितासे रमणीय वनता है, न सरोसे, न सरोवरोसे वनता है, न अुद्यान-वनोसे। वल्कि अुसमे वसनेवाले सुजनोसे रमणीय वनता है।]

सरिता-सस्कृति

पृ० ११ क्षेमेन्द्र. ग्यारहवी सदीके अेक काश्मीरी पडित कवि। कहते है कि अिन्होने चालीससे अधिक ग्रथोकी रचना की थी, जिनमें 'भारतमजरी', 'वृहत्कथामजरी', 'नृपावलि, 'सुवृत्ततिलक', 'औचित्य-विचारचर्चा', 'कविकठाभरण' आदि ग्रथ प्रसिद्ध है।

पृ० १२ मीनलदेवी : कर्णाटककी चद्रावती नगरीकी राजकन्या, कर्णदेव सोलकीकी पत्नी, सिद्धराज जयसिहकी माता, धोलकाका विख्यात 'मलाव' तालाव तथा वीरमगामका 'मुनसर' तालाव अिसीने वनवाये थे। अिसने सोमनाथके दर्शनके लिअे जानेवाले हर यात्री पर लगाया गया कर वद करवा दिया था। यह वडी प्रजावत्सल रानी थी।

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—Including

अुर्वशी 'अुर्' देशकी अुर्वशी।

नदी-मुखेनैव समुद्रम् आविशेत्

पृ० १४ कूल-मर्यादा कूल=किनारा। किनारेकी मर्यादा। 'कुल-मर्यादा' शब्द परसे यह शब्द बनाया गया है।

नामरूपको त्यागकर ... जाती है मुंडकोपनिषद्‌का निम्न वचन याद कीजिये

यथा नद्य स्यन्दमाना समुद्रे
अस्त गच्छन्ति नामरूपे विहाय।

[जिस प्रकार बहती हुअी नदिया नामरूपको त्यागकर समुद्रमें अस्त हो जाती है।]

अुपस्थान

पृ० १५ अुपस्थान वंदना, पूजा, अुपासना। जैसे, सूर्यका या सध्याका अुपस्थान।

हमारे पूर्वजोकी नदी-भक्ति लेखक सरस्वतीपुत्र सारस्वत हैं, अिस बातका यहा स्मरण हुअे बिना नही रहता।

भक्तिके अिन अुद्‌गारोका श्रवण करके भक्तिका श्रवण करके, श्रवण-भक्ति करके। अुद्‌गार=वचन। (प्रेम और आदरपूर्वक सुनना भी भक्तिका ही अेक पुण्यप्रद प्रकार है।)

सस्कृति-पुष्ट ससारकी बहुतसी सस्कृतियोका विकास नदियोके किनारो पर ही हुआ है। अुदाहरणके लिअे, अिजिप्त (मिस्र)की सस्कृति नील नदीके किनारे विकसित हुअी है। खाल्डिया (अिराक) की सस्कृति युफ्रेटिस और टैग्रिसके किनारे, चीनकी सस्कृति याग्सेक्याग तथा होआगहोके किनारे, मध्य अेशियाकी सस्कृति अमु और सरके किनारे और भारतकी सस्कृति पचसिंधु, गगा-यमुना, तापी-नर्मदा और कृष्णा-गोदावरीके किनारे विकसित हुअी है।

पृ० १६ भगवान सूर्यनारायणके प्रेमके बारेमें . ताप्ती —तपती सूर्यकी पुत्री मानी जाती है। वह सवरण राजाकी पत्नी और कुरुकी
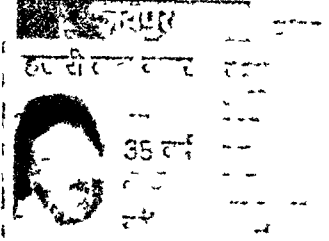
माता थी। गुजराती कवि प्रेमानदके नामसे चलनेवाले 'तपत्याख्यान' में अिसकी कथा है।

पृ० १७ 'अितिहासका अुषाकाल' सामान्य तौरसे 'अुष काल' शब्द अुपयोगमे लाया जाता है। किन्तु यहा जान-बूझ कर 'अुषाकाल' शब्दका प्रयोग किया गया है। स्थानीय अितिहासमें कहा गया है कि ब्रह्मपुत्रके अुत्तर किनारे पर तेजपुरके पास बाणासुर और अुषा रहते थे।

अुषा-अनिरुद्धकी कथा भागवतके दशम स्कधके ६२–६३ वे अध्यायमे आती है। बलिके पुत्र बाणासुरकी कन्या अुषाका अेक बार स्वप्नमे किसी सुदर युवकसे समागम हुआ। स्वप्नके अुड जाने पर वह अुसके वियोगसे बडबडाने लगी। अुसकी सखी चित्रलेखाने यह बडबडाहट सुनी। पूछने पर अुषाने स्वप्नकी बात कह सुनायी और कहा कि अिस पुरुषसे विवाह किये बगैर मै जीवित नही रह सकती। चित्रलेखाने अेकके बाद अेक अनेक चित्र खीचकर अुसे दिखाये। अतमें कृष्णके पौत्र अनिरुद्धकी तस्वीर देखकर अुसने कहा, यही है वह पुरुष जिसको मैने स्वप्नमे देखा था।

अिसके अनतर चित्रलेखा योगबलसे द्वारका जाती है। वहासे सोते अनिरुद्धको पलगके साथ अुठाकर ले आती है। अुषा-अनिरुद्ध गाधर्व विधिसे विवाह कर लेते हैं और चार महीने साथमे बिताते है। अुषाके पिताको जब पता चलता है कि अुषाके मदिरमे कोअी पुरुष रहता है, तब वह क्रोधके मारे वहा जाकर अनिरुद्ध पर टूट पडता है। दोनोके बीच युद्ध होता है। अिसमे बाणासुर अनिरुद्धको नागपाशसे बाधकर गिरफ्तार कर लेता है।

अिधर द्वारकामें अनिरुद्धकी खोज शुरू होती है। नारदने आकर खबर दी कि अनिरुद्धको तो शोणितपुर (आजकलके तेजपुर) में बाणासुरने कैद कर रखा है। अिससे क्रुद्ध होकर यादव शोणितपुर पर हमला करते है और बाणको हराकर अुषा-अनिरुद्धके साथ बडी धूमधामसे द्वारका वापस लौटते हैं।

सभूय-समुत्थानका सिद्धान्त : अेकत्र होकर अुन्नति करनेका सिद्धान्त। Joint Stock का सिद्धान्त। स्मृतियोमें यह शब्द मिलता है।

पृ० १८ समुद्रसे मिलने जाते ... तक जानेवाली : दक्षिण गुजरातमे वलसाडके पासकी 'वाकी' नदी भी अपने नामकी ही तरह टेढी-तिरछी होती हुअी ठेठ समुद्रके पास आकर अैसी टेढी होती है कि दो तीन मील अुत्तर दिशाकी ओर बहकर औरंगामे मिलती है और अुसीके साथ समुद्रसे जा मिलती है।

पृ० २० गति देनी होगी वासना-पीडित भूतोंको मात्रिक गति देते है अुस प्रकार।

१. सखी मार्कण्डी

पृ० ३ मार्कण्डी बेलगावसे नौ मीलकी दूरी पर लेखकके गाव बेलगुदीके पास बहनेवाली छोटीसी नदी।

वैजनाथ : (स० वैद्यनाथ) बेलगावका अेक पहाड। वैद्योके कहे अनुसार अिस पहाड पर मूल्यवान वनस्पतिया है।

हमारे तालुकेका कर्णाटकके बेलगाव तालुकेका।

पृ० ४ मार्कण्डेय मृकडु मुनिका पुत्र, मार्कण्ड।

साधु सुंदर ० मध्यकालके अेक कवि द्वारा रचित मार्कंडेय अुपाख्यानमें ये पक्तिया आती है। मराठी स्त्रियोंमें कजियोंको ये मुखाग्र होती है।

मृत्युजय : महादेवजीका नाम। यह अलुक् समास है। जिसमें विभक्तिके प्रत्ययका लोप नही होता। तुलना कीजिये धनजय, नमिंतिजय, गणजय (dictator)।

अुसकी आयुधारा कथामें कहा गया है कि अुसे सात या चौदह कल्पका आयुष्य मिला था। अिस परसे जब किसीको दीर्घ-जीवी होनेका आशीर्वाद दिया जाता है, तब 'मार्कण्डायुर्भव' कहा जाता है। किन्तु अिस लेखमे अिसका अर्थ है यह नदीरूपी आयुधारा। यह लेखककी कल्पना है।

पृ० ५ भाअी-दूज कार्तिक सुदी दूज। अिस दिन यमुनाने अपने भाअी यमको अपने घर बुलाकर अुसकी पूजा की थी तथा अुसको खाना खिलाया था। अिसलिअे अिस दिनको यम-द्वितीया भी कहते है। अिस
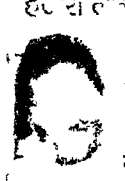
दिन बहन अपने भाओकी पूजा करती है और खाना खिलाते समय नीचेका मत्र बोलकर अुसे आचमन करवाती है

> भ्रातस् तवानुजाताऽहं भुङ्क्ष्व भक्तम् अिदम् शुभम्।
> प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषत ॥

[हे भैया, मैं आपकी छोटी बहन हू। मेरा पकाया हुआ यह शुभ अन्न आप भक्षण कीजिये, जिससे कि यमराज और खास करके अुनकी बहन यमुना प्रसन्न हो जाय।]

बहन बडी हो तो 'भ्रातस्तवाग्रजाताहं' कहती है।

मृगनक्षत्र · भाओ-दूज जाडोमे आती है। अुन दिनो मृगनक्षत्र सारी रात आकाशमे होता है। अैसी 'मृगनीता रात्रय'।

लावण्य : (स० लवण+य) मिठास, झलक यौवनकी काति। अुसका लक्षण

> मुक्ता-फलेषु छायाया तरलत्वम् अिवान्तरा।
> प्रतिभाति यद् अगेषु तल्लावण्यम् अिहोच्यते॥

२. कृष्णाके संस्मरण

पृ० ५ सातारा : कृष्णाके किनारे स्थित नगर। लेखकका जन्म-स्थान। यह शाहु आदि महाराष्ट्रके राजाओकी राजधानी था।

श्री शाहु महाराज : शिवाजीका पौत्र। सभाजीका पुत्र। अुसका नाम शिवाजी था। औरगजेबने अुसका नाम शाहु रखा था। छुटपनमें अुसको दिल्लीके दरबारमें कैद रहना पडा था। वहाके भोगे हुअे अैश-आरामके कारण अुसने राज्यका कारोबार अपने प्रधान — पेशवाको सौप दिया था और स्वय सातारामें रहता था।

पृ० ६ हम बच्चे · लेखक तथा अुनके भाओ।

'वासुदेव' : मोरपखोकी टोपी पहनकर भजन गाते हुअे भीख मागनेवाले अेक याचक सप्रदायके लोग।

वेण्या : साताराकी अेक छोटीसी नदी।

'नरसोबाची वाडी' : कृष्णाके किनारे कुरुदवाडके समीप यह स्थान है। यह दत्तात्रेयका तीर्थस्थान है।

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—Including

पृ० ७ अमृत-खेत: अमृत जैसे मीठे फल देनेवाले खेत।

जिसने अेकाध वार . अिच्छा करेगा सिक्खोके गुरु नानकशाके मवधमें अेक लोककथा प्रचलित हे। कहते हैं कि वे स्वर्गमें गये, किन्तु वहा पर भी वे अुदास रहने लगे। भगवानने अिनका कारण पूछा, तो जवाव मिला 'स्वर्गमें सव कुछ है। किन्तु मकअीके भुट्टे नही हैं, न सरसोकी सब्जी है। यह खानेके लिअे पृथ्वी पर वापस जानेकी अिच्छा होती है।'

लोक-मानस ही अैसी कथाअें गढ सकता है।

सागली कृष्णाके तट पर स्थित अेक शहर। स्वातन्त्र्यपूर्व कालकी अेक रियासत।

अेकश्रुति यह वैदिक शब्द है। अिसका अर्थ है, 'जिसमें विविधता न हो अैसा।' वेदोमें तीन प्रकारके अुच्चार वताये गये हैं अुदात्त, अनुदात्त और स्वरित। अिनमे से किसी अेकको लेकर विना किसी प्रकारका फर्क किये लगातार अुच्चारण करना 'अेकश्रुति' अुच्चार या आवाज है। अग्रेजी 'मोनोटोनस'।

श्रीसमर्थ स्वामी रामदास। श्री शिवाजी महाराजके गुरु। वे ब्रह्मचारी थे। अुन्होने अनेक मठोकी स्थापना की तथा धर्म-प्रचार किया। 'दासवोध', 'मनोवोध' आदि प्रख्यात ग्रथोके रचयिता।

पृ० ८ घोरपडे सताजी। शिवाजीके अेक सेनापति। राजारामके समयमें धनाजी और सताजी घोरपडे अिन दो सेनापतियोके वीच वहुत वडा विरोध था। घोरपडे मुरारराव (१७०४–१७७७) भी शाहुके मुख्य सरदारोमे से अेक थे। अपने पराक्रमसे सारा कर्णाटक जीतकर अिन्होने गुत्तीमे राजधानीकी स्थापना की थी, अिसलिअे अुन्हे 'गुत्तीकर घोरपडे' भी कहते थे। चन्दा साहबके साथ पेशवाओका त्रिचिनापल्लीमें जो घोर युद्ध हुआ, अुसमे अिन्होने पेशवाओको विजय दिलायी। अिसलिअे शाहुने अुन्हे कर्णाटककी 'सरदेशमुखी' और त्रिचिनापल्लीके किलेकी 'सूबेदारी' दे दी थी। अन्तमें हैदरने अुन्हे कैद करके चादीकी हथकडी-वेडी पहनाकर कपालदुर्गमे रखा था। वहीं अुनका अत हुआ।

पटवर्धन : परशुराम भाअू (१७३९–१७९९) सवाअी माधवराव पेशवाके समयके बडे सेनापति। बडे शूरवीर तथा बहादुर थे। हैदरके साथ जो युद्ध हुआ, अुसमे अिनके अेकके पीछे अेक तीन घोडे मारे गये, किन्तु वे घबडाये नही। १७८१ मे अुन्होने अग्रेज सेनापति गोडार्डको परास्त किया। १७९६ मे नाना फडनवीससे अिनकी कुछ अनबन हो गअी। अिसलिअे फडनवीसने अिनको कैद कर लिया। १७९८ मे वे रिहा हुअे। किन्तु फौरन पट्टणकुडीके युद्धमें शामिल हुअे और वही लडते लडते मारे गये।

नाना फडनवीस . (१७४२–१८००) मराठाशाहीके अतिम कालके अेक महान चतुर राजनीतिज्ञ।

रामशास्त्री प्रभुणे · (१७२०–१७८९) पेशवाअी जमानेके अेक प्रख्यात न्यायशास्त्री। बीस सालकी अुम्र तक वे निरक्षर ही थे। जिस साहूकारके यहा वे नौकरी करते थे, अुसने अिनसे कुछ मर्मभेदी वचन कहे। अत ये पढनेके लिअे काशी चले गये और बडे विद्वान धर्मशास्त्री बने। १७५१ मे पेशवाओके दरबारमे अुन्होने सेवा स्वीकार की और १७५९ मे मुख्य न्यायाधीश बने। वे अत्यत नि स्पृह थे। बडे माधवराव अिनकी सलाहके अनुसार चलते थे। नारायणरावके खूनके लिअे राघोबाको देहात प्रायश्चित्त लेनेकी बात अुन्होने विना किसी हिचकिचाहटके कही थी।

देहू · अिन्द्रायणी नदीके किनारे स्थित अेक गाव। पूनाके पास है। महाराष्ट्रके सत तुकारामका गाव होनेसे पवित्र माना जाता है।

आळदी · अिन्द्रायणी नदीके किनारे बसा हुआ अेक गाव। पूनासे अधिक दूर नही है। यहा श्री ज्ञानेश्वरने जीवित अवस्थामे समाधि ली थी। देहू-आळदीकी नदी अिन्द्रायणी भीमा नदीसे मिलती है। यह भीमा पढरपुरके पास टेढी बहती है, अिसलिअे वहा अुसे चद्र-'भागा कहते है। अिसके बाद ही वह बडी होकर कृष्णासे मिलती है।

तुंगभद्रा : तुगा और भद्रा, ये दो नदिया मिलकर तुगभद्रा बनती है। देखिये 'मुळा-मुठाका सगम' (पृ० ११)। तुगभद्राके किनारे हपीके पास कर्णाटक साम्राज्यकी राजधानी विजयनगर बसा हुआ था।

Our Outstanding Publications

LIFE OF WAHAR LAL NEHRU

तेलगण त्रिलिंगका प्रदेश। 'जिसके पेटमें कृष्णाकी अेक बूंद भी पहुंच चुकी है, वह अपना महाराष्ट्रीयपन कभी भूल नहीं सकता।' और 'कृष्णामें पक्षपाती प्रांतीयता नहीं है।'— क्या अिन दो वचनोंके बीच विरोध है? लेखकका कहना है कि महाराष्ट्रके सद्गुणोंके प्रति मनमें आदरभाव तो रहने ही वाला है, किन्तु तीनों प्रांतोंके प्रति आत्मीयता जाग्रत होने पर मनमें संकीर्णता आ ही नहीं सकती।

पहाडकी अस्थियां. पत्थर।

पृ० ९ **जीवनकी लीला** जीवन यानी जल और जीवन यानी जिंदगी। यहां अुसका दोनों अर्थोंमें प्रयोग किया गया है।

अनतबुआ मरढेकर. काकासाहबके प्रिय सुहृद्, जिनकी पवित्र स्मृतिमें काकासाहबने अपनी 'हिमालयकी यात्रा'* पुस्तक अर्पण की है।

श्रीसमर्थ रामदास स्वामी तथा अुनके शिष्योंने जो अनेक मठ स्थापित किये हैं, अुनमें 'मरढे मठ' भी अेक है। अिस मठके गृहस्थाश्रमी मठपतियोंके वंशमें अनतबुआका जन्म हुआ था। अिनके पिता पुराणिक तथा कीर्तनकार थे। अनतबुआ प्रथम मराठी ट्रेनिंग कॉलेजमें शिक्षक थे। बादमें वे काकासाहबसे पहले बडौदाके 'गंगनाथ विद्यालय' में शरीक हुअे। अिस विद्यालयके लिअे चंदा अिकट्ठा करनेके हेतुसे वे बडौदा राज्यमें सर्वत्र घूमते थे। अुनका मासिक खर्च कभी भी दस रुपयेसे अधिक नहीं हुआ। संस्थाके नियमके अनुसार अुन्हें खर्चके अलावा जेबखर्चके लिअे पांच रुपये अधिक लेने पडते थे। वे अिन पांच रुपयोंका अुपयोग विद्यार्थियोंके लिअे अथवा हिसाबमें गलती हुअी हो तो अुसमें जोडनेके लिअे करते थे। रहन-सहनमें अिनकी तुलना गुजरातके प्रसिद्ध रचनात्मक कार्यकर्त्ता श्री रविशंकर महाराजसे की जा सकती थी। अुनके पवित्र जीवनको देखकर कओी लोग अुनसे कंठी मांगते थे। किन्तु अुन्होंने कभी किसीको कंठी नहीं दी। वे कहा करते थे कि 'मुझमें यह योग्यता नहीं है।'

---

* हिन्दीमें 'हिमालयकी यात्रा' नवजीवन प्रकाशन मंदिरकी ओरसे प्रकाशित हो चुकी है। कीमत २–०–०, डा० खर्च ०–१५–०।

निर्दलीय
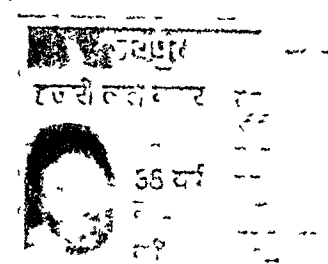
हृदयकी भावनासे . आदरभावसे। लेखकके प्रति वे असाधारण आदरभाव रखते थे अिसलिअे।

बडे भाअी राष्ट्रीय शिक्षाका कार्य वे लेखकके पहलेसे करते आ रहे थे और लेखककी दृष्टिमे अधिक त्यागी थे अिसलिअे।

गगोत्री · हिमालयका अेक तीर्थस्थान । गगा यहीसे निकलती है। असलमे गगाका अुद्‌गम होता है 'गोमुख' से, जो गगोत्रीसे करीब चौदह मील दूर है।

अमरनाथ . यह तीर्थस्थान काश्मीरमे है । यहा अेक गुफामें बर्फका स्वयभू शिवलिग पाया जाता है।

अमर हुअे . स्वर्गवासी हुअे।

वाअी कृष्णाके किनारे पर स्थित पवित्र तीर्थस्थान । यहा सस्कृत विद्याकी परपरा अुत्तम रूपमे सुरक्षित है।

वाअीके . . गगाका · वाअीके लोग प्रेमभक्ति-पूर्वक कृष्णाको गगा कहते है।

शिरस्नान . वर्षाअृतुमें वाअीके कुछ मदिर नदीके पानीमे कलश तक पूरे डूब जाते है।

स्वराज्य-अृषि : स्वराज्यका 'ध्यान' करनेवाले, स्वराज्यके लिअे 'तपश्चर्या' करनेवाले और स्वराज्यका 'मत्र' देनेवाले । 'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' लोकमान्यका यह वचन प्रसिद्ध है।

पृ० १० पट-वर्धन पट=वस्त्र, वर्धन=वृद्धि करनेवाले । द्रौपदी वस्त्र-हरणका किस्सा याद कीजिये।

'चरखे भी . . . अुतनी ही सख्यामें वीस लाख चरखे चलानेकी वात तय हुअी थी।

वेजवाडा : आध्र प्रातका अेक मुख्य शहर । यह भी कृष्णाके तट पर ही है।

श्री अब्बास साहब . (१८५४–१९३६) नित्य-युवा देशभक्त श्री अब्बास तैयबजी। तीसरी महासभा (काग्रेस) के प्रमुख श्री वदरुद्दीन तैयबजीके भतीजे । वादमे अुन्हीके दामाद । पूर्व जीवनमे आप बडौदा राज्यकी वडी अदालतके न्यायाधीश थे। अुत्तर जीवनमे आप

Our Outstanding Publications

LIFE OF AWAHAR LAL NEHRU—Including

पर गाधीजीका असर हुआ। अुस समय गुजरातके सार्वजनिक जीवनमें आपने महत्त्वका हिस्सा अदा किया था। पजावके हत्याकाडकी तहकीकातमे, असहयोग आदोलनमे, तिलक-स्वराज्य-फड जिकट्ठा करनेमें, सरकारी शालाओ तथा परदेशी कपडोकी दुकानो पर चौकी करनेमें, खादी-फेरीमे, हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके प्रयत्नोमे, वाट-सकट-निवारणमें, रानीपरज लोगोकी मदद करनेमे, बारडोलीके आन्दोलनमें तथा नमक-सत्याग्रहके समय धरासणाके आगर पर हुअे सत्याग्रहका नेतृत्व करनेमें आपकी अनेकविध देशसेवाको प्रगट होते हमने देखा है।

श्री पुणतावेकर बम्बअीके राष्ट्रीय महाविद्यालयके अुस समयके आचार्य। आप बैरिस्टर थे। बादमें बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयमें अितिहासके मुख्य अध्यापकके तौर पर तथा नागपुर विश्वविद्यालयमें राजनीति-विभागके मुख्य अध्यापकके तौर पर आपने काम किया था।

गिदवाणीजी गुजरात विद्यापीठके पहले कुलनायक (वाअिस-चान्सलर) और गुजरात महाविद्यालयके पहले आचार्य। पूरा नाम असुदमल टेकचद गिदवाणी। गुजरातमे आनेके पहले आप दिल्लीके रामजस कॉलेजके प्रिन्सिपाल थे।

कृष्णाम्बिका कृष्णामैया।

रामशास्त्री रामशास्त्री प्रभुणे वाअीके पास कृष्णाके तट पर रहे थे अिसलिअे।

नाना फडनवीस वाअीके पास मेणवलीमे रहते थे जिसलिअे।

'राष्ट्रीय' हिन्दी शुद्ध हिन्दी तो है प्रान्तीय हिन्दी। अनेक भाषाओके असरसे बनी हुअी हिन्दीका नाम है राष्ट्रीय हिन्दी!!

जन्मकालका लेखकके जन्मकालका।

३ मुळा-मुठाका सगम

पृ० ११ अपवादके विना नहीं चलते Exception proves the rule 'अुत्सर्गा मापवादा'।

मिसिसिपी-मिसोरी जिनकी लबाअी ५४३१ मीलकी है। ये दोनो नदिया जहा मिलती हैं, वहाका पट ५००० फुट चौडा है।

द्वन्द्व समासमें : दोनो पद समान कक्षाके होते है, अिस बात पर यहा जोर दिया गया है।

सीता-हरणसे लेकर . . . तकका अितिहास : कहते है कि रावण जब सीताको अुठाकर ले गया था, तब सीताकी साडीका पल्ला हपीके पास अेक बडी शिला पर घिस गया था, जिसकी रेखाये अुस शिला पर अब तक दिखाअी देती है। विजयनगरके साम्राज्यका कारोबार भी तुगभद्राके तट पर ही चलता था। अिस साम्राज्यकी स्थापना सन् १३४६ मे हुअी थी। अिसका विस्तार कृष्णासे लेकर कन्याकुमारी तक था। सवा दो सौ साल तक मुसलमानोके हमलोका सामना करके सन् १५६५ में अिस साम्राज्यका अत हुआ। अिसका पूरा अितिहास 'अे फरगॉटन अेम्पायर' नामक अग्रेजी पुस्तकमे तथा 'विजयनगरके साम्राज्यका अितिहास' नामक हिन्दी पुस्तकमे दिया गया है।

खडक-वासला : पूनासे सिंहगढ जाते समय बीचमे यह स्थान है। यहा पूनाका जलागार (वॉटर वर्क्स) है। स्वतत्र भारतके 'राष्ट्ररक्षा विद्यालय' के लिअे भी यही स्थान पसद किया गया है। देखिये पृ० १३

मुडी टेकरिया : सन्यासीके जैसी, जिनके सिर पर अेक भी पेड नही है अैसी।

चिन्ताजनक : मनुष्य जब चितामे रहता है तब अुसकी आखें बार-बार खुलती-बन्द होती रहती हैं। सितारे भी सारी रात अिसी तरह झिलमिलाते रहते है। यहा अर्थ है पानीके हिलनेसे होनेवाली झिलमिलका प्रतिबिंब।

बाग : यह फारसी लफ्ज है। मस्जिदमें नमाजके पहले 'नमाजका समय हुआ है, नमाज पढनेके लिअे आअिये,' अैसा बतानेके लिअे बडे जोरकी जो आवाज दी जाती है अुसको बाग कहते हैं। अरबीमे अिसीको अजान कहते हैं। यहा बाग शब्दका सामान्य अर्थ पुकार है।

लकडी-पुल : शायद पहले यह पुल लकडीका रहा हो या जिसके पासमें ही लकडी बेची जाती रही हो। अहमदाबादके लोहेके 'अेलिसब्रिज' को भी 'लकडिया पुल' कहते हैं।

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—Including

पृ० १२ ओकारेश्वर . यहा अेक स्मशान है। दूसरा स्मशान लकडी-पुलके पास है।

कॅप्टन मॅलेट पेशवाओको नष्ट करनेके लिअे षड्यत्र रचनेवाला अग्रेज।

भाडारकर डॉ० सर रामकृष्ण गोपाल भाडारकर। सस्कृत विद्या और प्राच्य विद्याके सशोधनमे पारगत। प्रार्थना समाजके नेता।

गुजरातके अेक लक्ष्मीपुत्र कर्वे विश्वविद्यालयके साथ जिनका नाम जोडा गया है वे सर विट्ठलदास दामोदरदास ठाकरसी।

अुत्तुग-शिरस्क अूचे सिरवाली।

नम्रनामधेय नम्र नामवाली। मकान तो बडे राजमहलके जैसा है, किन्तु अुसका नाम है 'पर्णकुटी'। अिसी मकानमें गाधीजीने दो बार अनशन किया था।

यरवडाका कैदखाना छोटे-बडे असख्य देशवीरोके और खास तौरसे गाधीजीके कारावासके कारण तथा वहा हुअे हरिजनोके मताधिकार सबधी करारके कारण यह कैदखाना देशमें और समस्त दुनियामे प्रसिद्ध हो चुका है। गाधीजी अिसको 'यरवडा मदिर' कहते थे।

प्राणहरणपटु प्राण लेनेमें कुशल।

भिक्षाधीश भिक्षाके अधिकारी भिखारी। लक्षाधीशके साथ तुक मिलानेके लिअे अिस शब्दकी योजना की गअी है।

पृ० १३ निसर्गोपचार भवन सन् १९४४ में जेलसे रिहा होनेके बाद गाधीजीने निसर्गोपचारका प्रचार किया था। अुमी दरमियान वे कुछ समय तक अिस निसर्गोपचार भवनमें रहे थे। अुरुलीकाचनमे भी अुन्होने अेक नया निसर्गोपचार केंद्र खोला था, जो अब तक चल रहा है।

सिंहगढका निवास लेखकको क्षयरोग हुआ था, तब वे काफी समय तक सिंहगढमे रहे थे। अुस बातका यहा जिक्र है।

४ सागर-सरिताका सगम

पृ० १४ सरोका वन लेखककी 'स्मरण-यात्रा' में 'सरो पार्क' नामक प्रकरण देखिये। (यह पुस्तक हिंदीमें नवजीवन प्रकाशन मदिरकी

ओरसे प्रकाशित हुओ है, की० ३–८–०, डा० खर्च १–२–०।) अिसमें काकासाहबकी छठें वरससे लेकर अठारह वरस तककी जीवन-यात्राका वर्णन है।

जब कि अपनी मर्यादाको . सामने हो जाता है : चन्द्रके असरके कारण जब सागरमें भाटा आता है तब पानी रास्ता वना देता है, और ज्वारके समय अुभरकर जब नदीमें घुस जाता है तब सामने हो जाता है।

पृ० १६ जमनोत्री : हिमालयमें अुत्तराखडका अेक तीर्थस्थान। यहीसे यमुना निकलती है।

महाबलेश्वर : यह कृष्णाका अुद्गम-स्थान है। यह स्थान सातारामें है।

त्र्यबक : नासिकके पासका स्थान। यह गोदावरीका अुद्गम-स्थान है।

अुद्गमकी खोज : "मेरी धारणा है कि गगोत्री, जमनोत्री, केदार, बदरी, अमरनाथ, खोजरनाथ, मानसरोवर, राकसताल, परशुराम कुड, अमरकटक, महाबलेश्वर, त्र्यबक आदि सारे तीर्थस्थान नदीका अुद्गम खोजनेकी प्राकृतिक जिज्ञासाके ही परिणाम हैं। अुत्तरी ध्रुवके आसपास रहनेवाले आर्य लोग जिस प्रकार अिस वातकी खोज करनेके लिअे बाहर निकले कि हमें अुष्णता देनेवाला सूर्य कहासे अुदय होता है और कहा अस्त होता है, और चारो महाद्वीपोमें फैल गये, अुसी प्रकार हिन्दुस्तानकी सतानें अपने-अपने ढोर-बछेरू लेकर, या अकेले ही, नदीके अुद्गमकी खोज करती हुअी घूमी हो तो कोअी आश्चर्य नही।" — 'हिमालयकी यात्रा', प्रकरण २१, पृ० १०९।

अजताकी गुफाओके पास भी अेक छोटीसी नदीका अुद्गम है।

शकरराव गुलवाडीजी : कारवारकी ओरके अेक सर्वोदय कार्यकर्ता।

कवि बोरकर : गोवाके कोकणी तथा मराठी भाषाके प्रसिद्ध कवि।

५. गगामैया

पृ० १७ देवव्रत भीष्म : शातनु और गगाके आठवें पुत्र देवव्रत। अपने पिता शातनु सत्यवती नामक धीवर-राजकी कन्यासे विवाह कर सके, अिसलिअे अुन्होने आजीवन ब्रह्मचारी रहनेकी भीषण प्रतिज्ञा

ली थी और अुसे पालाथा। अिसलिये वे भीष्मके नामसे प्रसिद्ध हुओ। अिसी कारण आज भी जब कोओी बडी प्रतिज्ञा लेता है, तब अुस प्रतिज्ञाको हम 'भीष्म प्रतिज्ञा' कहते हैं। भीष्म=भीषण, भयकर।

आर्योके बडे-बडे साम्राज्य हर्षका, मौर्याका आदि।

कुरु पाचाल दिल्लीके आसपासका प्रदेश कुरु और गगा-यमुनाके बीचका प्रदेश पाचाल कहा जाता था।

अग-वगादि गगाके दाये तट पर जो प्रसिद्ध राज्य था अुसका नाम था अग। चपा अुसकी राजधानी थी। यह नगरी आजकलके भागलपुरके स्थान पर या अुसके आसपास कहीं थी। वग कहते हैं पूर्व बगालको। अिसमे बगालके समुद्र-तटका भी समावेश होता था। अुत्तर बगालका नाम था गौड या पुड्र।

पृ० १८ जब हम गगाका दर्शन करते हैं स्मरण हो आता है. गगाके तट पर सिर्फ खेती और व्यापारका ही विकास नही हुआ है, बल्कि काव्य, धर्म, शौर्य और भक्ति — सक्षेपमें पूरी सस्कृतिका विकास हुआ है।

श्री जवाहरलाल नेहरूने अपनी 'डिस्कवरी ऑफ अिडिया' नामक पुस्तकमे भारतकी नदियोके बारेमे लिखते हुओ गगाके सिलसिलेमें अिस प्रकार लिखा है

" and the Ganga, above all *the* river of India, which has held India's heart captive and has drawn uncounted millions to her banks since the dawn of history The story of the Ganga, from her source to the sea, from old times to new, is the story of India's civilization and culture, of the rise and fall of empires, of great and proud cities, of the adventure of man and the quest of the mind which has so occupied India's thinkers, of the richness and fulfilment of life as well as its denial and renunciation, of ups and downs, and growth and decay, of life and death" p 43

" और गगा तो खास तौर पर भारतकी नदी है। अिति-हासके अुप कालसे वह भारतके हृदय पर अपनी सत्ता जमाती आयी

है और अपने तटो पर असख्य लोगोको आकर्षित करती आयी है। गगाके अुद्गमसे लेकर सागरके साथके अुसके सगम तककी और प्राचीन कालसे लेकर अर्वाचीन काल तककी अुसकी कहानी, भारतकी सस्कृतिकी और अुसकी सभ्यताकी कहानी है — साम्राज्योके अुत्थान और पतनकी, विशाल और गौरवशाली नगरोकी, मानवके साहसोकी तथा भारतके चितकोको व्यग्र रखनेवाले तत्त्वोके अन्वेषणकी, जीवनकी समृद्धि और सफलताकी तथा निवृत्ति और सन्यासकी, अुतार और चढावकी, वृद्धि और क्षयकी, जीवन और मरणकी कहानी है।"

अुत्तरकाशी : गगोत्रीसे निकलनेके बाद गगा जहा सर्वप्रथम अुत्तर-वाहिनी होती है वह स्थान। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० ३५।

देवप्रयाग : भागीरथी और अलकनदाका सगमस्थान। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २५।

लक्ष्मणझूला : हृषीकेशके पास गगा नदी पर यह स्थान है। यहा पहले छीकोका पुल था। अब वहा लोहेकी साकल और सीखचोका झूलनेवाला पुल है। यही लक्ष्मणजीका मदिर है। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २३।

विकराल दष्ट्रा : विकराल दाढ। तुलना कीजिये 'बहूदर बहु-दष्ट्राकरालम्'। गीता, ११–२४, 'दष्ट्राकरालानि च ते मुखानि'। गीता, ११–२५

त्रिवेणी सगम : गगा, यमुना और (गुप्त) सरस्वतीका सगम। प्रयागमे तीनो नदियोके प्रवाह अेकत्र हो जाते है, असलिअे वहा अुनको 'युक्तवेणी' कहते है। बगालमे अेक प्रवाहमे से अनेक प्रवाह बन जाते है, असलिअे वहा अुनको 'मुक्तवेणी' कहते है। देखिये पृ० १५४ की टिप्पणी।

वर्धमान : बढती हुअी।

गगा शकुन्तला जैसी . . दीखती है : देखिये पृष्ठ २१।

शर्मिष्ठा और देवयानीकी कथा : दैत्यगुरु शुक्राचार्यकी कन्या देवयानीके साथ दैत्यराज वृषपर्वाकी कन्या शर्मिष्ठाकी मित्रता थी। अेक दिन दोनो जलक्रीडाके लिअे गयी। नहानेके बाद देवयानी पहले

बाहर आयी और गलतीसे अुसने शर्मिष्ठाके कपडे पहन लिये। जिस पर दोनोंके बीच झगडा शुरू हुआ। शर्मिष्ठाने देवयानीको अेक कुअेंमें धकेल दिया। थोडी देरमें मृगयाके लिअे निकला हुआ राजा ययाति पानीकी खोजमें वहा आ पहुचा। अुसने देवयानीको कुअेंसे बाहर निकाला। देवयानीने घर जाकर सारा किस्सा अपने पिताको सुनाया। शुक्राचार्य गुस्सा हुअे और वृषपर्वाका राज्य छोडनेके लिअे तैयार हो गये। अतमें राजा शर्मिष्ठाको देवयानीकी दासीके तौर पर रखनेके लिअे तैयार हुअे तभी जाकर शुक्राचार्य शात हुअे। अिसके बाद देवयानीने राजा ययातिसे विवाह किया और अपनी दासी शर्मिष्ठाको साथमें लेकर वह ससुराल गयी। शर्मिष्ठाके रूप-गुण पर मुग्ध होकर ययातिने अुसके साथ गुप्त विवाह किया। अतमें अुसीका सबसे छोटा पुत्र राज्यका अुत्तराधिकारी बना।

अिसीलिअे देवयानीकी कहानी सुनते समय यहाके 'बडी कठि-नाअीके साथ' मिलते हुअे गगा और यमुनाके प्रवाहोका स्मरण होता है।

पृ० १९ प्रयाग-राज [प्र (अच्छी तरहसे) + यज् (पूजा करना) + अ (अधिकरण) = जहा अुत्तम रूपसे पूजा हुअी अैसा स्थान।] याग = यज्ञ। यज्ञके लिअे पवित्रतम स्थान, गगा, यमुना और सरस्वतीका सगम-स्थान, अिलाहाबाद।

सरयू कैलास पर्वत पर स्थित मानस सरसेंसे जिसका अुद्गम हुआ है वह नदी। सर यानी सरोवर। सरोवरमें से निकली अिसलिअे वह 'सरयू' कहलायी। अयोध्या अुसके तट पर है। अुसीको घाघरा भी कहते हैं।

चबल देखिये पृ० १७१

रतिदेव देखिये पृ० १७२

शोणभद्र देखिये पृ० १६८

गजग्राह देखिये पृ० १६८

पाटलीपुत्र बिहार राज्यका आजका पटना शहर। अिसीको कुसुमपुर भी कहते थे। चद्रगुप्त मौर्य, अशोक, आदि सम्राटोकी वह राजधानी था। गुरु गोविन्दसिंहके जन्मस्थानका गुरुद्वारा यही है।

मगध साम्राज्य. समुद्रगुप्तके समय अिस साम्राज्यका विस्तार सिन्धुसे लेकर कावेरी तक था।

'दाक्षिण्य' सस्कृत भाषामे दाक्षिण्य शब्दके दो अर्थ होते है —दक्षिण दिशा और विनयी स्वभाव। लेखकने यहा दोनो अर्थ सूचित किये है। 'दाक्षिण्य धारण कर' अिन शब्दोमे अुन्होने अिस बातका वर्णन किया है कि यहासे ये दोनो नदिया दक्षिणकी ओर बहने लगती है, और यह भी बताया है कि वे विनय धारण करती है। विनयके अर्थमे दाक्षिण्यका लक्षण अिस प्रकार दिया गया है

दाक्षिण्य चेष्टया वाचा परचित्तानुवर्तनम्।

[केवल सद्भावके कारण वाणी और वर्तनसे दूसरेकी वृत्तिके अनुकूल होना—यही दाक्षिण्य है।]

पृ० २० सगरपुत्र: सूर्यवशी राजा बाहुने शत्रुओसे पराजित होने पर राजपाट छोड दिया और वह हिमालयके जगलोमे भाग गया। वही अुसका अवसान हुआ। अुस समय अुसकी अेक रानी यादवी सगर्भा थी। अुसकी सौतने गर्भका नाश करनेके हेतुसे यादवीको खुराकमे जहर खिला दिया। परन्तु गर्भनाश नही हुआ और अुसे पुत्र हुआ। वह 'गर' नामक जहरके साथ पैदा हुआ अिसलिअे 'सगर' कहलाया। सगर बडा हुआ तब अुसने अपने पिताका राज्य शत्रुसे वापिस ले लिया। अुसकी शैब्या नामक अेक रानी थी। अुसने असमजस् नामक अेक पुत्रको और अेक पुत्रीको जन्म दिया। अुसकी दूसरी रानी थी वैदर्भी। अुसने अेक मासपिडको जन्म दिया, जिसमें से साठ हजार पुत्र पैदा हुअे। सगरने ९९ यज्ञ करनेके बाद जब सौवा यज्ञ शुरू किया और घोडेको छोडा, तब अिन्द्रने अुसकी चोरी की और पातालमे जाकर कपिल मुनिके आश्रममे अुसे बाध आया। अिधर सगरके साठ हजार पुत्रोने घोडेकी खोज शुरू की। अुन्होने सारी पृथ्वी खोद डाली, जिससे अुसमे पानी भर गया। अिसीलिअे यह पानीवाला स्थान सगरके नाम परसे 'सागर' कहलाने लगा। काफी प्रयत्नोके बाद वे पातालमे पहुचे। वहा अुन्होने कपिल मुनिके आश्रममे घोडेको

देखा। मुनिको ही चोर मानकर अुन्होंने मुनिका बड़ा अपमान किया। अिस पर मुनिने शाप देकर अुनको भस्म कर डाला। अिसके बाद असमजस्का पुत्र अंशुमान मुनिको प्रसन्न करके घोड़ा ले आया। जिस प्रकार यज्ञ सपन्न हुआ। मुनिने प्रसन्न होकर अुसको अपने साठ हज़ार पूर्वजोंके अुद्धारका मार्ग भी बतलाया और कहा कि यदि कोअी स्वर्गमें बहनेवाली गंगाको पृथ्वी पर अुतार दे और अुसके जलका अुन्हें स्पर्श करा दे तो अुनका अुद्धार होगा। अिसलिअे अंशुमानने अपना शेष जीवन तपश्चर्यामें बिताया। अंशुमानके पुत्र दिलीपने भी यह तपश्चर्या चालू रखी और अंतमें अुनके पुत्र भगीरथने बड़ी कड़ी तपश्चर्या करके गंगाको पृथ्वी पर अुतारा और अुसका प्रवाह अपने साठ हज़ार पूर्वजोंकी भस्म परसे बहा कर अुनका अुद्धार किया। यहां अिसीका अुल्लेख है। भगीरथने गंगाको अुतारा, अतः गंगा भागीरथी कहलाअी।

[अिस प्रकार भगीरथको नहर बांधनेमें निष्णात मानकर Irrigation के लिअे लेखकने अेक सुन्दर पारिभाषिक शब्द प्रचलित किया है — भगीरथ-विद्या।]

६ यमुना रानी

पृ० २१ भव्यताकी भव्यताको कम करते रहना अपार भव्यता बिखेर कर 'अतिपरिचयाद् अवज्ञा' के न्यायसे भव्यताका महत्त्व कम करना।

अूर्जस्विता भव्यता।

गगनचुंबी और गगनभेदी अिन दो शब्दोंके बीचका भेद ध्यानमें लीजिये।

असित ॠषि व्यासजीके अेक शिष्य। देखिये 'हिमालयकी यात्रा' के प्रकरण ३३ का अंतिम भाग। असित = कृष्ण।

देवाधिदेव महादेव। स्वर्गसे अुतरी हुअी गंगाको महादेवजीने अपनी जटाओंमें धारण किया था।

पृ० २२ अेक काव्यहृदयी ॠषि लेखकने अुनका नाम रखा है — 'यामुन ॠषि'। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० ३१।

अतर्वेदी पुराने समयमे गगा और यमुनाके बीचके प्रदेशको अतर्वेदी कहते थे। अिस परसे आजकल दो नदियोके बीचके किसी भी प्रदेशको अतर्वेदी (दो-आब) कहते है।

श्रीनगर · काश्मीरका श्रीनगर नही। यह स्थान केदार जाते बीचमे आता है। यह सिद्धपीठ कहलाता है। यहा की हुअी साधना व्यर्थ नही जाती और शीघ्र फलदायी होती हे। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २६ और 'जीवनका काव्य' नामक लेखककी दूसरी पुस्तकमे शकराचार्यसे सम्बन्धित प्रकरण।

ब्रह्मावर्त . कुरुक्षेत्रके समीपका दृपद्वती और सरस्वतीके बीचका प्रदेश। आजकल ब्रह्मावर्तको 'बिठूर' कहते है।

हत्यारे भूमिभागको . क्योकि यहा अनेक भीषण युद्ध हुअे थे।

पृ० २३ सचिववाणी सचिव = मित्र या मत्री। यहा दोनो अर्थ लिये जा सकते है — मित्रतापूर्ण सलाह और सुलहकी बाते। कौरव-पाडवोके बीच सुलह हो अिसलिअे भगवान श्रीकृष्णने हस्तिनापुरमे ही सन्धिकी बातचीत की थी।

रोमहर्षण रोगटे खडे कर देनेवाली। 'सवादम् अिमम् अश्रौपम् अद्‌भुत रोमहर्षणम।' गीता, १८–७४।

यमराजकी बहनका भाअीपन यम तथा यमुना अथवा यमी और अश्विनीकुमार सूर्य और अुसकी पत्नी सज्ञाकी सतान माने जाते हैं। अेक बार सज्ञाको अपने पिता विश्वकर्माके घर जानेकी अिच्छा हुअी, किन्तु सूर्यने अिजाजत न दी। अत अुसने अपनी मायाके बलसे छाया नामक अेक स्त्रीका सर्जन किया और अुसको सूर्यके पास रखकर स्वय पीहर चली गअी। छाया सज्ञासे अितनी मिलती-जुलती थी कि सूर्यको पता ही नही चला कि वह सज्ञा नही है। छायाने ही यमकी परवरिश की। किन्तु बादमे अुसमे सौतेली माकी भावना जाग्रत हुअी और अुसने यमकी अुपेक्षा शुरू की। अिससे यम गुस्सा होकर अुसे लात मारनेको तैयार हुआ। तब छायाने अुसे शाप दिया, जिससे यमके दोनो पैरोमे घाव हो गये और अुसमे कीडे बिलबिलाने लगे।

यमने सारी वात सूर्यसे कही। सूर्यने अुसे अेक कुत्ता दिया, जो अुसके घावमें से पीव व कीडे चाटने लगा।

कहते है कि यमने दक्ष-प्रजापतिकी तेरह कन्याओंके साथ विवाह किया था। अिससे अुसे श्रद्धासे सत्य, मैत्रीसे प्रमाद, दयासे अभय, शातिसे शम, तुष्टिसे हर्ष, पुष्टिसे गर्व, क्रियासे योग, अुन्नतिसे दर्प, बुद्धिसे अर्थ, मेधासे स्मृति, तितिक्षासे मगल, लज्जासे विनय और मूर्तिसे नर और नारायण नामक पुत्र पैदा हुअे।

वह जीवके पाप-पुण्योका न्याय करता है। जिसमे चित्रगुप्त नामक अुसका अेक मत्री पाप-पुण्यकी वही रखकर अुसकी मदद करता है। दड अुसका हथियार है और पाडा अुसका वाहन है।

सारी सृष्टि पर शासन करनेवाले अैसे भाअीकी वहन भी अुतनी ही प्रतापी होगी। अिसलिअे अुसका भाअी वननेके लिअे मनुष्यमें असाधारण योग्यता होनी चाहिये। कोअी मामूली आदमी यह स्थान नही ले सकता।

पारिजातके फूलके समान सुदर और सुकोमल।

ताजवीवी मुमताजमहल वडा भारी नाम मालूम होता है, अिसलिअे यह नाजुक-सा नाम लिया है। आगराके लोगोमे 'ताज-वीवीका रोजा' नामसे ही यह अिमारत प्रख्यान है।

जमे हुअे आसू शुभ्रमूर्ति ताजमहल। लेखकने अपने ताजमहलके वर्णनमे लिखा है 'यह मकवरा नही है, वल्कि अेक अैसा स्थान है जहा अेक रसिक सम्राटका दुःख जमकर वर्फके जैसा सफेद हो गया है।' कविवर रवीन्द्रनाथने अिसको कालके कपोल (गाल) पर पडा हुआ अश्रुविंदु कहा है

अे कथा जानिते तुमि भारत-अीश्वर शा-जाहान
कलस्रोते भेसे जाय जीवन यौवन धनमान।
शुधु तव अन्तर्वेदना
चिरतन हये थाक सम्राटेर छिल जे साधना।
राजशक्ति वज्रसुकठिन

सन्ध्या-रक्तराग-सम तन्द्रातले हय होक लीन,
केवल अेकटि दीर्घश्वास
नित्य-अुच्छ्वसित हये सकरुण करुक आकाश
अेअि तव मने छिल आश।
हीरा-मुक्ता-माणिक्येर घटा।
जेन शून्य दिगन्तेर अिन्द्रजाल अिन्द्रधनुच्छटा
जाय जदि लुप्त हये जाक,
शुधु थाक
अेकविन्दु नयनेर जल
कालेर कपोलतले शुभ्र समुज्ज्वल
अे ताजमहल ॥

जिस प्रकार पानी जमकर सफेद बर्फ हो जाता है, या घी जमने पर सफेद हो जाता है, अुसी प्रकार सम्राट्के आसुओके जमने पर अुन्होने सफेद सगमरमरका रूप ले लिया है—अैसा सूचन यहा हे।

चर्मण्वती · देखिये प्रकरण ४१।

सिन्धु : मालवा होकर बहनेवाली अिस नामकी छोटीसी नदी। अिसका अुल्लेख 'मेघदूत' के २९वे श्लोकमे आता है।

वेणीभूत-प्रतनु-सलिला सावतीतस्य सिन्धु
पाण्डु-च्छाया तट-रुह-तरुभ्रशिभिर् जीर्णपर्णे।
सौभाग्य ते सुभग विरहावस्थया व्यजयन्ती
कार्श्य येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्य ॥

महाकवि भवभूतिके 'मालतीमाधव' के चौथे अकके अतिम विभागमे मकरद माधवसे कहता है 'अुठो, पारा और सिन्धु नदीके सगममे स्नान करके हम नगरमे ही प्रवेश कर ले।'—तदुत्तिष्ठ पारासिंधुसभेदमवगाह्य नगरीमेव प्रविशाव।

कालिदासके 'मालविकाग्निमित्र' नाटकके पाचवें अकके १४वें तथा १५वे श्लोकके नीचे अेक पत्र आता है, जिसमे अिस नदीका अुल्लेख है "योऽसौ राजसूययज्ञदीक्षितेन मया राजपुत्रशतपरिवृत वसुमित्र
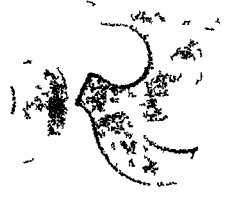
गोप्तारम् आदिश्य सवत्सरोपावर्तनीयो निरर्गलस्तुरगो विसृष्ट स सिन्धोर्दक्षिणरोधसि चरन्नश्वानीकेन यवनाना प्रार्थित ।"

[राजसूय यज्ञकी दीक्षा लिये हुअे मैंने सौ राजपुत्रोंसे घिरे वसुमित्रको रक्षण करनेका आदेश देकर अेक वर्षमें वापस लानेकी बात कहकर जो घोडा छोडा था, वह सिन्धुके दक्षिण तट पर घूम रहा था। वहा यवनोंके अश्वदलने अुसकी अिच्छा की (अुसको रोका)।]

वहाकी मिश्रीसे मुह मीठा बनाकर कालपीमें मिश्रीके कारखाने है, अिस बातका यहा सूचन है।

अक्षयवट प्रयाग, भुवनेश्वर, गया आदि तीर्थस्थानोंमें बोये हुअे वटवृक्ष। कहते हैं कि अिस वटकी पूजा करनेसे, अिसे पानी पिलानेसे अक्षय पुण्यकी प्राप्ति होती है, अिसलिअे अुसे अक्षयवट कहते हैं। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २।

बूढा अकबर अकबरने यहा किला बनवाया है अिस बातका सूचन। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २।

पृ० २४ अशोकका शिलास्तभ अिस पर अशोकका धर्मलेख खुदा हुआ है। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० २।

सरस्वती वाणी। गुप्तस्रोता सरस्वतीका भी यहा सूचन है।

कादब कलहस।

धवल-शीला जिसका शील (चारित्र्य) शुभ्र है।

अिन्दीवर-श्यामा नीलकमलके जैसी श्याम। अिन्दीवर = नील-कमल।

सस्कृत कवियोंकी अेक पुरानी कल्पना है कि अिन्दीवर-श्याम और गौरवर्णके सगमसे अेक-दूसरेकी शोभाके कारण सौन्दर्य अुत्पन्न होता है। देखिये

अिन्दीवर-श्यामतनुर् नृपोऽसौ त्व रोचना-गौर-शरीर-यष्टि ।
अन्योन्य-शोभा-परिवृद्धये वा योगम् तडित्तोयदयोर् अिवास्तु ॥

—रघुवश, ६–६५

सुधा-जला सुधा = अमृत। अमृत जैसे जलवाली। कहते हैं कि अमृतका रग शुभ्र होता है। अिसलिअे यहा 'शुभ्र जलवाली' अिस
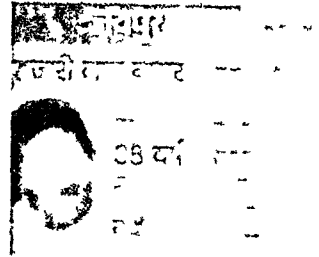
अर्थमें भी यह शव्द लिया जा सकता है। फिर, सुघाका दूसरा अर्थ होता है चूना। और चूनेका रग सफेद होता ही है। अिस अर्थमे भी 'सफेद जलवाली' ही कह सकते हैं। तुलना कीजिये सुघाधवल।

जाह्नवी : गगा। सगरपुत्रोके अुद्धारके लिअे भगीरथ गगाको लेकर जा रहा था। मार्गमे जह्नु नामक अेक राजर्षिकी यज्ञ-सामग्री अुसमें वह गयी। अिससे क्रुद्ध होकर ऋषि अपने तपोवलसे गगाको पी गये। मगर भगीरथने अुनकी वहुत स्तुति की, तव अुन्होने अपने कानमें से (कअी लोगोके मतके अनुसार जाघमे से) गगाको निकाला। अिस परसे गगाको जाह्नवी नाम भी प्राप्त हुआ।

७ मूल त्रिवेणी

पृ० २५ ब्रह्मकपाल हिमालयमे वदरीनारायण तीर्थमें अिस नामकी अेक शिला है। शास्त्रोमे लिखा है कि अिस शिला पर बैठकर श्राद्ध करनेसे मनुष्यके सभी पूर्वज अेकसाथ मोक्ष पाते है और वह पितरोके ऋणसे सदाके लिअे मुक्त होता है। देखिये 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० ४२।

पृ० २६ हरिके चरण · हरिकी पैडीका सूचन है।

८. जीवनतीर्थ हरिद्वार

पृ० २६ त्रिपथगा तीन मार्गोसे वहनेवाली, स्वर्गगामिनी मदाकिनी, मर्त्यवाहिनी गगा और पातालगामिनी भोगवती।

पृ० २७ प्रशम-कारी · शातिदायक। प्रशमका अर्थ निर्वाण और वैराग्य भी हे।

पृ० २८ 'महोल्ला' सिख गुरुओके भजनोके अतमें नानकका ही नाम आता है। अिससे कौनसा भजन किस गुरु द्वारा लिखा गया है, यह नाम परसे मालूम नही हो सकता। 'ग्रथसाहवका' जव सग्रह किया गया, तव ये सव भजन गुरुके क्रमके अनुसार अलग किये गये और हरअेक गुरुके भजनोका 'महोल्ला' अलग माना गया। अिस परसे अव कौनसा भजन किम गुरुका हे यह मालूम किया जा सकता है।

आसा-दि-वार : आसावरी राग।

मुक्तिफौज . 'सालवेशन आर्मी' नामक फौजी ढंगसे संगठित खिस्ती लोगोंकी अेक संस्था है, जिसके सदस्य गेरुवे वस्त्र पहनते हैं।

पृ० २९ दीपदानका अिसी तरहका काव्यमय वर्णन लेखकने 'हिमालयकी यात्रा' में 'गंगाद्वार' शीर्षक लेखमें किया है। अुसे देखिये।

पृ० ३० वाजिनीवती अुषा ऋग्वेदके अुषा-संबंधी सूक्तमें अुसको वाजिनीवती कहा गया है। वहां अुसका अर्थ 'बलवती' या 'समृद्धिशाली' होता है।

> अुषस् तत् चित्रतमा भर अस्मभ्य वाजिनीवती।
> येन तोकं च तनयं च धामहे॥

[हे बलवती और समृद्धिशालिनी अुषा, हमें सुन्दर (बल या संपत्ति) दे, जिससे हम पुत्र और प्रपौत्रको धारण कर सकें।] मंडल १, सूक्त ९२-१३

'वाज' का अर्थ है बल, वीर्य, वेग। अिस परसे 'वाजिन्' कहते हैं बलवान, वीर्यवान, वेगवानको। फिर, अिसका अर्थ हुआ — जिसमें ये सब गुण हैं अैसा युद्धके रथका घोड़ा। अिसीका स्त्रीलिंगी रूप है 'वाजिनी' = घोड़ी। अिस परसे 'वाजिनीवत्' कहते हैं वेगवान घोड़ी हांकनेवालेको या अुसके मालिकको। अिसीका स्त्रीलिंगी रूप है — 'वाजिनीवती'। जब यह विशेषण सिन्धु या सरस्वतीको लगाते हैं तब अुसका अर्थ होता है — बलवान, वेगवान घोड़ोंसे समृद्ध।

बल और वीर्य समृद्धिका मूल है। अिससे समृद्धिका अर्थ भी अिसमें आ जाता है। और धान्य तो अेक प्रकारकी समृद्धि है ही। अिससे अिस शब्दमें यह अर्थ भी समाया हुआ है। कभी कभी 'वाजिनीवती' का अर्थ 'अन्नवाली' भी होता है।

> स्वश्वा सिन्धुः सुरथा सुवासा हिरण्मयी सुकृता वाजिनीवती।
> अूर्णावती युवतिः सीलमावत्युताधि वस्ते सुभगा मधुवृधम्॥
> मं० १०, सू० ७५-८

[अुत्तम अश्वोवाली, अच्छे रथोवाली, सुन्दर वस्त्रोवाली, हिरण्य-वाली, सुघटित, अन्नवती, अूनवाली, सनवाली युवती और सुभगा सिन्धु मधुवृधको (मधु वढानेवाले पौधेको) धारण करती है।]

कठोपनिपद्मे 'वाजस्रवस्' का अुल्लेख है। वहा 'वाज' का अर्थ है अन्न। अुसके दान आदिके कारण जिसको 'स्रवस्' = यश मिला है वह है 'वाजस्रवस्'।

'वाजीकर' औपधि यानी शक्तिवर्धक दवाअी। 'वाजीकरण' प्रयोग यानी शक्ति वढानेका प्रयोग। ये शब्द भी अिसके साथ सवद्ध है।

९. दक्षिणगगा गोदावरी

अुठोनिया० 'प्रात कालमे अुठकर मुहसे चद्रमौली शिवका नाम लो। श्रीविदुमाधवके पास गगामे स्नान करो, गोदावरीमे स्नान करो। कृष्णा, वेण्ण्या, तुगभद्रा, सरयू, कालिदी, नर्मदा, भीमा, भामा, — अिन सब नदियोमे गोदावरी मुख्य है, अिस गगामे स्नान करो।'

श्री रामचद्रके अत्यत सुखके दिन : सीता और लक्ष्मणके साथ विताये हुअे वनवासके दिन।

जीवनका दारुण आघात · सीताके हरणका।

पृ० ३१ वाल्मीकिकी अेक कारुण्यमयी वेदनामें से क्रौचवध जैसे अेक छोटेसे प्रसगमे से करुणाकी भावना जाग्रत होकर जिस प्रकार रामायणके जैसा महाकाव्य पैदा हुआ अुस प्रकार।

पृ० ३२ सहनवीर रामचन्द्र और दु खमूर्ति सीतामाता · अिन विशेपणोकी योग्यता ध्यानमे लीजिये। तुलना कीजिये 'दु ख-सवेदना-यैव रामे चैतन्यनम् आहितम्।' —अुत्तररामचरित

कषाय : कसैले।

कल्पातिक · कल्प = ब्रह्माका अेक दिन = १००० युग = ४३२० लक्ष मानवी वर्ष। सृष्टिकी आयु अितनी मानी जाती है। सृष्टिके अत तक जो बना रहे वह है कल्पातिक दु ख। (कल्प + अत + अिक)

जनस्थान : दडकारण्यका अेक हिस्सा, जहा गोदावरीके तट पर श्री रामचद्र रहते थे। वहा राक्षसोका अुपद्रव कम था, अिसलिअे

मनुष्य वहा रह सकते थे। मनुष्योंके रहनेके योग्य स्थान होनेसे वह 'जनस्थान' कहलाता था।

जटायु अरुणका पुत्र, सपातिका छोटा भाओी, दशरथ राजाका परम मित्र। रावण जब सीताको लेकर जा रहा था, तब सीताके मुखसे 'राम', 'राम' की पुकार सुनकर जटायुने सीताको छुडानेके बहुत प्रयत्न किये। किन्तु वह असफल रहा। अुसको मरणासन्न स्थितिमें डाल कर रावण सीताको लेकर चला गया। अिधर जब राम सीताकी खोज करते हुअे वहा पहुचे, तो जटायुने अुन्हें खबर दी कि सीताको रावण अुठा ले गया है, और फिर प्राण छोडे।

पृ० ३३ सीतामाताकी कातर तनु-यष्टि तुलना कीजिये —

अस्मिन्नेव लतागृहे त्वमभवस्तन्मार्गदत्तेक्षण
सा हसैः कृतकौतुका चिरम् अभूद् गोदावरीसैकते।
आयान्त्या परिदुर्मनायितमिव त्वा वीक्ष्य बद्धस्त्वया
कातर्याद् अरविन्दकुड्मलनिभो मुग्ध प्रणामाञ्जलि ॥

—अुत्तररामचरित, ३–३७

पाडेके मुहसे करवानेवाले महाराष्ट्रके सतकवि ज्ञानेश्वरके पिता विट्ठलपत शुरूसे ही वैराग्य-परायण वृत्तिके थे। जवानीमें तीर्थयात्रा करते करते वे अेक बार आळंदी पहुचे। वहाके अेक ब्राह्मणने अुनकी योग्यताको देखकर अपनी लडकी अुन्हें ब्याह दी। मगर विवाहके कारण विट्ठलपतकी वैराग्य-वृत्ति दब नही पायी। 'मैं गगास्नानके लिअे जा रहा हू' कहकर अुन्होंने घर छोडा और काशीमें जाकर 'मेरे स्त्री-पुत्र आदि कुछ नही है' कहकर रामानद स्वामीसे सन्यासकी दीक्षा ली। कुछ समयके बाद रामानद स्वामी रामेश्वरकी यात्राके लिअे जाते हुअे रास्तेमें आळंदी पहुचे। वहा विट्ठलपतकी पत्नी पतिके सन्यासकी बात सुनकर व्रतोपासनासे जीवन बिता रही थी। गावमें रामानद स्वामीके आनेकी खबर सुनकर वह अुनके पावोंमें पडनेके लिअे आयी। सन्यासीने जब अुसको 'पुत्रवती भव' कहकर आशीर्वाद दिया तब वह हसी। सन्यासीने हसनेका कारण पूछा। अुसने अपनी कहानी सुना दी। रामानद आळंदीसे ही वापस काशी गये और

विट्ठलपतको धमकाकर वापस गृहस्थ-जीवन वितानेके लिअे भेज दिया। अिनके चार सतान हुअी निवृत्तिनाथ, ज्ञानदेव, सोपानदेव और मुक्ता-वाअी।

किन्तु शास्त्रोमे सन्यामीको फिरसे ससारी वननेकी अनुज्ञा नही है। अिसलिअे समाज अिम कुटुवको सताने लगा। अिनके वच्चोको जनेअू देनेके लिअे कोअी तैयार नही हुआ। अतमे विट्ठलपत पैठण गये और वहाके व्राह्मणोके पावोमे पडकर अुन्होने कहा, 'मेरे लिअे कोअी भी प्रायश्चित्त वता दो, किन्तु मुझे शुद्ध करो और मेरे बच्चोको अुपवीत सस्कार देनेकी अनुज्ञा दो।' व्राह्मणोको शास्त्रोमे कोअी आधार नही मिला। अुन्होने कहा, 'तुम्हारा पाप ही अितना वडा है कि तुम्हारे लिअे देहत्याग ही अेक अुपाय है। और तुम्हारे वच्चोको अुपवीत दिया ही नही जा सकता।' विट्ठलपत और अुनकी पत्नीने प्रयाग जाकर गगामे जल-समाधि ले ली!

अिसके वाद अिन चारो वच्चोने आळदीके व्राह्मणोसे प्रार्थना की कि 'हम व्राह्मणके वच्चे है, हमे अुपवीत सस्कार मिलना चाहिये।' किन्तु व्राह्मणोने जवाव दिया कि पैठणके व्राह्मणोसे शुद्धि-पत्र लाने पर अुपवीत दिया जा सकेगा।

वच्चे पैठण गये। वहाके व्राह्मणोके सामने अुन्होने अपनेको समाजमे लेनेकी माग पेश की। किन्तु व्राह्मणोने कहा, 'सन्यासीके वच्चोको अुपवीतका अधिकार किसी भी शास्त्रमे नही हे। अिसके लिअे कोअी प्रायश्चित्त भी नही हे। अत तुम सर्वत्र अीश्वरभाव रखकर जितेन्द्रिय वनो, विवाह मत करो और सदा हरिभजनमे मग्न रहो।'

निर्णय देकर सभा समाप्त होनेवाली थी, अितनेमे अिन चारो वच्चोको किसीने अुनके नामोके अर्थ पूछे। निवृत्तिनाथने कहा, 'मेरा नाम निवृत्ति है। मै कभी प्रवृत्तिमे पडनेवाला नही हू।' ज्ञानदेवने कहा, 'मै ज्ञानदेव हू। सकल आगमोको जाननेवाला हू।' सोपानदेवने कहा, 'मै भक्तोको अीश्वर-भजन सिखाकर वैकुठ प्राप्त करानेवाला सोपान हू।' मुक्तावाअीने कहा, 'मै विश्वकी लीला दिखानेके लिअे प्रकट हुअी अीश्वरकी लीलारूपी मुक्ति हू।'

यह जवाब सुनकर अुस आदमीने कहा, 'नाम तो चाहे जैसे रखे जा सकते हैं। वह जो पाडा जा रहा है अुसका नाम भी ज्ञानदेव है।'

ज्ञानदेव फौरन बोल अुठे, 'बेशक! अुस पाडेमें और मुझमें कोअी भी भेद नही है। अुसमें भी मेरी ही आत्मा है।'

अुसी समय किसीने अुस पाडे पर तीन चाबुक लगाये और अिधर अुसी क्षण ज्ञानेश्वरकी पीठ पर चाबुकके निशान अुठ आये!

चारो बच्चे ब्राह्मणोको नमस्कार करके अपने गाव वापस जानेके लिअे निकले। रास्तेमें गोदावरीके तीर पर वे बैठे थे। वहा कुछ नौजवान अिकट्ठे हुअे थे। अुन्होने मजाकके तौर पर ज्ञानदेवसे कहा 'तुम यदि शुद्धिपत्र चाहते हो, तो अिस पाडेके मुहमें वेदका पाठ करा दो।' तुरन्त ज्ञानेश्वर पाडेके पास गये और अुसके सिर पर हाथ रखकर अुन ब्राह्मणोसे कहने लगे 'आप तो भूदेव हैं। आपका वचन कभी निष्फल नही जा सकता। देखिये, यह पाडा अब वेदोका पाठ करेगा।'

और सचमुच वह पाडा वेदोकी ऋचाये बोलने लगा!!

ज्ञानेश्वरने गीता पर 'भावार्थ दीपिका' लिखी है, जिसको 'ज्ञानेश्वरी' कहते हैं। अिसके अलावा अुनकी अेक स्वतन्त्र रचना है, जिसका नाम है 'अमृतानुभव'। ये दोनो भारतीय साहित्यके अनमोल रत्न हैं।

दशग्रंथी ऋक्, यजुर्, साम और अथर्व ये चार वेद तथा शिक्षा (स्वरोच्चारण सबधी), छद, व्याकरण, निरुक्त (व्युत्पत्ति और अर्थ सबधी), ज्योतिष और कल्प (सूत्र) ये छह वेदाग — अिन दस ग्रथोको कठ करनेवाले।

पृ० ३४ शकराचार्यके अूपर किये अत्याचार शकराचार्यकी माता अुन्हे सन्यास लेनेकी अिजाजत नही देती थी। अेक बार शकराचार्य नहानेके लिअे नदीमें अुतरे। वहा मगरमच्छने अुनका पाव पकडा। शकराचार्यने पुकार कर माको कहा, 'अब तो मुझे सन्यास लेनेकी अिजाजत दो।' माने अिजाजत दी कि शकराचार्य मगरके जबडेमें से मुक्त हुअे। वे पूरे-पूरे मातृभक्त थे। किन्तु सन्यास-

धर्मके अनुसार वे माताके साथ रह नही सकते थे, माताका दर्शन तक नही कर सकते थे। तो भी अुन्होने घर छोडकर जाते समय मातासे कहा, 'सकटके समय मुझे बुलाओगी तो मैं आ जाअूगा।' और वे चले गये। कुछ समयके वाद मा बीमार पडी। अुसे पुत्रसे मिलनेकी अिच्छा हुअी। वचनके अनुसार शकराचार्य आये और माताके अवसान तक अुन्होने अुमकी सेवा की। माताने सुखसे प्राण छोडे।

किन्तु मुसीबत अब शुरू हुअी। शवको स्मशानमे ले जानेके लिअे गावके ब्राह्मण तैयार नही थे। न अपने स्मशानमे अुस शवको जलानेकी अिजाजत देते थे। लकडी भी किसीने नही दी। ब्राह्मणोने तय किया कि जो सन्यास लेनेके बाद अपनी पूर्वाश्रमकी मामे मिलने आता है अुसका वह कार्य शास्त्रविरुद्ध है, अुसका वहिष्कार ही होना चाहिये। शकराचार्यने अपनी माके शवके चार टुकडे किये, केलेके पेड काटकर ले आये, अुन पर ये टुकडे रखकर अुन्होने अपनी माताके घरके आगनमे ही योगाग्नि जलायी और अपने तपस्तेजसे अुसको सद्गति दी।

शकराचार्यका गाव जिस राज्यमे था, वहाका राजा अुनका शिष्य था। अपने पूज्य गुरु पर गुजरे हुअे अिस जुल्मकी खबर पाते ही अुसने अपने राज्यके नाबुद्री ब्राह्मणोको सजा दी कि वे अपने घरके लोगोके शव स्मशानमे नही ले जा सकते, बल्कि घरके आगनमे ही अुसके चार टुकडे करके जलावे। राजाने अिस सजाका अमल कठोरताके साथ करवानेका निश्चय किया। ब्राह्मण घबडा गये। अुन्होने माफी मागी। तब राजाने शवके चार टुकडे करनेके बदले शवके अूपर चार रेखाये खीचनेकी और बादमे स्मशानमे ले जानेकी अिजाजत दी।

अष्टवक्रा जिसके आठो अग टेढे हो — खूब मोडवाली।

पृ० ३५ जीवन-वितरण जीवन = पानी, वितरण = बाटना।

यानान गोदावरीके मुखके पास यह स्थान है। फ्रेंच कपनीने सन् १७५० में अिसका कब्जा लिया था और दो सालके बाद फ्रेंच सरकारको सौप दिया था। अब यह स्वतत्र भारतमे मिल गया है।

पृ० ३६ चचल कमलोके बीच कमलाको गतिमान बनाकर दृश्यकी शोभा बढानेके लिअे।

भवभूतिका स्मरण भवभूतिने अपने 'अुत्तरगमचरित' में गोदावरीके विविध सौंदर्यका वर्णन किया है अिसलिअे। अुदाहरणके तौर पर देखिये

अेतानि तानि गिरि-निर्झरिणी-तटेषु
वैखानसाश्रित-तरुणि तपोवनानि।
येष्वातिथेयपरमा शमिनो भजन्ते
नीवार-मुष्टि-पचना गृहिणो गृहाणि॥
अुत्तररामचरित १–२५

स्निग्ध-श्यामा क्वचिद् अपरतो भीषणा भोग-रूक्षा
स्थाने स्थाने मुखर-ककुभो झाङ्कृतैर्निर्झराणाम्।
अेते तीर्थाश्रम-गिरि-सरिद्-गर्त-कान्तार-मिश्रा
सदृश्यन्ते परिचित-भुवो दण्डकारण्य-भागा॥
अु० रा० २–१४

अिह समदशकुन्ताक्रान्तवानीरमुक्त-
प्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बू-निकुञ्ज-
स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्य॥
अु० रा० २–२०

अेते त अेव गिरयो विरुवन्मयूरान्-
तान्येव मत्तहरिणानि वनस्थलानि।
आमञ्जुवञ्जुललतानि च तान्यमूनि
नीरन्ध्रनीपनिचुलानि सरित्तटानि॥
अु० रा० २–२३

मेघमालेव यश्चायमारादिव विभाव्यते।
गिरि प्रस्रवण सोऽत्र यत्र गोदावरी नदी॥
अु० रा० २–२४
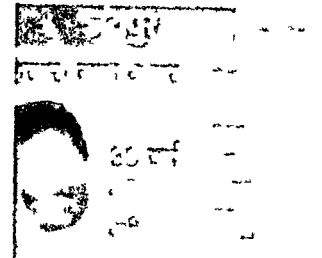
अस्यैवासीन्महति शिखरे गृध्रराजस्य वासस्
    तस्याधस्ताद्वयमपि रतास्तेषु पर्णोटजेषु।
गोदावर्या पयसि विततश्यामलानोकहश्रीर्
    अन्त कूजन्मुखरशकुनो यत्र रम्यो वनान्त ॥

अु० रा० २–२५

गुञ्जत्कुञ्जकुटीरकौशिकघटाघुत्कारवत्कीचक –
    स्तम्वाडम्वरमूकमौकुलिकुल क्रौंचावतोऽय गिरि ।
अेतस्मिन्प्रचलाकिना प्रचलतामुद्वेजिता कूजितैर्
    अुद्वेल्लन्ति पुराणरोहिणतरुस्कन्धेषु कुम्भीनसा ।

अु० रा० २–२९

अेते ते कुहरेषु गद्‌गदनदद्‌गोदावरीवारयो
    मेघालम्वितमौलिनीलशिखरा क्षोणीभृतो दाक्षिणा ।
अन्योन्यप्रतिघातसकुलचलत्कल्लोलकोलाहलैर्
    अुत्तालास्त अिमे गभीरपयस पुण्या सरित्सगमा ॥

अु० रा० २–३०

यत्र द्रुमा अपि मृगा अपि बन्धवो मे
    यानि प्रियासहचरश्चिरमध्यवात्सम् ।
अेतानि तानि वहुकन्दरनिर्झराणि
    गोदावरीपरिसरस्य गिरेस्तटानि ॥

अु० रा० ३–८

वैदिक प्रभात वेदकालमे जहा आर्य रहते थे, वहाका प्रभात कुहरेके कारण धूसर होता था अिसलिअे, अितिहासमे वेदकाल अुप कालके जैसा धुधले प्रकाशवाला माना गया हे अिसलिअे तथा वेदकालमे ही धर्मज्ञानका अुप काल हुआ था अिसलिअे भी।

पृ० ३७ कविकी प्रतिभाके समान . प्रतिभाकी व्याख्या अिस प्रकार है 'प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा मता।'—–नये नये स्फुरण जिस प्रज्ञा (बुद्धि)मे निकलते है, वह प्रतिभा कही जाती हे।

चरित्र [चर् (चलना) + अित्र (साधन) = चलनेका साधन = पैर।] चाल, आचरण। वेदोंमें 'चरित्र' शब्द पैरके अर्थमें आया है। (पैरोंके निशान — चरित्र — देखकर चलनेवालेको यह सूचन मिल जाता है कि बगुला किस दिशामें गया है। दूसरे अर्थमें, चालबाजीभरा आचरण करनेवाले बगलाभगतको बगला दिशा बताता है।)

१० वेदोंकी धारी तुंगभद्रा

पृ० ४१ 'द्वंद्व सामासिकस्य च' समासोंमें मैं द्वंद्व हूं। गीता, १०–३३।

११ नेल्लूरकी पिनाकिनी

पृ० ४२ नेल्लूर (नेल्लु = धान + अूरु = गांव) धानका गांव। यह गांव मद्रासकी अुत्तर दिशामें है।

१२ जोगका प्रपात

पृ० ४४ होन्नावर अुत्तर कर्णाटकमें पश्चिम समुद्र-तट पर स्थित अेक शहर।

पृ० ४५ कारकल दक्षिण कर्णाटकमें मंगलूर और अुडपीके बीच स्थित अेक शहर। यहां हैदरके द्वारा स्थापित हनुमानका मंदिर है। समीपकी टेकरी पर बाहुबलीकी अेक भव्य मूर्ति खड़ी है।

मनसा० मनमें सोचते हैं अेक बात और दैव दूसरी ही बात कर देता है।

चिरसंचित रवीन्द्रनाथकी यह पंक्ति याद कीजिये

बहुदिन वंचित अंतरे संचित कि आशा।

शिमोगा सागर गांवका नाम है।

पृ० ४६ गुजरातमें बाढ़-संकट सन् १९२७ में गुजरातमें अति-वृष्टिके कारण हजारों मकान टूट गये थे। लोग बिना अन्न-वस्त्रके और आसरेके हो गये थे। अुस समय सरदार वल्लभभाअी पटेलने अपनी विलक्षण व्यवस्था-शक्तिसे और धनिकोंकी मददसे लोगोंको राहत देनेका भगीरथ कार्य सफलतापूर्वक किया था।

श्री गंगाधरराव देशपांडे कर्णाटकके अेक नेता।

स्थितधी० स्थितप्रज्ञ कैसे बोलता है, कैसे बैठता है और कैसे चलता है? गीता, २–५४।

कुलशिखरिण० पूरा श्लोक अिस प्रकार है

विरम विरमायासाद् अस्माद् दुरध्यवसायतो
विपदि महता धैर्य-ध्वंस यद् अीक्षितुम् अीहसे।
अयि जडमते! कल्पापाये व्यपेत-निजक्रमा
कुल-शिखरिण क्षुद्रा नैते न वा जलराशय ॥

[अपनी मर्यादा कभी न छोडनेवाला सागर और अपने स्थान पर सदा स्थिर रहनेवाले कुलपर्वत भी जब प्रलयकाल आता है तब चलित होते हैं। किन्तु महात्माओंमें अैसी क्षुद्रता नहीं होती। वे तो संकट जितना अधिक होता है अुतने ही अधिक अडिग रहते हैं। अिस तरह समझाते हुअे कवि कहता है

हे जडमते! विपद् कालके समय महात्माओंका धैर्यनाश देखना यदि चाहते हो तो यह झूठा प्रयास है। अुसको छोड दो। ये महात्मा तुम्हारे क्षुद्र कुलपर्वत नहीं हैं, न पामर सागर हैं, जो प्रलयकाल आते ही अपने स्वधर्म-कर्मके नियमोंको भी तोड देते हैं।]

पृथ्वी पर चाहे जितना अुत्पात हो जाय, फिर भी पृथ्वीकी समतुला संभालनेवाले कुलपर्वत अपनी जगहसे हटते नहीं हैं। अिसीलिअे किसीके धैर्यकी अुपमा देते समय कहा जाता है कि अिसका धैर्य तो कुलपर्वतके समान है।

अिसी प्रकार नदियोंमें चाहे जितनी बाढ आ जाय, तो भी अुनके पानीसे समुद्र या महासागर अुभर नहीं आता। महासागर अपनी मर्यादाको छोडते नहीं, अिसलिअे महासागर भी कवियोंकी सृष्टिमें धैर्य और मर्यादाके लिअे आदर्श अुपमान बन गये हैं।

प्रस्तुत श्लोकमें महात्माओंकी अचल स्थिरताका वर्णन करते समय कवि कहता है कि अुनके सामने कुलपर्वत भी क्षुद्र होते हैं और जलराशि महासागर भी तुच्छ है। क्योंकि हजारों और लाखों साल तक अपनी मर्यादाका अुल्लंघन न करनेवाली ये विभूतियां प्रलयकालके

समय अपना स्वधर्म-कर्म छोड़ देती है। महात्माजीकी बात ऐसी नहीं है।

आदर्श अुपमानको तुच्छ मानकर अुपमेय वस्तु अुपमानसे भी श्रेष्ठ है, यह दिखानेवाली पद्धतिको संस्कृतमें प्रतीप अलंकार कहते हैं। जिसमें अत्युक्ति अवश्य होती है।

पृ० ४७ खंडाला घाट पूना और बम्बअीके बीचका घाट।

पृ० ४८ प्रतीप [प्रति = विरुद्ध + अप् = पानी] प्रवाहके विरुद्ध, अुलटी।

पृ० ४९ तमाशा यहां फजीहतके अर्थमें।

पृ० ५० नमः पुरस्तात् ० हे सर्व! तुम्हें आगेसे, पीछेसे, सभी ओरसे नमस्कार है। तुम्हारा वीर्य अनंत है। तुम्हारी शक्ति अपार है। सब कुछ तुम्हीं धारण कर रहे हो, अतः तुम सर्व हो। गीता, ११–४०

सुदुर्दर्शम् इदम् ० मेरा जो रूप तुमने देखा है, अुसका दर्शन बड़ा दुर्लभ है। देवता भी जिस रूपके दर्शनकी आकांक्षा रखते हैं। गीता, ११–५२

स्वप्न या ० तुलना कीजिये

स्वप्नो नु माया नु मतिभ्रमो नु? — शाकुन्तल, ६–१०

पृ० ५१ व्यपेतभीः ० डर छोड़कर शांतचित्त हो जा और यह मेरा परिचित रूप फिरसे देख ले। — गीता, ११–४९

देवदास देवदास गांधी।

मणिबहन सरदार पटेलकी पुत्री।

लक्ष्मी राजाजीकी पुत्री, बादमें देवदास गांधीकी पत्नी।

पृ० ५२ अण्णा राजाजी।

पत्रं नैव यदा० वसन्त ऋतुमें जब सब वृक्ष-वनस्पतियोंको नये पत्ते आते हैं, तब यदि केवल करीलके वृक्षको ही पत्ते न हों, तो अुसमें वसन्तका भला क्या दोष है? अुल्लू यदि दिनमें देखे ही नहीं, तो अिसमें सूर्यका क्या दोष है?

भर्तृहरिके अिस श्लोकके शेष दो चरण अिस प्रकार है

धारा नैव पतन्ति चातकमुखे मेघस्य कि दूषणम् ?
यत् पूर्वं विधिना ललाट-लिखित तन् मार्जितु क क्षम ?

[चातकके ही मुहमे यदि पानीकी धारा गिरे नही तो अुसमे भला मेघका क्या दोष है? विधिने ललाटमे जो लिख रखा है, अुसको मिटानेके लिअे कौन समर्थ है?]

'अुच्छिष्ट·' [अुत्+शिष्ट] जूठा नही, वल्कि किसानके फसल काट कर ले जानेके वाद वचा हुआ।

रवीन्द्रनाथ अथर्ववेदके अेक मत्रका आधार लेकर वताते है कि सारी कलाओका और मनुष्यकी सारी अुच्चतर प्रवृत्तियोका मूल 'अुच्छिष्ट' हे। नीचे अुनके वचन दिये जा रहे है

अृत सत्य तपो राष्ट्र श्रमो धर्मश्च कर्म च।
भूत भविष्यत् अुच्छिष्टे वीर्यं लक्ष्मी-वल वले॥

"Righteousness, truth, great endeavours, empire, religion, enterprize, heroism and prosperity, the past and the future dwell in the surpassing strength of the surplus"

The meaning of it is that man expresses himself through his super-abundance which largely overleaps his absolute need

The renowned vedic commentator Sayanacharya says

"The food offering which is left over after the completion of sacrificial rites is praised because it is symbolical of Brahma, the original source of the universal"

According to this explanation, Brahma is boundless in his superfluity which inevitably finds expression in the eternal world process Here we have the doctrine of the origin of the arts Of all living creatures in the world man has his vital and mental energy vastly in excess of his need which urges him to work in various lines of creation for

its own sake Like Brahma himself, he takes joy in productions that are unnecessary to him, and therefore represent his extravagance and not his hand-to mouth penury The voice that is just enough can speak and cry to the extent needed for everyday use, but that which is abundant sings, and in it we find our joy Art reveals man's wealth of life, which seeks its freedom in forms of perfection which are ends in themselves

भावार्थ

'ऋत, सत्य, तप, राष्ट्र, श्रम, धर्म, कर्म तथा भूत और भविष्य, वीर्य और लक्ष्मी अुच्छिष्टके बलमें निवास करते हैं।'

जिसका अर्थ यह है कि अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति करनेके बाद मनुष्यके पास जो अतिशय शक्ति अधिक रहती है, अुसीके द्वारा वह अपनेको व्यक्त करता है।

वेदोंके प्रसिद्ध टीकाकार सायणाचार्य कहते हैं

'यज्ञविधिके बाद, बचे हुअे (अुच्छिष्ट रहे) अन्नबलिको पवित्र अिसीलिअे कहा गया है कि वह अखिल विश्वके मूल कारणरूप ब्रह्माका प्रतीक है।'

अिस धारणाके अनुसार ब्रह्माकी अुच्छिष्ट शक्ति अपरम्पार है और वह सनातन विश्व-प्रक्रियाके रूपमें प्रकट होती है। यहां हमें कलाओंके अुद्भवमें सदैव रहनेवाला सिद्धांत देखनेको मिलता है। संसारके सभी जीवोंकी तुलनामें मनुष्यमें प्राण और मनकी शक्ति अुसकी आवश्यकतासे अधिक भरी है, और वह अुसे अनेकविध निर्हेतुक सर्जक प्रवृत्तियां करनेके लिअे प्रेरित करती है। स्वयं ब्रह्माकी तरह, वह भी जो सर्जन अुसके लिअे अनावश्यक है, और जो अुसकी अकिंचनताके नहीं बल्कि अुसके अुदारपनके सूचक हैं, अुनमें आनन्द लेता है। जो आवाज केवल आवश्यकता भरकी ही है, वह रोजके कामकाजमें जितनी ही बोल सकती है या रो सकती है, किन्तु जो आवाज अधिक होती है, वह गाने लगती है — और अिसीमें हमारा आनन्द है। कला मनुष्यके

जीवनकी समृद्धिको प्रकट करती है। यह समृद्धि निर्हेतुक सर्वांग-सपूर्ण स्वरूपोमे मुक्तिका आनन्द मनानेके लिअे प्रयत्न करती रहती है।

'परिग्रहो भयायैव' परिग्रहमे भय रहता ही है। लेखकका यह अपना सूत्र है।

पृ० ५३ 'निस्' कोटिके (Gneiss) सतहवाले पत्थर जिनमे अभरक, चकमक वगैराका समावेश होता है।

पृ० ५४ भगिनी निवेदिताकी प्रख्यात तुलना: मूल अिस प्रकार है

Beauty of place translates itself to the Indian consciousness as God's cry to the soul Had Niagara been situated on the Ganges, it is odd to think how different would have been its valuation by humanity Instead of fashionable picnics and railway pleasure-trips, the yearly or monthly incursion of worshiping crowds Instead of hotels, temples Instead of ostantatious excess, austerity Instead of the desire to harness its mighty forces to the chariot of human utility, the unrestrainable longing to throw away the body and realize at once the ecstatic madness of Supreme Union Could contrast be greater ?

—*The Web of Indian Life* —241

भैरवजाप: "पहाड पर जहा अूचेसे अूचा शिखर हो और पास ही नीचे अेकदम सीधा कगार हो, अुस स्थानको भैरवघाटी कहते है। प्राचीन कालमे और आज भी भैरव सप्रदायके लोग प्राय अैसे स्थान पर भैरवजीका जाप करते-करते अूपरसे नीचे कूद पडते है। माना यह जाता है कि अिस तरह आत्महत्या करनेमे पाप नही, अपितु पुण्य है। यह मान्यता आजके कानूनके अनुसार गलत भले ही हो, किन्तु मानस-शास्त्री अुसके आधारभूत तत्त्वको सहज ही समझ सकते है। दुनियासे सब तरह निराश होकर कायरतावश किसी मनुष्यका आत्महत्या करना और प्रकृतिके विशाल, अुच्च, अुदात्त तथा रमणीय सौंदर्यको देख, तल्लीन होकर प्रकृतिके साथ अेकरूप होनेकी

Our Outstanding Publications
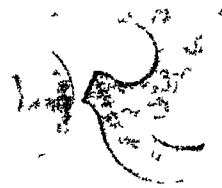
अिच्छाका प्रवल हो अुठना, किसी तरह प्रकृतिका वियोग सहा ही न जाना, और अैसेमें किसी मनुष्यका अिस क्षुद्र देहके बंधनको भूल कर सात्म्य प्राप्त करनेके लिअे अनन्तमें कूद पड़ना — ये दो बातें नितांत भिन्न है। दोनोंका परिणाम चाहे अेक ही हो। हर तरहके विनाशको हम मृत्युके अेक ही नामसे पुकारते है, परन्तु वस्तु अेक ही नहीं होती। कभी बार मरण जीवन-रूपी नाटकका विष्कम्भक होता है, और कभी बार वह अुस नाटकका भरत-वाक्य — जीवन-साफल्य — होता है।" — 'हिमालयकी यात्रा', प्रक० १६, पृ० ०१-०२

पृ० ५५ विभव-तृष्णा देखिये पृ० १८८ पर 'तृष्णाका तात्र-योग' शीर्षक लेख।

नाभिनंदेत० न मृत्युका स्वागत करना, न जीवनका। — मनुस्मृति।

हॉर्स पावर अिसके लिअे लेखक 'अश्वस्थामा' शब्द पारिभाषिक शब्दके तौर पर सुझाते है। [अश्व = घोड़ा + स्थामन् = शक्ति।] समासमें 'स्थामन्' मे से 'न्' का लोप हो जाता है।

अुपवन 'न्यू फॉरेस्ट' नामक प्रदेश।

नीरो रोमका अेक बादशाह (सन् ५४–६८)। माके भड़कानेसे पिताका खून होनेके बाद रोमकी गद्दीके अधिकारी ब्रिटेनिकसको हटाकर खुद गद्दी पर बैठा। पाच साल तक अच्छी तरह राज चलानेके बाद वह तानाशाह बन गया। अुसने ब्रिटेनिकसकी, अपनी माकी और पत्नीकी हत्या की। रोमको जलानेके झूठे अिल्जाम पर अुसने क्रिश्चियोंके अूपर तरह तरहके अत्याचार किये। अपने गुरु और मंत्री सेनेकाकी तथा अपनी दूसरी पत्नीकी भी हत्या की। जिसके बाद रोममें बगावत हुअी, जिससे वह भाग गया और अुसने आत्महत्या कर ली। अैसी दंतकथा है कि अुसने रोमको जलाया था और खुद जलते हुअे रोमको देख कर फिडल बजाता था। किन्तु अितिहासमें अिसके लिअे कोअी समर्थन प्राप्त नहीं है। किन्तु अिसमें कोअी संदेह नहीं कि वह अत्यंत निर्दय था।

पृ० ५६ आर्तिनाश . तुलना किजिये

न त्वह् कामये राज्य, न स्वर्ग नापुनर्भवम्।
कामये दु ख-तप्ताना प्राणिना आर्ति-नाशनम्॥

[अपने लिअे मैं न राज्य चाहता हू, न स्वर्गकी अिच्छा करता हू, और न मोक्ष चाहता हू। दु खसे तपे हुअे प्राणियोकी पीडाका नाश हो, बस अितना ही मैं चाहता हू।]

पृ० ५७ वीरभद्र दक्ष प्रजापतिके यज्ञका सहार करनेवाले शिवगण।

अग्रेजोको हम पहचान गये है तो · अग्रेज भी भारतका खून चूसते हैं, परन्तु मालूम ही नही होता कि वे चूस रहे है। अग्रेजोका यह स्वरूप हम पहचान गये है तो—

काकदृष्टि : कौवेके जैसी चकोर दृष्टि। ['काका' की दृष्टि, यह अर्थ भी हे।]

पृ० ५८ प्राय. कदुक ० आर्यजन गिरते है तो भी अक्सर गेदकी तरह गिरते है, यानी गिरने पर फिर अूचे अुछलते है।

भर्तृहरिका पूरा श्लोक अिस प्रकार हे

प्राय कन्दुक-पातेन पतत्यार्य पतन्नपि।
तथा त्वनार्य पतति मृत्पिण्ड-पतन यथा॥

न हि कल्याणकृत् ० कल्याण करनेवाला कोअी भी दुर्गतिको प्राप्त नही होता। गीता, ६–४०

पृ० ६० मानो महादेवजी सहारकारी ताडव-नृत्य . हो : रावणके शिव-ताडव-स्तोत्रका यहा स्मरण होता है। नीचे दो श्लोक दिये जा रहे है

जटा-कटाह-सभ्रम-भ्रमन्निलिम्प-निर्झरी–
विलोल-वीचि वल्लरी-विराजमान मूर्धनि।
धगद-धगद्-धगज्ज्वलल्-ललाट-पट्ट-पावक
किशोर-चद्र-शेखरे रति प्रतिक्षण मम॥१॥

[जिनका सिर जटारूपी कटाहमे तेज गतिसे घूमनेवाली सुर-सरिता (गगा) की चचल तरग-लताओसे सुशोभित हो रहा है, लला-

टाग्नि धग धग धग जल रही है, सिर पर बालचन्द्र विराजमान है, अुन (शिवजी) में मेरा निरंतर अनुराग बना रहे।]

जयत्वदभ्र-विभ्रम-भ्रमद्भुजंगम-स्फुरद्
विनिर्गमत्क्रम-स्फुरत्कराल-भाल-हव्यवाट्।
धिमिद् धिमिद् धिमिद् ध्वनन्-मृदंग-तुंग-मंगल-
ध्वनि-क्रम-प्रवर्तित-प्रचण्ड-ताण्डव शिव ॥१०॥

[सतत हिलते रहनेवाले भुजंगके निश्वाससे जिनके भालकी कराल अग्नि अुत्तरोत्तर अधिक स्फुरित होती जाती है और धिमिद् धिमिद् धिमिद् जैसी मृदंगकी अुच्च मंगल ध्वनिकी तरह जो प्रचण्ड ताण्डव खेल रहे हैं, अुन शिवजीकी जय हो।]

पृ० ६१ देवेन्द्र लंकाका दक्षिण छोर। Dundra Head

नारायणका हो सरोवर सिन्ध और कच्छके बीच स्थित सरोवर।

पृ० ६३ पुनरागमनाय च धार्मिक प्रसंगो पर पूजाके अन्तमें देवताका विसर्जन करते समय अिस वचनका प्रयोग होता है। अिसका अर्थ है — 'फिर आनेके लिअे।' भाव यह है कि विदाअी हमेशाके लिअे नही है, बल्कि फिरसे मिलनेके लिअे ही है।

लेखककी अिस अिच्छाकी या संकल्पकी पूर्ति कअी सालोंके बाद किस प्रकार हुअी, जिसका वर्णन अगले प्रकरणमें देखिये।

१३ जोगके प्रपातका पुनर्दर्शन

पृ० ६४ अेतावान् अस्य महिमा० जितनी तो अुसकी महिमा है, पुरुष तो अुससे भी बडा है। यह वचन ऋग्वेदके पुरुषसूक्तसे लिया गया है।

पृ० ६६ अनुदरी छोटे पेटवाली। मंदोदरी, कृशोदरीकी तरह।

विश्वजित् यज्ञ 'सर्ववेदस्', वह यज्ञ जिसमें जीवनकी सारी कमाअी देनी होती है। तुलना कीजिये

स्थाने भवान् अेक-नराधिपः सन्
अकिंचनत्वं मखजं व्यनक्ति।
पर्याय-पीतस्य सुरैर् हिमांशोः
कला-क्षयः श्लाघ्यतरो हि वृद्धेः ॥ रघुवंश ५–१६

[आप चक्रवर्ती राजा होकर विश्वजित् यज्ञके कारण अुत्पन्न हुआ अकिंचनत्व दर्शाते हैं, यह योग्य है। देवताओंके बारी बारीसे पीनेके कारण चद्रकी कलाका क्षय वृद्धिसे अधिक वधाअीके योग्य है।]

पृ० ६७ अलकेश्वरः (अलका + अीश्वर) कुबेर।

प्रति-धनुष. आकाशमे अिन्द्रधनुषके कुछ अूपर दूसरा फीका धनुष अक्सर दिखाअी देता है, अुसको प्रति-धनुष कहा गया है। अुसके रग मूल धनुषके ठीक अुलटे क्रममे होते है।

सुरधनु देवोका धनुष, 'अिन्द्रधनु'।

सुरधुनीः स्वर्गकी नदी। यहा केवल नदी।

किसी भी नदीको गगा कहा जाता हे अिसलिअे।

प्रतिक्षण हमारा पुण्य. . है याद कीजिये

क्षीणे पुण्ये मर्त्य-लोक विशन्ति।

—गीता, ९–२१

पृ० ७० रोमें रोला. (१८६६–१९४४) फ्रान्सके विश्व-विख्यात मानवतावादी साहित्यकार और कला-विवेचक। अुनका अुपन्यास 'जा क्रिस्तॉफ' अुनकी सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता हे। सन् १९१६ मे अुन्हे अिसके लिअे 'नोवल पारितोषिक' मिला था। अुन्होने गाधीजी, रामकृष्ण परमहस और स्वामी विवेकानन्दकी जीवनिया लिखकर भारतकी विचारधारा पश्चिमके ससारको समभावपूर्वक समझायी थी। गाधीजी जव गोलमेज परिषद्मे शरीक होनेके लिअे विलायत गये थे, तब लौटते समय अुनसे खास तौर पर मिले थे। अुनकी भारत-सम्बन्धी डायरी फ्रेन्च भाषामे प्रसिद्ध हुअी है। अुसमे भी गाधीजी, रवीन्द्रनाथ, श्री अरविंद आदिके सम्बन्धमे काफी बाते है। वे युद्धके विरोधी थे और मानते थे कि कला सर्व-लोक-गम्य होनी चाहिये।

पृ० ७१ मानवकृत कलाकृति सृष्टिमे जो सौन्दर्य होता है अुसको कला नही कहते। कला तो मानवीय ही होती है। प्रकृतिका सौन्दर्य कलाकी अुत्पत्तिका अेक प्रेरक कारण जरूर है।

'अल्पस्य हेतो.' ० अल्प हेतुके लिअे वडी वस्तुका नाश करनेकी अिच्छावाले। कवि कालिदासके 'रघुवश' मे यह वचन है। दिलीप जव

गायके वदलेमें अपना शरीर सिंहको देनेके लिअे तैयार होता है, तव अुसे समझानेके लिअे सिंह कहता है

> अेकातपत्र जगत प्रभुत्व,
> नव वय, कान्तम् अिद वपुश्च।
> अल्पस्य हेतोर् वहु हातुम् अिच्छन्
> विचारमूढ प्रतिभासि मे त्वम्॥ रघुवंश, २-४७

[समारका अेक-छत्र राज्य, जवान अुम्र और यह सुदर वपु (शरीर), थोडेके लिअे जितना वडा त्याग करनेके लिअे तुम तैयार हो गये हो! तुम मुझे विचारमढ मालूम होते हो।]

१४ जोगका सूखा प्रपात

पृ० ७२ राक्षसी दुष्टता याद कीजिये

> वुभुक्षित कि न करोति पापम्
> क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।

पृ० ७३ रावणकी तरह रावण पैदा हुआ तव महारव करता ही पैदा हुआ था। अिस परसे अुसके पिताने अुसका नाम रावण रख दिया था।

तपस्विनी गरमीका ताप सहती थी अिसलिअे।

सभाजीकी आखें १६८९ मे सभाजीको गिरफ्तार करनेके वाद औरंगजेवने अुसको अिस्लाम स्वीकार करनेकी वात कही। किन्तु सभाजीने अिस्लाम स्वीकार करनेके वदले वादशाहका अपमान किया। अिसलिअे औरंगजेवने अुसकी जीभ कटवा डाली, आखे निकलवा डाली और अुसे मरवा डाला।

पृ० ७४ नदीमुखेनैव समुद्रमाविशेत् नदीके मुखसे समुद्रमें प्रवेश करना। महाकवि कालिदासने 'रघुवंश' में रघुके विद्याभ्यासका वर्णन करते समय लिखा है

> लिपेर् यथावद् ग्रहणेन वाङ्मय
> नदी-मुखेनैव समुद्रम् आविशत्॥ रघु० ३-२८

[जिस प्रकार नदीके मुखसे समुद्रमे प्रवेश करते है उसी प्रकार लिपिके यथावत् ग्रहणके द्वारा अुसने साहित्यमे प्रवेश किया।]

अिस परसे गुजरात विद्यापीठके द्वारा चलनेवाले गुजरात महाविद्यालयकी द्वैमासिक पत्रिका 'सावरमती' के लिअे जद ध्यानमन्त्रकी आवश्यकता मालूम हुअी, तव श्री काकासाहवने 'नदीमुखेनैव समुद्रमाविशेत्' वचन दिया था। तवसे शायद अुनके मनमे यह खयाल दृढ हो गया होगा कि यही वचन कालिदासका मूल वचन है। मूलमे ह 'आविशत्' = अुसने प्रवेश किया। अुस परसे काकासाहवने वना लिया आविशेत् = प्रवेश करना चाहिये।

पृ० ७५ कालपुरुष · 'कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्ध' कहनेवाला गीताका विराट्-पुरुष।

'तत्रका परिदेवना' अुसमे शोक क्या? याद कीजिये

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त-मध्यानि भारत।
अव्यक्त-निधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ गीता, २–२८

पृ० ७७ अुष्मपा · गरम गरम पीनेवाले, पितर। अन्न खाकर नही, अपितु केवल अुष्णता पीकर रहनेवाले पितर और देवता। गीतामे यह शब्द आया है। ११–१२

१५ गुर्जर-माता सावरमती

पृ० ७९ वनस्पति-अुपासक श्री शिवशंकर प्रसिद्ध गुजराती लेखक और अनुवादक स्व० श्री चन्द्रशंकर शुक्लके छोटे भाअी। आपने वनस्पतिका काफी गहरा अभ्यास किया है। हरिपुरा काग्रेसके समय आपके अुत्साह और परिश्रमसे वनस्पति-प्रदर्शनका आयोजन किया गया था। आपने 'गुजरातनी लोकमाताओ' नामक गुजराती पुस्तक लिखी है।

पृ० ८० ब्राह्मणोने तप किया है कहते है कि शौनक, वसिष्ठ, वामदेव, गौतम, गालव, गार्गेय, भरद्वाज, अुद्दालक, जमदग्नि, कश्यप, जडभरत, भृगु, जावालि आदि ८८ सहस्र ऋषियोने सावरमतीके किनारे तपश्चर्या की थी।

पृ० ८१ 'वौठा' का मेला प्रतिवर्ष कार्तिकी पूर्णिमाको गुजरातमे धोलका गावके पास वौठामे यह मेला लगता है, जिसमे करीब लाख-डेढ लाख लोग अिकट्ठे होते है। यहा पर मेरवो, माळम, वारक और शेढीसे

Our Outstanding Publications

निर्दलीय

बनी हुअी वात्रक नदीका खारी, हाथमती और साबरसे बनी हुअी साबरमतीके साथ सगम होता है।

साबरमतीके पुराने नाम भिन्न भिन्न युगोंमें साबरमती भिन्न भिन्न नामोंसे पुकारी गयी है। सत्ययुगमें अुसको कृतवती, त्रेतामें मणिकर्णिका और द्वापरमें विधुवती या चदना या चदनावती कहते थे। कलियुगमें अुसको साभ्रमती कहते हैं।

कश्यपगगा अेक कथा अिस प्रकार है

किसी समय लगातार सात बार जब अकाल पड़ा तब ऋषियोंने कश्यपसे प्रार्थना की और अुसने शकरजीकी आराधना की। शकरजी साभ्रमती गगाको लेकर अर्बुदारण्यमें आये, जहाँसे अिसकी धारायें अरण्यमें होकर गुजरातकी ओर बहने लगीं। तब समुद्रने प्रकट होकर कश्यपसे प्रार्थना की 'भगवन्, कुछ भी करके अिस नदीका पानी मेरे जलमें मिला दीजिये। क्योंकि अगस्त्य ऋषिने मेरा सारा पानी पीकर लघुशकाके रूपमें वह पानी मुझे वापस दिया अिसलिअे वह अपवित्र हो गया है। अिस नदीके स्पर्शसे वह पावन हो जायगा।'

साबरमती दूसरी नदियोंके साथ समुद्रसे जा मिली और समुद्र पावन हुआ।

दूसरी कथा अिस प्रकार है कि पार्वतीके डरसे गगा अिधर अुधर भटक रही थी — 'सा भ्रमति'। अुसे कश्यप अपनी जटाओंमें डालकर अर्बुदारण्यमें ले आये। यहा आनेके बाद अुन्होंने अपनी जटायें पछाड़ीं अिसलिअे अुस गगामेंसे सात प्रवाह बहने लगे। अुनका मुख्य प्रवाह साबरमती कहलाया और बाकीके छ प्रवाहोंसे बौठाके पास मिलनेवाली छ नदियाँ बनीं।

कश्यप अुसको ले आये, अत वह कश्यपगगा कहलायी।

पृ० ८२ दधीचिने तप किया वृत्रासुर यज्ञकुडमेंसे पैदा हुआ और क्षण-क्षणमें अितना बढ़ने लगा कि देखते ही देखते अुसने समग्र लोकको ढक दिया। अिससे भयभीत होकर देवताओंने अुसके विरुद्ध अपने सारे दिव्य शस्त्रास्त्रोंका अुपयोग किया। किन्तु सब बेकार गये। अिसलिअे अिन्द्र-सहित सब देवता आदिपुरुष अतर्यामीकी शरणमें गये।

अतर्यामीने कहा, 'महर्पि दधीचिके पास तुम जाओ और विद्या, व्रत अेव तपसे वलवान वने हुअे अुनके शरीरकी माग करो। वे अिनकार नही करेगे। फिर अुस शरीरकी हड्डियोसे विश्वकर्मा तुम्हे अेक अुत्तम आयुध वनाकर देगे। अुमीसे अिस वृत्रासुरका नाश हो सकेगा।'

सावरमती और चद्रभागाके सगमके पास दधीचि अृपि तप करते थे। वहा जाकर देवताओने अुनसे अुनके शरीरकी माग की। तव अुन्होने जवाव दिया

"हे देवो, जो पुरुप अवश्य नाश होनेवाले अपने शरीरसे प्राणियो पर दया करके धर्म तथा यशको प्राप्त करना नही चाहता, वह स्थावर प्राणियो द्वारा भी शोक करने योग्य है। दूसरे प्राणियोके दु खसे दुखी होना और दूसरे प्राणियोके आनन्दसे आनन्द मनाना, यही धर्म अविनाशी है। अिसलिअे मै अपने क्षणभगुर तथा कोवे-कुत्तोके भक्ष्यरूप शरीरको छोडता हू। आप अुसे ग्रहण करे।"

यह निश्चय करके अृपिने परब्रह्मके साथ आत्माको अेकाग्र किया और शरीरका त्याग किया।

अिसके वाद देवताओने कामधेनुको वुलाया। वह अृपिके शरीरको चाटने लगी। चाटते चाटते केवल हड्डिया रह गअी। अिन हड्डियोका वज्र वनाकर विश्वकर्माने अिन्द्रको दिया, जिसके द्वारा अिन्द्रने वृत्रासुरका नाश किया।

दधीचि अृपिने जहा देहार्पण किया था, वहा कामधेनुका दूध गिरा था। अत वहा दूधेश्वर महादेवजीकी स्थापना हुअी।

खादीकी प्रवृत्ति . गाधीजीने स्वदेशी तथा खादीका प्रचार शुरू किया, अिसलिअे आश्रममें खादी-अुत्पादनका काम भी शुरु हुआ। आज भी यह प्रवृत्ति वहा चल रही है।

खेती और गोशाला : खेतीकी और गायोकी नस्ल सुधारनेकी प्रवृत्ति आश्रममे शुरू हुअी थी। गोशाला तथा खेतीकी प्रवृत्ति विविध प्रयोगोकी दृष्टिसे अव भी वहा चल रही है।

राष्ट्रीय शाला . आश्रमकी शाला। अिसमे श्री काकासाहव, नरहरि परीख, किशोरलाल मशरूवाला, विनोवा आदि शिक्षाके

Our Outstanding Publications

प्रयोग करते थे। अिन प्रयोगोंकी बुनियाद पर ही बादमें गुजरात विद्यापीठकी स्थापना हुअी।

आज 'बुनियादी तालीम' के नामसे पहचानी जानेवाली गांधीजीकी शिक्षा-पद्धतिकी नींव भी अिसी प्रवृत्तिको कह सकते हैं।

राष्ट्रीय त्योहार देखिये 'नवजीवन' द्वारा प्रकाशित श्री काकासाहबकी 'जीवनका काव्य' नामक पुस्तक।

लोक-संगीत तथा शास्त्रीय संगीत आश्रमवासी पंडित नारायण मोरेश्वर खरे संगीतशास्त्री थे। अुन्होंने गुजरातके कुछ लोकगीतोंकी स्वरलिपि तैयार करके 'लोक-संगीत' नामक पुस्तक लिखी थी। शास्त्रीय संगीतके प्रचारके लिअे अुन्होंने 'राष्ट्रीय संगीत मंडल' की भी स्थापना की थी। अहमदाबाद कांग्रेसके समय 'अखिल भारत संगीत परिषद्' का अधिवेशन भी यहीं हुआ था। अुसमें गांधीजीकी प्रेरणा तथा पंडित खरेके प्रयत्न मुख्य थे।

'नवजीवन' तथा 'यंग अिण्डिया' सन् १९१९ में जब गांधीजीने रौलेट बिलके विरुद्ध आंदोलन चलाया, तब अुन्हें अपने विचारोंके प्रचारके लिअे अखबारोंकी आवश्यकता महसूस होने लगी। श्री अिन्दुलाल याज्ञिक तथा अुनके मित्र गुजरातीमें 'नवजीवन अने सत्य' नामक मासिक चला रहे थे और अुसके द्वारा 'होमरूल' का प्रचार करते थे। गांधीजीने यही पत्र अपने हाथमें ले लिया और अुसको साप्ताहिक बनाकर 'नवजीवन' के नामसे चलाया। यह पत्र गुजरातीमें चलता था।

फिर, सारे देशमें प्रचार करनेके लिअे अेक अंग्रेजी अखबारकी आवश्यकता महसूस होने लगी। श्री शंकरलाल बैंकर, जमनादास द्वारकादास आदि 'यंग अिण्डिया' नामक अेक अखबार चलाते थे। गांधीजीने अिस पत्रको भी अपने हाथमें ले लिया।

दोनों साप्ताहिक सन् १९३३ तक चले। फिर हरिजन-प्रवृत्तिको चलानेके लिअे गांधीजीने जेलसे पत्र शुरू किये, जिनके नाम थे 'हरिजन' (अंग्रेजी), 'हरिजनबन्धु' (गुजराती) और 'हरिजनसेवक' (हिन्दुस्तानी)। सन् ४२ से ४५ तकका काल यदि छोड़ दें, तो ये अखबार गांधीजीकी मृत्यु तक अुनके विचारोंके वाहन रहे।

गाधीजीकी मृत्युके बाद ये साप्ताहिक स्व० श्री किशोरलाल मशरूवालाने चलाये। अनकी मृत्युके बाद श्री मगनभाओ देसाओ अुनके सम्पादक रहे। १९५६ के मार्चसे वे हमेशाके लिओ बद कर दिये गये।

सत्याग्रह : चपारन, खेडा, नागपुर, बोरसद, बारडोली आदि।

मिल-मालिकोंके साथका मजदूरोंका झगडा यह झगडा सन् १९१८ मे अहमदाबादके मिल-मालिक तथा मजदूरोके बीच हुआ था। मजदूरोका पक्ष न्यायका था, अिसलिओ गाधीजीने अुनका पक्ष लिया था। विशेष जानकारीके लिओ देखिये नवजीवन द्वारा प्रकाशित श्री महादेवभाओ देसाओकी हिन्दी पुस्तक 'अेक धर्मयुद्ध'।

दाडीकूच : लाहौर काग्रेसमे 'पूर्ण स्वराज्य' का प्रस्ताव पास होनेके बाद अुसको अमलमे लानेके लिओ गाधीजीने नमकका कानून तोडनेका निश्चय किया था। भारतके स्वातत्र्य-सग्रामके अितिहासका यह अेक अुज्ज्वल प्रकरण है।

कूचके लिओ अपने ७९ साथियोके साथ जब गाधीजी सत्याग्रहाश्रम साबरमतीसे निकले, तब अुन्होने प्रतिज्ञा ली थी कि 'जब तक स्वराज्य नही मिलेगा, मै आश्रममे वापस नही लौटूगा।' अिस कूचने सारे देशमे बिजलीकी गतिसे नवजीवन और नओ शक्तिका सचार किया था।

गाधीजीके वर्धा और सेवाग्राम जानेका यह भी अेक कारण था।

पृ० ८३ जलियावाला बाग रौलेट अेक्टके खिलाफ गाधीजीने जब आन्दोलन छेडा, तब अुन्होने ६ अप्रैल, १९१९ के दिन सारे देशमे हडताल करने और अुपवास करनेका आदेश दिया था। सारे देशने अुसका अपूर्व अुत्साहके साथ पालन भी किया था। किन्तु तीन दिनके बाद, १० अप्रैल १९१९ के रोज, अमृतसरके डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेटने वहाके काग्रेसी नेता डॉ० किचलू और सत्यपालजीको गिरफ्तार करके किसी अज्ञात स्थान पर भेज दिया। अिससे शहरमे हुल्लड हुआ और शहरको फौजके हाथमें सौप दिया गया। पजाबमे अन्यत्र भी अैसी ही घटनायें घटी, जिनमे जानमालको बडी हानि पहुची। अिसके सिवा

Our Outstanding Publications

गांधीजीकी गिरफ्तारीके कारण देशके अन्य भागोंमें भी हुल्लड़ हुअे, परन्तु वहां शांति हो गअी। १३ अप्रैल हिन्दुओंका वर्षारम्भका दिन था। अुस दिन अमृतसरके जलियांवाला बागमें आम सभा होनेकी घोषणा की गअी थी। यह जगह अैसी थी जिसके चारों ओर मकान ही मकान थे और बागके अन्दर जानेके लिअे केवल अेक ही तंग रास्ता था। वहां शामके समय बीस हजार स्त्री, पुरुष और बच्चे अिकट्ठे हुअे थे। अितनेमें जनरल डायर १०० देशी और ५० विदेशी फौजी सिपाहियोंको लेकर आया और दो-तीन मिनटके अंदर ही अुसने गोली चलानेका हुक्म दिया। स्वयं डायरके कथनके अनुसार १६०० गोलियां छोड़ी गअी थीं और जब गोलियां खतम हो गअीं तभी गोलियां चलाना बंद किया गया था। करीब ८०० लोग मारे गये और दो हजार घायल हुअे थे।

गुजरात विद्यापीठ १९२० में जब असहयोगका आंदोलन शुरू हुआ, तब गांधीजीने देशके विद्यार्थियोंको सरकारी स्कूल-कॉलेज छोड़नेका आदेश दिया था। अिस आदेशका पालन करके जिन विद्यार्थियोंने सरकारी शिक्षण-संस्थाओंका बहिष्कार कर दिया, अुनमें से कुछ विद्यार्थी रचनात्मक कार्योंमें लग गये। किन्तु बाकी विद्यार्थियोंके लिअे शिक्षाका स्वतंत्र प्रबंध करना आवश्यक था। अिनके लिअे देशभरमें राष्ट्रीय संस्थायें स्थापित हुअीं — जैसे बिहारमें बिहार विद्यापीठ, काशीमें काशी विद्यापीठ, पूनामें तिलक विद्यापीठ वगैरा। गुजरातके गुजरात विद्यापीठका भी अिसीमें समावेश होता है। अिसकी स्थापना १९२० में हुअी थी। अिसके शिक्षकों और विद्यार्थियोंने गुजरातके सार्वजनिक जीवनमें तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रवृत्तियोंमें बड़े महत्त्वका भाग लिया है। आज भी यह संस्था शिक्षा और साहित्य-प्रकाशनका कार्य कर रही है।

१६ अुभयान्वयी नर्मदा

पृ० ८४ अुभयान्वयी भारतके दक्षिण और अुत्तरके दोनों विभागोंको जोड़नेवाली।

निर्दलीय

अमरकटक तालाव : विलासपुरके पासके मेखल, मेकल या माअिकाल पर्वतका अेक हिस्सा अमरकटकके नामसे मशहूर है। अुसकी तलहटीमे जो तालाव हे अुसको भी अमरकटक ही कहते है। यहीसे नर्मदा और शोणका अुद्‌गम हुआ है। अिसी परसे नर्मदाको मेकल-कन्यका भी कहते है। अमरकटक श्राद्धके लिअे अुत्तम स्थान माना जाता है।

पृ० ८५ विन्ध्य : मशहूर पर्वतश्रेणी। अगस्ति ॠषि अिसीको पार करके दक्षिणकी ओर जाकर वसे थे। अिसके अूपर विन्दुवासिनीका प्रख्यात मदिर है। अिसके थोडे आगे अष्टभुजा योगमायाका मदिर है, जो शक्तिका पीठ माना जाता है।

सातपुडा : नर्मदा और ताप्तीके वीच सात पुडो (folds) की पर्वतश्रेणी। ताप्ती यहीसे निकलती है।

भृगुकच्छ : आजकलका भडौच। कच्छ = नदी या समुद्रका किनारा।

पृ० ८६ आदिम निवासी : अिस प्रदेशके मूल निवासी भील आदि लोग, जो आज भी गरीवी और अज्ञानमे डूवे हुअे है।

पृ० ८७ सविन्दु सिन्धु ० ये नर्मदाष्टककी पक्तिया है। यह आद्य शकराचार्यका लिखा माना जाता है। अिसका प्रारभ अिस प्रकार है

सविन्दु–सिन्दुर–स्खलत्–तरग–भग–रजितम्
द्विपत्सु पापजातजातकारिवारि–सयुतम्।
कृतान्तदूत–काल–भूत–भीतिहारि–वर्मदे
त्वदीय पाद-पकज नमामि देवि नर्मदे ॥

पृ० ८८ गत तदैव ० पूरा श्लोक अिस प्रकार है :

गत तदैव मे भय त्वदम्वु वीक्षित यदा
मृकुण्डसूनुशौनकासुरारिसेवि सर्वदा।
पुनर्भवाब्धिजन्मज भवाब्धिदु खवर्मदे
त्वदीय पाद-पकज नमामि देवि नर्मदे ॥ ४ ॥

पंचगौड : सरस्वतीके किनारेका प्रदेश, कन्नौज, अुत्कल, मिथिला और गौड—यानी वगालसे लेकर भुवनेश्वर तकका प्रदेश। विन्ध्यके

अुत्तरमें स्थित अिन पाच प्रदेशोंमें रहनेवाले ब्राह्मण। अुन प्रदेशों परसे वे अनुक्रमसे सारस्वत, कान्यकुब्ज, अुत्कल, मैथिल और गौड कहलाते हैं।

पचद्रविड विन्ध्याचलके दक्षिणमें रहनेवाले पाच जातिके ब्राह्मण महाराष्ट्र, तैलग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड।

विक्रम सवत् विक्रमादित्यके नामसे चलनेवाला सवत्। यह अीस्वी सन्से ५६ साल पूर्व शुरू हुआ था।

शालिवाहन शक शालि = सिंह। सिंह जिसका वाहन है वह। दतकथा असी है कि अिस नामका अेक मशहूर राजा बचपनमें सिंहके आकारके अेक यक्षका वाहन बनाकर सर्वत्र घूमता था। अिसीलिअे वह शालिवाहन कहलाया। अुसके नामसे चलनेवाली वर्षगणनाको 'शक' कहते है। अिसके अनुसार वर्षका आरभ चैत्र माससे शुरू होता है। विक्रम सवत्से वह १३४–३५ वर्ष और अीस्वी सन्से ७८ वर्ष पीछे है। भारत-सरकारने अब अिसको अपनाया है।

पृ० ९० कबीरवड भडौचके पूर्वमें शुक्लतीर्थके पास नर्मदाके प्रवाहके बीचमें अेक टापू है, वहा यह प्रसिद्ध वड है। कहते है कि कबीरने दातुन करके जो टुकडा फेक दिया था अुससे यह वटवृक्ष पैदा हुआ।

१७ सध्यारस

पृ० ९३ रसवती पृथ्वी और नि शब्द आकाश यहा जान-बूझकर न्यायशास्त्रकी व्याख्या तोड दी गयी है। मूल व्याख्या है 'गधवती पृथ्वी' और 'शब्दगुणम् आकाशम्।'

वनेचर सस्कृतमें 'वनचर' कहते हैं जगलमें रहने-घूमनेवाले जगली पशुओंको और 'वनेचर' कहते हैं जगलमें रहने-घूमनेवाले मनुष्योंको। यह भेद यहा कायम रखा गया है।

सुर-असुरोंके गुरु बृहस्पति और शुक्राचार्य — यहा आकाशके गुरु और शुक्र नामक ग्रह।

१८ रेणुका का शाप

पृ० ९५ अत.स्रोता . [अन्त (अदर) + स्रोता (प्रवाहवाली)] जिसका प्रवाह भूमिके अदर है अैसी नदी।

राणकदेवीका शाप अेक लोककथा कहती है कि गुजरातके राजा सिद्धराज जयसिहने सोरठ पर चढाअी की और जूनागढको घेर लिया। वहाके राणा रा' खेंगारके भानजे ही विपक्षीसे जा मिले। परिणामस्वरूप जूनागढका पतन हुआ, खेंगार परास्त हुआ और मारा गया। सिद्धराजने अुसकी रानी राणकदेवी पर अधिकार कर लिया। रानीको लेकर वह पाटण जा रहा था। बीचमे वढवाणके पास रानी सती हो गअी। अितिहासमे अिसके लिअे कोअी समर्थन नही है। सिद्धराजने खेंगारको हरा कर कैद कर लिया था, अितना तो निश्चित कहा जा सकता है। यह सभव है कि बादमे अुसने सिद्धराजकी सत्ता स्वीकार की हो, अिसलिअे सिद्धराजने अुसे छोड दिया हो और सोरठकी ओर आते समय वढवाणके पास किसी कारणसे अुसकी मौत हो गअी हो और वहा अुसकी रानी सती हुअी हो।

यहा 'राणक' का अर्थ रेणुका नही है। 'गयाकी फल्गु' नामक प्रकरणमे 'सीताका शाप' और 'सिकताका शाप' से अिसकी तुलना कीजिये।

योमा ब्रह्मी भाषामे पहाडको 'योमा' कहते है। जैसे, आराकान योमा, पेगु योमा।

अलस-लुलित [अलस (आलस्यसे भरा हुआ) + लुलित (थका हुआ) जब 'ललित' पाठ हो तब 'सुन्दर'] धीर गतिमे और थकी-मादी चालसे चलनेवाली। यह शब्द 'अुत्तररामचरित' के अक १, श्लोक २४ मे आता है

अलस–लुलित–मुग्धानि अध्व-सजात-खेदात्
अशिथिल–परिरभैर् दत्त-सवाहनानि।
परिमृदित–मृणाली–दुर्बलानि अगकानि
त्वम् अुरसि मम कृत्वा यत्र निद्राम् अवाप्ता॥

अन्त्यजोका शाप लेकर अुन्हें पानीकी सुविधा न देकर।

पृ० ९६ खडिता काव्यशास्त्रमे बताओी गयी मुख्य आठ नायिकाओमें से अेक। 'अीर्ष्याकषायिता'—अीर्ष्यासे भरी हुओी स्त्री।

यहा खडिताका यह अर्थ भी है जिसका प्रवाह खडित हुआ हो।

१९ अबा-अबिका

पृ० ९७ अबा-अबिका महाभारतमे यह कथा है भीष्म किसी समय काशीराजकी कन्याओके स्वयवरमे से अुसकी तीनो पुत्रियोका — अबा, अबिका और अबालिकाका अपहरण कर लाये। अिसके लिअे जो युद्ध हुआ अुसमे अुन्होने शाल्वराजको परास्त किया। किन्तु जब कन्याओका राजा विचित्रवीर्यके साथ विवाह करनेकी बात निकली, तब अिन कन्याओमें से केवल अेकने — बडी कन्या अबाने — कहा, 'मै तो मनसे शाल्वराजसे विवाह कर चुकी हू।' अत अुसे शाल्वराजके यहा भेज दिया गया। किन्तु शाल्वने अुसे स्वीकार नही किया, अिसलिअे अुसने भीष्मके गुरु परशुरामकी शरण ली। किन्तु गुरुके कहने पर भी भीष्म अबाको स्वीकार करनेके लिअे तैयार नही हुअे। अिनमे गुरु-शिष्यके बीच दारुण युद्ध छिडा, जिसमे गुरु परास्त हुअे और अबाने वनमे जाकर भीष्मवधके सकल्पसे तपस्या करके अग्नि-प्रवेश किया और शरीर छोडा। वही बादमें द्रुपद राजाके यहा शिखडीके रूपमे पैदा हुओी और भीष्मवधका कारण बनी।

यहा लेखकने पौराणिक कथामे मनमाना फेरफार किया है।

राजा कर्णके दो आसू गुजरातके वाघेला वशका आखिरी राजपूत राजा कर्णदेव अत्यत क्रोधी और विलासी था। अुसने अपने मत्री माधवके भाओी केशवको मरवा कर अुसकी पत्नीको अपने अत पुरमें रख लिया था। अपमान और अत्याचारसे क्रुद्ध होकर माधवने दिल्ली जाकर अलाअुद्दीनको गुजरात पर चढाओी करनेके लिअे प्रेरित किया। अुसने अपने दो सरदारोको गुजरात पर चढाओी करनेके लिअे भेजा। अुन्होने गुजरातको जीता, राजधानी पाटणको लूटा और राजा कर्णकी रानियो और बच्चोको पकड कर दिल्ली पहुचा दिया। कर्ण देवगढ़

राजाके आश्रयमे गया। कहते है कि अुसने अपने अतिम दिन अज्ञात-वासमे, आबूके जगलोमे अिन नदियोके आसपासके प्रदेशमे, भटककर शोक-विह्वल दशामे विताये थे। यहा अुसीका सूचन है।

गुजराती भाषाका पहला अुपन्यास सन् १८६७ मे अिसी वृत्तातके आधार पर लिखा गया था।

२० लावण्यफला लूनी

पृ० ९८ लावण्यफला · लवण=नमक, लवण-प्रधान, लवण-समृद्ध होनेसे यह नाम दिया गया है।

२१ अुचळ्ळीका प्रपात

पृ० १०० 'नागमोडी'. यह मराठी शब्द है। अर्थ है नागकी तरह टेढामेढा, सर्प-सदृश।

पृ० १०१ 'कोयता': हसिया।

पृ० १०२ घनघोर: [घन=गाढा+घोर=भयावना] गाढा और भयावना।

पृ० १०४ अितने शुभ्र पानीमें . नदीके नाम परसे यह सूझा है।

पदक्रम: तुलना कीजिये

भयो त्रिविक्रम, कियो पदक्रम
अेक मही पर, बीजेको अवर, वैजुके प्रभु
त्रीजेको सिर पर।

जीवनावतार · पानीका नीचे अुतरना।

पृ० १०५ कटक: संस्कृतमे 'कटक' का अर्थ है ककण। अिस परसे आभूषण, गहनेका अर्थ करके श्लेष वनाया गया है।

सोनेके ढक्कनसे · तुलना कीजिये

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहित मुखम्। ओशावास्य, १५

अिस जगतको ..ढकना ही चाहिये: मूल मत्र अिस प्रकार है

ओशावास्यम् अिद सर्व यत्किञ्च जगत्या जगत्।

हरी नीलिमा नीलका अर्थ काला, आसमानी, हरा, चमकीला आदि किया जाता है। यहाकी नीलिमा हरे रगकी थी। अजीर या मखमलमें जिस प्रकार दो रगोकी छटायें दिखाओ देती है, अुसी तरहकी छटायें पानीमें भी कभी बार दिखाओ देती है—अैसा भी यहा सूचन है।

पृ० १०६ युयोधि अस्मत्० यह ओशावास्य अुपनिषद्का अन्तिम मत्र है।

२२ गोकर्णकी यात्रा

पृ० १०८ कपिलाषष्ठी भादो वदी छठ, हस्त नक्षत्र, व्यतिपात और मगलवार—अिनके योगका दिन। यह अेक दुर्लभ दिन है, जो हर ६० सालके बाद आता है।

पृ० ११० कृतार्थ कर दिया नहला दिया।

२३ भरतकी आखोसे

पृ० ११७ अद्य मे सफला० आज मेरी यात्रा सफल हुओ। मै पानीके प्रसादसे धन्य हुआ। मूलमें 'त्वत् प्रसादत' था, जो यहा बदल दिया गया है।

पृ० ११८ श्री रामचद्रजीके प्रबधक रामके बदले भरत अयोध्याका राज्य सभालते थे अिसलिअे। 'भरणात् भरत'।

२४ वेळगगा—सीताका स्नान-स्थान

पृ० ११९ वेरळग्रामका हरा कुड अग्रेजीमें वेरूळको 'अिलोरा' कहते है। अिसलिअे वह अिसी नामसे अधिक प्रख्यात है। यह गाव शिवाजीके पुरखोका है। यहा अेक सुन्दर कुड है। अिस कुडके विषयमें अैसी दतकथा प्रचलित है कि अेलिचपुरके येरु नामक राजाको कोओ अैसा रोग हुआ था, जिसके कारण अुसके शरीरमें कीडे पड गये थे। कओ अुपाय किये गये, किन्तु सब व्यर्थ गये। रोग वैसा ही रहा। अतमें अुसे अिस कुडके बारेमें आकाशवाणी सुनायी दी "तुम जाकर अुस तीर्थमें स्नान करो। तुम्हारा शरीर अच्छा हो जायगा।"

राजाने स्नान किया और अुसका रोग मिट गया।

कहते है कि अुसी राजाने बादमे वेरुळकी गुफाये खुदवानेका काम शुरू किया। जाडोमे हरी काअीके कारण कुडका पानी भी हरा मालूम होता है। कुडके चारो ओर सुन्दर सीढिया बनी हुअी है।

पृ० १२० प्राकृतिक सौंदर्यके प्रति सीताका पक्षपात. सीताको राजमहलमे रखकर राम जब वनवास जानेकी बातें करते है, तब सीताजी भी वनमे जानेके लिअे और वहाके कष्ट सहनेके लिअे तैयार हो जाती है। वे कहती है

फलमूलाशना नित्य भविष्यामि न सशय ।
न ते दुःख करिष्यामि निवसन्ती त्वया सह ।।१६।।
अग्रतस्ते गमिष्यामि भोक्ष्ये भुक्तवति त्वयि ।
अिच्छामि परत शैलान्पल्वलानि सरासि च ।।१७।।
द्रष्टु सर्वत्र निर्भीता त्वया नाथेन धीमता ।
हसकारण्डवाकीर्णा पद्मिनी साधुपुष्पिता ।।१८।।
अिच्छेय सुखिनी द्रष्टु त्वया वीरेण सगता ।
अभिषेक करिष्यामि तासु नित्यमनुव्रता ।।१९।।
सह त्वया विशालाक्ष रस्ये परमनदिनी ।
अेव वर्षसहस्राणि शत वापि त्वया सह ।।२०।।
अयोध्याकाड — २७ १६–२०

[मै हमेशा फलमूल खाकर ही रहूगी। आपके साथमे रहकर मै आपको कभी कष्ट नही दूगी। मै आपके आगे-आगे चलूगी और आपके खानेके बाद ही खाअूगी। आपके साथ निर्भयतासे सर्वत्र घूमकर पर्वत, सर और सरोवरोको देखनेकी मेरी बडी अिच्छा है। आपके साथ रहकर हस और कारडवोसे भरे हुअे सुन्दर पुष्पोवाले सरोवर देखनेकी और आनद मनानेकी मेरी अिच्छा है। अुन पद्मपूर्ण सरोवरोमे मै स्नान करूगी और आपके साथ अुनमे रोज खेलूगी। अिस तरहके सैकडो नही, बल्कि हजारो वर्ष भी मुझे आपके साथ क्षणके समान मालूम होगे।]

'अुत्तररामचरित' मे चित्र-दर्शनके बाद सीता अपना दोहद कहती है 'मन करता है कि प्रसन्न और गभीर वनराजियोमें विहार

करू और जिसका जल पावनकारी, आनददायक और शीतल है उस भगवती भागीरथीमें स्नान करे।'

दूसरे अकमें राम जनस्थान आदि प्रदेशोंको देखकर कहते हैं 'सचमुच वैदेहीको वन पसन्द थे। ये वे ही अरण्य हैं। जिससे अधिक भयानक और क्या होगा?'

तीसरे अकमें भी सीताके पाले हुओ हाथी, मोर, कदव और हिरनोका वर्णन आता है। देखिये

> सीतादेव्या स्वकर-कलितैं सल्लकीपल्लवाग्रैर्–
> अग्रे लोल करि-कलभको य पुरा वर्धितोऽभूत्।
> वध्वा सार्ध पयसि विहरन्सोऽयमन्येन दर्पाद्
> उद्दामेन द्विरदपतिना सनिपत्याभियुक्त ॥ ६ ॥
>
> अनुदिवसम् अवर्धयत् प्रिया ते
> यमचिरनिर्गतमुग्धलोलबर्हम्।
> मणिमुकुट अिवोच्छिख कदम्बे
> नदति स अेष वधूसख शिखण्डी ॥१८॥
>
> भ्रमिषु कृतपुटान्तर्मण्डलावृत्तिचक्षु
> प्रचलित-चटुल-भ्रू-ताण्डवैर्मण्डयन्त्या।
> कर-किसलय-तालैर्मुग्धया नर्त्यमान
> सुतमिव मनसा त्वा वत्सलेन स्मरामि ॥१०॥
>
> कतिपयकुसुमोद्गम कदम्ब
> प्रियतमया परिवर्धितो य आसीत्।
> स्मरति गिरिमयूर अेष देव्या
> स्वजन अिवात्र यत प्रमोदमेति ॥२०॥
>
> नीरन्ध्र-बाल-कदली-वन-मध्यवर्ति
> कान्तासखस्य शयनीय-शिलातल ते।
> अत्र स्थिता तृणमदाद् बहुशो यदेभ्य
> सीता ततो हरिणकैर् न विमुच्यते स्म ॥२१॥

करकमल-वितीर्णैर् अम्बु-नीवार-शष्पैस्
तरु-शकुनि-कुरगान् मैथिली यान् अपुष्यत्।
भवति मम विकारस् तेपु दृष्टेपु कोऽपि।
द्रव अिव हृदयस्य प्रस्तरोद्भेदयोग्य ॥२५॥

सुवर्णमय बना देती है. फसलकी समृद्धि और अुसका पीला रग, दोनोका यहा सूचन है।

पृ० १२२ जीवनमय. 'जीवन' का अर्थ पानी भी होता है।

पृ० १२३ रामरक्षा-स्तोत्र. बुध कौशिक अृषि द्वारा रचित अत्यत मनोहर और लोकप्रिय स्तोत्र।

शिरो मे राघव पातु, **भाल** दशरथात्मज ॥४॥
कौसल्येयो **दृशौ** पातु, विश्वामित्रप्रिय **श्रुती** ।
घ्राण पातु मखत्राता, **मुख** सौमित्रिवत्सल ॥५॥
जिह्वा विद्यानिधि पातु, **कठ** भरतवन्दित ।
स्कन्धौ दिव्यायुध पातु, **भुजौ** भग्नेशकार्मुक ॥६॥
करौ सीतापति पातु, **हृदय** जामदग्न्यजित् ।
मध्य पातु खरध्वसी, **नाभि** जाम्बवदाश्रय ॥७॥
सुग्रीवेश **कटि** पातु **सक्थिनी** हनुमत्प्रभु ।
अुरू रघूत्तम पातु, रक्ष कुल-विनाशकृत् ॥८॥
जानुनी सेतुकृत् पातु, **जङ्घे** दशमुखान्तक ।
पादौ विभीपणश्रीद, पातु रामोऽखिल **वपु** ॥९॥

२५ कृषक नदी घटप्रभा

पृ० १२४ हमारी ओरके: दक्षिण महाराष्ट्रको छूनेवाले।
बालकोका: किसानोका।

२६ कश्मीरकी दूधगगा

सरोवरको तोडकर: "आज जहा कश्मीरका रमणीय प्रदेश है, वही पुराणकालमे सतीसर नामक अेक सुदीर्घ सरोवर था, जो हर-मुख पर्वत और पीरपजालके बीच फैला हुआ था। स्वय पार्वती अिस सरोवरमे विहार करती थी। किन्तु बादमें अुसमे कअी राक्षस आ

घुमे। अिसलिअे देवताओंने सतीसरका नाश करनेकी बात सोची। भगवान कश्यपने वराहकी अुपासना की। वराहने संतुष्ट होकर अपने हुमियेसे पहाड़में घाटी बना दी और सतीसरका पानी 'वराहमूलम्' की घाटीमें से वितस्ता नदीके रूपमें बहने लगा। वितस्ता ही जेलम है और 'वराहमरम्' आजका बारामुल्ला है।"

—लेखककी गुजराती पुस्तक 'जीवननो आनंद' में से।

अुपत्यका घाटी। (अिसी प्रकार अधित्यका का अर्थ है अुच्च प्रदेश — tableland।)

पृ० १२५ सती-कन्या सतीके प्रदेशमें पैदा हुअी अिसलिअे।

२७ स्वर्धुनी वितस्ता

पृ० १२६ 'संसारमें अगर यहीं है' मूल फारसी पंक्तियां अिस प्रकार हैं

अगर फिरदौस बर्‌रूअे जमीनस्त,
हमीनस्ता, हमीनस्तो, हमीनस्त।

पृ० १२७ अुसके किनारे अेक बडी वैभवशाली संस्कृति हुआ अनंतपुरके समीप अेक पहाडीके नीचे अेक प्राचीन शहरके अवशेष दबे हुअे थे, जो अभी अभी खोदे गये हैं।

चिनार ये महावृक्ष सिर्फ कश्मीरमें ही होते हैं।

बुतशिकन [बुत = मूर्ति + शिकन = तोड़नेवाला] मूर्तिभंजक।

गाजी धर्मके लिअे युद्ध करनेवाला मुसलमान। यह शब्द अरबी है।

पृ० १२८ सर्वत संप्लुतोदके चारों ओर पानीकी बाढ आयी हो तब। गीता, २–४६

सूअरके दांतके जैसा मालूम होता है 'वराहमूलम्' परसे यह अुपमा सूझी है।

पृ० १२९ निर्माल्य देवताको चढानेके बाद जो फेंक दिये जाते हैं।

पृ० १३० स्वर्धुनी [स्वर् = स्वर्ग + धुनी = नदी] स्वर्गकी नदी।

२८ सेवाव्रता रावी

पृ० १३१ स्वामी रामतीर्थ - आधुनिक भारतके निर्माणमे स्वामी रामतीर्थका महत्त्वका हाथ है। श्री काकासाहवने मराठीमे स्वामीजीकी जीवनी लिखी थी तथा अुनके कुछ लेखोका अनुवाद करके मराठीमे अेक सग्रह प्रकाशित किया था। यह अुनकी पहली साहित्य-कृति थी। अिसीसे काकासाहवके लेखक-जीवनका आजसे तीस वर्ष पहले आरभ हुआ था।

अर्जुनदेव (१५६३–१६०६) सिखोके पाचवे गुरु। आदिग्रथके रचयिता। अिसमे अुन्होने पहलेके गुरुओकी और अन्य सतोकी वाणी सगृहीत की है। कहते है कि अुनके दुश्मनोने अकवर वादशाहके पास जाकर अुनके खिलाफ शिकायत की थी कि अर्जुनदेवने अिस ग्रथमे हिन्दूधर्म तथा अिस्लामकी निन्दा की है। किन्तु अकवरने अुनका ग्रथ देखकर अुनको छोड दिया और अुनका वडा सम्मान किया। जहागीरके समयमे अुनके दुश्मनोने फिरसे शिकायत की। जहागीर अपने लडके खुसरोको कैद करना चाहता था। खुसरो भागता हुआ अर्जुनदेवके पास आश्रय मागने आया। अर्जुनदेवने अुसको आश्रय दिया। वादशाहने अिसको राजद्रोह मानकर अुन पर दो लाख रुपयोका जुर्माना किया। अर्जुनदेवने न खुद जुर्माना दिया, न दूसरोको देने दिया। अिसलिअे वादशाहने जेलमे अुन पर वहुत अत्याचार करवाये और आखिर अुनकी हत्या करवा डाली। यो मानकर कि तलवारके विना अपना पथ कायम रहना असभव है, अुन्होने अपने पुत्रको सशस्त्र वन कर गद्दी पर वैठनेका और पर्याप्त फौज रखनेका आदेश भेज दिया था। अिससे सिखोके अितिहासको नयी ही दिशा प्राप्त हुअी।

रणजितसिह (१७८०–१८३९) सिखोके राजा। अहमदशाह अव्दालीके वाद पजावका सूवा फिरसे सिखोके हाथमें आया था। किन्तु अुसके छोटे-छोटे टुकडे हो गये और वे आपसमे लडने लगे। रणजितसिह तेरह सालकी अुम्रमे गद्दी पर वैठे। और १९ सालकी अुम्रमे अुन्होने सिखोके सभी राज्योका आधिपत्य अपने हाथमें ले लिया।

अंग्रेज भी अुनसे डरते थे। जब सन् १८२३ मे अुन्होंने पेशावर प्रान्त जीत लिया, तब अुसे वापस दिलवानेके लिअे दोस्त महमदने अंग्रेजोंसे बहुत कहा। किन्तु अंग्रेजोंने कुछ भी नहीं किया। ४० साल तक सतत परिश्रम करके रणजितसिंहने सिखोंमें फौजी ताकत पैदा की। कहते हैं कि जब वे अटक नदीको पार करना चाहते थे, तब अुनके गुरुने अुनसे कहा कि हिन्दुओंको अटक पार करनेकी आज्ञा नहीं है। अुन्होंने जवाबमें कहा

> सबै भूमि गोपालकी, तामें अटक कहा?
> जाके मनमें अटक है, वो ही अटक रहा।

और सारा अफगानिस्तान जीत लिया।

पृ० १३३ अप्सरा [अप् = पानी + सृ = आगे जाना = पानीमें तैरनेवाली, विहार करनेवाली।] गंधर्वोंकी स्त्री। अप्सराओंको पानीमें खेलना बहुत पसन्द है, अिसलिअे अुनको यह नाम दिया गया है। रामायणमें अुनकी अुत्पत्तिके बारेमें अिस प्रकार लिखा है

> अप्सु निर्मथनाद् अेव रसात् तस्माद वरस्त्रियः।
> अुत्पेतुर्मनुजश्रेष्ठ! तस्माद् अप्सरसोऽभवन्॥

परोपकाराय० यह शरीर परोपकारके लिअे है।

२९ स्तन्यदायिनी चिनाब

पृ० १३५ मेरी जीवन-स्मृति सन् १८९१-९२ में।

३० जम्मूकी तवी अथवा तावी

पृ० १३६ विग्रह युद्ध। अलग करना।

संधि सुलह। मिलाना।

राजनीतिमें कार्यसिद्धिके छह मार्ग बताये गये हैं,

(१) संधि, (२) विग्रह, (३) यान (चढाओ), (४) स्थान अथवा आसन (मुकाम करना), (५) संश्रय (आश्रय लेना), (६) द्वैध या द्वैधीभाव-फूट डालना।

'आत्मरति, आत्मक्रीड'० श्रेष्ठ ब्रह्मज्ञका वर्णन करते हुअे मुडकोपनिषद्मे कहा गया है

आत्मक्रीड आत्मरति क्रियावान् अेप ब्रह्मविदा वरिष्ठ ॥

मुण्डक, ३–१–४

आत्मामे खेलनेवाला, आत्मामे रमनेवाला, क्रियावान पुरुष ब्रह्मज्ञोमे श्रेष्ठ है।

आत्मन्येव० देखिये गीता, ३–१७

यस्त्वात्मरतिरेव स्यात् आत्मतृप्तश्च मानव ।
आत्मन्येव च सतुष्ट तस्य कार्य न विद्यते ॥

[जो मनुष्य आत्मामे ही रमा रहता है, जो अुसीसे तृप्त रहता है और अुसीमें सतोप मानता है, अुसे कुछ करनेको वाकी नही रहता।]

३१. सिंधुका विषाद

पृ० १३७ मानदण्ड: नापनेका दण्ड। महाकवि कालिदासके 'कुमारसभव' के पहले श्लोकमे हिमालयके लिअे अिस शब्दका प्रयोग किया गया है

अस्त्युत्तरस्या दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज ।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थित पृथिव्या अिव मानदण्ड ।

[अुत्तर दिशामे जिस पर देवोका वास है अैसा हिमालय नामक पर्वतराज पृथ्वीको नापनेके गजकी तरह पूर्व और पश्चिम सागरमें स्नान करता हुआ खडा है।]

पजावकी पाच नदियां. झेलम, चिनाव, रावी, व्यास और सतलज ।

युक्तप्रांतकी पाच नदिया: गगा, यमुना, गोमती, सरयू, चवल।

अति-भारतीय केवल भारतमे ही नही, वल्कि भारतकी सीमाके वाहर भी वहनेवाली ये दोनो नदिया भारतवर्पके वाहरसे भारतमें आती है, यानी भारतवर्पकी सीमाका अतिक्रमण करके वहती है, अिसलिअे अिन्हें अति-भारतीय कहा गया है।

पृ० १३८ वैदिक . सप्तसिंधु वेदोंमें जिनका जिक्र है, वे सात नदियां वितस्ता (झेलम), असिक्नी या चन्द्रभागा (चिनाब), परुष्णी या अिरावती (रावी), शतद्रु (सतलज), विपाशा (बियास, व्यास), सिंधु और सरस्वती। क्रुमु या कुर्रम अिनमें नहीं गिनी गअी है।

प्राचीन आर्य उत्तरमें आ पडे भारत पर जितने आक्रमण हुअे, लगभग सभी अिसी ओरसे हुअे।

परोपनिसदी अफगान। ग्रीक भाषामें अफगानिस्तानको 'परोपनिसद' कहते है।

यवन Ionian Greeks – यवन शब्द परसे यह शब्द बना है।

वाल्हीक बल्ख, बैक्ट्रिया। वाल्हीक शब्द वेदमें आया है।

रानी सेमीरामिस [अी० स० पूर्व ८०० के आसपास] असीरियाकी पुराण-प्रसिद्ध रानी। कहते है कि बेबिलोनकी स्थापना अिसीने की थी। और यह भी माना जाता है कि निनेवेहकी स्थापना करनेवाले अुसके पति नीनससे भी वह अधिक पराक्रमी थी। बचपनमें अुसकी माने अुसको छोड दिया था और कबूतरोंने अुसकी परवरिश की थी। प्रथम वह नीनसके अेक सेनापतिके साथ विवाह-बद्ध हुअी थी, किन्तु बादमें जब नीनसकी नजर अुस पर जमी तब अुसके पतिने आत्महत्या कर ली। अिसके बाद वह नीनससे विवाह-बद्ध हुअी और नीनसके पश्चात् गद्दी पर बैठी। अुत्तर-वयमें अुसने अपने पुत्रको गद्दी पर बिठाया था।

सुवर्ण-करभार अी० स० पूर्व छठी सदीमें अीरानके बादशाह पहले दरायसने सिंध प्रदेश अपने कब्जेमें ले लिया था और अुसने सालाना १८५ हंडरवेट (=५१५।। मण) सुवर्ण-करभार लेना शुरू किया था। अुसीका यहां अुल्लेख है।

युअेची अीस्वी सन् पूर्व पहली सदीके आसपास अुत्तर भारतसे शकोंको दक्षिणमें भगाकर वहां अपने साम्राज्यकी स्थापना करनेवाले मध्य अेशियाके कुशान लोग। जिनमें से कअियोंने बौद्ध और कुछ लोगोंने हिन्दूधर्म अपना लिया था। विख्यात बौद्ध सम्राट् कनिष्क कुशान

था। कुशान साम्राज्यके वैभवके दिनोमें अुसका विस्तार अितना था कि अुसमे पश्चिम अेशियाके वुखारा और अफगानिस्तान, मध्य अेशियाके क़ाशगर, यारकद और खोतान, अुत्तर भारतके कश्मीर, पजाव और वनारस तथा दक्षिणमे विन्ध्य तकके सारे प्रदेशका समावेश होता था।

हूण . अी० सन्‌की पाचवी या छठी सदीमें भारत पर लगातार आक्रमण करके मालवा, सिंध और सीमाप्रातमे अपना राज्य जमानेवाले श्वेत हूण। युरोपमे भी अिन्ही लोगोने अेटिलाकी सरदारीके नीचे रहकर वडे अत्याचार किये थे। यहा पर भी अुनके अत्याचारोसे अूवकर अतमें आर्यावर्तके सभी राजाओने वालादित्य और यशोधर्माके नेतृत्वमें अिकट्ठे होकर हूण राजा मिहिरगुलको हराया और अुसे गिरफ्तार किया था। अिसके वाद अुनका आक्रमण फिर नही हुआ। भारतमें हूणोका राज्य आधी सदी तक रहा।

गिलगिट : श्रीनगरकी वायव्य दिशामें १२५ मील दूर ४८९० फुटकी अूचाअी पर अिसी नामके जिलेका मुख्य केन्द्र। अिसके आस-पास वौद्ध अवशेष फैले हुअे हैं।

पृ० १३९ चित्राल : वायव्य सरहद प्रातके अिसी नामके अेक राज्यका मुख्य शहर।

स्वात . पजकोरासे मिलनेवाली अेक छोटीसी नदी।

सफेद कोह : पहाडका नाम। कोह=पहाड। तुलना कीजिये कोह-अि-नूर=तेजका पहाड।

वैक्ट्रिया · वल्ख

कर्नल यगहसवड . सर फ्रासिस अेडवर्ड यगहसवड १८६३ में पजावमें पैदा हुअे। जातिसे अेंग्लो-अिंडियन। १८८२ में फौजमे भरती हुअे। १८९० में पोलिटिकल डिपार्टमेंटमें वदली हुअी। १८८६ में मचूरियामे खोज की। १८८७ मे चीनी तुर्किस्तानके रास्ते पेकिंगसे भारत तककी यात्रा की। १८९३–९४ में चित्रालमें पोलिटिकल अेजटके तौर पर रहे। १८९५ में चित्रालकी लडाअी हुअी, तव 'टािअम्स'के सवाददाताके तौर पर काम किया। १९०३–४ में व्रिटिश-मडलके

साथ ल्हासा गये। पूर्वके देशोंके बारेमें आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। रॉयल ज्यॉग्राफिकल सोसायटीके प्रमुख १९१९। विस्तृत जीवनीके लिअे पढ़िये 'फ्रांसिस यंगहसबंड — अेक्स्प्लोरर अेंड मिस्टिक' — लेखक जॉर्ज स्वीवर।

अमीर अमानुल्ला भारतमें रौलेट बिलके खिलाफ जब प्रचंड आंदोलन चला, अुसी समय १९१९ के अप्रैलमें अफगानिस्तानके अमीरने भारत पर आक्रमण किया था। दस दिनोंके अंदर ही अफगान परास्त हो गये थे। लम्बी बातचीतके पश्चात् ८ अगस्तको रावलपिंडीमें संधिपत्र पर दस्तखत किये गये थे।

गरमीका पागलपन अुस समय गरमीके दिन थे और काम अविचारी था अिसलिअे। अमीरका खयाल था कि गरमीके दिनोंमें अगर आक्रमण करेंगे तो अंग्रेज परास्त हो जायेंगे। किन्तु यह गलत खयाल था। अंग्रेजोंने अिस साहसको 'मिड-समर मैडनेस' का नाम दिया था।

परसों यह मराठी प्रयोग है।

कोहाटकी क्रूरता सन् १९२४ में ९–१० सितम्बरको कोहाटमें घटी हुअी घटनाका यहां जिक्र है। धर्मान्तर तथा अपहरणोंके कारण वहांका वातावरण पहले ही गरम हो चुका था। अितनेमें वहांकी सनातन धर्मसभाके मंत्रीने अेक पुस्तिका प्रसिद्ध की, जिससे मुसलमानोंकी भावनायें अुत्तेजित हो अुठीं। हिन्दुओंने फौरन दुःख प्रगट किया और पुस्तिकाकी बाकी रही नकलें सार्वजनिक रूपसे जला दीं। फिर भी मुसलमानोंको संतोष नहीं हुआ और अुन्होंने हिन्दुओंके खिलाफ सख्त कार्रवाअी करनेकी मांग सरकारके सामने पेश की। तबसे मस्जिदमें जमा होकर अुन्होंने बदला लेनेकी प्रतिज्ञा ली। ९ सितम्बरको सनातन धर्मसभाके मंत्री जमानत पर रिहा किये गये और दंगे शुरू हुअे। ये दंगे कैसे शुरू हुअे, अिस बारेमें मतभेद है, किन्तु शुरू होनेके बाद दो पक्षोंमें आमने-सामने गोलियां चलीं। सारे हिन्दू मोहल्लोंको आग लगा दी गयी। पुलिस और फौजने भी गोली चलाअी। परिणाम-स्वरूप अपार हानि हुअी। सभी हिन्दुओंको सरकारी रक्षाके नीचे

केन्टोनमेन्टमे रखा गया। वहासे अुनकी मागके अनुसार अुन्हें रावल-पिंडी भेज दिया गया। वेलगाव काग्रेसमे अिस म्दथमे जो प्रस्ताव पास किया गया था, अुसमें हिन्दुओको यह सलाह दी गयी थी कि कोहाटके मुसलमान अुन्हें सम्मानपूर्वक वापस न वुलाये और जानमालकी सला-मतीका विश्वास न दिलाये, तव तक वे वापस न लौटे।

कुरम: सुलेमान पर्वतसे निकल कर सिन्धुसे मिलनेवाली नदी। अिसका वैदिक नाम है क्रुमु।

डेरा अिस्माअिलखा· लाहौरके पश्चिममे १२५ मीलकी दूरी पर स्थित सीमाप्रान्तका अेक शहर। यहासे गोमलघाटके द्वारा अफ-गानिस्तानके साथ तिजारत चलती है। सूती कपडे और वेलवूटेके कामके लिअे प्रसिद्ध है।

डेरा गाजीखा भावलपुरकी वायव्य दिशामे ७० मीलकी दूरी पर स्थित पजावका अेक शहर। सिंधुकी वाढसे अिसकी काफी हानि हुआ करती थी, अिसलिअे १८९१ मे यहा पत्थरका अेक वाध वाधा गया था। यहाकी कुछ मसजिदें मशहूर हैं।

लाहौरका वैभव· अकवर और अुसके वशजोके जमानेमें लाहौरका वैभव वहुत वडा था। वजीरखाकी मसजिद, जामा मसजिद, शीशमहल, रणजितसिंहके महल और शहरके वाहर शाहदरेमे स्थित वादशाह जहागीरकी कब्र और शालीमार वाग आज भी अुसके वैभवके साक्षी हैं।

व्यास वियास, विपाशा। वसिष्ठ मुनिके सौ पुत्रोको राक्षस खा गये तव पुत्रशोकसे विह्वल होकर वे देहत्याग करनेके अिरादेसे अिस नदीमें कूद पडे थे। किन्तु नदीने अुन्हें विपाश यानी पाशमुक्त किया, अिसलिअे यह 'विपाशा' कहलाअी।

त्यागाय संभृतार्थानाम् 'रघुवश' के प्रारभमे महाकवि कालिदास रघुओका वर्णन करते समय अुनकी अनेक विशेषतायें वताते हैं। अुनमें अेक विशेपता यह है। जो त्याग = दानके लिअे सभृत अर्थ = धन अिकट्ठा करनेवाले हैं, अुन रघुओंके वशकी कीर्ति मैं गाना चाहता हू।

पृ० १४० अुसमें से मनमाना . चाहे नहरके रूपमें।

अुदारता · चौडाअी ?

जयद्रथके समयमें महाभारतके समयमें। जयद्रथ सिंधु देशका राजा था।

दाहिर [६४५–७१२] सिन्धका अेक ब्राह्मण राजा। जच्चका पुत्र। सिन्ध प्रान्तको छूनेवाले खिलाफतके प्रान्तके सूबेदार हज्जाजको अुसने कअी वार हराया था। अिसके पश्चात् मुहम्मद बिन कासिम नामक सत्रह वर्षकी अुम्रके सेनापतिको अुसके खिलाफ युद्ध करनेके लिअे भेजा गया, अिस युद्धमें दाहिरका हाथी भडक अुठा, जिसकी वजहसे वह मारा गया। अुसकी फौज भाग गअी। तबसे मुसलमानोंको हिन्दुस्तानमें प्रवेश मिला। मुहम्मदने अुसकी रानीके साथ शादी की और अुसकी दो लडकियोंको नजरानेके तौर पर खलीफाके पास भेज दिया।

जच्च [४९७–६३७] दाहिरका पिता। जिसका अितिहास फारसीमें 'चचनामा' नामक किताबमें दिया गया है। वह बडा शूर था। अुसने अपने राज्यकी सीमा ठेठ कश्मीर तक फैलायी थी। वह सिंधके आरोर नामक गावके अग्निहोत्री ब्राह्मण शैलजका पुत्र था। प्रथम वह सिंधके राजाके मन्त्रीका कारकुन था, बादमें प्रधान मन्त्री बना, आखिर राजा बना और रानीके साथ अुसने शादी की। ब्राह्मणवादसे बौद्धधर्मी लोगों पर अुसने काफी जुल्म ढाये थे।

पृ० १४१ अनाचार सिन्धके अेक ब्राह्मण राजासे अेक ज्योतिषीने कहा था कि तुम्हारी बहनका लडका तुम्हारा राज्य छीन लेगा। जिसके अिलाजके तौर पर राजाने अपनी बहनके साथ ही शादी कर ली। दूसरे अेक राजाने अेक सती पर अत्याचार किये थे। अिन ब्राह्मण राजाओंके अत्याचारोंसे लोग अितने परेशान हो गये थे कि मुहम्मद बिन कासिमको जाट और मेड लोगोंने ही सबसे अधिक मदद की थी।

मुहम्मद बिन कासिम सिन्ध प्रान्तको जीतकर खिलाफतमें शामिल करनेवाला किशोर सेनापति। दाहिरके खिलाफ युद्ध करनेके बाद इसने

दाहिरकी दो लडकियोको खलीफाके पास नजरानेके तौर पर भेज दिया था। जब खलीफाने अिनमें से अेक लडकीके साथ शादी करनेकी अिच्छा व्यक्त की, तब अिन लडकियोने कहा कि गुहम्मदने अुन्हे भ्रष्ट कर दिया है, अिसलिअे वे अिस सम्मानके लायक नही है। अिस पर खलीफाने गुस्सा होकर मुहम्मदको हुक्म दिया कि गायके चमडेमे अपनेको सीकर वह खलीफाके सामने हाजिर हो। मुहम्मदने खलीफाकी आज्ञाका पालन किया, जिससे दूसरे ही दिन अुसकी मृत्यु हो गअी। जब मुहम्मदका शव अिस हालतमे हाजिर किया गया, तब लडकियोने खलीफाको सत्य कह डाला कि अुन्होने बदला लेनेकी दृष्टिसे झूठ बात कही थी! खलीफाने अिन दोनो लडकियोकी गरदन अुडा दी।

सर चार्ल्स नेपियर . [१७८२–१८५३] १८०८ मे स्पेनमें मूर लोगोके खिलाफ अिसने लडाअी की, और कोरूनामे गिरफ्तार हुआ। १८१३ मे अमरीकाके खिलाफ युद्ध किया। १८१५ में नेपोलियनके खिलाफ युद्ध किया। वह कवि बायरनका मित्र था। १८४१ मे भारत आया। १८४२ में सिन्धकी फौजका नेतृत्व किया और अिसी वर्षके अन्तमे अिमामगढका किला कब्जेमें लिया। १८५४ के मियाणीके युद्धमें विजयी हुआ। मीरपुरके शेरमुहम्मदको परास्त करके भगा दिया। १८४४–४५ में सिन्धकी पहाडी जातियो पर विजय प्राप्त की। डलहाअुजीके साथ मतभेद होने पर अिस्तीफा देकर घर लौट गया। १८५३ मे मृत्यु। अन्यायसे सिन्ध पर अधिकार करनेके बाद अिसने रिपोर्ट दी "I have sinned (sind)"–मैने सिन्ध पर कब्जा कर लिया है।

सुहिणी अेक धनवान कुम्हारकी लडकी। बुखाराका अेक खानदानी मुगल नौजवान मेहार अुमकी मुहब्बतमे फस गया था और अुससे मिलनेमें कोअी कठिनाअी न हो अिसलिअे वेश बदलकर अुसके पिताके घर नौकर बन कर रहा था। दोनोके बीच प्रेमका नाता दृढ होने लगा। किन्तु लडकीके पिताको वह पसद नही आया। अिसलिअे अुसने मेहारको नौकरीसे हटा दिया। वह सिन्धुके अुस पार जाकर रहा। सुहिणी हमेशा रातके समय मिट्टीके अेक बरतनका

सहारा लेकर सिन्धु नदी पार करती थी और मेहारसे मिलने जाती थी। जब अिस बातका पता अुसके पिताको चला, तब अुसने पक्के घडेके बदलेमें कच्चा घडा वहा रख दिया। सुहिणी तो प्रेमकी मस्तीमें थी। वह कच्चा घडा लेकर ही नदीमें कूद पडी। जरा आगे गअी कि घडा पिघलने लगा। अुसने मेहारको पुकारा। सामनेके किनारेसे वह अुसे बचानेके लिअे दौडा, किन्तु बचा नही सका। अतमें दोनोने साथ ही जल-समाधि ली।

३२ मचरकी जीवन-विभूति

पृ० १४२ दिशो न जाने० न मैं दिशा जानता हू, न शान्ति प्राप्त करता हू। गीता, ११–२५

अिदानीम्० अब मैं शात हो गया हू और स्वस्थ बन गया हू। गीता, ११–५१

पृ० १४४ स्वप्नसृष्टि पर राज्य किया लोक-कथाओंमें 'खाया, पिया और राज्य किया' कहनेका प्रयोग चलता है। यहा पर 'स्वप्न-सृष्टि पर राज्य किया'का मतलब है 'नीद ली।'

अजगरोकी अुपासना कर रहे थे अजगर बडे आलसी होते है। अिसलिअे यहा अर्थ होगा आलस्यकी अुपासना करते थे।

रेहानाबहन श्री अब्बास तैयबजीकी पुत्री। भक्त-हृदय और सुकण्ठ गायिका। अिनकी 'Heart of a Gopi' नामक किताब बडी मशहूर है। अिस किताबके फ्रेंच तथा पोलिश भाषामें भी अनुवाद हुअे है। हिन्दीमें 'गोपी-हृदय' नामसे अनुवाद प्रकाशित हुआ है। अिनकी कुछ मौलिक हिन्दी किताबें भी है 'सुनिये काकासाहब!', 'नाश्तेसे पहले', 'कृपा-किरन' वगैरा। अिनकी हिन्दी या हिन्दुस्तानी शैली अपने ढगकी निराली है।

पृ० १४७ मघ मकानमें हवा आनेके लिअे छत पर जो चौरस आकारकी चिमनी जैसी रचना होती है अुसको मघ कहते है।

'ढढ' यह सिन्धी शब्द है।

३३. लहरोका ताडवयोग

पृ० १४९ वप्रक्रीडा · सीग या लम्वे दातोके सहारे जमीन खोदनेका खेल। 'मेघदूत' मे अिसका प्रयोग किया गया है

तस्मिन्नद्रौ कतिचिद् अवला-विप्रयुक्त स कामी
नीत्वा मासान् कनक-वलय-भ्रश-रिक्त-प्रकोष्ठ ।
आपाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानु
वप्रक्रीडापरिणतगजप्रेक्षणीय ददर्श ।।

पृ० १५० अमर्ष तिरस्कार या अपमानसे पैदा हुआ स्थिर क्रोध। काव्यशास्त्रमे अुसकी व्याख्या अिस प्रकार की गअी है 'अधिक्षेपापमानादेरमर्षोऽभिनिविष्टता।' भारवि कविके 'किरातार्जुनीय' काव्यमें दुर्योधनकी राजनीतिकी प्रशसा सुनकर द्रौपदी नाराज होती है और युधिष्ठिरमे कहती है "अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादर ।। १,३३ [जिसमें अमर्ष नही है अुसका न स्नेहीजन आदर करते, न शत्रु आदर करते]

शिव-ताडव-स्तोत्र कवि रावणका लिखा प्रसिद्ध स्तोत्र। देखिये, 'जोगका प्रपात' की टिप्पणिया।

प्रमाणिका और पचचामर · ये दो सस्कृतके लोकप्रिय और अत्यत सरल छद है। प्रमाणिकाके दो पद मिलने पर अेक पचचामर वनता है। अुसको नाराच भी कहते हैं।

प्रमाणिकापदद्वयम् वदेत पचचामरम्।

पुष्पदत अेक गधर्व और शिवगण। शिवमहिम्न-स्तोत्रका रचयिता। वायव्य दिशाके दिग्गजका नाम भी पुष्पदत है। पुष्पदतकी कथा 'कथासरित्सागर' मे है।

गोमूत्रिकावध · चित्रकाव्यका अेक प्रकार।

श्रावण-भादोकी धारायें: राजमहलमें जव पानीका प्रवाह वहाया जाता है और वीचमे छोटेसे पत्थर परसे वहता अुसका प्रपात वनाया जाता है, तव अिस प्रपातको श्रावण-भादोकी धाराये कहते हैं।

३४ सिंधुके बाद गंगा

पृ० १५३ सौवीर देश सिन्ध और मारवाडकी सीमाका प्रदेश।

पृ० १५५ सदाकत आश्रम [सदाकत = सत्य + आश्रम] बिहारके प्रसिद्ध देशभक्त मजहरुल हकने अिसकी स्थापना सन् १९२०–२१ के अर्सेमें की थी।

पृ० १५८ 'रसो वै स' निश्चय ही वह रस है। तैत्तिरीयोपनिषद्में ब्रह्मका वर्णन करते समय यह वचन कहा गया है। देखिये तैत्तिरीय० २–७।

पृ० १५९ कैंकर्य [किंकर (= नौकर) + य] नौकरपन, नौकरी।

पृ० १६० ॐ पूर्णम् अद ० यह (जगत्) पूर्ण है, वह (ब्रह्म) भी पूर्ण है। पूर्णमें से पूर्ण ही प्रकट होता है। पूर्णमें से यदि पूर्णको निकाल ले तो पूर्ण ही शेष रहता है।

ओीशावास्योपनिषद्के प्रारंभ तथा अंतमें यह शांतिमंत्र है।

३५ नदी पर नहर

पृ० १६१ कलौ आद्यन्तयो स्थिति दक्षिणमें यह बात फैलायी गयी है कि कलिकालमें सिर्फ दो ही वर्णोंका अस्तित्व है – ब्राह्मण और शूद्र, क्योंकि संस्कार-लोपके कारण क्षत्रिय और वैश्य भी अब शूद्र जैसे बन गये हैं।

द्विजत्व जिन्हें जनेअू लेकर अिसी जन्ममें दूसरा जन्म लेनेका अधिकार है, अुन ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य तीनों वर्णोंको द्विज कहते हैं।

जन्मना जायते शूद्र संस्कारात् द्विज अुच्यते।

भगीरथ भगीरथने हिमालयमें गंगाको अुतारकर बंगालके अुपसागर तकके प्रदेशको अुपजाअू बनाया था। अुस परसे जल-सिंचनकी विद्यामें कुशल।

पृ० १६२ निम्नगा नीचेकी ओर बहनेवाली।

परिवाह अतिरिक्त जलके बहनेके लिअे रखा गया मार्ग। overflow

३६. नेपालकी बाघमती

पृ० १६३ अतिमानुषी · अलौकिक। अग्रेजी superhuman

भगिनी निवेदिता · स्वामी विवेकानदकी अग्रेज शिष्या मिस मार्गरेट नोवल। निवेदिता नाम गुरुका दिया हुआ था।

पृ० १६५ गोरक्षनाथ · अयोध्याके समीप जयश्री नामक नगरीमें सद्‌बोध नामके किसी ब्राह्मणकी सद्‌वृत्ति नामक अेक स्त्री थी। अेक बार भिक्षा मागते हुअे मत्स्येन्द्रनाथ वहा आ पहुचे। साधु पुरुष जानकर अुनको अुस स्त्रीने सतान न होनेकी बात बताअी। मत्स्येन्द्रनाथने भस्म दी, किन्तु अुसका प्रसादके तौर पर स्वीकार करनेके बदले अुसने अुसे घूरे पर फेक दिया। ठीक बारह सालके बाद मत्स्येन्द्रनाथ फिर पधारे और अुन्होने पूछा, "लडका कहा है?" सद्‌वृत्तिने सच बात बता दी। अिस पर मत्स्येन्द्रनाथने घूरेके पास जाकर पुकारा 'अलख'। तुरन्त सामनेसे 'आदेश' कहकर गोरक्षनाथकी बालमूर्ति खडी हो गअी। अिसी कारणसे गोरक्षनाथको अयोनिज कहते है। गुरुके पास रहकर गोरक्षनाथने सब विद्या प्राप्त की। मत्स्येन्द्रनाथ योगी भी थे और भोगी भी थे। किन्तु गोरक्षनाथका वैराग्य अग्निके समान प्रखर था। मत्स्येन्द्र-नाथको सिहल द्वीपकी प्रमिलारानीके मोहपाशसे गोरक्षनाथने ही मुक्त किया था। वे योगी, शिवोपासक, अद्वैतवादी और कीमियागरके रूपमें प्रसिद्ध है। बगाल, पजाब, नेपाल, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र, सिहल द्वीप आदि सभी स्थानोमें अुनके मठ है।

मत्स्येन्द्रनाथ और गोरक्षनाथ नेपालके गुरखा लोगोके देवता है। गोरक्षनाथ परसे ही अिनको 'गुरखा' कहते है। नेपालमें बौद्धोका महायान पथ चलता था। अुसकी पराजय करके गोरक्षनाथने वहाके लोगोमें शिवकी अुपासना प्रचलित की थी। गोरक्षनाथका समय अब तक निश्चित नही हो सका है।

३७ बिहारकी गडकी

पृ० १६५ गंडकी बिहारमें दो नदियोका नाम गडकी है। लेखकने मुजफ्फरपुरके पास जो गडकी देखी थी वह है बृद्ध या छोटी गडकी। दूसरी गडकी बडी है।

पृ० १६६ बौद्ध जगतके दो छोर नर्मदा और गडकीके बीच बौद्ध जगत समाया हुआ था।

माडलिक नदिया पानी-रूपी करभार देनेवाली नदिया, अुससे मिलनेवाली नदिया।

अष्टागिक मार्ग भगवान बुद्धके बताये हुअे आर्य अष्टागिक मार्गके आठ अग अिस प्रकार है (१) सम्यक् दृष्टि, (२) सम्यक् सकल्प, (३) सम्यक् वाचा, (४) सम्यक् कर्मान्त, (५) सम्यक् आजीव, (६) सम्यक् व्यायाम, (७) सम्यक् स्मृति, और (८) सम्यक् समाधि।

मार मनुष्यकी सद्वासनाओका नाश करनेवाला। बौद्धधर्ममे आसुरी सपत्तिके अधिष्ठाता व्यक्तिको 'मार' कहते है।

३८ गयाकी फल्गु

पृ० १६७ सीताका शाप कहते है कि अेक समय राम, सीता और लक्ष्मण घूमते-घूमते फल्गुके किनारे आ पहुचे। वहा पहुचते ही रामको स्मरण हुआ कि आज मेरे पिताजीके श्राद्धका दिन है। अिसलिअे सामान लानेके लिअे अुन्होने लक्ष्मणको शहरमे भेजा। लक्ष्मण गये, किन्तु बडी देर तक वापस नही लौटे। जिससे रामको चिंता हुअी और वे स्वय अुन्हे ढूढनेके लिअे निकल पडे। अिधर श्राद्धका मुहूर्त चूकने लगा, अिसलिअे सीताजीने नहा-धोकर जो कुछ था अुसीसे अपने पतिके बदले स्वय अुनके पितरोको पिंडदान दिया। पितरोने सतोषपूर्वक पिंडका स्वीकार किया। वे पिंड लेकर जाने लगे, तब सीताजीने अुनसे पूछा 'आप स्वय आकर पिंड ले गये है, यह मेरे पतिको कैसे मालूम होगा?' तब आकाशवाणी हुअी 'तुम साक्षी रखो।' सीताजीने फल्गु नदी, गाय, अग्नि और केवडेको साक्षी रखा।

राम-लक्ष्मण सारी सामग्री लेकर आये और अुन्होने सीताको चरु (पिंडका भात) तैयार करनेको कहा। किन्तु सीताने न तो कोअी अुत्तर दिया, न चरु तैयार किया। अतमें रामने पूछा, तब सीताने सारी बात बता दी। किन्तु राम-लक्ष्मणको विश्वास नही हुआ। अिसलिअे सीताने

फल्गु आदि सव साक्षियोसे पूछनेके लिअे कहा। मगर अिन सवने कहा, 'हम कुछ मालूम नही है।' अत सीताने लाचारीसे दुवारा चरु तैयार किया और रामने पिंडके लिअे पितरोका आवाहन किया। तव आकाशवाणी हुअी कि जानकीने हमे तृप्त किया है। किन्तु रामको विश्वास नही हुआ। अिसलिअे फिरसे आकाशवाणी हुअी। अिससे भी रामको सतोप नही हुआ। अिस पर स्वय सूर्यने आकर साक्षी दी, तव रामको विश्वास हुआ।

साक्षी होते हुअे भी अुन्होने वात नही वताअी, अिसलिअे सीताने अुन चारोको शाप दिया। फल्गुको कहा, 'तुम पातालमे रहोगी।' केवडेको कहा, 'तुम शिवजीको अग्राह्य होगे।' गायको कहा, 'तेरा मुह अपवित्र माना जायगा और पूछ पवित्र मानी जायगी।' अग्निको कहा, 'तुम सर्वभक्षक होगे'।—शिवपुराण, अध्याय ३०।

३९ गरजता हुआ शोणभद्र

पृ० १६८ अय शोण ० "स्वच्छ जलवाला, अगाध, पुलिन-मडित, अैसा यह शोण है। हे ब्रह्मन्, हम किस रास्तेसे पार अुतरेगे?" श्री रामचद्रके पूछने पर विश्वामित्रने जवाव दिया, "जिस रास्तेसे महर्षि जाते है, वह मेरे द्वारा वताया हुआ मार्ग यह है।"

क्षत्रिय गुरुशिष्य क्षत्रियोके गुरु अक्सर ब्राह्मण ही होते है। किन्तु यहा गुरु विश्वामित्र भी मूलत क्षत्रिय थे।

पीवरकाय' पुष्ट शरीरवाला।

गजेन्द्र और ग्राह हाहा और हुहु नामक दो गधर्व थे। किसी दिन अिन दोनोके वीच विवाद चला—'सगीत-विद्यामे हममें कौन वडा है?' वे अिन्द्रके पास गये और अुसके सामने अपनी कला दिखाअी। अिन्द्रने कहा, 'तुम दोनोमें कौन वडा है, यह तो देवल ॠपिके सिवा और कोअी नही वता सकेगा।' अिसलिअे वे देवल ॠपिके पास गये और गाने लगे। ॠपि अुस समय ध्यानमग्न थे। वे कुछ वोले नही। अिसलिअे यह मानकर कि वे जड है, कुछ समझते नही है, गधर्वोने अुनका अपमान किया। अिससे ॠपिने अुनको शाप दिया कि 'तुम अव

मृत्युलोकमें जन्म लोगे।' किन्तु बादमें अुनकी प्रार्थना सुनकर शापके निवारणके लिअे कहा कि 'हरि तुम्हारा अुद्धार करेंगे।'

अिस प्रकार वे दोनों मृत्युलोकमें गजेन्द्र और ग्राहके रूपमें पैदा हुअे। अेक बार गजेन्द्र जलक्रीडाके लिअे पानीमें अुतरा, तब ग्राहने अुसका पाव पकड लिया और अुसे अंदर खीचने लगा। बाहर आनेके लिअे गजेन्द्रने काफी प्रयत्न किया, किन्तु कुछ नही हुआ। और वह गहरे पानीमें खिचता चला गया। जब वह पूराका पूरा पानीमें चला गया, सिर्फ सूड ही बाकी रही, तब अुसने अीश्वरकी स्तुति की। स्तुति सुनकर अीश्वरने आकर अुसे बचाया और दोनोंका अुद्धार किया।

यह कथा पचरत्न-गीताके 'गजेन्द्र-मोक्ष' में है।

[बरसों पहले Tug of War के लिअे श्री काकासाहबने गुजरातीमें 'गजग्राह' शब्द प्रचलित किया था।]

ब्रह्मपुत्र ब्रह्मपुत्राका सही नाम है 'ब्रह्मपुत्र'। शायद रोमन लिपिके कारण गडबड हुअी है। लेखकने अिस पुस्तकमें दोनों रूपोंका प्रयोग किया है।

पृ० १६९ कहा जाअू ० महाकवि कालिदासने शोणका यह भाव बहुत सुन्दर ढंगसे व्यक्त किया है। अिन्दुमतीके स्वयंवरके बाद निराश हुअे राजा लोग अजका मार्ग रोकते हैं, तब अज अुनकी सेना पर टूट पडता है। कालिदासने अिसकी तुलना भागीरथी पर अपनी अुत्ताल तरंगोंसे टूट पडनेवाले शोणसे की है।

तस्या स रक्षार्थम् अनल्पबोध
आदिश्य पित्र्य सचिव कुमार।
प्रत्यग्रहीत् पार्थिव-वाहिनी ता
भागीरथी शोण अिवोत्तरग।
—रघुवंश ७–३६

नाल्पे सुखमस्ति तत् सुखम् 'अल्पमें सुख नही है। जो भूमा है—सारे विश्वको समा ले अितना विशाल है, वही सुखरूप है।' (छांदोग्य, ७–२३)

४०. तेरदालका मृगजल

जमखडी : दक्षिण महाराष्ट्रका अेक शहर।

४१. चर्मण्वती चंबल

पृ० १७२ रतिदेव. भरतकी छठी पीढीमे हुआ सूर्यवशी राजा। महाभारतमे अिसकी कथा दो वार आयी है। मेघदूतमे भी अिसका जिक्र आता है।

हेकॅटॉम. [शत अुक्ष यज्ञ] ग्रीक (यूनानी) लोगोका अेक यज्ञ जिसमे सौ वैलोकी आहुति दी जाती थी।

भूदेव : ब्राह्मण। अग्नि और ब्राह्मण देवताओके मुख माने जाते हैं। वे जो खाते हैं वह सीधा देवताओको मिल जाता है।

४२ नदीका सरोवर

पृ० १७३ वेलाताल ताल = तालाव। जैसे नैनीताल, भीमताल।

पृ० १७४ हिमालयसे माफी मागकर : हिमालयमे केदारनाथके पास मदाकिनी नामक अेक नदी है, अिसलिअे।

महाराज पुलकेशी. वातापी वशका राजा। छठी सदीके मध्य भागमे अुसने महाराष्ट्रके छोटे छोटे सव राज्योको अेकत्र करके अेक साम्राज्यकी स्थापना की थी और अश्वमेध यज्ञ भी किया था। अुसके पुत्र कीर्तिवर्माने पिताके साम्राज्यका विस्तार किया और अुसमें अग-वग और मगधका भी समावेश किया। सन् ६०९ मे जव दूसरा पुलकेशी गद्दी पर वैठा तव यह चालुक्य साम्राज्य विन्ध्यसे लेकर दक्षिणमे पल्लव साम्राज्य तक फैला हुआ था। अुसने मालव, गुर्जर, और कलिंगोको भी अधीन कर लिया था। अुसका सवसे वडा पराक्रम तो यह था कि महाराज हर्षने जव दक्षिण पर आक्रमण किया, तव पुलकेशीने अुनको रोका और पराजित किया (औ० स० ६३६)। पुलकेशी = पुलिकेशी। दक्षिणकी भाषामें पुलि = हुलि = वाघ। जिसके वाल (केश) वाघकी अयालके जैसे हों, वह है पुलकेशी।

पृ० १७५ अनाविला जिसमे कीचड नही है, अैसी। स्वच्छ।

Our Outs'.
LIFE OF JAW
पृ० १७६ दशार्ण
(दुर्ग) जिसमें
अिसका अुल्लेख अिस प्र
नीडारम्भै
त्वय्यासन्ने
सपत्स्यन्त
वेत्रवती
अुल्लेख है
तेषा दिन
गत्वा सद्य
तीरोपान्त
सभ्रूभग
पृ० १७७
में ये वचन हैं।
'शर्मदा' कहा गया है
सुमल्य
पृ० १७९ मेरी
खाता। दूसरे कौवोंको
लेखकका नाम
पृ० १८६
ये शब्द जाते है।
वहिष्प्रज्ञ है। वह न
है, न वाप्रज्ञ है।'
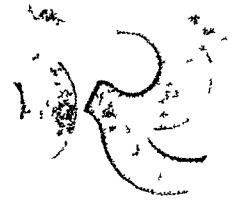
पृ० १७६ दशार्ण विन्ध्याचलके दक्षिण-पूर्वमें स्थित प्रदेश। दश +ऋण (दुर्ग) जिसमें है वह। नदीका नाम है 'दशार्णा'। मेघदूतमें अिसका अुल्लेख अिस प्रकार आता है

पाण्डुच्छायोपवनवृतय केतकै सूचिभिन्नैर्-
नीडारम्भैर् गृहवलिभुजाम् आकुलग्रामचैत्या।
त्वय्यासन्ने परिणतफलश्याम-जम्बूवनान्त
सपत्स्यन्ते कतिपयदिनस्थायिहसा दशार्णा ॥२३॥

वेत्रवती मालवाकी अेक नदी, वेतवा। मेघदूतमें अिसका भी अुल्लेख है

तेषा दिक्षु प्रथित-विदिशा-लक्षणा राजधानी
गत्वा सद्य फलम् अविकलम् कामुकत्वस्य लब्ध्वा।
तीरोपान्त-स्तनित-सुभग पास्यसि स्वादु यस्मात्।
सभ्रूभग मुखम् अिव पयो वेत्रवत्याश् चलोर्मि ॥२४॥

४३. निशीथ-यात्रा

पृ० १७७ सबिन्दु-सिन्धु० श्री शकराचार्य विरचित 'नर्मदास्तोत्र' में ये वचन हैं। अिसी स्तोत्रमें निम्नलिखित श्लोक है, जिसमें नर्मदाको 'शर्मदा' कहा गया है

त्वदम्बुलीन दीनमीन दिव्य सम्प्रदायक
कलौ मलौघभारहारि सर्वतीर्थनायकम्।
सुमत्स्य-कच्छ-नक्रचक्र-चक्रवाक-शर्मदे
त्वदीयपादपकज नमामि देवि नर्मदे॥

पृ० १७९ मेरी जाति है कौवेकी कौवा कभी अकेला नहीं खाता। दूसरे कौवोको पुकार कर ही खाता है।

लेखकका नाम 'काका' है, यह भी नहीं भूलना चाहिये।

पृ० १८६ नान्त प्रज्ञ० माण्डूक्योपनिषद्में तुरीय रूपके वर्णनमें ये शब्द आते हैं। अिनका अर्थ है—'वह न अत प्रज्ञ है, न बहिष्प्रज्ञ है। वह न अुभयत प्रज्ञ है, न प्रज्ञानघन है। वह न प्रज्ञ है, न अप्रज्ञ है।'

४४ धुवाधार

पृ० १९३ पूषन्नेकर्षे० और ॐ ऋतो स्मर, कृत स्मर ये ओशावास्योपनिपद्के श्लोक है। पूरे श्लोक अिस प्रकार है

पूपन्नेकर्पे यम सूर्य प्राजापत्य! व्यूह रश्मीन्, समूह।
तेजो, यत्ते रूप कल्याणतम तत्ते पश्यामि
योऽसावसौ पुरुप सोऽहमस्मि ।। १६ ।।
वायुर् अनिलम् अमृतम् अथेद भस्मान्त्ऽशरीरम्।
ॐ ऋतो स्मर कृतऽस्मर, ऋतो स्मर कृतऽस्मर ।।१७।।

[हे जगत्पोपक सूर्य, हे अेकाकी गमन करनेवाले, हे यम (ससारका नियमन करनेवाले), हे सूर्य (प्राण और रसका शोपण करनेवाले), हे प्रजापतिनदन, तू अपनी रश्मिया समेट ले। तेज अेकत्र कर ले। तेरा जो अत्यन्त कल्याणमय रूप है, अुसे मै देखता हू। सूर्यमडलमे रहनेवाला वह जो परात्पर पुरुप है, वह मै ही हू।

अब मेरे प्राण सर्वात्मक वायुरूप सूत्रात्माको प्राप्त हो और यह शरीर भस्मीभूत हो जाय। हे मेरे सकल्पात्मक मन, अब तू स्मरण कर, अपने किये हुअे कर्मोंका स्मरण कर, अब तू स्मरण कर, अपने किये हुअे कर्मोका स्मरण कर।]

पृ० १९४ चन्द्रगुप्त और समुद्रगुप्त चद्रगुप्तकी पुत्री प्रभावतीका विवाह वाकाटक वशमे हुआ था। अुसने कअी वरस तक शासन-तत्र सभाला था। चद्रगुप्तने अुस समय खास लोग वहा भेज दिये थे, अिस बातका यहा अुल्लेख है। समुद्रगुप्तकी विजय-यात्रामे अिस प्रदेशका भी समावेश होता था।

कलचुरी वाकाटक साम्राज्यके पतनके बाद अनेक छोटे छोटे स्वतत्र राज्य पैदा हुअे थे। अुनमे अुत्तर महाराष्ट्रके कलचुरी लोगोका भी अेक राज्य था। अुनकी राजधानी थी त्रिपुरी, जहा सन् १९३९ में काग्रेसका अधिवेशन हुआ था।

वाकाटक सन् २२५ से ५४० के आसपास मध्यप्रान्तके बरार प्रदेशमें वाकाटकोका साम्राज्य था। छठी सदीके पहले दस वर्षोका समय अिनके

सर्वोच्च वैभवका काल था। अिसमे सारा हैदराबाद, बम्बअीका महाराष्ट्र, बरार और मध्यप्रान्तका बहुतसा हिस्सा समा जाता था। अिसके अलावा, अुत्तर कोकण, गुजरात, मालवा, छत्तीसगढ और आंध्र प्रदेश पर भी अिसका प्रभुत्व था। अुस समय अितना विशाल और अितना बलवान साम्राज्य भारतमें दूसरा कोअी नही था।

४५. शिवनाथ और औव

पृ० १९४ **मलिक काफूर.** अलाअुद्दीन खिलजीका प्रीतिपात्र खोजा। अिसने दक्षिणके राज्य जीतकर वहाकी प्रजा पर बडा अत्याचार किया था।

काला पहाड बगालके नवाब सुलेमान किराणीका तथा बादमें अुसके पुत्र दाअूदका सेनापति। असम, काशी और अुडीसामें जितने हिन्दू देवालय थे, अुनमे से अेक भी अिसके हाथसे नही बचा था। किसीको अिसने तोड डाला, किसीको खडित कर दिया, तो किसीको जमींदोज कर दिया। जगन्नाथकी मूर्तिको अुसने जलाकर समुद्रमें फेंक दिया था। हिन्दुओ पर अुसने बहुत जुल्म ढाये थे। कुछ लोग कहते हैं कि वह पहले ब्राह्मण था, किन्तु किसी नवाबकी कन्याकी मुहब्बतमें फसकर मुसलमान बन गया था। मुसलमानोके अितिहासमें अुनको पठान जातिका बताया गया है। १५६५ में अुसने अुडीसा जीता था। १५८० मे अुसकी मृत्यु हुअी थी।

पृ० १९७ **नामरूपका त्याग करनेसे ही** मुण्डकोपनिषद्में निम्नलिखित श्लोक (३–२–८) है

यथा नद्य स्यन्दमाना समुद्रेऽस्त गच्छन्ति नामरूपे विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्त परात्पर पुरुषम् अुपैति दिव्यम्।

[जिस प्रकार निरतर बहनेवाली नदिया अपना नामरूप छोडकर समुद्रसे जा मिलती है, अुसी प्रकार विद्वान भी नामरूपसे मुक्त होकर परात्पर दिव्य पुरुषको प्राप्त कर लेता है।]

सर्वे महत्त्वम् अिच्छन्ति० जिस कुलमें सभी लोग महत्त्व चाहते है, अुस कुलका नाश होता है, अुसी प्रकार जिस देशमे सभी लोग नेता बन जाते है, अुस देशका भी नाश निश्चित है।

४६. दुर्दैवी शिवनाथ

पृ० १९९ राक्षस-पद्धतिका विवाह: विवाहके आठ प्रकार वताये गये है (१) ब्राह्म, (२) दैव, (३) आर्ष, (४) प्राजापत्य, (५) गाधर्व, (६) आसुर, (७) राक्षस और (८) पिशाच। अिनमें से जिस विवाहमे लडकीके रिश्तेदारोको मारकर या परास्त करके जवरन् लडकीसे विवाह किया जाता है, अुसको राक्षस-पद्धतिका विवाह कहते है।

४७. सूर्याका स्रोत

पृ० २०० कासा: वम्वअी राज्यके थाना जिलेका अेक गाव। आचार्य शकरराव भिसेके मार्गदर्शनमें यहा अेक सर्वोदय-केंद्र चलता है, जिसके कार्यकर्ता यहाके आदिम निवासी 'वार्ली' लोगोके वीच वहुत अच्छा काम करते है।

४८ अवरी औव

पृ० २०५ कवियोको जितना . . . देता था: वहुत कम और अस्पष्ट।

४९ तेंदुला और सुखा

पृ० २०७ व्यजन गाक, चटनी।

पृ० २०९ यद् भावि० जो कुछ होनेवाला हो, सो होने दो।

५०. अृषिकुल्याका क्षमापन

पृ० २११ सरित्पिता· पर्वत।

सरित्पति: समुद्र।

पृ० २१३ अचलोका अुपस्थान . . . देगी· श्री काकासाहवने अव पहाडोके वर्णन लिखना गुरु कर दिया है, अिस वातका यहा अुल्लेख है।

५१. सहस्रधारा

पृ० २१४ आचार्य रामदेवजी: स्वामी श्रद्धानदजीके सहायक। हरिद्वार गुरुकुलके आचार्य।

पृ० २१६ थबथबाता हुआ· थब्-थब् आवाज करता हुआ। लेखकका बनाया हुआ यह नाम-क्रियापद है।

५२ गुच्छुपानी

पृ० २२२ चदन श्री काकासाहबकी पुत्रवधू सौ० चदन कालेलकर।

५३ नागिनी नदी तीस्ता

पृ० २३० यत्रका जीन कसकर पावर हाअुस खडा करके।

५४ परशुराम कुड

पृ० २३२ नहि वेरेन वेरानि ० धम्मपदका यह पूरा श्लोक अिस प्रकार है

नहि वेरेन वेरानि सम्मन्तीध कुदाचन।
अवेरेन च सम्मन्ति अेस धम्मो सनन्तनो॥ ५॥

[वैर वैरसे कभी शात नही होता, अवैरसे ही वैर शात होता है—यही ससारका सनातन नियम (धर्म) है।]

५५ दो मद्रासी बहनें

पृ० २३६· नागमोडी नागकी तरह जिसके मोड हो। सर्प-सदृश। यह शब्द मराठीका है।

५६ प्रथम समुद्र-दर्शन

पृ० २३९ मुरगाव गोवाका अेक शहर जिसको अग्रेजीमें 'मार्मागोवा' कहते है। यह पश्चिमी किनारेका अेक सुन्दर बदरगाह है। फौजी दृष्टिसे अिनका बडा महत्त्व है।

पृ० २४० दूध-सागर पानी पहाडकी चोटी परसे नीचे जिस तरह कूदता है कि अुसका दूधके समान काव्यमय सफेद प्रपात बन जाता है। अिसलिअे अुसका नाम ही 'दूध-सागर' पड गया है।

केशू =केशव, श्री काकासाहबके भाअी।

पृ० २४१ दत्तू श्री काकासाहबका पूरा नाम दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर है। दत्तात्रेयका छोटा रूप है दत्तू।

गोंदू =गोविंद, काकासाहबके दूसरे भाअी।

५७. छप्पन सालकी भूख

पृ० २४७ सरोके पेड : कारवारमे सरोका अेक सुन्दर वन है। अिसका वर्णन पढिये 'स्मरण-यात्रा' के 'सरोपार्क' नामक लेखमें — पृ० २०१।

५८. मरुस्थल या सरोवर

पृ० २५४ मरजाद-बेल : समुद्रका पानी ज्वारके समय अधिकसे अधिक जहा तक पहुचता है, वहा अेक तरहकी वेल अुगती है। समुद्र कितना भी तूफानी क्यो न हो, वह कभी अपनी अिस मर्यादाका अुल्लघन नही करता। अिसलिअे अिस वेलको मरजाद-वेल कहते है। खलासी लोगोके अनुसार वह समुद्रकी मौसी है। अत समुद्र अुसका भानजा हुआ।

पृ० २५५ सर्वं समाप्नोषि० 'आप सारे ससारको व्याप्त किये हुअे है, अत आप सर्व है।' गीता, ११–४०

५९. चांदीपुर

पृ० २५७ महाश्वेता : वाणकी विख्यात कथा 'कादम्बरी' की नायिका कादम्बरीकी सखी।

कादंबरी : वाणकी कथाकी नायिका। कादम्वरीका मूल अर्थ है मद्य, सुरा।

पृ० २५९ मदालसा : श्री जमनालाल बजाजकी पुत्री।

आपो नारा० पानीको 'नारा' कहा है। और वह नर अर्थात् परमात्मासे पैदा हुआ है। यह पानी पहले अुसका (परमात्माका) अयन (निवासस्थान) था। अिसीलिअे परमात्माको नारायण (पानीमे जिसका निवासस्थान है वैसा) कहा है। मनुस्मृति, १–१०

पृ० २६० प्रथम प्रभात : रवीद्रनाथका विख्यात राष्ट्रगीत 'अयि भुवन-मनोमोहिनि' में से ये पक्तिया ली गअी है। पूरा गीत अिस प्रकार है ·

अयि भुवन-मनोमोहिनि
अयि निर्मल-सूर्य-करोज्ज्वल-धरणि
जनक-जननी-जननि — अयि०

नील-सिंधु-जल-धौत-चरणतल
अनिल-विकंपित-श्यामल-अंचल
अंवर-चुंवित-भाल-हिमाचल
शुभ्र-तुषार-किरीटिनि — अयि०

प्रथम प्रभात-अुदय तव गगने
प्रथम साम-रव तव तपोवने
प्रथम प्रचारित तव वन-भवने
ज्ञान-धर्मकत काव्य-काहिनि — अयि०

चिर कल्याणमयी तुमि धन्य,
देशविदेशे वितरिछ अन्न,
जाह्नवी-जमुना-विगलित-करुणा
पुण्य-पीयूष-स्तन्य-वाहिनि — अयि०

६० सार्वभौम ज्वार-भाटा

पृ० २६३ सु-गत. भगवान बुद्धका अेक नाम। अेक खास 'मिशन' लेकर जो आये वे तथागत। सब संकल्पों और संस्कारोंका नाश करके जो निर्वाण तक पहुंचे वे सु-गत।

६१ अर्णवका आमंत्रण

पृ० २६३ अर्णव. अर्णव शब्दमें धातु 'ॠ' है। अुसका अर्थ है अुथल-पुथल होना, फेनसे भर आना। अिस परसे जिसमें अुथल-पुथल होती है, जो फेनसे भर आता है, जो अशांत है, अुसको अर्ण = पानी कहते हैं। और जिसमें अिस तरहका पानी है अुसको अर्णव कहते हैं। 'ॠणोत्यर्णं। अर्णांसि अुदकानि अत्र सन्ति अिति अर्णव'।

अघमर्षण सूक्त ॠग्वेदके १० वें मंडलका १९० वां सूक्त। अुसके ॠषिका नाम भी अघमर्षण ही है। सन्ध्यावंदनके समय सुबह-शाम यह सूक्त बोला जाता है। काकासाहब लिखते हैं "अघमर्षणका
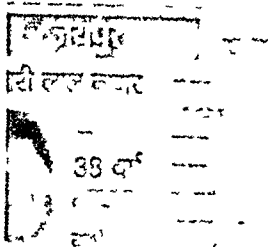
अर्थ है पापको धो डालना। किन्तु अिस सूक्तमें पापका अुल्लेख तक नही है। अुसमे ॠषि कहता है वाह्य विश्वकी विशालताका अनुभव करो, हृदयकी गहराअीकी जाच करो। यह सारी आतर-वाह्य सृष्टि किसके सहारे टिकी हुअी है, यह देख लो। काल और सृष्टिकी अनन्तताका खयाल करो। अिससे तुम्हारा मन अपने-आप विशाल हो जायगा। विशाल मनमे पापके लिअे स्थान नही होता।

"अिस अनादि अनत सृष्टिमे 'ॠतम्' और 'सत्यम्' ही स्थायी है। 'ॠतम्' का अर्थ है विश्वका सार्वभौम नियम, चराचर सृष्टिका सनातन धर्म। अिसीके सहारे अनादि अनत सृष्टि चलती है (ॠ=चलना)। अिस 'ॠतम्' के अदर जो परम तत्त्व है, जो शाश्वत है और जिसका नाश कभी नही होता, अुसको सत्य कहते है। यह सत्य सर्वव्यापी है। अत अिसे विष्णु (सर्वत्र प्रवेश पानेवाला, फैलनेवाला) भी कहते है। 'सत्यम्' और 'ॠतम्' के द्वारा ही यह ससार अुत्पन्न होता है, विलीन होता है और फिरसे अुत्पन्न होता है। विश्वचक्र तपसे चलता है। यह विश्व तो परमात्माकी केवल महिमा है। परमात्मा अिससे भी वडा है। वह सुखका धाम है, आनदका निधान है। अुसकी कल्पना ज्यो ज्यो हृदयमे फैलती जायगी, त्यो त्यो हृदय स्वच्छ होता जायगा। जैसे जैसे तुम हृदयसे वडे होते जाओगे, वैसे वैसे पापसे तुम्हे घृणा होती जायगी। पापके लिअे स्थान ही नही होगा। 'यो वै भूमा तत् सुखम्। नाल्पे सुखम् अस्ति।' अितना समझ लो। यही पाप-नाशक मत्र है।"

वरुण : वेदोमे वरुणको पश्चिम दिशाका और सागरका अधीश्वर कहा गया है। वृ (घेर लेना)+अुन (कृतार्थे प्रत्यय)। जिसने पृथ्वीको घेर लिया है।

भुज्यु : ॠग्वेदमे अिसकी कथा है। कहते है कि भुज्यु अपने पुत्र तुग्र पर अेक वार गुस्सा हुअे। अिससे अुन्होने तुग्रको दूसरे टापू पर बसे हुअे दुश्मनोके खिलाफ लडनेके लिअे भेज दिया। रास्तेमे अुसके जहाजमे सुराख हो गया, जिससे वह वडी कठिन परिस्थितिमे आ पडा। किन्तु अश्विनीकुमारोने सौ पतवारोवाली नौकामे आकर अुसे सुरक्षित किनारे पर पहुचा दिया।

पृ० २६४ जलोदर अेक रोग, जिसमें पेटमें पानी भर जाता है। लेखकने यहा अिस शब्दका प्रयोग जलरूपी अुदरके अर्थमे किया है।

पृ० २६५ सिंदवाद 'अरेबियन नाअिट्स' में जिनकी सात यात्राओंकी रोचक कथा है।

पृ० २६६ सिंहपुत्र विजय सिलोनकी प्राचीनतम परपराके अनुसार अि० स० पूर्व छठी शताव्दीके मध्यमें सौराष्ट्रके सिंहपुरका राजकुमार विजय साहसपूर्ण यात्रा करके सिलोन पहुचा था। विद्वानोंके कथनानुसार वह पौराणिक नही, वल्कि अैतिहासिक व्यक्ति है। देखिये ('भारतीय आर्यभाषा और हिंदी'—लेखक श्री सुनीतिकुमार चट्टोपाध्याय।)

भृगुकच्छ आजका भडौच।

सोपारा प्राचीन शूर्पारक।

दाभोळ पश्चिम तट पर स्थित अेक अतीव मनोहर और वडे महत्त्वका वदरगाह।

मगलापुरी आजका मगळूर या मगलोर।

ताम्रद्वीप सिलोन, लका।

जावा और वालिद्वीप सिगापुरके दक्षिणमें ये दो द्वीप है। वहाका धर्म अिस्लाम है, लेकिन हिन्दू सस्कृतिका असर आज भी वहा निश्चित मालूम होता है।

ताम्रलिप्ति आजका तामलुक।

दसो दिशाओंमें महावग्गमें लिखा है कि "बौद्ध धर्मका प्रचार करनेवाले मोग्गलीपुत्त (तिस्स) स्थविरने सगीतिका कार्य पूरा करनेके वाद भविष्यत् कालके वारेमें सोचकर और यह ध्यानमें रखकर कि मध्य देशके वाहर वौद्ध धर्मकी स्थापना होनेवाली है, कार्तिक मासमें कुछ स्थविरोंको अलग अलग स्थानोंमें भेज दिया कश्मीर और गाधारमें मज्झतिकको, महिष मडलमें महादेव स्थविरको, वनवासीमें रक्खितको, महाराष्ट्रमें महाधम्म रक्खितको और योन (यवन) लोगोंके देशमें महारक्खित स्थविरको भेजा।

"'मज्झिम स्थविरको हिमवत (हिमालय) प्रदेशमे तथा सोण और अुत्तर अिन दो स्थविरोको सुवर्णभूमि (ब्रह्मदेश) मे भेजा। महा-महिन्द, अिष्ठिय, अुत्तिय, सवल और भद्दसाल अिन पाच स्थविर शिष्योको 'तुम सुदर लकाद्वीपमे जाकर मनोरम बुद्धधर्मकी स्थापना करो' कहकर अुस द्वीपमे भेज दिया।" १–८

पृ० २६७ धर्म-विजय : कलिगकी विजयके वाद मनमें अुत्पन्न हुअे पश्चात्तापका वर्णन करनेवाला जो शिलालेख अशोकने खुदवाया, अुसमे अुसने कहा है कि "महाराजके मतके अनुसार धर्मके द्वारा प्राप्त हुअी विजय ही श्रेष्ठ विजय है।"

गैंडेकी तरह अकुतोभय मूल बौद्ध ग्रथोमे गैंडेकी नही वल्कि गैंडेके अकेले सीगकी अुपमा है। सब प्राणियोके दो सीग होते हैं, किन्तु गैंडेकी नाक पर सिर्फ अेक ही सीग होता है।

धम्मपदमे अिसी सदर्भमे अकेले हाथीकी अुपमा दी गअी है

नो चे लभेथ निपक सहाय सद्धिचर साधु विहारिधीर।
राजा व रट्ठ विजित पहाय अेको चरे मातगरञ्ञे व नागो।।

[यदि निपुण, साथ चलनेवाला, साधु विहारवाला धीर पुरुष मित्रके रूपमें न मिले, तो जैसे हारे हुअे राज्यको छोडकर राजा अकेला चला जाता है, या मातग अरण्यमे हाथी अकेला घूमता है, वैसे अकेले ही घूमना चाहिये।]

अेकस्स चरित सेय्यो नत्थि वाले सहायता।
अेको चरे न च पापानि कयिरा अप्पोस्सुक्को मातगरञ्ञे व नागो।।

[अेकाकी चर्या श्रेय है, वालक (अज्ञानी) से कोअी सहायता नही मिलती। मातग अरण्यमे अेकाकी हाथीकी तरह अल्पोत्सुक होकर अेकाकी चर्या करना चाहिये, पाप नही करना चाहिये।]

सोपारा, कान्हेरी, घारापुरी · वम्बअीके आसपासकी वौद्ध गुफाये।

खंड-गिरि, अुदय-गिरि . अुडीसाके दो पहाड। यहा वौद्ध गुफाये है। सम्राट् खारवेलका प्रख्यात शिलालेख भी यही है।

महिन्द और सघमित्ता अशोकने अपने पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री सघमित्राको बौद्ध धर्मका प्रचार करनेके लिअे लका भेजा था।

पृ० २६८ वाअिकिग युरोपके अुत्तर समुद्रमें ८ वी से १० वी शताब्दी तक लूट मचानेवाले अिस नामके डाकू।

लक्ष्मीका पिता लक्ष्मी समुद्रमें पैदा हुअी, अिसलिअे पुराणोंमें समुद्रको लक्ष्मीका पिता कहा गया है। यहा पर लेखकने अिस कहानीसे फायदा अुठाकर समुद्रमे यात्रा करनेसे प्राप्त होनेवाली लक्ष्मीके अर्थमे अिन शब्दोका प्रयोग किया है।

पृ० २६९ सर्वे सन्तु निरामया ० पूरा श्लोक अिस प्रकार है

सर्वेऽत्र सुखिन सन्तु सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु खम् आप्नुयात् ॥

[सब सुखी रहें, सब निरामय = नीरोग रहें। सब भद्र देखें। किसीको दु ख प्राप्त न हो।]

६२ दक्षिणके छोर पर

पृ० २७१ धनुष्कोटी धनुष्कोटीमें दो समुद्रोके बीच भूमिका जो हिस्सा फैला हुआ है, वह धनुषकी कोटी जैसा कमानदार है। अिस परसे अिस स्थानका नाम धनुष्कोटी पडा है।

रत्नाकर और महोदधि दोनोका अर्थ तो अेक ही है — समुद्र।

प्रशस्त मूल अर्थ है कल्याणमय, शुभ, कुशल। प्रशसापात्र भी हो सकता है। यहा दोनो अर्थोमे अिसका प्रयोग किया गया है। बगला और मराठीमें अिस शब्दका दूसरा भी अेक अर्थ है चौडा, विशाल। यहा पर अिस अर्थमे भी लिया जा सकता है।

आत्मनि अप्रत्यय जिसका आत्मामें यानी अपनेमें विश्वास नहीं है। 'बलवदपि शिक्षिताना आत्मनि अप्रत्यय चेत ।' — शाकुतल

भूमिका पर स्थिर रहकर दो समुद्रोके बीच खडे रहनेके लिअे जो भूमि थी अुस पर खडे रहकर। अल्पार्थमें 'क' प्रत्यय लगता है, अिसका भी यहा लाभ अुठाया गया है।

'रघुवशमें' लिखा हुआ वर्णन : १३ वे सर्गमें रावण-वघके पश्चात् सीताको लेकर राम पुष्पक विमानमे वैठकर अयोध्या वापस लौटते है, तव लकासे निकल कर सागर पार करते हुअे कुछ श्लोकोमे सागरका वर्णन करते हैं

वैदेहि पश्यामलयाद्विभक्त मत्सेतुना फेनिलमम्वुराशिम् ।
छायापथेनेव शरत्प्रसन्नम् आकाशमाविष्कृतचारुतारम् ।।२ ।।
गर्भं दधत्यर्कमरीचयोऽस्माद् विवृद्धिमत्राश्नुवते वसूनि ।
अविन्वन वह्निमसौ विभर्ति प्रह्लादन ज्योतिरजन्यनेन ।। ४ ।।
ता तामवस्था प्रतिपद्यमान स्थित दश व्याप्य दिशो महिम्ना ।
विष्णोरिवास्यानवधारणीयम् अीदृक्तया रूपमियत्तया वा ।। ५ ।।
ससत्वमादाय नदीमुखाम्भ समीलयन्तो विवृताननत्वात् ।
अमी शिरोभिस्तिमय सरन्ध्रैरुर्ध्वं वितन्वन्ति जलप्रवाहान् ।। १० ।।
मातङ्गनक्रै सहसोत्पतद्भिर्भिन्नान्द्विघा पश्य समुद्रफेनान् ।
कपोलससर्पितया य येपा व्रजन्ति कर्णक्षणचामरत्वम् ।। ११ ।।
वेलानिलाय प्रसृता भुजगा महोर्मिविस्फूर्जथुनिर्विशेपा ।
सूर्यांशुसपर्क-समृद्धरागैर्व्यज्यन्त अेते मणिभि फणस्थै ।।१२ ।।
तवाघरस्पर्धिपु विद्रुमेपु पर्यस्तमेतत्सरसोर्मिवेगात् ।
अूर्ध्वांकुरप्रोतमुख कथचित् क्लेशादपक्रामति शखयूथम् ।। १३ ।।
प्रवृत्तमात्रेण पयासि पातुम् आवर्तवेगभ्रमता घनेन ।
आभाति भूयिष्ठमय समुद्र प्रमथ्यमानो गिरिणेव भूय ।। १४ ।।
दूरादयश्चक्रनिभस्य तन्वी तमालतालीवनराजिनीला ।
आभाति वेला लवणाम्बुराशेर्धारानिवद्धेव कलङ्करेखा ।। १५ ।।
वेलानिल केतकरेणुभिस्ते सभावयत्याननमायताक्षि ।
मामक्षम मण्डनकालहानेर्वेत्तीव विम्वाधरबद्धतृष्णम् ।। १६ ।।
अेते वय सैकतभिन्नशुक्ति-पर्यस्तमुक्तापटल पयोवे ।
प्राप्ता मुहूर्तेन विमानवेगात् कूल फलावर्जितपूगमालम् ।। १७ ।।

पृ० २७४ पर्वते परमाणौ च० अिसका पूर्वपद अिस प्रकार है कवय कालिदासाद्या कवयो वयमप्यमी ।' पूरे श्लोकका अर्थ अिस

प्रकार है "कालिदास आदि भी कवि है, हम भी कवि है। पर्वत और परमाणुमें पदार्थत्व समान है।"

वानर-यूथ-मुख्य रामरक्षा-स्तोत्रमें हनुमानकी स्तुतिका श्लोक अिस प्रकार है

मनो-जव मारुत-तुल्य-वेग
जितेन्द्रिय बुद्धिमता वरिष्ठ।
वातात्मज वानर-यूथ-मुख्य
श्रीराम-दूत मनसा स्मरामि॥

साम्पराय मृत्युके बादकी स्थिति। कठोपनिषद्में नचिकेताने यमराजसे साम्परायके बारेमे पूछा था।

पृ० २७७ अुदये सविता० अुदयके समय सूर्य लाल होना है और अस्तके समय भी लाल होता है। बडे लोग सपत्ति और विपत्तिके समय अेकरूप रहते है।

पृ० २७८ अब अिस त्रिविध पूर्णतामें से . होगी याद कीजिये

पूर्णम् अद पूर्णम् अिद पूर्णात् पूर्णम् अुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णम् आदाय पूर्णम् अेवावशिष्यते॥

पृ० २८० ब्राह्म-मुहूर्त सुबह करीब साढे तीन बजेका समय। आत्म-चिन्तनके लिये यह समय अच्छा माना गया है। 'ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय चिन्तयेत् हितम् आत्मन।'

पृ० २८१ अुदर-भरण नामक यज्ञकर्म तुलना कीजिये

वदनी कवळ घेता नाम घ्या श्रीहरिचे
सहज हवन होतें नाम घेता फुकाचें।
जीवन करि जिवित्वा अन्न हे पूर्णब्रह्म
अुदरभरण नोहे जाणिजे यज्ञकर्म॥

[मुहमें कौर लेते हुअे हरिका नाम लो। मुफ्तका नाम लेनेसे सहज ही हवन होना है। अन्न पूर्ण ब्रह्म है और वह जीवन
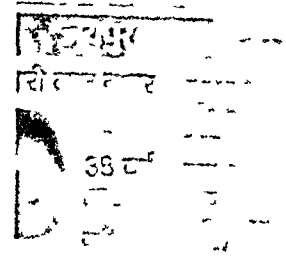
कहते ही आयुको जीवन बनाता है। यह अुदर-भरण नही है, परन्तु अिसे यज्ञकर्म जानना चाहिये।]

कन्याकुमारीकी कथा. बडासुर नामक अेक दानवने शकरजीकी आराधना की और हिरण्यकशिपुकी तरह 'मै अिससे न मरने पाअू, अुससे न मरने पाअू' आदि वरदान माग लिये। किन्तु अिस लबी-चौडी सूचीमें कुमारी कन्याका नाम दर्ज करनेकी बात अुसको नही सूझी। वरदानसे निर्भय बना हुआ यह दानव ससार पर भारी जुल्म ढाने लगा। सारा ससार त्रस्त हो गया। अत शिवजीने पार्वतीको कुमारी कन्याका रूप लेकर ससारमे जानेकी बात कही। पार्वतीने ललिता देवीका अवतार लिया और दानवको मार डाला। फिर हाथमे कुकुम और अक्षत लेकर विवाहके लिअे शिवजीकी राह देखने लगी, क्योकि पहलेसे वैसा तय हुआ था। शिवजी निकले तो सही, किन्तु रास्तेमें क्रोधमूर्ति दुर्वासासे अुनकी भेट हो गअी। अुनके स्वागतमें कुछ देर लग गअी। अितनेमे कलियुग बैठ गया! और कलियुगमें विवाह नही हो सकता था।

अत पार्वतीने हाथके कुकुम-अक्षत फेक दिये और कलियुगकी समाप्तिकी राह देखती हुअी वही खडी रही।

पार्वतीके फेके हुअे अक्षत अब भी समुद्र-तट पर रेतीके रूपमें पाये जाते है। श्रद्धालु लोग मानते है कि ये चावल मुहमें डालनेसे खानेसे प्रसूतिकी वेदना कम होती है। कुकुमके समान लाल रेतका तो वहा पार ही नही है।

६३. कराची जाते समय

पृ० २८३ अनुराधा, कृष्णचद्र · अनुराधा नक्षत्र। कृष्णचद्र = कृष्णपक्षका चाद। राधा और कृष्ण अिन दो शब्दोका लेखकने यहा अच्छा लाभ अुठाया है।

६४ समुद्रकी पीठ पर

पृ० २८५ गिरधारी · आचार्य कृपालानीजीका भतीजा। अुस समय लेखकके साथ शातिनिकेतनमे रहता था।

आगुनेर परशमणि छोआओ प्राणे · पूरा गीत अिस प्रकार है

आगुनेर परशमणि छोआओ प्राणे
अे जीवन पुण्य करो दहन-दाने।
आमार अेअि देहखानि तुले धरो,
तोमार अै देवालयेर प्रदीप करो,
निशिदिन आलोक-शिखा ज्वलुक गाने।
आधारेर गाये गाये परश तव
सारा रात फोटाक तारा नव नव
नयनेर दृष्टि हते घुचवे कालो
जेखाने पडवे सेयाय देखवे आलो
व्यथा मोर, अुठवे ज्वले अूर्ध्व पाने।

आकाशमें जिस प्रकार चाद चलता है . रवीन्द्रनाथके दूसरे अेक गीतमें अिसी तरहका चित्र है

आजि शुक्ला अेकादशी, हेरो निद्राहारा शशी
अै स्वप्न पारावारेर खेया अेकला चालाय वनि।

पृ० २८७ ध्येय सदा० सूर्यमडलके मध्यमे स्थित, कमलासन पर विराजमान तथा केयूर, मकरकुडल, किरीट और हार धारण करनेवाले, सुवर्णमय शरीरवाले, शख-चक्रधारी नारायणका सदा ध्यान करना चाहिये।

जीवतराम · आचार्य कृपालानी।

भयकर दिव्य · दिव्य = कसौटी, परीक्षा। मराठीमें 'भयकर दिव्य' नामक अेक अुपन्यास काफी मशहूर है।

पृ० २९० आत्मन्येव सतुष्ट आत्मामें ही सतुष्ट। गीता, ३–१७ पूरा श्लोक अिस प्रकार है —

यस्त्वात्म-रतिर् अेव स्याद् आत्म-तृप्तश् च मानव ।
आत्मन्येव च सतुष्टस् तस्य कार्य न विद्यते ।।

६५ सरोविहार

पृ० २९२ अुसका काव्य तो दूरसे ही खिलता है . Tis distance lends enchantment to the view

शकुतलाकी तरह : शाकुतलके तीसरे अकके अतमे शकुतला दुष्यन्तके साथ विश्रभालाप करती है, अितनेमें वहा आर्या गौतमी पहुचती है। अिसलिअे शकुतला राजासे लताओके पीछे जानेको कहती है और जाते समय लताओसे कहती है

'लतावलय, सतापहारक, आमत्रये त्वा भूयोऽपि परिभोगाय।' और अिस प्रकार लतामडपके वहाने राजासे अिजाजत लेकर जाती है।

पृ० २९३ ययातिको भी जीवनका आनन्द छोडना पडा : राजा ययाति भोग-विलासमें फसा रहता था। अिसके लिअे अुसने अपने लडकोका यौवन भी ले लिया था। किन्तु वादमे अुसे विरति पैदा हुअी और समझमे आया कि

न जातु काम कामानाम् अुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव पुनरेवाभिवर्धते ॥

[भोगोके अुपभोगसे कामनाओका शमन नही होता। बल्कि बलिसे वढनेवाली अग्निकी तरह वे वढती ही जाती है।]

अनन्नासोके फव्वारे : अुसके पेडका आकार अैसा होता है मानो फव्वारा अुडता हो।

६६ सुवर्ण देशकी माता अैरावती

पृ० २९७ कृपाका अुत्पात वाढ। दूसरा भी अेक अर्थ है। नील नदीमे जव वाढ आती है, तव वह अपने साथ मिट्टी वहाकर लाती है, जिससे खेतोमे फसल अच्छी होती है। अिजिप्शियन लोग अिसे 'नीलकी कृपा' कहते है।

शतरज खेलनेवाले कालिदास : कहते है कि भवभूतिने 'अुत्तर-रामचरित' लिखनेके वाद पूरा ग्रथ कालिदासको पढ कर सुनाया था। कालिदास शतरजके वडे शौकीन थे। वे शतरज खेलते-खेलते पुस्तक सुन रहे थे। कालिदास ध्यानपूर्वक नही सुन रहे है, यह देखकर भवभूतिको वुरा लगा। किन्तु अन्तमे जब कालिदासने अेक सूक्ष्म और रसिक सुधार सुझाया, तव भवभूति आश्चर्यचकित हो गये। पूरा ग्रथ सुननेके वाद कालिदासने कहा, 'नाटक अच्छा है, सिर्फ अेक अनुस्वार अधिक है।'
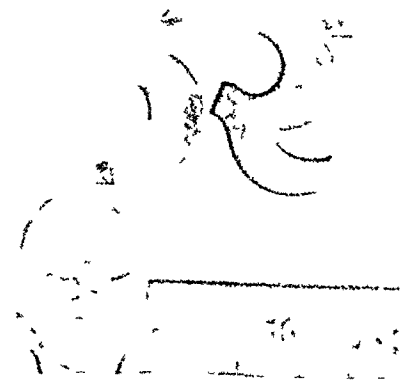
राम और सीताकी गपशपका वर्णन करते हुअे भवभूतिने लिखा था

अविदित-गत-यामा रात्रिरेव व्यरसीत् ॥

[जिस प्रकार (अेव) (अिधर-अुधरकी गपशप करते करते) प्रहर कैसे बीतते गये यह मालूम ही नहीं हुआ और सारी रात बीत गअी।]

कालिदासने अनुस्वार निकालनेकी बात कही और पूरा अर्थ बदल गया। अुसमें चमत्कृति पैदा हो गअी

अविदित-गत-यामा रात्रिरेव व्यरसीत् ॥

[(अिधर-अुधरकी गपशप करते करते) प्रहर कैसे चले गये अिसका पता चले बिना मात्र रात्रि ही पूरी हो गअी (हमारी बातें पूरी नहीं हुअी)।]

यह अेक दंतकथा ही है, क्योंकि कालिदास और भवभूति समकालीन नहीं थे।

शान-राज्य · ब्रह्मदेशके चीनकी सीमाके पासके आधे स्वतन्त्र राज्य। शान लोग ब्रह्मदेश, आसाम, सियाम और दक्षिण चीनमें रहते हैं। वर्णसे गोर तथा धर्मसे बौद्ध। बडे मेहनती। अुनमें बहुपत्नी-प्रथा चलती है।

जहाजका पक्षी 'जैसे अुडि जहाजको पछी, फिरि जहाज पै आवे।'—सूरदास।

अनित्या बत० 'अनित्या बत संस्कारा अुत्पत्ति-व्ययधर्मिण ।'

[अुत्पत्ति और नाश यही जिनका धर्म है, अैसे संस्कार (सृष्ट पदार्थ) अनित्य ही है।]

श्रात · थकेमादे लोगोका तत्त्वज्ञान।

चिरन्तन · चिरकाल तक टिकनेवाला। सम्पूर्ण ज्ञानवाले लोगोका तत्त्वज्ञान।

सुवर्ण देश · ब्रह्मदेशका बौद्धकालीन नाम।

६७ समुद्रके सहवासमें

पृ० २९९ कच्ची छींककी तरह : अुपमाकी नवीनता और औचित्य ध्यानमें लीजिये ।

पृ० ३०१ त्रिकाड तीन काड यानी तीन भागवाला। श्रवणके तीन तारे होते हैं। मृग नक्षत्रके पेटमें तीन तारोका अिपु त्रिकाड नक्षत्र होता है। अुसीके जैसा श्रवण होता है, अत अुसे त्रिकाड कहा गया है।

खस्वस्तिक · हम जहा कही खडे रहते हैं वहाका सिर परका आकाशका भाग या विन्दु। अंग्रेजीमें अिसको 'झेनिथ' कहते हैं।

पृ० ३०२ प्रकाश चमकाकर . जिस प्रकार तार-विभागमें 'कट्ट' और 'कड' अिन दो ध्वनियोसे सारी लिपि तैयार की गयी है, अुसी प्रकार रातमें प्रकाश चमकाकर दूर तक सदेश भेजे जाते हैं। दिनमें सूर्यप्रकाशसे भी अैसे सदेश भेजे जाते हैं। अुसे 'हेलियोग्राफ' कहते हैं।

पृ० ३०५ त्रिखड सहकार : अफ्रीकामें मूल काले वाशिंदोके अलावा (जो गुलाम या मजदूर होते हैं), राज्य करनेवाले गोरे युरोपियन लोग भी हैं और तिजारतके लिअे पूर्वसे आये हुअे गेहुअे रग या पीले रगके अरब, हिदुस्तानी और चीनी लोग भी हैं। तीनो खडोके अिन लोगोके वीच जो सहयोग चलता है, अुसको त्रिखड सहकार कहा गया है। अलवत्ता, यह सहयोग विषम है।

६८ रेखोल्लघन

पृ० ३०६ रेखोल्लघन : भूमध्य-रेखाका अुल्लघन।

शातादुर्गा . शुभकरी शाता और भयकरी दुर्गा। शातादुर्गाका देवालय गोवामें है।

६९. नीलोत्री

पृ० ३०८ श्री अप्पासाहव : औधके अतिम राजाके दूसरे पुत्र श्री अप्पासाहव पत। आप भारत-सरकारके कमिश्नरके नाते अफ्रीकामें थे, तव वहाके लोगो पर आपका अच्छा असर हुआ था।

पृ० ३१० औशोपनिषद् · अठारह मत्रोका अेक छोटासा अुपनिषद्। श्री विनोवाने अिसको वेदोका सार और गीताका बीज कहा

है। गाधीजी कहते थे कि अिनमे हिन्दूधर्मका मारा निचोड आ जाता है। अिसका पहला मत्र अुन्हे विशेष प्रिय था और अुन पर अुन्होंने कअी बार विवेचन किया था। ओशापनिषद्का पहला मत्र यह है

ओशावास्यमिद ५ मर्व यत्किच जगत्या जगत्।
तेन त्यक्तेन भुजीथा मा गृध कस्यस्विद्वनम् ।।

अिस अुपनिषदको ओशावास्योपनिषद् भी कहते है।

माडुक्य अुपनिषद् ओशोपनिषद्से भी छोटा है। अिसमे सिर्फ वारह मत्र है। अिसमे ॐकारके द्वारा सारे अद्वैत सिद्धान्तका विवेचन किया गया है। गौडपादाचार्यने अिस पर जो कारिका लिखी है, वह अद्वैत सिद्धान्तका प्रथम निवध मानी जाती है। अिसीकी वुनियाद पर श्री शकराचार्यने अपने मतकी स्थापना की है।

अघमर्षण सूक्त अिसकी जानकारी 'अर्णवका आमत्रण' नामक प्रकरणकी टिप्पणियोमे दी जा चुकी है।

मै यदि सस्कृतका कवि होता सस्कृत कवि वाल्मीकिने गगाष्टकमे कहा है

त्वत् तीरे तरुकोटरान्तरगतो गगे! विहगो वर
त्वन्नीरे नरकान्तकारिणि! वर मत्स्योऽथवा कच्छप ।
नैवान्यत्र मदान्ध-सिधुर-घटा-सघट्ट-घटा रणत्-
कार-त्रस्त-समस्त-वैरि-वनिता-लब्ध-स्तुतिर् भूपति ।।

पृ० ३१२ मि० स्पीक (Speke) जॉन हेर्निग (१८२७-१८६४) नील नदीका अुद्गम खोजनेवाला। हिन्दुस्तानी फौजमे भरती हुआ। पजावकी लडाअीमे मशहूर हुआ। अुसे छुट्टियोमें हिमालय, तिब्वत आदि प्रदेशोमें घूमनेका शौक था। अफ्रीकाके भूगोलमें रस पैदा होते ही १८५४ मे बर्टनके माथ वह अफ्रीका गया। सोमालीलैंडमें घूमा। अुसका वर्णन अुसने अपनी 'What led to the Discovery of the Source of the Nile' (१८५४) नामक पुस्तकमे लिखा है। अिसके वाद वह अफ्रीकाके मध्यमे स्थित सरोवरोकी खोज करने निकला। अुसकी मान्यता थी कि अिनमे से वुत्त की

ओरके विक्टोरिया न्याजा सरोवरमे ही नीलका अुद्गम है। अुसने अपनी यह मान्यता सप्रमाण 'The Journal of the Discovery of the Source of the Nile' नामक पुस्तकमे सिद्ध की। वर्टनने अुसका विरोध किया। वर्टनके अनुसार टागानिका सरोवरमें नीलका अुद्गम था। दोनोंके बीच सार्वजनिक चर्चा रखी गअी। चर्चाके पहले ही दिन स्पीक शिकार खेलने गया था, जहा वह अपनी ही वदूककी गोलीका शिकार हो गया।

पृ० ३१३ चद्रगिरि रामायणके अनुसार सिन्धु और सागरके सगम-स्थान पर स्थित शतशृग पर्वत। यहा 'रुवेन ज़ोरी' पर्वत।

मेरु पर्वत : भागवतके अनुसार जवुद्वीपमे अिलावृत्तके मध्यमे स्थित सोनेका पर्वत। यहा मध्य अफ्रीकाका अुमी नामका अेक पर्वत, किलीमाजारोका पडोसी।

अच्छोद सरोवर वाणभट्टकी कादवरीसे यह नाम लिया गया है।

'शुभ-सदेश'. सुवार्ता। अग्रेजी 'गॉस्पेल'।

पृ० ३१४ स्टेन्ली . सर हेनरी मार्टन (१८४०–१९०४) अेक मामूली किसानका लडका। मूल नाम जॉन रोलाड। वचपन वडी कठिनाअीमे वीता। मदरसेमे शिक्षकको पीटकर भाग गया था। सुअी-धागा वेचनेवालेके यहा काम किया। कसाअीके यहा भी काम किया। वादमे न्यू ऑर्लियन्स (अमेरिका) जानेवाले अेक जहाजमे कैविन वॉयकी हैसियतसे काम किया। वहाके स्टेन्ली नामक अेक व्यापारीने अुसकी मदद की। वादमे अुसको गोद लिया। तवसे वह स्टेन्लीके नामसे पुकारा जाने लगा। पालक पिताके अवसानके वाद फौजमे भर्ती हुआ। युद्धके दरमियान गिरफ्तार हुआ। मुक्त होनेके वाद जव वापस घर लौटा, तव माने घरमे रखनेसे अिनकार किया। अिससे अुसके दिलको वडी चोट लगी। रोटीके लिअे अुसने खलासीका जीवन स्वीकार किया। अमेरिकाके नौकादलमे भर्ती हुआ। वादमे अखवारोमे लेख लिखने लगा। अुसकी वर्णन-शक्ति अच्छी थी। कअी युद्धोमें सवाददाताके तौर पर काम किया। १८६९ में 'न्यूयॉर्क हेरल्ड' के सचालकने अुसको

निर्दलीय

तार देकर पेरिस बुलाया, और अफ्रीकाकी खोजके लिअे निकले हुअे लिविंगस्टनकी खोज करनेका आदेश दिया। करीब अेक सालकी कटी दौडधूपके बाद वह १० नवम्बर, १८७१ को अुजीजीमें लिविंगस्टनसे मिला। अिस प्रवासका वर्णन अुसने 'How I found Livingstone' (१८७२) नामक पुस्तकमें किया है। शुरू शुरूमें अुसकी कहानी पर लोगोंका विश्वास नहीं बैठा। मगर अुसने लिविंगस्टनकी डायरियां दिखाअी, तब जाकर लोगोंका विश्वास बैठा। रानी विक्टोरियाने अुसे सोनेकी रत्नजटित डिब्बी भेटमें दी। किन्तु अिस प्रसंगमें लोगोंने अुस पर जो अविश्वास दिखाया और जो गालियां बरसायीं, अुनसे अुसका मन हमेशाके लिअे खट्टा हो गया।

सन् १८७४ में लिविंगस्टनकी मृत्युके बाद अुसका अपूर्ण कार्य पूर्ण करनेके लिअे 'डेली टेलिग्राफ' के मालिकने चंदा अिकट्ठा करके स्टेन्लीको दिया और अिसके नेतृत्वमें अेक टुकडी अफ्रीकामें भेजी। तीन साल यात्रा करनेके बाद अुसने सिद्ध किया कि लिविंगस्टनने जिसे 'लुआलाबा' कहा था, वह और कांगो नदी अेक ही है। और अुसका पूरा जलमार्ग अुसने निश्चित कर दिया। जिस काममें अुसने जो कष्ट अुठाये अुनका कोअी हिसाब नहीं है। अुसने विक्टोरिया न्यांजाका क्षेत्रफल निश्चित किया। टांगानिकाकी लंबाअी और क्षेत्रफल निश्चित किया। डवेरु नामक नये सरोवरकी खोज की। अिस यात्राका वर्णन अुसने 'Through the Dark Continent' नामक अपनी पुस्तकमें किया है। अुसकी अिस यात्राके कारण नील नदीके अुद्गमके आसपासका सारा प्रदेश अंग्रेजोंके संरक्षणमें आ गया।

कांगो नदी अफ्रीकाके मध्य प्रदेशको चीरकर जानेवाला जलमार्ग है, यह अुसकी महत्त्वकी खोज है। अिसका महत्त्व बेल्जियमके राजा लियो-पोल्ड द्वितीयने अच्छी तरह समझ लिया था। अुसने अपने कुछ लोगोंको अफ्रीकासे वापस लौटनेवाले स्टेन्लीसे मिलनेके लिअे मार्सेल्स भेजा था। अुन्होंने राजाकी ओरसे स्टेन्लीको वापस कांगो जानेकी सूचना की। किन्तु स्टेन्ली अुस समय आराम करना चाहता था। अतः अुसने अिस सूचनाको स्वीकार नहीं किया। १८७९ में लिओपोल्डने अुसे फिरसे जानेकी सूचना

की। स्टेन्लीने तव तक अंग्रेज व्यापारियोंमे कागोके वारेमें दिलचस्पी पैदा करनेकी काफी कोशिश की। किन्तु अिसमें अुसको सफलता नही मिली। अिसलिअे ब्रुसेल्स जाकर लियोपोल्डकी सूचना और योजनाका अुसने स्वीकार किया। वह फिरसे कागो गया। पाच वर्षकी मेहनतके वाद अुसने लियोपोल्डके आधिपत्यके नीचे कागोके स्वतत्र राज्यकी स्थापना की। अिसका वर्णन अुसने अपनी 'The Congo and the Founding of its Free State' (१८८५) नामक पुस्तकमें किया है।

१८८४ मे वह फिरसे युरोप लौटा। अुसके भाषणोकी वजहसे जर्मनीमे अफ्रीकाके वारेमे रस अुत्पन्न हुआ। युरोपके राष्ट्रोमे अफ्रीकाको कब्जेमे लेनेके लिअे होड शुरू हुअी। स्टेन्ली अिग्लैडमे रहा, किन्तु वेल्जियमके राजाके प्रति अुसकी निष्ठा भी अुसे खीचती थी। दोनोका हित सिद्ध करनेके लिअे वह फिरसे अफ्रीका गया। भूमध्य-रेखाके आस-पासके प्रदेशोमे घूमते हुअे अुसके करीव दो-तिहाअी साथी मर गये, कुछ साथी मारे गये। किन्तु वह हिम्मत नही हारा। अुसने अपना काम जारी रखा, और अग्रजोके लिअे अुसने वहाके अमीनसे काफी रिआयते प्राप्त कर ली। अिस भयानक यात्राका वर्णन अुसने 'In Darkest Africa' नामक ग्रथमे (१८९०) किया है।

अिस यात्राके वाद जव वह वापस अिग्लैड लौटा, तव अुस पर विविध सन्मान वरसाये गये। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयोने अुसको ऑनरेरी डिग्रिया प्रदान की। अुसने अेक कलाकार स्त्रीसे शादी की। अुसके आग्रहके कारण वह पार्लियामेण्टमें चुना गया। किन्तु अिसमे अुसको कोअी दिलचस्पी नही मालूम हुअी। अपनी जवानीके समयके यात्रा-वर्णन अुसने 'My Early Travels and Adventures' नामक ग्रथमे दिये है। सन् १८९७ में वह आखिरी वार अफ्रीका गया। अुसका वर्णन अुसने 'Through South Africa' नामक ग्रथमे किया है (१८९८)। सन् १८९९ मे अिग्लैडके राजाने अुसे 'नाअिट' का खिताव दिया। जीवनके अतिम दिन निवृत्तिमे विताकर सन् १९०४में अुसकी मृत्यु हुअी।

मिसर सस्कृति मिस्रमें पुरोहित, राज्यकर्ता वर्ग, किसान और कारीगर, मजदूर या गुलाम अिन चार वर्गोंकी समाज-व्यवस्था चलती थी।

पृ० ३१५ अफलातूनकी 'समाज-रचना अफलातूनने 'रिपब्लिक' नामक अपने ग्रंथमें आदर्श नगर-राज्यका चित्र खीचा है, जिसमें अुसने लोगोको चार वर्णोंमें बाटा है (१) राज्यकर्ता तत्त्वज्ञ, (२) लडनेवाले, (३) किसान, कारीगर और व्यापारी तथा (४) गुलाम।

पृ० ३१६ अश्वत्थामा अश्व+स्थामन्। स्थामन्=बल। यहा 'स्थामन्' के 'म' का लोप होता है।

७० वर्षा-गान

पृ० ३१६ कालिदासका श्लोक यह है वह श्लोक—

नवजलधर सनद्धोऽय न दृप्तनिशाचर ।
सुरधनुर् अिद दूराकृष्ट न नाम शरासनम् ॥
अयम् अपि पटुर् धारासारो न बाण-परपरा ।
कनक-निकष-स्निग्धा विद्युत् प्रिया न ममोर्वशी ॥

—विक्रमोर्वशीयम्, अक ४ श्लोक ७

यह निश्चय अलकारका अुदाहरण है। श्लोकका अर्थ मूलमे दिया ही है।

पृ० ३१७ चिर-प्रवासी हमारे लोग चिर-प्रवासको मरणतुल्य मानते थे। 'रोगी, चिर-प्रवासी यज्जीवति तन्मरणम्।'

जीवन-प्रवाहको परास्त करनेवाले पुल जीवन-प्रवाह, पानीका प्रवाह। पानीका प्रवाह मनुष्यको आगे अुस पार जानेसे रोकता है। नदी पर पुल बननेसे नदीकी यह रोकनेकी शक्ति परास्त होती है।

सेतु सेतुका अर्थ है बाध।

पृ० ३१८ छोटेसे घोसलेका रूप यह अुपमा अुपनिषद्के अेक वचनसे सूझी है।

यत्र भवति विश्व अेकनीडम्।

जहा सारा विश्व अेक छोटासा घोसला बन जाता है। स्वय भगवान ही अैसे घोसलेमें रहनेवाले जीवोको गरमी देनेवाला पक्षी है।

की। स्टेन्लीने तब तक अंग्रेज व्यापारियोंमें कांगोके बारेमें दिलचस्पी पैदा करनेकी काफी कोशिश की। किन्तु अिसमें अुसको सफलता नही मिली। अिसलिअे ब्रुसेल्स जाकर लियोपोल्डकी सूचना और योजनाका अुसने स्वीकार किया। वह फिरसे कांगो गया। पांच वर्षकी मेहनतके बाद अुसने लियोपोल्डके आधिपत्यके नीचे कांगोके स्वतंत्र राज्यकी स्थापना की। अिसका वर्णन अुसने अपनी 'The Congo and the Founding of its Free State' (१८८५) नामक पुस्तकमें किया है।

, १८८४ मे वह फिरसे युरोप लौटा। अुसके भाषणोंकी वजहसे जर्मनीमें अफ्रीकाके बारेमें रस अुत्पन्न हुआ। युरोपके राष्ट्रोंमें अफ्रीकाको कब्जेमें लेनेके लिअे होड शुरू हुअी। स्टेन्ली अिंग्लैंडमें रहा, किन्तु बेल्जियमके राजाके प्रति अुसकी निष्ठा भी अुसे खीचती थी। दोनोंका हित सिद्ध करनेके लिअे वह फिरसे अफ्रीका गया। भूमध्य-रेखाके आस-पासके प्रदेशोंमें घूमते हुअे अुसके करीब दो-तिहाअी साथी मर गये, कुछ साथी मारे गये। किन्तु वह हिम्मत नही हारा। अुसने अपना काम जारी रखा, और अंग्रजोंके लिअे अुसने वहाके अमीनसे काफी रिआयतें प्राप्त कर ली। अिस भयानक यात्राका वर्णन अुसने 'In Darkest Africa' नामक ग्रंथमें (१८९०) किया है।

अिस यात्राके बाद जब वह वापस अिंग्लैंड लौटा, तब अुस पर विविध सन्मान बरसाये गये। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालयोंने अुसको ऑनरेरी डिग्रियां प्रदान कीं। अुसने अेक कलाकार स्त्रीसे शादी की। अुसके आग्रहके कारण वह पार्लियामेण्टमें चुना गया। किन्तु अिसमें अुसको कोअी दिलचस्पी नही मालूम हुअी। अपनी जवानीके समयके यात्रा-वर्णन अुसने 'My Early Travels and Adventures' नामक ग्रंथमें दिये हैं। सन् १८९७ में वह आखिरी बार अफ्रीका गया। अुसका वर्णन अुसने 'Through South Africa' नामक ग्रंथमें किया है (१८९८)। सन् १८९९ मे अिंग्लैंडके राजाने अुसे 'नाअिट' का खिताब दिया। जीवनके अंतिम दिन निवृत्तिमें बिताकर सन् १९०४ में अुसकी मृत्यु हुअी।

मिसर सस्कृति · मिस्रमे पुरोहित, राज्यकर्ता वर्ग, किसान और कारीगर, मजदूर या गुलाम अिन चार वर्गोंकी समाज-व्यवस्था चलती थी।

पृ० ३१५ अफलातूनको 'समाज-रचना अफलातूनने 'रिपब्लिक' नामक अपने ग्रथमे आदर्श नगर-राज्यका चित्र खीचा है, जिसमें अुसने लोगोको चार वर्णोमे वाटा है (१) राज्यकर्ता तत्त्वज्ञ, (२) लडनेवाले, (३) किसान, कारीगर और व्यापारी तथा (४) गुलाम।

पृ० ३१६ अश्वत्थामा अश्व+स्थामन्। स्थामन्=वल। यहा 'स्थामन्' के 'स' का लोप होता हे।

७० वर्षा-गान

पृ० ३१६ कालिदासका श्लोक यह है वह श्लोक—

नवजलधर मनद्धोऽय न दृप्तनिशाचर।
सुरधनुर् अिद दूराकृष्ट न नाम शरासनम्॥
अयम् अपि पटुर् धारासारो न वाण-परपरा।
कनक-निकप-स्निग्धा विद्युन् प्रिया न ममोर्वशी॥
—विक्रमोर्वशीयम्, अक ४ श्लोक ७

यह निश्चय अलकारका अुदाहरण है। श्लोकका अर्थ मलमे दिया ही है।

पृ० ३१७ चिर-प्रवासी · हमारे लोग चिर-प्रवासको मरणतुल्य मानते थे। 'रोगी, चिर-प्रवासी यज्जीवति तन्मरणम्।'

जीवन-प्रवाहको परास्त करनेवाले पुल जीवन-प्रवाह, पानीका प्रवाह। पानीका प्रवाह मनुष्यको आगे अुस पार जानेसे रोकता है। नदी पर पुल वननेसे नदीकी यह रोकनेकी शक्ति परास्त होती हे।

सेतु · सेतुका अर्थ है वाध।

पृ० ३१८ छोटेसे घोसलेका रूप यह अुपमा अुपनिषद्के अेक वचनसे सूझी है।

यत्र भवति विश्व अेकनीडम्।

जहा सारा विश्व अेक छोटासा घोसला वन जाता है। स्वय भगवान ही अैसे घोसलेमें रहनेवाले जीवोको गरमी देनेवाला पक्षी है।

कारवार : बम्बअी राज्यके पश्चिमी समुद्र-तटका अतीव सुन्दर बन्दरगाह, जहा लेखकने अपने बचपनके कअी वर्ष व्यतीत किये थे। लेखककी पुस्तक 'स्मरण-यात्रा' मे कारवारका जिक्र कअी बार आता है।

पृ० ३१९ जीवनचक्र : गीतामे अध्याय ३, श्लोक १६ मे अिस प्रवर्तित जीवन-चक्रका जिक्र आता है। लेखकका 'जीवन-चक्र' नामक निबंध अिस सिलसिलेमे खास पढने लायक है।

परस्परावलबन द्वारा सधा हुआ स्वाश्रय : व्यक्तिगत जीवनके लिअे स्वाश्रय अच्छा है। सामाजिक जीवनकी बुनियादमे परस्परावलबन ही प्रधान है। अैसे परस्परावलम्बनमे जब आदान-प्रदान सम-समान या तुल्यबल होता है, तब जीवनका बोझ किसी पर न बढनेसे अुसमें स्वाश्रयकी निष्पापता आती है।

यज्ञ-चक्र : जीवन-चक्रको ही गीताने यज्ञ-चक्र कहा है। देखिये, 'सहयज्ञा प्रजा सृष्ट्वा अि०' गीता–अध्याय ३, श्लोक १० से १६।

अवतार-कृत्य : अवतारका शब्दार्थ है नीचे अुतरना। बारिशका पानी अूपरसे नीचे अुतरता है। भगवान भी जब नीचे अुतरकर मनुष्यरूप धारण करते है, तब अुसे अवतार कहते है।

कुरुक्षेत्र : भारतीय युद्धकी रणभूमि।

मखमलके कीडे : अिन्हे अिन्द्रगोप कहते है।

दोहरी शोभा : मखमलके कपडेमे जैसी शोभा होती है वैसी। अेक ओरसे देखनेसे गहरा रग मालूम होता है, दूसरी ओरसे वही फीका या दूसरे रगका मालूम होता है। अग्रेजीमे अिसे 'Shot' कहते हैं।

पृ० ३२१ आकाशके देव : सितारे।

'मधुरेण समापयेत्' : भोजनमे आखिरी चीज मीठी हो।

'अृतु-सहार' : कालिदासका अेक नितात सुन्दर काव्य, जिसमे छहो अृतुओका वर्णन आता है।

'अृतुभ्यः' : विवाहके समय सप्तपदी द्वारा गृहस्थाश्रमके लिअे जो जीवन-दीक्षा ली जाती है, अुसमे से छठी प्रतिज्ञा है 'अृतुभ्य'। 'जीवनमे हम दोनो अृतु-परिवर्तनके साथ साथ जीवन-परिवर्तन भी करेंगे'— यह है अुस प्रतिज्ञाका भाव।

सूची

अ

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह

Our Outstanding Publications

LIFE OF JAWAHAR LAL NEHRU—Including ...ut 200 Photographs, Drawings and C...

निर्दलीय 1

जयपुर

री लाल नागर

उम्र 38 वर्ष

न प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने मे

एक जैसे नाम

पेट्रो... बढ़ा... पैस...

डीजल ... दाम बढ़... सरकार

दो-तीन

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र समूह

16

निर्दलीय 1

जयपुर

कांग्रेस

उम्र 38 वर्ष

तीन प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

देराण्या जेठाण्या मिल गोरवद गुंथियो

पेट्रो

डीजल

दाम ब

सरका

दो-तीन

ध

न

य

र

ल

श

भारत का सबसे बड़ा समाचार पत्र

निर्दलीय 1

न प्रमुख लगातार दूसरी बार

पिछले चुनाव के आईने में

एक जैसे नाम

देराण्या, जेठाण्या मिल गोरवट गृथियो

डीजल

दो-तीन

ह

368